ऑखर-ऑखर अनुराग

(राजस्थान मे व्रज साहित्य कला-सस्कृति को विवेचन)

लेखक

डा. विष्णुचन्द्र पाठक



सम्पादक

रामशरण पीतलिया





राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी,

सी-267, भाभा मार्ग तिलक नगर, जयपुर



लेखक

डा विष्णुचन्द्र पाठक

अध्यक्ष

राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी, जयपुर



सम्पादक

रामचरण पीतलिया



प्रकाशक

डा रामप्रकाश कुलश्रेष्ठ

सचिव राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी जयपुर



मूल्य 75-00 रुपये



पलौ सस्करन 1991



आवरण

सकेत गोस्वामी



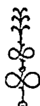


मुद्रण स्थल

पोपूलर प्रिन्टर्स महावीर मार्ग, अलवर

AAKHAR AAKHAR ANURAG

विसै-सूची



अनुराग-अतंरंग

राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी के अध्यक्ष डा विष्णु चन्द्र पाठक जे ब्रज शतदल के अकन के सम्पादकीय विचारन म सारगर्भित अरू खोजपूर्ण सामग्री दई है। अकादमी के मोनोग्राफन मे सृजनरत साहित्यकारन के व्यक्तित्व अरू कृतित्व पै हू डा पाठक के विचार भौतई महत्वपूर्ण है। अकादमी की स्थापना पाछै अब तानू वे राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी के प्रकासन मे डा पाठक की ललित रचनावली के दसन होय। इनके लिखे भये ललित निबन्ध, महकते रेखाचित्र, मौह बोलते एकाकी, ब्रज सस्कृति माहि रची बसी कहानी, रास रामेस्वर कृस्न कन्हैया की लीला माधुरी कू उकेरते भये सरस ब्रज छन्द इनकी बहुआयामी प्रतिभा कू उजागर करै है।

डा पाठक की इन रचनान मे एक जागरूक रचनाधर्मी को सब्द सिल्प मिलै है, सिर उठाती समस्यान को समाधान मिलै है। अरु राजस्थान के कौने कौने मे ब्रज रस निरझरनी की पीयूष धारा बहायवे वार ब्रजभाषा अनुरागीन को भाव भीनो परिचै मिलै है। ब्रजभाषा के सजनरत साहित्यकारन की परिचै पोथी (मोनोग्राफ) प्रकासन योजना हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के आधुनिक कवि प्रकासन ते कम महत्वपून नाय। व्यक्तित्व कृतित्व रचना रूप, अरू विवेचना भरे इकठौरे सग्रहन के माध्यम ते राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी नै भौत महत्वपून काम हाथ मे लीनो है।

डा विष्णु चन्द्र पाठक ने राजस्थान प्रदेश के कौने कौने म बिखरे भये इन रचनाधर्मीन कू जोडबे को अभूतपूव काम कीनो है। सबई मानप्रद आप अमानी कू साथक करते भये इनै आदर, दुलार, सम्मान अरु सनेह उ मुक्त भाव त बाटो है। इनकी विविध रूपा रचनान म ई सरूप खूब मुखर भयो है।

राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी ते जुरे भये ब्रजभाषा साहित्य सेविन को ई सुझाव भौत महत्वपून मानो गयो कै इनकी इत बितकू बिखरी भई इन रचनान कू एक सकलन म छाप्यो जाय। प्रसन्नता को विसै है कै या सकलन के माध्यम ते वू सुझाव सफल है रह्यो है।

डा पाठक की सैली कू उजागर करव वारी इन रचनान कू सुविधा की दष्टि सौं चार भागन मे बाट दीनो है। पैले भाग माहि हमारे पुरोधा सकलित कीनै है। इनम आचाय सोमनाथ, चतुरा कवि, श्री नदकुमार जी गिरधर शर्मा नवरत्न डा रामानन्द तिवारी, अरु जयशकर चतुर्वेदी, के व्यक्तित्व पै प्रकास डारो गयो है। दूसरे भाग माहि ब्रजभाषा के सजनरत साहित्यकारन कै व्यक्तित्व अरू कृतित्व कू सजोयो गयो है। राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी की परिचै पोथी (मोनोग्राफ) प्रकासन योजना के अतगत लिखी गई इन रचनान मे चौदह ब्रज साहित्यकारन कै सन्दभ अकित कीने है। ब्रज के सोधकर्तान कू राजस्थान के परिप्रेक्ष्य मे विशद जानकारी अरू बहुआयामी दृष्टि इन लेखन मे रेखाकित कीनी गई है। या ये अनुराग के रग रगे' भाग म पच्छिमी राजस्थान ते लैके धुर पूव यानि ब्रज को राजस्थानी अचल के साहित्यकार सम्मिलित

कीनें है। तीसरे भाग माहि ब्रज शतदल की भूमिकान अरु कथन करत खरौ सो पयनित अस लीनें है। याम यारे-यारे रूपन म ब्रज विवेचना को सोन्य झलकें है। ब्रज संस्कृति, ब्रज साहित्य, ब्रजभाषा कौ मानक सरूप, ब्रजभाषा की प्रासंगिकता कें संगई राजस्थान माहि याकौ सहज विकास धारा को सरूप हू डा पाठक की पनी कलम को परस पायक वेगवान बन गयौ है। इन लेखन म ठौर ठौर प्रसाद ओज अरू माधुर्य की जा त्रिवेनी के दरसन होय वू लखक की अपनी विसमता है। या विवेचना भाग माहि ग्यारह लेख संकलित है चौथे अरु अंतिम भाग माहि डा पाठक को ललित रचना सौष्ठव रेखांकित कीनों है। या रचना माधुरी भाग म जाडे कौ बुखार, हडताल अरु खेलत फाग कुवर गिरधारी जैसी ललित रचनान कू सजोयौ है। याई भाग क अंतगत डा पाठक के काव्य अनुरान कू दसायौ गयौ है। आखर-आखर अनुराग डा पाठक की ब्रजभाषा की सेवादपन है। पिछ्रन पाच बरसन मे राजस्थान को कौन कौन माहि ब्रजभाषा को अलख जगा जगाकें डा पाठक न ब्रजभाषा की ममस्थान ते ममीप कौ परिचै लीनो है या परिच मे जोधपुर जैसलमर, बाडमेर, बीकानेर, नाथद्वारा मेडता, झालावाड गगापुर, भरतपुर धौलपुर डीग, कामा बर जुरहरा आदि क्षत्रन माहि बसे भय ब्रज अनुरागीन कौ भौत बडो योगदान है। जोधपुर विश्वविद्यालय म राजस्थानी के विभागाध्यक्ष डा शक्तिदान कविया को तौ ह्या तक कहनौ है कें पच्छिमी राजस्थान कें ब्रज काव्य को पुनमूल्याकन आज की सबस बडी जरूरत है—यात मध्यकालीन साहित्य को सरुप आज ते बदलो भयौ दीसैगो। या छेत्र क अजान ब्रज साहित्यकारन कू जानकारी म लायवे को भौत बडा काम अबई सेस है। जाम डा पाठक अनवरत लगे भये हैं।

मध्ययुगीन काव्य चेतना अरू रचना सिल्प मैं डा पाठक को गहरौ लगाव है—जिनके कवि सोमनाथ प लिखे भए शोध प्रबन्ध माहि एक आर कू जहाँ भरतपुर की माटी की महक है बाई ठौर उत्तर मध्यकालीन रीति परम्परान क विसलेसन की पक्की पकर है। याको प्रभाव इनकी दो टूक अरु बेबाक सैली पैं खूब पर्यो है। विविधता भरे इन लेखन म डा पाठक की सहज भाव अभिव्यक्ति के दसन होंय है। खेलत फाग कुवर गिरधारी जिनको अपनी मौलिक सैली म लिखो गयौ आघरे कवि सूर की हारी कौ चित्रन है। सूर साहित्य म या तरिया की विवेचना कम मिलै है। जाडे को बुखार अरु हडताल मे जीवन कौ यथाथ झाकतो दीखे है। साची बात तो जि है क इनें कहानी एकाकी, रेखाचित्र, ललित निबन्ध समालोचनात्मक निबन्ध जा काऊ विधा पै कलम चलाई इनकी सपाट बयानी बेबाक कथन सलो जिसै ते मेल खाती भाषा सामै आई।

राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी के अध्यक्ष रूप माहि पाच बरस के थोरे समय मे इनें जितनो लेखन अनुशीलन सशोधन मागदसन कीनो है वू चेतना को दृष्टि सो भौत महत्वपून है। इनको आखर आखर अनुराग, त भरो भयो है। भरोसो है पुस्तक रूप मे आखर-आखर अनुराग ठौर ठौर अनुराग को सदेसो देकें मेल मिलाप बन्धुत्व अरु समरसता मे भावन कू आग बढावैगो।

कामां (भरतपुर)
1 माच 1991

— रामशरण पीतलिया

निवेदन

अकादमी के मच सो समै समै पै ब्रज सहित्य कला अरु सस्कृति पै विभिन्न आयामन ते मोय सोचवे विचारवे अरु मूल्याकन करवें को औसर प्राप्त भयो है। अकादमी के विद्वान सदस्य अरु हमारे परिवार ते जुडे साहित्य अनुरागिन के प्रोत्साहन भरे मागदसन ते कछु ऐसो बानक बन गयो कै गत छ बरस ते हर तीसरे महिना नियमित रूप सो प्रकासित ब्रज शतदल के सिगरे अकन मे विसेस, विसैन सो सबधित सामग्री इकठोरी करी गई है। इन विमन पै विस्तार ते विचार ब्रज शतदल' के सम्पादकीय के रूप मे कियो गयो है। याके अलावा जब मैने ब्रज कला सस्कृति कू राजस्थान की धरती पै एकत्रित करवे को प्रयास कीनो तो माय ई जानकै भारी आस्चय भयो कै ब्रज कला सस्कृति को प्रोत्साहन अरु सवद्धन जितेक राजस्थान मे भयो है बितेक स्यात ब्रजभूमि म नाय रह्यो। अति प्राचीनकाल ते ई मरुभूमि ब्रज कला सस्कृति के उपासक श्री कृष्ण की की आराधक रही है। घग्घर नदी के किनारे मिलबे बारी श्री कृष्ण अरु बिनकी लीलान ते सबधित प्राचीन मट्टी की मूर्तिन ते स्पष्ट होय है कै राजस्थान की धरती गुप्तकाल मे वैष्णव धम की प्रबल उपासक रही है। मध्ययुग म जब ब्रजभूमि पै विदेसीन के एक कै पाछै एक लगातार आक्रमन हैवे लग तो ब्रज के सिगरे देवालय राजस्थान की धरती पै आयकै आश्रय पा सकै। जे ई कारन है कै वैष्णव धम के प्रमुख निम्बाक, वल्लभ अरु चैतय सप्रदाय के अधिकाश देवालय राजस्थान की धरती पैइ बिराजे भये है। वैष्णवन के इन दवालयन कै सग ब्रजभाषा के कवि कल व त अरू साहित्यकार राजस्थान मे आये अरु हमेसा हमेसा कू ह्यां के हैकै रह गये। ऐसे देवालय अरु बिनके आश्रय मे राजस्थान की धरती पै फली फूली ब्रज लोक सस्कृति प या सकलन म विस्तार त लिखो गयो है। याकै सगई कविता के छेत्र मे ब्रज के प्रचुर प्रभाव के कारन अब तानूं ई मानो जातो रह्यो है कै ब्रज कोरी कविता की भाषा है। वाको गद्य ते कोऊ लेनो देनो नाय। मैने अपन कई लेखन मे या विचार को पोषण कीनो है कै कविता के प्रचुर प्रभाव के कारन ब्रजभाषा गद्य कू व् प्रचार प्रसार नाय मिल सको जो मिलनो चइये। ई कहनो सवथा अनुचित है क ब्रज केवल पद्य की भाषा रही गद्य ते वाको सबध नाय। ब्रजभाषा सदीन तानू हमार देश के लोगन के बीच गद्य की भाषा रही है। अकबर अरु बिनके परवर्ती मुगल बादसाहन के फरमान साधारण जनता तानूं पौंचबे कू सदैव ब्रजभाषा गद्य मे प्रसारित करै गय है। याकै अलावा अकादमी के मच सों राजस्थान मे ब्रजभाषा के साहित्यकारन की गद्य पद्य की रचनान कू बानगी के रूप मे एक स्थान पै प्रकासित करबे के क्रम मे हर साहित्यकार के मोनोग्राफ प्रकासित करबे की

एक महत्वाकांक्षी योजना अपन हाथन म लीनी है। या क्रम म चौन्ह मोनोग्राफ प्रकाशित भये हैं। मन अपन सहयोगिन की सहायता ते इन सिगरे साहित्यकारन पै ब्रज साहित्य कू संकलित कर बिनका विस्तार ते मूल्यांकन करबे को प्रयत्न कियौ है। मेरे मूल्यांकन के य लेख सम्पादकीय अरु लेखन के रूप म लिखे गये हैं। ये सिगरी सामग्री एक स्थान पै संकलित करब की आवश्यकता प्रतीत करी गई। जाई कारन 'आखर-आखर अनुराग सीसव' ते मेरे य विचार आपके हाथन म हैं। आपके मार्गदर्शन अरु सुझावन की मैं बडी आतुरता ते बाट देख रह्यौ हू। अकादमी परिवार ते जुडे सिगरे साहित्यकार भैया भैन मेरे इन विचारन के प्रेरना स्रोत रहे हैं। इनें तन, मन, धन सौं समर्पित है क राजस्थान की ब्रज धरोहर कू जन-जन तक पहौंचायबे में जो काम कियौ है, बाकौ स्मरन मात्र पुलकित कर आनन्द म डुबाय दे है। मेरे इन विनम्र विचारन कू पुस्तक रूप दबे म आदरणीय श्री रामशरण पीतलिया जी को परिश्रम मार्ग दर्शन अरु प्रोत्साहन की प्रसंसा शब्दन में सम्भव नाय। म इन सबकू सादर प्रणाम करू हू।

सी–266, भाभा मार्ग
तिलक नगर, जयपुर

डा॰ विष्णुचन्द्र पाठक
अध्यक्ष
राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी



हमारे पुरोधा



ब्रज के महाकवि सोमनाथ

बहुमुखी प्रतिभा के धनी आचार्य, अनुवाद कर्म, प्रबंध कौशल जैसी भाँतेरी विधान के माध्यम सो अपनी काव्य प्रतिभा कै एक ते एक सरस सुंदर अरु मनमोहक रूप प्रस्तुत करिबे बारे महाकवि सोमनाथ राजस्थान की साहित्य धरा के ऐसे प्रभावोत्पादक रचना धर्मी हैं जिन्नैं ब्रजभाषा काव्य जगत मे नयनाभिराम रंग भरे है। सोमनाथ की ग्रंथावली नागरी प्रचारिणी सभा सो कोई दस बरस पैले छप चुकी है। पर हमे दुःख के संग लिखनों पडे है के वैर भरतपुर की साहित्यिक धरती की ऊर्जा सो जनमे महाकवि सोमनाथ के समग्र साहित्य को अबई तानू मूल्यांकन नाय भयौ है। सोमनाथ का घोंकल मिश्र, वटुकदत्त अरु कलमी तुर्रा के अमर रचनाकार हरिनारायण जसे या धरती के समथ ब्रजभाषा के साहित्यकार पाण्डुलिपीन के अंधियारे मे दुबके पड़े है। महाकवि सोमनाथ को ब्रजभाषा अरु रीतिकाल के प्रसिद्ध रससिद्ध कवि अरु आचार्यन मे प्रमुख स्थान रह्यौ है। हिंदी साहित्य के अधिकांस आचार्य जब संस्कृत के मजे काव्य शास्त्र के ग्रंथन के आलोडन विलोडन अरु बिनके सार तत्वन कू अपनी प्रतिभा पैं तराश के हिंदी काव्य सास्त्र के विपुल भण्डार कू समृद्ध बनायवे म लगे भये है, वा समै सोमनाथ आचार्य को सफल अरु सार्थक कर्म निर्वाह करिवे के संग संग संस्कृत भाषा के श्रेष्ठ ग्रंथन को अनुवाद एव ब्रज मे प्रबंधकाव्य जैसी विधा पै अनवरत अपनी कलम चलाय रहे हैं। सोमनाथ के सिगरे साहित्य कौसल पै विहंगम दृष्टि डारे तो प्रमानित होय है के ब्रज मे रहते भये इनै परम्परित कृष्ण काव्य के संग संग राम अरु शिवकाव्य को सरस ब्रजभाषा मे रचना करी है। यहाँ तानू के इनै ब्रजभाषा म 'मालती माधव' जैसे नाम ते नल दमयन्ती की प्रणय कथा कू लैके विसाल नाटकऊ लिखो है। या नाटक मे ईनके समै की लोक प्रचलित लोकधर्मी सैली अरु परम्परित संस्कृत नाट्य सिल्प को गंगा जमुनी मंजुल समाहार भयौ है। 'माधव विनोद' कू कछू आलोचक भ्रमवस दो-चार स्लोकन को हवालो दैके याकू संस्कृत के मालती माधव' नाटक को मात्र अनुवाद बताय हैं। ई सही नाय। आकार अरु प्रकार दोनू दृष्टि सो माधव विनोद' रचना 'मालती माधव' सो काफी अलग भौतिक अस्तित्व की द्योतक है। सही तो जि है के सोमनाथ की माधव विनोद' नाटक हिन्दी अरु ब्रज संसार को पैलो ऐसो मौलिक नाटक है जो अपने समै मे जनता के बीच मे खेलो गयो है। नाटक के रचना प्रसंग मे कवि ने स्वयं अपनी लेखनी सो आसयदाता के विस मे जो सूचना दीनी है वाते ई सिद्ध है के या नाटक

की रचना सोमनाथ ने आस्रयदाता के प्रबल आग्रह पै जनता के बीच म अभिनीत करिबे कू करी है।

सोमनाथ न सिंहासन बत्तीसी' रामायण', भागवत दशमस्कध उत्तरार्द्ध', 'अध्यास रामायण' जैस सस्कृत भाषा के ग्रथन को अपन आस्रयदाता सुजान सिंह अरु प्रताप सिंह की आज्ञा सो क्रमश 'सुजान विलास', 'रामचरित रत्नाकर', ब्रजेन्द्र विनोद', रामकलाधर' नाम सो ब्रजभाषा मे अनुवाद कीनें है। ये कोरे सब्दानुवाद या भावानुवाद नाय अपितु कवि ने मूल के भाव या प्रसग कू अपनी काव्य प्रतिभा म आत्मसात करके अपनी सैली अरू भाव क सोच सौ बाय कविता म उतारो है। या कारन मोय तो कई दफै इन रचनान कू अनुवाद रचना कहबे मऊ सकोच होय है। मूल के भाव कू सोमनाथ न इतनो विस्तार दे दीनो है के मूल भाव की ओर छोर भारी प्रयास पाछेऊ पकड मे नाय आवै है। याई कारन कवि ने इनको नामकरण मूल ते हटक अपन हिसाब ते कीनो है। राम कलाधर' अरू 'रामचरित्र रत्नाकर जसे राम काव्य प्रस्तुत करके ब्रजभाषा मे 'केशव की रामचद्रिका पाछ राम काव्य लेखन परम्परा की टूटी श खलान कू सोमनाथ ने पुन जौडो है। आचार्यत्व अनुवाद कौसल के अलावा महाकवि सोमनाथ रीतिकाल के स्यात इकलौते ब्रजभाषा के ऐसे लाडले कवि ह जिन्‍ शशिनाथ विनाद' शीषक सो शिवजी के ब्याह के प्रसग कू लैकें एक सफल खण्डकाव्य की रचना करी है। वैसे बिन्‍ 'शशिनाथ विनोद के अलावा ध्रुव की कथा कू लके ध्रुव विनाद' नाम ते एक और खण्डकाव्य लिखौ है। 'शशिनाथ विनाद' म कवि न अपने आस पास क परिवेश कू जा रचना म ऐसी कुशलता के सग पिरायौ है के ऐसौ लग है क बिनक सम म सिव जी महाराज ब्याह करिबे हिमालय के घर नाय जाय रह अपितु बा समै के ब्रजभूमि के काऊ घर म पधार रहे ह। शशिनाथ विनोद मे ब्याह के रीति रिवाज बरातीन की आव भगत हँसी ठट्ठा गारी गरौच, जेमौ, जूटबो, पत्तर म परोसी जायबे वारी मिठाई अरु भात भात के व्यजन, बराती की पत्तर बाधबो आदि के रूप म या रचना म सोमनाथ ने अपन समै की ब्रजभूमि कू साकार कर दीनो है। अगर तीन सो बरसपूव की ब्रजभूमि के ब्याह सादी के वातावरन अरु रीति रिवाजन कू फिल्म की तरिया साकार दखनो है तो याकू शशिनाथ विनोद ते उपयुक्त स्थान और अयत्र नाय है सक है। याक सगई पजाबी भाषा की तज प ब्रजभाषा छद म लिखी गई प्रेम पच्चीसी नाम की पच्चीस छदन की एक छोटी सी इनकी रची एक कृति ई सोचबे कू मजबूर कर है के सूफी प्रेम कू श्री कृष्ण प आरोपित करक ब्रज की धरती पै इन्‍ प्रेम की एक नई गगा बहाई है। ब्रज के वियोग काव्य ससार म 'प्रेम पच्चीसी' निगुण प सगुण भक्ति की विजय के दयावयित वष्णवो वाद विवाद की वचनवक्रता ते हटक भक्ति सम्प्रदाय त कोसन दूर है। प्रेम पच्चीसी के प्रभाव साई आन दघन जैसे कविन की 'इश्कवेलि जैसी रचना आग चलकै कृष्णकाव्य म सात्विक वियोग की एक अलग धारा प्रवाहित करिबे वारी

भोतेरी रचनान म ते एक रही है । 'प्रेम पच्चीसी' ने कृष्ण काव्य मे सुफी वियोग की एक अलग धारा प्रभावित की हो है जा परम्परा पै अबई हिन्दी ससार म विचार होनो बाकी है ।

सोमनाथ विसयक भ्रम—

राजस्थान के लब्धप्रतिष्ठित या ब्रजसेवी क नाम जन्म अरु कविता काल के विसै मे आज तानू भोतरे भ्रम बन भये है । भ्रमन के निवारन के अभाव म हिन्दी साहित्य के इतिहासन म सोमनाथ विसयक भोतरे विचार असगतीन ते भरे पडे है अरु नय पुराने सिगरे साहित्य के इतिहासकार इन असगतीन कू साँच मान के अगीकार करते जाय रये हैं । हिन्दी साहित्य के प्रथम इतिहास के रूप म गोकुल कवि के 'दिग्विजय भूषण' ग्रथ कू या तरिया को ग्रथ मानो जाय है जाने ब्रजभाषा के कविन के विस म पैली दफ क्रमबद्ध कविन के उदाहरन प्रस्तुत करिवे को सफल प्रयास कीनो गयो है । सकलन की दष्टि सों हिन्दी साहित्य को इतिहास लिखवैयान को दिग्विजय भूषण ग्रथ ने एक माग प्रसस्त कीनो है । गोकुल कवि न सोमनाथ अरु शशिनाथ नाम के द्वै अलग 2 कविन के उदाहरण देके द्वै कविन को अस्तित्व मानो है । सामनाथ, नाथ, शशिनाथ, सोमेश्वर आदि विविध नामन ते व्रज काव्य सृजन कीनो है । वैसे वे प्रमुखत घनाक्षरी म स्वय को नाम सोमनाथ अरु सवैया म शशिनाथ रखते है । स्यात जाई कारन गोकुल कवि ने एकई नाम के द्वै कवि की कल्पना कर डारी है । गास दा तासी ने तो सोमनाथ के अस्तित्व कू तक नकार दीनो अपने हिन्दी साहित्य के इतिहास मे । शिव सिंह सेंगर[1] अरु जाज ग्रियसन[2] नेऊ गोकुल कवि की भाँत सोमनाथ अरु शशिनाथ नाम की सार्थकता पै विचार किये बिना इन नामन के द्वै अलग कवि बतायके विचारे सोमनाथ के दो टूक कर डारे । मिश्र बन्धु विनोद म सबन ते पैले सोमनाथ अरु शशिनाथ नाम ते चले आय रहे द्वै कविन के भ्रम को निवारण कीनो है । मिश्रबन्धु विनोद मेई पैली दफ कवि के आचार्य कम की युगान्तकारी रचना 'रस पीयूषनिधि को उल्लेख भयो है । इस पीयूस निधि के अलावा इन्नै कवि की 'रास पाचाध्यायी' अरु'सुजान विलास' ग्रथ को उल्लेख कीनो है । रास पाचाध्यायी रचना को मोय कई पाडुलिपीन म कृष्ण लीलावती' नामऊ मिल्यो है ।

हिन्दी ससार मे महाकवि सोमनाथ के जनम कू लैके अबई तानू भ्रम बनो भयो है । हिन्दी साहित्य के काऊ इतिहासकार अथवा विद्वान मनीसी ने तकन के आधार पै

---

1 शिव सिंह सेंगर—पृष्ठ 500

2 दी माडन वर्नाक्यूलर लिटरेचर आफ हिन्दुस्तान—पृष्ठ 335-36

सोमनाथ के जनम कू निर्धारित करिब को प्रयास नाय कीनो । सबनें अपनी मन मर्जी तथा केवल मात्र अनुमान को सहारौ लैके कवि के जनम विसयक न्यायधीस की तरियां निधारण कर दीनो है । कईनें तो मात्र कल्पना को आधार लैके जनम की तिथि लिख कें खानापूर्ति कर डारी है । या प्रकार की कल्पना कौ आसरौ लीनो है । श्री शिव सिंह सगर ने । इनें सोमनाथ को जनम सम्वत 1880 लिखकें अपनी कल्पनासीलता कौ भारी परिच दीनो है ।[1] सोमनाथ ने 'रस पीयूषनिधि' ग्रंथ की रचना स 1794 में कीनी है ।[2] या तरिया शिवसिंह सरोजकार द्वारा सौ बरस पीछे कवि के जन्मकाल कौ निर्धारण स्वत ई खण्ड खण्ड है जाये है । डा सूयकान्त कवि को जनम स 1737 माने है ।[3] दिग्विजय भूषण के सम्पादक न कवि को जनम 1760 निर्धारित कीनो है ।[4] आचाय चतुरसेन शास्त्री के मत म कवि को जनम सन् 1738 (स 1795) म भयो है ।[5] रसपीयूषनिधि के रचनाकाल के आधार पै शास्त्री को स्वत मत खण्डित है रह्यो है । डा सत्येन्द्र ने कवि को जनम सम्वत 1759 निर्धारित करिब को प्रयास कीनो है ।[6] आचाय रामचन्द्र शुक्ल अरू नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकासित हिन्दी साहित्य के इतिहासकार सोमनाथ के जनम की तिथि कू लकें अनुमान तक नाय लगाय सक है । इन मनीसीन के प्रति श्रद्धा अरू विनम्रता रखते भय हम जि लिखबे कू बाध्य है कै इन मनीसीन प्रमान अरू तकन के आभाव म अपनी इच्छानुसार कवि के जनम को समै लिख डारो है । मिश्र बन्धुनन या सन्दभ जरूर थोरा प्रयत्न कीनो है । इन्नें स्पष्टत कवि के जनम के समै को तो उल्लेख नाय कीनो पर 'रस 'पीयूसनिधि की काव्य प्रौढ़ता देखते भयै इनें ई अनुमान लगायो है कै जि रचना पचास बरस की उमर के आसपास लिखी गई होयगी ।[7] उक्त अनुमान की दृष्टि सो कवि को जनम स 1744 के आस पास निस्चित होय है ।

भरतपुर, वैर नागरीय प्रचारिणी सभा आदि स्थान पै विभिन्न लोगन के पास सुरक्षित पाण्डुलिपीन के आलोडन विलोडन अरू गहन विचार एवं विवेचन कर पाछै

---

1 शिव सिंह सरोज–पृष्ठ 500
2 सत्रह से चौरानवे सम्वत सुमास
सुक्ल पक्ष पसमी भयो ग्रंथ परकास–तरग 22/607
3 हिन्दी साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास–प 217
4 पृष्ठ 94
5 हिन्दी भाषा और साहित्य का इतिहास प 353
6 ब्रज साहित्य का इतिहास–प 390
7 मिश्र बंधु विनोद–पृ 704

हमकू महाकवि सोमनाथ के जनम के बिसै मे प्रामाणिक जानकारी मिली है। सोमनाथ के वस के जमात स्व रावत चतुभु जदास चतुर्वेदी ते हमकू स्वय सोमनाथ के हाथन लिपिबद्ध 'श्री विद्या पद्धति' की प्रति मिली ही। याके अलावा हमकू वैर के दाऊजी के मदिर मे स 1796 को लिपिबद्ध 'रस पीयूसनिधि' की प्रतिलिपि अरु भरतपुर के राजकीय पुस्तकालय म स्वय कवि द्वारा लिपिबद्ध करी गई कालिदास कवि की वधु विनोद रचना' एव भरतपुर राजकीय सग्रहालय मे 'सुजान विलास' की कवि द्वारा लिखित मूल प्रति मे कवि न स्वय कू श्री विद्या को उपासक बतायौ है। सोमनाथ के बसन स्व उमराव सिह जी नै सन् 1923 म इनके कछ्रु ग्र थन की छपवै कू प्रेस कापी बनाई ही। इनम एक स्थान प इन्नै अपन परिवार कू श्री विद्या को उपासक बतायौ है। यातै ई स्वत सिद्ध तक स्थापित भयौ के महाकवि सोमनाथ के वस म परम्परागत रूप सो श्री विद्या की उपासना करी जाती रही है अरु वऊ स्वय श्री विद्या के आराधक हे। श्री विद्या उपासना गहस्थ अरु सन्यासी समानभाव सो कर सकै है।[1] श्री विद्या पद्धति ग्र थ की प्रतिलिपि की पुष्पिका मे सोमनाथ जी नै अपने जनम के मसै म महत्वपूर्ण सूचना दीनी है। वे स्वय अपने हाथन सो पुष्पिका मे लिखे है—श्री विद्या पद्धति सोमेश्वर छिरोरा स्वपठनाथ सम्वत 1782 शाके 1647 वर्षो ज्येष्ठ सुदी 4 बुधवासरे श्री विद्या प्राप्ति दिन सम्वत 1747 शाके 1612 चैत्र कृष्णाष्टमी गुरौजन्मदिनम्।'

यहाँ पै कवि ने अपने गुरु प्रदत्त जनम को उल्लेख कीनो है। ब्राह्मण कुल म द्वै जनम बिसेस महत्व राखे हैं—प्रथम मैया के उदर सो अरू दूसरो विधिवत विद्या अध्ययन करवायवे के समै गुरू द्वारा प्रदत्त जनम। जब ब्राह्मण पुत्र उपनयन सस्कार के औसर प बटुक धम की दीक्षा लै है तो वा समै गुरू मत्र के रूप म गुरू वाकू दीक्षा दै है। जेई गुरू द्वारा प्रदत्त नयौ जनम मानौ जाय है। प्राचीन धार्मिक ग्र थ अरू परम्परान की दृष्टि सो ब्राह्मण कुल मे बालक के उपनयन की आयु सीमा आठ बरस निर्धारित कीनी गई है। कवि ने सम्वत 1747 वि कू अपनो गुरू द्वारा दियौ गयौ जनम बतायौ है। जा समै कवि की आयु आठ बरस की रही होयगी। सम्वत 1747 सो आठ बरस घटायवे पै स 1739 मे कवि को जनम निश्चित होय है। अत श्री विद्या प्रतिलिपि के आधार प कवि के जनम के बिसै म उपयुक्त प्रामाणिक सामग्री के सटीक उल्लेख के कारन कवि के स 1739 जनम बरस मानवे के विरोध में कोई आपत्ति प्रतीत नाय होय। 'रसपीयूषनिधि' ग्र थ के आधार पै 'मिश्रबधु विनोद' मे कवि को जनम स 1744 निकारो है। हमारी दृष्टि सौं सोमनाथ ने रसपीयूषनिधि' की रचना पचपन बरस की आयु मे कीनी है। जीवन के दीघ चिन्तन के पाछ ई गूढ विचारन म अभिव्यक्ति अरू

---

1 दे कल्याण शक्ति अक

सैली की सरलता अरु विवेचन की बोधगम्यता आवै है । 'रसपीयूसनिधि' म मम्मट के काव्य प्रकाश के शब्द शक्ति विवेचन कू कवि न किनेक सरल अरु बोधगम्य बनाय दीनो है या सत्य कू पीयूषनिधि ग्रथ के अध्येता अच्छी तरिया जानै है । अत कवि को जनम स 1739 माननो सवथा तक सगत अरु प्रामाणिक है ।

जन्म के समानई कवि सोमनाथ के कविता काल के विसै म हिन्दी साहित्य जगत माहि जा भाति भरी परी है। भ्राति को सबसों पैले उल्लेख आचाय रामचन्द्र शुक्ल ने अपने युगान्तकारी हिन्दी साहित्य के इतिहास म कीनो है । कहबे की आवश्यकता नई के हिन्दी साहित्य के इतिहासकारने सोमनाथ की कविता की प्रारम्भिक अरु अतिम दानू सीमान के प्रति निधारित विचार समीचीन नाय । मिश्रबधुनै सबन तै पैले कविवृत्त तीन ग्रथन को उल्लेख कीनो है जामे 'रसपीयूसनिधि कू कवि की पैली कृति मानी है । ता पाछे आचाय रामचन्द्र शुक्ल न कवि की एक अय कृति माधवविनोद को अतिरिक्त उल्लेख कर के मिश्रबधुन द्वारा कवि विसयक विचारन म थोडो फेर बदल कीनो है। मिश्रबधुन कवि के जन्म कू जरूर निर्धारित कीनो है परि कविताकाल के विसै म विनकी लेखनी मौन रही है । शुक्लजीनै कवि के प्रथम ग्रथ 'रसपीयूषनिधि अर अतिम 'माधव विनोद' मानते भये स 1790 सो 1710 तानू कवि को कविता काल निश्चित कीनो है । सन 1952 के आसपास हस्तलिखित पुस्तकन की खोज म मुनि काति सागर भरतपुर आये हु अरु म्हा विनकू कवि की एक अय अज्ञात कृति 'सग्राम दपण मिली ही । मुनिजी नै 'सग्राम दपण' के आधार पै शुक्लजी द्वारा निर्धारित कवि की कविता काल की सीमा कू अमान्य ठहराते भये इनै याकी सीमा म 1786 सो स 1810[1] तानू निर्धारित कीनी चौके 'सग्राम दपण को रचनाकाल स 1786 है । स 1786 को कवि न 'सग्राम दपण' ग्रथ समाप्त को काय पूरो कियो है । अत स्वाभाविक है कि कवि न या ग्रथ की समाप्ति के लिए एक द्व बरस तो समै लियोई होयगो । जा तरिया मुनिजी द्वारा निर्धारित स 1786 सों कवि के कविता काल को प्रारम्भ स्वत अप्रमाणिक है जाये है । विनकू जाकी सीमा एक द्वै बरस पूव म निर्धारित करनो चइये ई। सम्प्रति शोध अर अन्वेषण सों प्राप्त कवि के प्रथ नवाबविलास' 'ध्रुव विनोद' 'शशिनाथ विनोद', एव 'ब्रजेन्द्र विनोद के अध्ययन सों शुक्लजी अर मुनिजी के कविताकाल सम्बधी विचार स्वत असत्य म परिनित है जाय है ।

हमारी दृष्टि सों 'नवाब विलास' कृति औरगजेब के पुत्र अरु प्रसिद्ध कवि नेवाज के आश्रयदाता आजम की प्रीत्यथ लिखो गई है । आजमसा का जीवन काल सन् 1653-

---

1 मध्य भारत सदन (पत्रिका) सितम्बर सन् 1954 अक-पृष्ठ 6

ई सो सन 1700 तानू इतिहास मे मानौ गयौ है। इतिहास के सम्यक अध्ययन सो विदित होय है के जीवन के अन्तिम समै मे आजम को मथुरा आगरा के आस पास के प्रदेसन सो विसेस सम्ब ध रह्यौ है। सोमनाथ को जब आजम ते परिचै भयौ है वा समै बिनकी आयु अठारह बरस की ही। अत 'नवावो विलास' की रचना सम्वत 1756 के आस पास होनी चइये। जाते जा निनय के विरोध कोई बाधा नाय है सोमनाथ की कविता की प्रारम्भिक सीमा स 1756 सो कूती जानी चइये। नवाबोविलास' वृति के अब तानू आठ छन्दई मिलै है। इन आठ घनाक्षरी छन्दन की भासा अर सब्द योजना आदि सो निस्कस निकारो जाय सके है जि रचना कवि के यौवन के प्रवेस के आस पास की होनी चइये।

कवि के कविता की अन्तिम सीमा शुक्ल जी अर मुनि जी ने स 1810 तक मानी है। 'ध्रुव विनोद', शशिनाथ विनोद ग्रन्थ की समाप्ति स्वय कवि की भासा मे स 1812 अर 1813 म भई है। अत शुक्लजी अर मुनि जी के कवि के कविताकाल बिसयक विचारन को स्वत ई निरसन है जाये है। हमारे विचार सो ब्रजेन्द्र विनोद' अरु 'प्रेम पच्चीसी' कवि की साहित्यिक यात्रा के अन्तिम गन्तव्य है। ब्रजेन्द्र विनाद' को सृजन कवि ने भरतपुर नरेश सूरजमल (सुजान सिंह) कू करयौ है। वैर नरेश प्रताप सिंह की मृत्यु अरु माधव विनोद' लोक धर्मी नाटक के प्रनयन के पाछे सोमनाथ भरत-पुर आय गय। ब्रजेन्द्र विनोद भागवत दशमस्कध के उत्तराद्ध को अनुवाद है। या युग के भरतपुर के कविन सो आस्रयदातान सो ज्यादातर सस्कृत के श्रेष्ठ ग्रन्थन को सरल व्रजभाषा म अनुवाद करवायौ है। ये सासक विसाल सस्कृत के ग्रन्थन के अनुवाद को काम भौत दफै द्व अलग-अलग कविन कू सौंप देतै है। जाई तरिया वैर नरश प्रताप सिंह ने वाल्मीकि रामायण के अनुवाद को काम प्रसिद्ध कवि कृष्णभट्ट कलानिधि अरु सोमनाथ कू दियो हो। इन दोनू कविनै 'राम चरित रत्नाकार' सीसक सो वाल्मीकि रामायण को अनुवाद कीनौ है। याई तरिया भरतपुर नरेश सूरजमल न भागत दशमस्कध पूवाद्ध को अनुवाद को काम मोतीराम अरु उत्तराद्ध के अनुवाद को काम महाकवि सोमनाथ कू सौंप्यौ हो।

महाकवि सोमनाथ ने यावो नाम 'ब्रजेन्द्र विनोद' दीनौ है। 'ब्रजेन्द्र विनाद' के अत मे कवि ने याकी रचनाकाल को उल्लेख नाय कीनौ है। सगई या रचना मे कवि ने सूरजमल के नाम के सग कुवर सन्द को प्रयोग नाय कीनौ जब के अन्य सिगरी रचनान म या सब्द को प्रयोग कीनौ है। बाप के जीवित रहत भये हमारे देस की सामन्तवादी सासन व्यवस्था म 'कुवर सब्द को प्रयोग होतौ रह्यौ है अगर बाला जीवित है ता नाती के नाम के सग 'भवर' सब्द को प्रयोग होय है अरु पिता जीवित है तो पुत्र कुवर सब्द ते सबोधित करयौ जाय है। वैसे जि प्रथा राजपूतन की रही है। पर जाय देखादसी

सामन्तीयुग के इतर राजानैऊ अपनाय लियो। जाते जा निश्चय के प्रति कोई विरोध नाय दीखे के 'ब्रजेन्द्र विनोद' की रचना के समै सूरजमल के पिता बदनसिंह को स्वर्गवास है चुक्यो हो अत स्पष्ट है के ब्रजेन्द्र विनोद' की रचना बदन सिंह की मृत्यु के उपरान्त भई है चौके यामे सूरजमल कू पून राजा के रूप म उद्धृत कीनो है। हमारी दृष्टि सों 'ब्रजेन्द्र विनोद की रचना स 1815 क आस पास भई है। स 1815 के पाछै कवि को ज्यादातर समै श्री कृष्ण की भक्ति म व्यतीत भयो है। वृदावन मे रहते भय अपने सम-कालीन साहित्य सेवी आन द घन की 'वियोग बेलि' अरु 'इश्कलता' के सग एकसे भावन मे डूबी प्रेम की सूफीयाना कृति 'प्रेम पच्चीसी' की रचना कवि ने वृन्दावन मे आराध्य की याद मे वियोग हृदय के सग कीनी है। श्री मोहनलाल मधुकर ने 'वियोग बेलि' अर 'इश्कलता' की तर्ज पै प्रेम पच्चीसी' कू मानते भय याको सबन्ध सखी सम्प्रदाय सों जोडो है। या तरिया को एक लेख बिनै सन् 1962 म श्री हिन्दी साहित्य समिति की मुख पत्रिका 'समिति वाणी' म प्रकासित कीनो हो। हमारी दृष्टि मो 'प्रेम पच्चीसी' म व्यक्त भाव अरु वियोग की प्रखर तीव्रता की सहज अभिव्यक्ति कछु सूफीयाना अन्दाज म भई है। जा कारन 'प्रेम पच्चीसी कृष्ण काव्य की विभिन्न सम्प्रदायन के आलोक मे बहती काव्य की गग जमुन धारान के बीच सूफीयानी लुप्त सुरसुती की सी झाई देती दीखै है। कवि की अन्तिम कृति 'प्रेम पच्चीसी' है। जाकी रचनाकाल स 1816 है। स 1817 के दुर्रानी के ब्रज के आक्रमण के समै आन द घन के सग वृदावन मे रहने भये कत्लेआम म सोमनाथ की मृत्यु भई है। सोमनाथ क वसजन के जमाना स्व रावत चतुर्भुज दास चतुर्वेदी की घरवारो न अपने परिवार म पीडी दर पीडी सोमनाथ की मृत्यु के सुनते आ रहे उपाख्यान के क्रम म बतायो के सोमनाथ जी वृन्दावन म शत्रुन के बीच घिर गये हे। अत बिन कटार निकार के पले अपनी पत्नी फिर अपनो आत्महत्या कर लीनी। दुर्रानी के कत्लेआम के कारन ब्रजभूमि को कन कन थराय उठयो हो। बिनै अपनी आखिन सो हिन्दू समाज की दुर्गती दखी ही। कदाचित अपमानित प्रताडित अरु विन्सीन के हाथन मौत प्राप्त करिबे की अपेक्षा बिन जा स्वय आत्महत्या करबौ ज्यादा उचित समझब बारी बात समझी जा सके है। अत परम्परा के रूप म वसजन म चले आ रहे सोमनाथ न मृत्यु विषयक प्रसग कू नाय मा यो जाय सके है। जा कारन सोमनाथ की कविता की अन्तिम सीमा स 1810 की जग म 1817 मानी जानी चइये। सोमनाथ की मृत्यु के विषै म तो एकऊ लाइन साहित्य के इतिहास म नाय लिखी गई। अस्तुत सोमनाथ को कविता काल सम्वत 1856 सो सम्वत 1817 तक निधारित भयो।

आश्रयदाता—सोमनाथ न अपने अधिकाश ग्रन्थन म आश्रयदातान के प्रति सम्मान अरु स्वामीभक्ति की भावना व्यक्त कीनी है। इन आश्रयदातान म डीग नरेस बदन सिंह को नाम सबसो पहलें आवे है। कवि के जनम के आधार पै प्रमानित है के

सोमनाथ आयु मे बदनसिंह के बराबर है अरु बिनते सोमनाथ के सब थऊ भौतई मधुर हे जेई कारन है कि आश्रयदाता के स्मरन को जहाँऊ प्रसग आवें कवि सबसों पहले बदनसिंह के प्रति अपनी आदर की भावनान कू व्यक्त करे है। सोमनाथ के बुढापे मे युवा कवि सूदन ने बदनसिंह अरु बिनके पुरखान को अपने ग्रथ 'सुजान चरित' मे विस्तार ते उल्लेख कीनो है। कवि सोमनाथ न आश्रयदाता स्मरन के प्रसग मे या तरियाँ बिनके पुरखान की विरदावली के लम्बे-लम्बे प्रसग नाय दीने है। सन 1723 मे डीग के पूरे सासन अधिकार मिलें पाछ बदनसिंह के गामै सबते वडी समस्या ही के अपनी जनता कू सुसासन प्रदान करबौ। या कारन बदनसिंह ने दूर-दूर त योग्य पुरसन के सग-विद्या अरु कला के प्रचार प्रसार कू कवि कलावन्त एव साहित्यकारन कू बडी बडी जागीरी देकें अपन राज्य म सम्मान के सग बुलायौ। महाकवि सोमनाथऊ याई क्रम मे डीग आये अरु बदन सिंह न अपने बडे पुत्र सूरजमल की दीक्षा कौ सिगरौ भार कवि कू सोंप दीनौ। सोमनाथ के प्रति बदन सिंह की विसवास भरी प्रीति कोई परिनाम है क बिनें नेकऊ जहाँ आश्रयदाता के स्मरन कौ प्रसग आवै है म्हा वू सबन त पैले भावना भरे सब्दन सों बिनके प्रति अपने मन के आदर के पावन भावन कू व्यक्त करें हैं। देखौ कछू उदाहरन—

भावसिंह भूपति भये तिहि कान्हर के वश
तेज बहादुर जगत मे, जदुकुल के अवतस।
तिनके भयो प्रसिद्ध अति बदनसिंह श्री लाल
दियौ राज व्रज को हरपि तिनको श्री नदलाल।—रस पीयूस निधि 9/10

जगमगें जाको चड कर सो प्रचड तेज,
दुवन उदड जाते लुकत रहत है।
नीति निर्वाह सो निरतर प्रतीत जाके,
रचक न बैन पर पर्चाहि लहत है।
ऐसे ब्रजमडल बदन सिंह महाराज,
जाको यस उज्ज्वल दिगतन कहत है।
देस परदेस के नरेस पग लग्गे आनि,
जग्गे निसि वासर रन सग्गनि गहत है। —सुजान विलास 1/30

जा तरियाँ कवि ने आश्रयदाता को जाहाऊ प्रसग आयो है म्हा सबन सो पहले कवि ने बदन सिंह कोई स्मरण कीनो है। बदनसिंह ने सोमनाथ कू अपने राज को दाना-ध्यक्ष पद दीनौ हो जो बिनके वसजन पै आजादी ते पैले तानू रह्यौ है। आजऊ सोम-

नाथ के परिवार के बसजन कू राजस्थान सरकार सों दानाध्यक्ष की पैंसन मिले है। बदन सिंह पाछै सोमनाथ ने बिनके बडे पुत्र सूरजमल अरु ह्वारे पुत्र प्रताप सिंह कों बडी भावुकता अरु सहृदयता के संग आश्रयदाता प्रसंग मे स्मरन कीनो है। निवेदन कीनो के सोमनाथ सूरजमल के अध्यापक ऊ ह्। सूरजमल कू राजनीति अरु अन्य भोतेरे मामनोचित नीति को व्यावहारिक अध्ययन करायवे कू कवि नें सिंहासन बत्तीसी को सुजान विलास सीर्सक सों व्रजभासा मे सरस अर सरल अनुवाद कीनो है।[1] सूरजमल कट्टर हिन्दु नरेस हो। वाके मन मे देसप्रेम कूट कूट के भरो हो।[2] वू विक्रमादित्य कू अपनो आदस मानतो हो। विक्रमादित्य के व्यक्तित्व को स्वय अनुसरण करिवे की प्रबल इच्छा सो ओत-प्रोत तन मन सो हैके वाने या ग्रन्थ का सोमनाथ के अलावा अखैराम नाम के कवि सोऊ अनुवाद करायौ हो। सोमनाथ ने स 1819 मे सूरजमल की आज्ञा सो भागवत दसमस्कंध के उत्तरार्द्ध कोऊ 'व्रजेन्द्र विनोद' सीसक सों अनुवाद कीनो हो।[3] इन हूँ ग्रन्थन के अलावा कवि ने अपने सिगरे अन्य ग्रन्थन मे आश्रयदाता प्रसंग मे बदनसिंह के संग सूरजमल की युद्धवीरता दानवीरता, दयावीरता अरु धर्मवीरता को बडे आदर के संग स्मरन कीनो है। सूरजमल युद्ध क्षेत्र मे जहा एक तरफ बडे बडे युद्धवीरन के वीरत्व कू विखंडित करतो हो, म्हाई दूसरी तरफ कवि अरु विद्वानन कू प्रोत्साहित करिवे मे अपने राजकोस के द्वार खुले हृदय ते सदैव खोलें रहतो हो। इतिहासकारन सूरजमल कू अत्यधिक मितव्ययी बतायौ है पर कविन के प्रति वाने नेकऊ लोभ नाय कीनो। भक्त कवि शिवराम के संगीत शास्त्र की मौलिक रचना राग रस-सार' पै रीझ के सूरजमल ने छत्तीस हजार रुपया दान मे दे दीने है। जाकौ कवि शिवराम ने अपने ग्रन्थ मे भारी हर्ष के संग उल्लेख कीनो है।[4] ई वाके कवि कलाव तन के प्रति आदरभाव अरु उदारता भाव को द्योतक हो। सोमनाथ, सूदन अखैराम शिवराम तो या युग के प्रसिद्ध कवि है जिन सूरजमल के प्रोत्साहन सो हिन्दी भाषा की अद्वितीय सेवा कीनी

1 सभा मध्य इन दिन कह्यो श्री सुजान सुखपाय
सोमनाथ या ग्रन्थ की भाषा देहू बनाय
हुकुम पाय [illegible]दिनाथ यह रचतु सुजान विलास
जाम विक्रम गुनकथा है बत्तीस प्रकास।— सुजान विलास 1/62

2 मुगल साम्राज्य का पतन (द्वि भाग) पृष्ठ 306

3 इति श्री मन्महाराजाधिराज व्रजेन्द्र श्री सुजान स्यध हेतवे माथुर कवि सोम नाथ विरचित भागवत दसमस्कंध भाषा या व्रजेन्द्र विनोद द्वारकादुर्गनिवेशन नाम पचासत्तमो अध्याय।

4 जब ग्रन्थ पूरन भयो, तबै करी बकसीस।
खरे रुपैया मान सों, दिये सहस छत्तीस।—शिवराम राग रस सार पाण्डु

है। महाकवि देवऊ सूरजमल सों सम्मानित भये हे। स्यात देव न 'सुजान विनोद' प्र थ सूरजमल के काजेई लिखौ हौ।[1] सुरजमल के प्रति कवि के भाव कौ एक उदाहरन प्रस्तुत है–

उतकट कारे रग अग मतवारे चले,
डग दै डरादै शेप सीस विकसतु है।
पव्वय उखारे श्र ुड दडनि उघारे,
चड धु भनि के धारे ब्रह्मड उकसतु है।
सोमनाथ जिनकी सुने ते करतूति,
मजबूत पुरहुत कोन पील उकसतु है।
दिल म उदार सिंह सूरज कु ँवार ऐसे,
मौज आए कु जर अपार बकसतु है—माधव विनोद 1/58

कवि ने सूरजमल के राजोचित गुनन कू स्वीकार कीनौ है।[2] कवि की भासा म सूरजमल रसिकन कू रिझावे वारे सत्यभासी, अत्यधिक वीर अरु कल्पद्रु म के समान दानी हे।[3] बदनसिंह ने अपने बडे पुत्र सूरजमल कू डीग को नरेस बनायौ अरु छोटे प्रताप सिंह कू वैर को राज दीनौ (बाहुबली तिनके अनुज श्री प्रताप सुजान-रस पीयूष-निधि) सोमनाथ ने दोनू भैयान के जेठे अरु कनिष्ठ भाव कौऊ स्मरन कीनौ है। (छोटो सूरजमल ते श्री प्रताप सुजान-रामचरित्र रत्नाकर-सुन्दर काड 30/46) सूरजमल के पाछे सोमनाथ कू वैर नरेस प्रतापसिंह के आसय म रहबे कौ भौत औसर मिल्यौ। प्रताप सिंह के आसय मे आदर राग लिखे कवि के हृदय सो निकसे कछू भाव देखें—

---

1 माधुरी सन् 1927 फरवरी अक।

2 बदन सिंह महाराज के सुदर पुत्र अनेक।
जेठो सूरजमल है पडित चारू विवेक।
बुद्धि के आठो अग अर चौदह गुण राजकै
तामे जान सुढग सुत सूरज युवराज किया—सुजान विलास 1/41-42

3 रसिक रिझैया सत्य वचन कहैया, दल उद्धत रखैया पहरे बास देस के।
जगनि को जेता अग हरप निकेता, अरू नित्य प्रति लेता वित्त रिपुन के देश के।
सोमनाथ बरन उदार कल्पद्रु म सो, जाको उग्र और तेज दिवेट दिनेश के।
सपति समाजै श्री सुजान छवि छाजै, नृप मडल मे गाजै जो समान अमरेश के।
सुजान विलास 1/60

सुंदर अनत गुनवत   सीलवत और,
जाहर दिगत कत कित अवनी के हो।
बाके भौहे ताने आन मानत   अमाने
मरदाने परताप सिंह ऐंठ अपनी के हो।
आस करि आवे जे व इच्छा फल पावे,
कवि सोमनाथ सागर गभीरता के नीकें हो।
गजन   अनी के मन   रजन गनी के,
दुख भजन दुखी के औ इन्द्र अवनी क हो।

रस पीयूषनिधि 1/20



जगमगें   आभा जाके आनन कलाधर सी,
आधौ सो   अमद अग कुदन बरन है।
बुद्धि को निधान   औ प्रधान गुनवतन मे।
भूपति के   सिर को अनूप आभरन है।
सील जस मदिर श्री कुवर परताप सिंह,
सोमनाथ   मित्रन विनोद   विस्तरन है।
सकट हरन है   अरिंद   प्रहरन सदा,
हिंद को सरन   है कविंद   को करन है।

माधव विनोद 1/.2



आठौ जाम नित चड करते उदड जग है।
जगतु प्रताप मात दीप नवखड है।
सील समुद्र श्री कुवर परताप सिंह।
सोमनाथ षहे शुद्ध सुजस अखड है।
विजय घमड जाके भरे भुजदडनि म।
मडन मही को मल मडन प्रचड है।

रामचरित्र रत्नाकर सुंदर कांड 30/49

प्रताप सिंह की आज्ञा सो सोमनाथ ने काव्य शास्त्र के प्रसिद्ध ग्रंथ 'रस पीयूष-निधि,[1] अरु अनुवाद ग्रंथ 'रामचरित्र रत्नाकर'[2] एव 'राम कलाधर'[3] की रचना कीन्ही ही।

प्रताप सिंह के पुत्र बहादुर सिंह के पासऊ सोमनाथ कू रहवे को औसर मिल्यो हो। बहादुर सिंह की प्रेरना सों कवि ने माधव विनोद' नामक लोकधर्मी नाटक को प्रनयन कीनो हो। सिकार प्रसंग बहादुर सिंह को कवि न स्मरन कीनो है—

सजि दल चलतु बहादुर जब,
खेलन सिकार बन विकर उदारे की।
सोमनाथ कहे तब्बै पब्बय खिरत,
रनु दब्बै मरतडहि तुरग हुरतारे की।
उथल पुथल महि मडल सकल हेतु,
डग मग डिटढ डाठ अडिगड डारे की।
माधव विनोद-1/18

'माधव विनोद' के पैले अंक के छ 18 म कवि ने सुजान सिंह के पुत्र जवाहर सिंह कोऊ उल्लेख कीनो है। परोक्ष रूप सों 'नवाबो विलास' रचना के आधार पै नवाब आलम कू सोमनाथ के आश्रयदाता की सूची मे सामिल करिबो तक संगत है। सोमनाथ के अपने आश्रयदातान सों बडे मधुर संबंध रहे है। प्रतापसिंह अरु सूरजमल मे कई दफै मन मुटावऊ है गयो हो पर सोमनाथ के दोनून सो बराबर नेहसिक्त संबंध रहे। दोनू अपने बुजुग आदरनीय के रूप में सोमनाथ को आदर करते है।

---

1 सो यह कुंवर प्रताप को हुकम पाय सविलास।
रस पीयूषनिधि ग्रंथ को वणन सहित हुलास।-रस पीयूषनिधि 2/10

2 श्री बदन सिंह ब्रजमडल नाइक जग जाको जस छायो।
ताको कुवर प्रताप सिंह वर आनदनि अधिकायो।
तिहि निमित्त कवि सोमनाथ ने रामचरित्र बनायो।
सग किष्किंधा काड नाम वर बास भयो सुहायो।
राम चरित्र रत्नाकर—किष्किंधा काड सग 62

3 इति श्री म महाराज कुमार यदुकुलवलस श्री प्रताप सिंह हेतवे माथुर कवि सोमनाथ विरचिते अध्यात्म रामायण भाषायान रामकलाधर बाल काडे अयोध्यापुर प्रवेशन बनन नाम अष्टम मयूष।

सोमनाथ को राष्ट्र प्रेम-- सामन्ती युग म प्रत्येक व्यक्ति अपन राजा या सामत के राज्य की सीमान कू ई अपनी मातृभूमि मानते हे। वाकी रछा अरु वाके प्रति प्रेम एव समपन की भावना सोमनाथ के युग की राष्ट्रीयता ही। सोमनाथ को बचपनो मथुरा म व्यतीत भई अरू सेस भाग डीग अरु वैर म रहके व्यतीत भयो। अत सोम-नाथ के काव्य म अपनी धरती ब्रजभूमि के प्रति पग पग प स्वाभाविक स्नेह छलकतो चले है--

याजन इक्कीस के प्रमान ब्रजमडल म।
छहू ऋतु महके सुगध मकरद की।
रस पीयूसनिधि--1/22

ग्रामनि म द्रुम पुज निकुज प्रफुल्लित सौरभ की भरनी है।
चारु प्रभाकर की तनया अरू चार पदारथ की फरनी है।
नित्त जपे ससिनाथ हियें जहँ की रजपावन की टरनी है।
लोकन या बरनी करनी दुख की हरनी ब्रज की धरनी है।
तिहि ब्रज मडल मध्य है, दीरघ नगर प्रकास
अब ताको वरनन करो मडित हियें हुलास।

सोमनाथ न सुजान विलास म उपयुक्त काव्य पक्तीन क अन तर मधुभार छन्द म डीग नगर के तत्कालीन वैभव को बड विस्तार के सग बनन कीनो है। वैर के विसै मे 'रस पीयुपनिधि' ग्र थ म कवि के भाव दखो--

सु दर सफल चहु ओर दखत बाग,
अबिद मडित सरोवर हेम के।
बसें चार्यो वण जितया जालिम सों,
राचे प्रेम रग साचे बचन सुदेस के।
जगमग गढ महामहल विलब तहाँ,
राजे श्री प्रताप मानों उदय दिनेस के।
आठहू पहर तहँ मोद नित नरे होत,
वैर पर वारौं कोटि सहर धनेस के।
रस पीयूपनिधि--1/23

यर के विस म कवि को जि वनन आजऊ देखो जाय सके है। चारो तरफ पडन को हरियाली अरु अन्य उपकरनन क अवसेस आजऊ मौजूद है। प्रतापसिंह के महलन

मे छात्रन को स्कूल चल है। म्हा आजऊ एक कमरा म पलग अरू तलवार धरे भये हैं। जहा प्रताप सिंह को आवास मानो जाय है। हिन्दी के यशस्वी उपन्यासकार स्व डा रागेय राघव क पुरखा प्रतापसिंह द्वारा स्थापित सीताराम जी के महत हे। डा राघव को परिवार आजऊ वैर म या मदिर को महत है।

प्रकृति अरु जीवन पद्धत्ति—महाकवि सोमनाथ की प्रकृति बडी रसिक अरु सौन्दय प्रेमी ही। व सुन्दरता के हामी हे। बिनके रसिक सुभाव के विसै मे 'सुजान विलास' ग्र थ को एकई उदाहरन पर्याप्त होयगो—

सहज विलोकनि चित चुरावे, मृगनैननि निज प्रगट सुभावै।
अरु मुसक्यानि कटाछवि मारे, तब नर कैसे धीरज धारे।

लिपिबद्ध जीवनी के अभाव मे साहित्यकार के व्यक्तित्व की विसेसतान अरु बाके साहित्य म व्यक्त भाव एव विचारन के आधार प विवेचित कियो जाय है। सोमनाथ अपने कृतित्व क आधार पै सुभाव सो अत्यधिक सरल अरु विनम्र सिद्ध होय है। विनै अपनी रचनान मे स्वय के दभ कू व्यक्त नाय कीनो। अपन ग्र थन के प्रारम्भ म कवि परिचै मे बिनै स्वय अपने हाथन सो अपना जो परिच काव्यबद्ध कीनो है वाते ई तक स्वत सिद्ध हे। वे हमेसा जग जगै लिखे है के मैंने जो कछू लिखो है वू सुकविन के ससग को परिनाम है सगई बिनै गुनी व्यक्ति की परिभामाऊ दे दीनी है।[1] कतिपय स्थानन पै वे तुलसी की तरिया सज्जन अरू दुजन दोनून कू सादर प्रनाम करते भये अपनी विनम्रता को परिचै दे है।[2] द्वै राजपरिवारन के परस्पर वैमनस्य होते भयेऊ सोमनाथ दोनून के कृपाभाजन रहे। याके मूल मे द्वै कारन है। प्रथम तो सोमनाथ बदन सिंह के आयु के हे। पिता की आयु के प्रबल विसवासी हैवे के कारन सोमनाथ के सबध सुजान सिंह अरु प्रताप सिंह दोनू मो स्नेह भरे हे अरु दूसरो याके पाछे सबन ते बडो कारन हो सोमनाथ

---

1 (क) माथुर कवि शशिनाथ की सुकविन को परिनाम
भूल होय सो सोधियो यही गुननि को काम।— कृष्ण लीलावती 5/75
(ख) जो कछू भूल्यों होऊ तो लीजो सुकवि सुधार—सग्राम दपण—छन्द 500

2 (क) सज्जन अरु दुजनिहु को मेरी प्रणति अनेक—शशिनाथ विनोद 5/68
(ख) सज्जन दुजन को सदा, सहस गुनी परनाम।
दया कीजिए दीन लखि, सोमनाथ को नाम— रस पीयूषनिधि—2/11

को स्वय विनम्र के सग मग थवऊ विवादास्पद नाय रह् । 'रसपीयूषनिधि' म एक स्थान पै कवि ने आश्रयदातान के प्रति अपन सुभाव र परिनाम को उल्लेख कीनो है–

वचन महूप ऊप परम पीयूप हू त
बालत मधुर ही के नैम ही म बम य ।
आदर अत मुक्तावलि पै चाह यार
जिनका न ओछ काज ह्रदये क चसके ।
नीर छीर यारे दर्सानन समथ मदा,
सोमनाथ कहे कहू काहू पै न कसके ।
मानसर वर राजवरा कवि राजहस,
है इस इलाज औ समाज मजलिस क ।

सोमनाथ भाग्यवाद की अपेक्षा कर्मवाद अरु व्यक्तित्व की कर्मठता प ज्यादा जोर देते हे । भाग्यवादी भूतकाल की घटनान को स्मरण करत वर्तमान के प्रति आसावान होते भये भविस्य के रगीन सुपने दखे है । पर सोमनाथ तो कम मे बिसवास रखत ह । याई कारन बिन्ने 'सुजान विलास' ग्र थ मे या सत्य कू या तरिया स्वीकारा है–

गजी जु वस्तु सोर तासु नकुनाहि किज्जयै ।
विचार होनहार को न चित्त मांझ लिज्जियै ।
जु वतमान होय सो समो प्रवीन पाय कै ।
कर विलास भाव ते विषाद को बहाय क ।

सोमनाथ की प्रतिभा विविध विसयन को ग्यान — सोमनाथ द्वारा सरजित ग्र थन के पारायन सो ग्यात होय है के इनकू कारयित्री अरु भावयित्री प्रतिभा के एक महान् प्रतिभान को वरदहस्त प्राप्त हो । सस्कृत ब्रज के ता ब प्रकाण्ड पडित हे ही सगई 'प्रेम पच्चीसी' के आधार पै विदित होय है के व पजाबी भाषा केऊ ममज्ञ ग्याता हे । ज्योतिस बिनकू अपने पिता अरु बाबा सों विरासत म मिली हो । आश्रयदाताप्त सोमनाथ क सस्कृत भासा के ग्यान को विभिन्न सस्कृत क ग्र थन के ब्रज म अनुवाद करवा पत्र म ज्यादा उपयोग कीनो । अगर आसयदाता सोमनाथ सो मौलिक ग्र थन की रचना करवात तो कदाचित हिन्दी कू या प्रतिभा द्वारा विसेस दुलभ ग्र थ प्राप्त होते, जद्यपि इनको अनुवाद कायऊ हिन्दी भासा के वैभव मण्डन म अद्वितीय है । या मत मे द्वै राय नाय है सब । राज्याश्रय म रहते भय सोमनाथ ने काव्य सास्त्र के बजोड ग्र थ 'रसपीयू–

पनिधि' की रचना करी है अरु 'माधव विनोद के रूप म लोकधर्मा नाटक एव शशिनाथ विनोद', 'ध्रुव विनाद' सोसक सो खण्डकाव्य लिखे हैं। शशिनाथ विनोद' तो स्यात रीतिकाल को एकमात्र सिवकथा प आधारित प्रब ध काव्य है। राम भाव की व्यजना बिनके 'रामकलाधर' 'राम चरित्र रत्नाकर म भई है तो कृष्णभाव के सयोग वियोगमय सुरूप क्रमस ब्रजेन्द्र विनोद', 'कृष्णलीलावती अरु 'प्रेम पच्चीसी मे भई है। 'प्रेम पच्चीसी' म सुफियाना अदाज म सवैया छद म पजाबी भासा मे प्रेम पीर की अभिव्यजना जा अनूठे ढग सो करी गई है। बानै हिन्दी साहित्य म ब्रज के वियोग प्रेम म फारसी प्रेम पद्धति की परम्परा ते हटकें एक अलग सरस पथ को निर्मान कीनो है। रस पीयूषनिधि' मे राम कृष्ण, हनुमान शिव शक्ति के विभिन्न प्रसगन को ग्र थ के प्रारम्भ अरु लक्षण के उदाहरन म प्रयोग करके कवि ने अपने मन के सिगरे देवतान के प्रति भक्तिभावन कू प्रकट करिबे के सग सग जेऊ सिद्ध करिबे को प्रयास कीनो है के आराधना के नाम प चाए अलग अलग नाम दिये जाये पर आराध्य के प्रति व आत्मा की चेतना के स्तर मे भेद नाय। 'शशिनाथ विनोद' शक्ति की आराधना को पावन प्रब धकाव्य है जो रीतिकाल की भक्तिकाव्य की एकमात्र बेजोड कृति है। कवि को धार्मिक सहिष्णुरूप 'नवाबाविलास' मे चरमोत्कस रूप मे मिले है जब वे हिन्दू त्यौहारन के सग मुसलमान त्यौहारन को सजीव बनन करै हैं। महाकवि सोमनाथ स्यात या काल के एकमात्र ऐसे कवि है जिन हिन्दू मुसलमानन के भेद कू समाप्त कर दोनू के त्यौहारन को बनन करके साम तवादी युग मे ब्रज म रहते भये काव्य की नई मानवीय चेतना कू अपनी कविता मे उतारो है। बकरीद उत्सव मनाते आजम खा गाजी के प्रति कवि के भावन मे हमारे उपयुक्त तर्क कू अब आपई जाँच ल्यौ—

पडित परमगुन पडित विविध धनिय,
उच्चरत विमल कवित्त कुनवेस के।
निरनत अनेक नृत्यकार क्षमत गनि,
गावत सुधर सम किन्नर सुभेग त।
सोमनाथ कहत गुबार की चहू घारु,
चायन सो चतुर नरेस देस देस के।
आजम खाँ गाजी की विलोक बकरीद आज,
फीके होत सुदर समाज अमरेस के।

सोमनाथ कू मुस्लिम त्यौहारन के अतिरिक्त ज्योतिस सास्त्र अरु ग्रह नक्षत्र की गतीन कोऊ भारी ग्यान हो। बिनको 'सग्राम दपन' ग्र थ विभिन्न कायन का सटीक मुहूर्त, युद्ध जीतवे के सगुन विचार अरु ग्रह नक्षत्र की गतीन को मानवीय सुभाय एव

युद्ध के सास्त्रीय पग्य की वडाई विस्तार ते वनन कीनो गयो है। सुजान विलास मेऊ स्थान स्थान पै कवि की परिपुस्टित ज्योतिस ग्यान मुखरित भयो है। अकाल के विस पै कवि के ज्योतिस ग्यान की एक झाँकी देखो—

राहिन ते रवि पुत्रवत्र ह्वै भुज के घर म
आवे तो दुभिक्ष होय नहि गमे घर म—सुजान विलास 25/19

सूदन की तरिया सोमनाथ ने इतिहास के घटनाक्रम कू तिथिवार रूप म लिखवे म रूचि नाय दिखाई। वस विन अपने ग्रंथ 'रामचरित्र रत्नाकर' म वर नरेस अरू सोमनाथ के आस्रयदाता प्रतापसिंह द्वारा 24 दिसम्बर सन 1737 कू भोपाल मे निजाम अर मरेठान के संग भये युद्ध म निजाम की तरफ त युद्ध कीनो हो। कवि ने 'दच्छिन ते निजनाम जगाय बजाइ क मीर निजामहि लायो' क रूप म प्रताप सिंह के युद्ध क क्रियाकलापन को उल्लख कीनो है।

सोमनाथ को आचायत्व— महाकवि सोमनाथ को रसपीयूपनिधि ग्रंथ रीतिकाल को ऐसो बेजोड ग्रंथ है जामे काव्य-सास्त्र के दसांग पच्छ को वडी सुबोध सरस एव गाम्भीय सली म विवेचन भयो है। या ग्रंथ कू कुल बाईस तरंगन म विभाजित कीनो है। ग्रंथ की सुरूआत गनेस वदना सो भई है। अगल छंद म कवि ने अपने आस्रयदाता प्रतापसिंह के इस्टदेव 'जै श्री रघुनायक हौं। चारयौं फल दायक, दुलारे दसरथ के हमारे प्रान प्यारे हौ' की वदना करी है अरू सवक समीपी रघुवर बलवंत के' के रूप मे हनुमान जी एव मुरली बजया ब्रजमोहन बरसैया आई क रूप म स्याम सुंदर की वदना करी है जा तरिया पली तरंग म सात छन्दनमे गनेस, राम, महादेव अरू कृष्ण वदना पाछे 17 पदन मे राजकुल ब्रज राजसभा अरु नगर वनन कीनो गयो है। दूसरी तरंग म ग्यारह पद्य है जिनम सोमनाथ ने अपनो परिच दीनो है। तीसरी ते पाँचमी तरंग तानू मात्रा अरु छंद सास्त्र अरु विविध छन्दन पै विस्तार ते विवचन कीनो गयो है। याम कुल 185 छन्द है। छठी तरंग के पले बारह छंदन म काव्य लच्छन, प्रयोजन काव्य सरीर अरु काव्य भद की सक्षेप म चरचा करी गई है। सातवी सो आठवी तरंग सों कुल चार सौ सत्ताईस छंदन म धुनि को विवेचन भयो है। कवि ने असलक्ष्यक्रम' ध्वनि क भेद के रूप म नवरस नायक नायिका आदि हाव भाव आदि को विस्तार ते वनन भयो है उन्नीसवी तरंग म काव्य दोसन को 47 छंद माहि निरूपन भयो है। इक्कीसवी तरंग मे 16 छंदन म गुन अरु सब्दालंकार को 40 छंद माहि निरूपन भयो है। आखरी तरंग म 303 छंदन मे सब्दालंकार को विवेचन भयो है याके अलावा सिंगार विलास सीसक सो कवि ने एक अन्य ग्रंथ कीऊ कवि ने रचना करी है। या ग्रंथ म रस अरु नायक नायिका निरू-

पन कीनो गयो है । जि ग्र थ 'रस पीयूषनिधि' ग्र थ के रस प्रकरण की प्रतिच्छाया है । यामे ज्यादातर छ्न्द 'रस पीयूषनिधि' केई ह् ।

महाकवि सोमनाथ ध्वनिवादी आचाय हे । सामनाथ की ध्वनि सिद्धात आचार्य विस्वनाथ सो अनुप्रेरित है । सोमनाथ न 'सगुन पदारथ दोष बिनु' साहित्य कू सच्चे अथन में कविता मानो है । सामनाथ पिंगल मत अविरुद्ध' अर्थात छ्न्द सास्त्र के विरुद्ध कविता कू सही अथ न मे कविताई नाय मानें । 'भूषनजुत' कवि कम कू कवि ने आखिर म सच्चौ कवित्त कह्यौ है । आचाय सोमनाथ न गुन कू कविता मे प्रथम लिखौ है जब के मम्मट न दोस रहित काव्य कू काव्य परिभासा के अ तगत मानौ है । सोमनाथ की परिभासा पोजिटिव है मम्मट की नगेटिव एप्राच माहि आवै है । निस्कस मे निवेदन है के आचाय सोमनाथ जैसे रीतिकाल के गिनती के ब्रज साहित्य सेवी हैं जिन काव्य सास्त्र के सिगरे भागन को एक स्थान प विवेचन कीनो है जैसो सोमनाथ न रसपीयूष मे कीनो है । मम्मट की तरिया सोमनाथ न उत्तम मध्यम अर अधम भेद कीने है । दखौ सोमनाथ के उत्तम काव्य को लक्षण—

साझ ही ते नेंम करि नवल दुकूल सजे,
लहलहे फूलनि की पाँखुरी हरति है ।
सोमनाथ प्रीतम सुजान के वचन पर,
अति ही प्रतीति याते नेंकु न डरति है ।
बीरी बनवाइ कै रचाइ अधरनि आछ,
अतर मगाइ ए उपाइनि करति है ।
पौरि तन उर म अनद भरि इन्दुमुखी,
घूँघट उघारि दृग चचल करती है ।

सोमनाथ ने काव्य सास्त्र के गूढ विचारन कू समझायबे म ब्रजभासा गद्य को प्रयोग कीनो है । उपयु क्त लच्छन के मडन म कवि के गद्य को नमूना देखो—

'यहा वासक सज्जा नाइका व्यगि है और घूँघट उघारिबे ते प्रकास व्यगि और दृग चचल करीबे ते बेर-बेर पौरि तन देखिबो व्यग औरहू बहुत विग है या कवित्त म ।'

सोमनाथ के उपयु क्त काव्यन के मूल्याकन सो लब्बोलुआब जि है के कवि की हि दी साहित्य की दैन कू सदा याद कियो जायगो । आचार्यत्व, प्रब ध पटुता, अनुवाद

अरु नाटक कला के संग संग ज्योतिस जैसे विसय को सोमनाथ नू व्यावहारिक ग्यान [आखर आखर अनुराग
हो। प्रबन्ध पटुता म सिव काव्य के रूप सक्ती को थीम नू लियो भयो इनको 'दाजिनाथ
विनोद हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि है। कृष्ण लीलावती' म इन वैष्णवी भक्ति
नू चरम उत्कस पै पहुँचाया तो संगई प्रेम पच्चसी' म सूफयानी प्रेम कू श्री कृष्ण के
क्रम म पैली दफै वनन करके हिन्दी साहित्य म नई परम्परान की सुरुआत करी है।
संगई कवि को रस पीयूषनिधि ग्रन्थ काव्य सास्त्र को ऐसो दुलभ ग्रन्थ है जाम दसाग
कविता को सुबोध सैली म वनन कीनो गयो है।



काव्य सौरभ

सुरसुति–

कमर बयारिन सी सरसै जग मंगल स नृप की पटरानी
नेहमयी अनुरागमनी ब्रज जीवन म महक रसखानी।
तोर धरे जग के सब बंधन मोन्छयी छवि म मुसकानी।
या विधि सो भर दै रस सागर जीवन मे मधुरी जगरानी।



भर द उर म जग की जननी नव भावन की सरिता हरसानी।
कल्पना उपजै उमगै हिय सी नित नेहमयी भर द सुभवानी।
अनुराग धुरे अमि भाव भरे सरसै भर क खिलत सब प्रानी।
मन क सुर म भर द ममता मतरग सनी मिसरी जगरानी।

अग्यात कवि चतुरा अरू बिनको पथैन रासौ

ब्रज भासा के अग्यात काव्य 'गढ पथैना रासो' की अबई हिन्दी साहित्य म चर्चा नाय भयी। भरतपुर सहर तैं तीस किलोमीटर पच्छिम मे पथैन नाम को एक गाम हुत। जाके जागीरदार सारदूल सिंघ के पुत्रन ने सम्मत 1833 म सफतरजंग पोता अरु अवध के नवाब के बीच भयानक जुद्ध करौ हो। छोटे से जागीरदार के छोरा अर बिनके भैय्या बन्दन ते अपने साहस, मर मिटबे वारी बीरता तैं, टिड्डी दल की तरकी बिसाल सैंना कूँ धूर चटाय कैं बिनकी ताकत के गब को मान मरदन कर दीनो हो। जाई जुद्ध को आखो देखो बनन पथैना रासो' म भयो है। जि जुद्ध साहस को जद्ध हुतौ, अपने प्रानन प खेलबे को जुद्ध हुतौ, सामई खरी मौत कूँ आलिगन कर धीरज धरके वीरन की तरै मन मिटबे क प्रखर सकल्प को भयानक जुद्ध हुतो। कौन ऐसो होयगो जाके समाई साच्छात मौत खरी होय, बाके दूध पीमत अबोध बच्चान कूँ अरु पूरे परिवार कूँ ग्रमबे बारो काल मौहडो फलाय खडो होय पर अपनी आन, अपने साहस अरु अपन पिता के नाम की तर वीरता दिखाबे की ललक तैं अपन सब कछु कूँ दाव पै लगाय कैं जुद्ध म कूद परे। सली, अभिव्यक्ति अरु जुद्ध बनन की निगाह तैं चतुराराय को पथैना रासों बिल्कुल सुजान चरित्र' की फोटों कापी लगै है। पथैन के जा जुद्ध मे भाग लेवे बारे भौत से बीर तीस वरस पैले सुजान सिंघ क सग अनेक जुद्धन म भाग ले चुके हुतैं जाको सूदन ने अपन सुजान चरित्र म उल्लेख करा है। सूदन के बिसै म मिश्र ब धुन ने लिखो है—'दिल्ली और दक्षिण दलों की दुर्गति को जो चित्र सूदन ने खीचौ है, वह बिल्कुल ठीक फोटो ग्राफी कैमरे की कृति सौ है।" मिश्र बन्धुन के सामई पथना रासौ नाय आयौ हो। अन्यथा वे जाके बिसै मेऊ जाई भासा को प्रयोग करते।

बिदवानन की निगाह मे चतुराराय —हिन्दी साहित्य के ग्रन्थन म चतुरा की प्रसगबस चरचा मात्र भई है। नागरी प्रचारिनी सभा की खोज रिपोट्टन म 'पथैन रासो' को नाम आयौ हुतै। भरतपुर राज्य के पले अनजान कविन पै लिखौ गयौ, डा मोती लाल गुप्ता के सोध प्रब ध "मत्स्य प्रदस की हिन्दी साहित्य को देन" म बिचारे चतुरा को नामऊ नाय आ सको है। सिवसिंह सैंगर मिसर बन्धु आचाय राम चन्द्रर सुक्ल बाबू स्याम सुन्दर दास, डॉ रामकुमार वर्मा, डॉ गनपति चन्द गुप्त, डॉ हजारी प्रसाद दिवेदी एव नागरी प्रचारिनी सभा तैं प्रकासित हिन्दी के बिभिन्न इतिहासन म

चतुरा कूँ जगे नाय मिली। ताज्जुब की बात तौ जो हुतै कि डा सत्येन्द्र जी के 'ब्रज साहित्य का इतिहास मैंऊ चतुरा छूट गयौ। चतुरा पे विस म सबते पहले याज्ञिक बन्धुन ने सन् 1927 व माधुरी पत्रिका म जे सबद लिखे हुतैं—"चतुरा राय ने पथैना रासौ नाम का एक छोटा सा प्रबन्धक वीर काव्य रचा, जिसम पथैना निवासी सादूल सिंह के वंसज ठाकुरो की अद्भुत वीरता का वर्णन है।"[1] भरतपुर हिन्दी साहित्य समिति के प्रकासित "स्वर्ण जयन्ती ग्रन्थ" के "भरतपुर कवि कुसुमांजलि" भाग मेऊ चतुरा प प्रकास डारौ है। जाम लिखौ है—"यह जाति के ब्रह्म भट्ट थे और महाराज भरतपुर के आश्रय म रहते थे – कवि न बड़ी ओजपूर्ण भाषा म इस युद्ध का वर्णन किया है और साथ ही भरतपुर के महाराजाओ की वंसावली का बखान करते हुए ऐतिहासिकता का परिचय भी दिया है।[2] हिन्दी म यम चतुरा पै इतेकई चरचा भई हुतै। जा चरचा मैंऊ कई बात नवकन न अपनी मरजी तैं लिख दीनी हुत। जैसे चतुरा न 'पथैना रासौ म एकऊ जगे ई नाय लिखौ हुतै कि वाको भरतपुर राज दरबार तंऊ संबंध हतो।

जनम —चतुरा क जनम अरु मरन क बिस म प्रमानिक सामगरी को नितान्त अभाव हुत। कवि की बस एकई रचना मिली है और बु है 'पथैना रासौ। जा ग्रन्थ मऊ कवि न अपन बिसैं म केवल नाम के सिवाय कछु नाय लिखौ है। कवि न जुद्ध की तिथि का सही उल्लेख करा है। जाते पथैना रासोकार को इतिहास के पच्छ म प्रबल रुचि प्रमानित होय, म्हा दूसरी तरफ बाके जनम के विसय मैंऊ थोरो सो प्रमान को आधात मिले है। भासा भाव अरु सैली के तत्वन के आधार पै जा अनुमान लगावे के प्रति कोई विरोध नाय रह है कि कवि ने जा कृति कूँ अपन पूर उभरत जोबन म सरजित करी ही। पात्रन की परस्पर वातालाप अरु वीरन द्वारा जुद्ध मैं भाग लैबे को आँखिन देखौ कवि को कियौ गयौ चित्रन ई सिद्ध करै है कि चतुरा ने जुद्ध भूमि मे तरवार लेके एक सिपाई की तरे भाग लियौ है। सूदन ने चतुरा के विसय म लिखौ है —

चतुर चतुर चिरजीव चतुरार है—सुजान चरित्र–पृ 2 छ 5

'यमक अरु 'चिरजीव विसेसन तै चतुरा के जनम के विसय म कछु प्रमान दीखैं है। सूदन चतुरा को काव्य प्रतिभा त भौत प्रभावित रह्यौ। याही कारन ते वाने यमक

---

1 माधुरी सन 1917 को अंक प 83

2 भरतपुर कवि कुसुमांजलि (सूदन काल) पृ 45

ते वाकी प्रससा करी है। "चिरजीव" में सूदन को चतुरा के प्रति प्रेम छलक रह्यो है अरु ई प्रमानित है रह्यो है कि सदन निस्चेई वाके गुरु रहे हुगे।

समत् 1810 की मराठे अरु सुजानसिंघ की जुद्ध की तैयारी पै आय के 'सुजान चरित्र' खतम है जाय है। जाको अरथ भयो कि समत् 1909 तक के कबिन को सूदन न अपने ग्रन्थ में नाम उल्लेख करो है। चतुरा के अलावा सूदननैं अपने सग के वाल किसन, बसीधर मोहन आदि कविन के नाम गिनाये है। पर वाने चतुरा के सगई ' चिरजीव" सब्द को प्रयोग करो है। यातैं सिद्ध होय है कि चतुरा सूदन को सिस्य हो। जा समै जी पक्ति लिखी जा रही वा मौकें पै चतुरा की उमर सोलह बरस की रही हागी।

जा हिसाब ते पथैना रासो लिखने समै चतुरा की उमर चालीस बरस की हती। अत वाको जनम समत 1793 के आस पास होनो चइये।

आकार —"पथना रासो' ग्रन्थ म कुल तीन जग हतैं। इन जगन कूँ फिर खण्डन मे विभाजित करो गयो है। पली जग मे दो अक है अरु क्रमश सैतालीस अरु इक्हत्तर छद है। जग दूसरी म तीन खण्ड है जाम क्रमस तेईस, छत्तीस और पैंतीप छन्द है। जग तीसरी सबते बडी हतैं। जाम छ खण्ड है जो क्रमस बारह बीस, छत्तीस, तेईस छत्तीस और सैतालीस छन्दन मे विभाजित हतैं। या हिसाब ते ई रचना कुल तीन सौ सत्यासी छन्दन म लिखी गई है।

पथना रासो की कथा —कवि ने ग्रन्थ की शुरुआत कविता की अधिष्ठात्री देवी सुरसती अरु मगल के देवता गणेस के स्मरन ते करी हतैं।[1] जा के पश्चात कवि ने भरतपुर नरेसन की बसावली को चित्रन कियो है। जाई ठौर पैं वाने पथैना के वीर सामन्त सादूल सिंघ की प्रचण्ड वीरता की भूरि-भूरि प्रससा करी है। सफतरजग के पौना सहादत अली ने पथैने पैं चौथ वसूल की नीयत ते आक्रमन करबे कूँ आगरे ते कूँच कीनो। पीछे कवि ने सहादत अली की सेना और वाके अस्त्र सस्त्रन को विस्तार ते वनन कीनो है। सादूल सिंघ के चौदह छौरान कोऊ कवि ने स्मरन करो है। पहोपसिंघ वैर ते सहायता कूँ बहादुर सिंघ के ढिग जाये। बानैं चार हजार रुपय्या चौथ के दर्कें सुलह करबे की सलाह दीनी पोहप सिंघ वापिस पथैने आए है। पथैने के वीरन न परस्पर विचार करकें जुद्ध करबे को निनय लयो तथा

---

1 सुमरन सादर माय को गनपति को सिर नाय।
छद पथने को कियो चतुरा राय बनाय॥ —जग प्रथम

भय्याबदन कूँ जुद्ध म भाग लवे को नोतो भज दीनो। जुद्ध सुरु भयो। कुम्हेर ते मानसिंघ कूँ बुलायो गयो। बु दो सो वीरन के सग सहायता कूँ पथन आ पहुचे। जात नबाब घबरा जाय। वू इतकूँ सुलह कर चार हजार रुपइया देवे की सलाह फिर दव। पथैना के वीर जाये नाय माने। जुद्ध होय और बामे सहदत अली की भारी हानि हाय है। नबाब फिर बरी सैना कूँ वर के पास ते बुलाय ले। पहोपसिंघ कूँ करौली राधे जी के पास भेजो जाये। पहोप सिंघ को समाचार नाय आन। पथैने के वीर आखिरी लराई कूँ तैयार होम अरु अपने पुरोहित कूँ बुलाय क बिनके जुद्ध भूमि म परे टूटे सरीरन कूँ चिता देम की कहम और घर की बय्यरन को सती है वे को इतजाम करवे को निवेदन करैं। बितकूँ मराठान के सनापति राघोजी पहोप सिंघ को स्वागत करके सहायता देम। पथना क वीर केसरिया बानो धारन करके जुद्ध म कूद परे। घमासान जुद्ध भयो पहोप सिंघ वीरन के सग आ जाय और अ त म सहादत अली पराजित है जाये।

पथना रासो के जुद्ध बनन—पथना रासो अपनी बात अरु आन पै मर मिटवे वारे बीरन के जुद्ध क करतब त भरो परो है। एक तरफ नबाब सहादत अली की बिसाल सैना ही जा अनक राजान क गव कूँ रोन्दती भई पथना प चढ आई, दूसरी तरफ मुटठी भर पथैना क लडवैया हत। पथैना के इन बीरन ने सुजान सिंह के सग अनेक जुद्धन म भाग लियो हो। वे बिना जुद्ध करे चौथे बसूली कसे करवे दते। बिनके सामै पिता सारदूल सिंघ को उदाहरन हतो जाने भरी सभा मे बालाजी बाजीराव कूँ फटकार दीनो, जाय सुनकें जयपुर सहर को निर्माता सवाई जयसिंह तलक घबरा गयो हो।[1] जाई बज ते पथन के बीर वर वेर एकई बात कहे है।

(क) बिना जुद्ध तो भूमि छोडी न जाई कहा जीवते जगत करि है हसाई जग।"

(ख) सारदूल क बंस को रक्षक है भगवान एक बार मरनो हमे दूजी लगे न बार।

(ग) दाम एक नहि दहिग बिना किये सग्राम।

चतुरा न सबन त पैल सहादत अली की सेना को बनन करो है। दखो एक एक उदाहरन—

सिपाही सजील वडे सल राव।
मत्र सी मावस लिये भारी बाव॥

1 पदु वम—गगा सिंघ पृ 101

लीये राम चगी महागर मगरवे।
चलो कूच दर कूच साज सवारी।
उमड़े चहु आर मो फौज भारी।
नही वीर जानो तनक सो पथना।

जाई तरै पथेना क वीरन को कवि न जा प्रकार हाल लिखो है—

खल खण्ड क खूटेल आये मुच्छ ऊचे को किये।
ढूं ढूं धरे तरवार तीखी चाव अरिन को हिये ।।

बलवान तोफा आइयो ल साथ चाहर सग ही।
जो सबै रन समरथ बली अरि काटि डारै जग ही।

तुला जाट नवला बली भैसेन के सूर।
दाखिल गढ भीतर भये जिन मुख बरसत नूर ।।
नन्दाराम जादो तई आवन भयो सिताब।
सेखावत कछवे खरे तेग प ताब ।।
सिन सिन बार सुहावने ठौर-ठौर सो आई।
राम राम सब सो करो पहुच कचहरी जाई ।।

कवि ने 'पथना रासौ' मे जुद्ध की आखिन देखो बनन करो है। जाय पढिकें ऐसी लगे जसे जुद्ध की फिलम आखिन के सामई चल रही होय। एक एक बीर को नाम लै लै क जुद्ध को बनन कियो गयो है। ऐसो जुद्ध बनन सुजान चरित्र' के अलावा बिरज साहित्य मे अन्यत्र मिलिबो दुलभ हतै। प्रमान कू कछू उदाहरन देखो—

हु ओर ते तुरक न यही बढायो भार।
मेद सिघ आयो तबै ज्वान बीस भिसग ।।
फरसे पाय अडाय के रूपे एक ही सग।
उत सुजान ऊपर गयो बाधें तीर कमान।
भइया बेटा भानजा करन लगे घमसान ।।

चले बीर आये अली के जुझारू।
माया राम ता ठौर आयो अगाऊ।

चलाये दुधारे कैऊ मीर मारे।
भयो ज्वान जख्मी तऊ नाई हारे।
वही रत्नसिंघ ममा ठैर ह्याही ॥

जा जुद्ध मे चतुरा कवि नेंऊ आगे बढि बढि क विरोधीन के छक्के छुडावे मे अपनो तरवार के कौसल दिखाये हे। चतुरा की कमल तेई देखो—

खूटैल एक तोफा वह चतुरा सामिल भयो।
वरना बारे मारचा इन सबन कठिन मो हरा लयो।

पथैना के लडवय्या जा भूमि कू कैसे छोड सकते। ई धरती बिनकू जुद्ध की बीरता की उपलच्छ तेई तो मिली ही। जुद्ध क कारन मिली भूमि कू बिसाल सैनाय देख कै छोरबे की तो जि अरथ होय कि जा वज ते मरदारी ही बाई कू छोर दे। नबाब को वकील सवाई राम जब पथैने के वीरन कू अपनी मधुर बानी ते जुद्ध छोर कै चौथ दैबे की सलाह दे तो किसनसिंघ को छोरा साफ मना कर दे। चूंकि —

सुन रे सबाइ राम तो सो कही नेऊ बार है।
मान मनाये नही हम बाजे बिना तरवार है।
यह भूमि भूप सुजान हमको दई नेऊ साख सो।
ताको छोडन बन हम नै जग जोरें लाख सो।
दीनी दिली पति नैं नही जानैं नही मन सूर को।
महिपाल आप सुजम दीनी धरा यह सारदूल को।

बा समै पथने के बीरान की साख प्रिचण्ड वीर पुरुसन म गिनी जाये ही। उत्तर भारत म अनेक नरेसन अरु दुर्रानी तलक की मरदानगी को मरदन करिबे बारो सुजान सिंघ के सघ जान हथेली प लरैं लरिबे बार अनेक बाके बार पथन कऊ हुतै। बिनम ते पहोपसिंह किसनसिंघ, मर्दसिंघ, देवीसिंघ रामचन्द तोमर धौंकलसिंघ फतेराम, मानसिंघ अबई जीवित हते। इन सबन की अद्भुत बीरता के अनेक प्रसग 'सुजान चरित्र' म आय हैं। व अपनी बीरता की साख कू नबाब की बिसाल सना के सामई हथियार डार कै कैम समर्पित कर मकें है। जाई वजै त सौध मब्दन म दूत कू कह दे—

मागत ही दीना बकस साख न दीनि जान।
पर यगा अब तक रही अब राख भगवान।

जाई कारन वे थोरे से मुट्ठीभर वीर आखिरी सग्राम कू ई कह कैं तयार है जाये । सबन की बात सुनिकैं रतनसिंघ राय प्रकट करैं जाय सुनिक पथैने के सबते वीर 'वाह वाह' कहिकैं वाकौ पूरो समर्थन करै है —

केसरिया पगडी पहर, काट मे कत्ता दोई ।
बरछी ढाल सम्हार कैं, मिलो सबरा होई ।
बैठि बिहारी पौरि पैं दरस लेव बृजराज ।
काटि काटि तुरकान सिर चलो लोक सुरराज ।
वाह वाह सबनै कही, भली कही बलवान ।
हम हू मरि है साथ ही, जैस कही सुजान ।

रनतसिंघ कू एयई बात की चिंता हती कैं वे तौ सवेरे लरतें लरते मर जामिगे पर घर की बैयरन कौ का होयगो । वाकी निगाह मे बिनके मरिवे के पस्चात् घर की सब बैयरन कू जौहर कर लैनो चइये ।[1] तत्काल चोबदार कू भेज कैं मदन पुरोहित बुलायौ जाय । बाके सामई हाथ जोर कैं रतनस कहे है—

कर जोरि तव रतनस बोल्यो आज लो रच्छा करी ।
चलि आई सीस सुहावनी कल कठिन कालऊ की घरी ।
दवैं काम सरि है आई सा, सो आप खूब निभाइयो ।
मन भूल चूक बिसारि अपनो जान दव सम्हारियो ।
हम भोर ही सब स्वरग चढ़ि है छोरि गढ तिय आपको ।
जैसे चहौ जौहर लगइयो लाज इनकी आपको ।
फिर जाइ रन थल रुड मुडन सोधि सोधि सम्हारियो ।
दैं दाह भइयन कौ भलो गढ बैठ काज सम्हारियो ।

किसनसिंघ आखिरी समै अपन कुल दवता विहारी जी कू माथो नवावे जाय अर परस्पर भैया आपस म मिलैं । अपने पतिन की आखिरी दफे घर की सबई बय्यर आरती करै है । बिनके मन मऊ भौत उत्साह हतौ । जा उत्साह कू कवि ने देखो विवेक सही भाव ते प्रकट करो हैं —

---

1 हम मरि है यह नीक उपाई कहा होई इन तियन उपाई ।
मेरी समझ उचित यह नीको, जौहर करि मरि है सब पीतो ।।

गावत गीत सुहावने चलि आई वहि थान ।
जहा खड़े रन रस सने बीर बहादुर ज्वान ।
कीनी आरती पतिन की मन्द मन्द मुसकाई ।
मिलै नाथ सुरलोक मे हमहु वेरो धाई ।

जामे भैयाऊ पाछ न ई—

किये मात सब सुतन के टीके चार बनाई ।
रन कंकन बाधे भुजा चले तुरत सिर नाई ।।

अपने प्रानन कू हथेरी पै सकै, केसरिया बानो पहरै, माथे पर मैया अरु भोटिया के तिलक एवम् हाथ रच्छा सूत्र पहिर आखिरी जुद्ध लरिबे जाते इन बीरान को चित्रनऊ कवि ने बरो बिसाल अरु उदात्त कीनों है । प्रमान के उदाहरन मे एकई छ द भोत हतै—

चले वीर जोधा सबै सूर धाये मानौ काल व्यालउ लोटे मढ़ाये ।
परी धूम चारो दिसा धूप टात चने फन्न मानौ बिसधर निकाले ।
बिकट सार पड़ी चहु धान लानी सहादत न कही जग ठानी ।

ऐतिहासिकता—पथना रासो की ऐतिहासिकता की निगाह तेऊ बरो महत्त हतै । याम सम्वत् 1833 के जुद्ध को बरनन हतै । 'पथेना रासो' म जिन बीरन के नाम बीरता के ओर दिखाइवे म आय हैं जिनमे ते अनेक सुजानसिंघ के बिभिन्न जुद्धन म याबें सग रह चुके है । सुजान चरित्र म किसनसिंघ[1] पहोपसिंघ[2] मर्दसिंघ[3] को नाम जगै जगै प मुद्धन के प्रसंग म आयो हत । किसनसिंघ ने जवाहरसिंघ कऊ सग युद्ध म भाग लीनो हो । *सूदन कवि ने सम्वत् 1824 के जवाहरसिंघ अरु परमालन के बीच भये* जुद्ध बरनन म अपनी रचना कहरिया रासा म किसनसिंघ की बीरता की भूरि भूरि

---

1 सुजान चरित्र—जग 4, अक 6 पृ 85 जग 3, अक 4 पृ 33

2 जग 5, अक 3, पृ 121, जग 6, अक 6 प 121

3 जग 6 अक 5, पृ 208

प्रसंसा करी है ।[1] 'सुरजान चरित्र' के अनुसार डीग मे मराठान के विरुद्ध जुद्ध मे मेदसिंघ कू सुजानसिंघ ने किले मे चौथे मरहला पै नियुक्त करौ हो ।[2]

'पथैना रासौ मे जगै जगै किसनसिंघ आदि बीरन की सहादत अली कू धिक्कारौ है। सुजानसिंघ के सग पथैन के बीरन न बुरे दिनन मे अपनी सरन आये सफतर जग की भौत सहायता करी हो। अवध के नबाब के सफनर जग ने जब मुगल बादशाह के विरुद्ध बगावत करी ही तो सुजानसिंघ ने अपने बीर सामन्त सरदान के सग दोस्ती के नाते बाकी सहायता करी ही ।[3] गाजीउद्दीन ने सूरजमल कू सफदर जग कौ पच्छनई लैबे के भौत प्रलोभन दीने और धमकीऊ दीनी पर बाने जाकी नेकऊ परवा नाय कीनी। मई 1753 ई कू सूरजमल की सेना ने दिल्ली कौ लाल दरवज्जौ तोरि कै सहर मे प्रवेस करयौ। इतिहास प्रसिद्ध जा दिल्ली लूट म पथैने के बीरन नेऊ सग दीनो हो।[4] फिर 18 नवम्बर, सन् 1767 म जवाहरसिंघ के नेतृत्व मे पथैने के बीरन कू दिल्ली लूटबे कौ फिर अवसर मिलौ हो। जाई बात कू पथैना रासौ' म पहोपसिंघ बेर-बेर बहादुर सिंघ के सामई कह है--

हम दिल्ली केऊ बार लूटी और लूटौ आगरौ।
कोका बहादुर लूट लीनौ नीलकठ उजागरौ।
हम रारि गगा पारि मडी सग सफतर जग के।

जनवरी 1753 म बजीर सफतर जग की सहायता ते कोइल के फौजदार बडगूजर के विरुद्ध सेरजमल की तीन महीना पाछै मिलिबे बारी विजय कोई ऊपर की पक्तीन मे उल्लेख करो है।[5]

सूरजमल के साथ पथैना बीरन ने सफनरजग की भौत सहायता करी ही। अवध की जागीर दिवाबे मेऊ इन बीरन न अपने प्रनान की बाजी लगाय के साग दीनो हो। जाई तरफ 'पथैना रासौ' मे रतनसिंघ इसारौ करे है—

---

1 बीर काव्य–डा टीकमसिंह, पृ 334
2 सुजान चरित्र पृ 224 यदुवस-प 253
3 मुगल साम्राज्य का पतन सरकार पृ 294
4 सूदन पृ 184–85
5 सरकार–पृ 294

उन कीन हमस रखी वा पुरखन की लाज ।
हम दीन दिलवाय दी गयौ अवध कौ राज ॥

अर अन्त म तौ ठाकुर रतनसिंघ जा बात कू यहाँ तक कह है—

कहियो सवाई राम साची बात एक नवाब सौ ।
तेरो पितामह राखि लीनौ हमहि वीर भुजान सौ ।।

लीनी वजारत ओधि छीनी जोय कही सुजान सौ ।
तब हमई दिल्लीपति दबायौ राखिब वा सान कौ ॥

जा अन्त तक मानत रह्यौ बड बन्धु सिंघ सुजान कौ ।
जा हृदय सौ मानत रह्यौ उपकार वीर भुजान कौ ॥

अब आज इत नवाब जू आयो यहा क्यों कहि कै ।
सौ बार धिक्कार तुझको और तेरे नाम कौ ॥[1]

'पथेना रासौ' की हिन्दी जगत म अबई चरचा नाय भई है। जा ग्रन्थ ते बा समै के इतिहास की अनक घटनान पऊ प्रकास पडे है। प्रसिद्ध इतिहासकार आसीर्वादि-लाल सिरीवास्तव न 'अवध क दो नवाब' ग्रन्थ मे म०ादत अली कौ बनन करौ है पर बामऊ नावब के जा जुद्ध कौ बनन नाय भयौ है।

---

1 पाठान्तर—तेरे बाप का



प. नन्दकुमार शर्मा के काव्य कौ मूल्याकन

आधुनिक काल मे भरतपुर राज्य म भौतेरे ब्रजभाषा के ऐसे कवि कलावत अरु साहित्य सेवी भये हैं जिन्नै जीवन भर ब्रजभासा के मच सो मैया सुरसुती की अभूतपूव सेवा करी है । आजादी पाछे ज्यो-ज्यो ब्रज के वाग्विदग्ध कवि सम्मेलन अरु वचन वक्रता के कविता पाठ के लालित्य की कला को रिवाज कम होतौ गयौ त्यों त्यों प्रबल साधना के स्कूल सों निकरे तपानिष्ट साहित्य सेवीन की उपक्षा के कारन ब्रज को ललित साहित्य धीरे धीरे विगत युग की कथा बनातौ चलौ गयौ । जनता की माग अरु प्रोत्सा-हन क अभाव म सदीन की प्रतिभान की तपस्या सो अर्जित ब्रज की काव्य कला ममज्ञ कम हैते चले गये । पढत की परम्परा ब्रज की अपनी एक ऐसी विसेमता ब्रजधरा की रही है जाम बाल्यावस्था सों पुराने ब्रज कविन की विसयानुसार श्रेष्ठ कविता याद करा दई जाती ही । एक एक विसै पै सैकडन छद याद करवाये जाते हे । होरी के औसर पै परम्परागत काव्य दगल जन रुचि कौ रजन के सग सग जनता म मगल कू चरितार्थ करते ह । सहरन मे काव्य क्षेत्र मे गुरू परम्परा की कई साला ब्रज के हर सहर मे चलती ही । इन गुरुन के चेलान मे परस्पर समस्यापूर्ति के आधार पै दगल होते हे अरु जनता श्रेष्ठ कविता पूर्ति के आधार पै का य गुरन को यश चतुर्दिक फैलतो हा । या तरिया की परम्परा धीरे धीरे समाप्त सी होती चली गई ।

पुरानी परम्परान की साधना के तेज सों निकरे अर जीवन भर ब्रजभासा म साहित्य सेवा करिव बारे भौतेरे साहित्यकार अबई अग्यानई बन भये हैं । इन साहित्य कारन मे भरतपुर अनाह गेट मे जनम लने बारे प न द कुमार शर्मा ब्रजभासा के ऐसेई कवि है जो जीवन भर एकनिस्ट भाव ते अपनी अनुभूतीन के नयनाभिराम सौरभ कू ब्रज कविता के विभिन्न रगन म बिखेरत रहे । कछु परिस्थिती अरू मन सी वैराग्य के हामी नन्दकुमार जो कू जीवन के अतिम समै मे लौकिक ससार सो पूण वैराग्य है गयो हो । जा कारन घरबार सम्पति अरु सब कछू त्याग के ये सन्यासी है गये । वैराग्य के कारन ये इतेक उदासीन हे गये के इन्नै जीवन भर ब्रज कविता के जो हजारों पन्ना लिखे हैं बिनकी साज सवार नाय है सकी । इनके कई सिस्यन्नै पण्डित जी के साहित्य कू अपने सग रख लीनों । भरतपुर के लोगन के कठन मे इनके कछू छद रह गये जो इनके

मुख के काव्य-पाठ के सबै सुनवे याद रह गये हे। आज ऐसे लोगऊ या दुनिया ते कूच कर गये जिनकू पण्डित जी के श्रेष्ठ छन्द स्मृति म स्थान पाये भये हे। गत बीस बरस ते हम पण्डित नन्दकुमार जी के काव्य के सकलन मे लगे भये हैं। पी एच डी की खातिर जब मैं सन् 1966 म वर भुसावर अरु भरतपुर के पुस्कालय अरु लोगन के घर घर धूर म लिपटे पुरानी पाण्डुलिपिन के बस्तान कू खोल खोल के पुराने साहित्य की खोज म लगो भयो हो तो वा समै मोय भरतपुर के कई अजाने ब्रज कविन म प नन्द कुमार जी के कछु कवित्त अरु सवया देखवे कू मिले। बयाना अरु वैर मे मोय कछु पना मिले जिनम प नन्द कुमार शर्मा के कछ छन्द उतरे भये है। याई समै भरतपुर के ब्रज के अपने समै के प्रसिद्ध वयोवृद्ध कवि सूयनारायण शास्त्री जीनैं अपनो साहित्य वतायवे की किरपा करी। सुन्दर आखर म लिखी एक कापी म पाँच सात छन्द नन्दकुमारजी केऊ विनके पास मिले। इन छन्दनैं मेरे मन की नन्द कुमार जी के साहित्य की खोजी उत्सुकता कू औरऊ बढाय दीनी।

अचानक एक दिना जयपुर मगवाल पाक स्थित प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान' म पाच हजार छन्दन के एक बेजोड ब्रजभाषा ग्रथ के विसै म प्रतिष्ठान के सचालक आचार्य रामचरण व्याकुल जी ते सूचना मिली। मैंने म्हा जाय के देखो तो जि अन्त्याक्षरी कल्पद्रुम मीसक सों प नन्दकुमार जी को लिखो भयो ऐसा अदभुत ग्रथ हो जाके विसै स साहित्य जगत कू अबई जानकारी नाय मिली ही। ग्रथ की प्राप्ति आदि के आधार प वा स्थान की सही जानकारी मिली जहाँ प नन्द कुमार जी के सिगरे ग्रथन की जानकारी मिली है। विस्मय है क ब्रजभाषा को ऐसो समथ सेवी अब तान् अज्ञान म कैसें पडा रह्यो या विसै प सबसों पैल आधिकारिक जानकारी ब्रज-शतदल के प्रवसार म राधा कृष्ण कान्त के एक सक्षिप्त लख के माध्यम सों साहित्य जगत कू पलो रूपे दीनी गई।

प नन्दकुमार जी को जनम कातिक सुक्ल पूनम कू स 1960 तदानुसार सन् 1903 कू प्रतिष्ठित सनाढ्य ब्राह्मण कुल म अनाह दरवज्जे म पिता विशम्भर नाथ के घर भयो। इनके पिता को देहान्त बाल्यावस्था मई है गयो। इनकी मैया न कठोर तपस्या करके अपन एकमात्र पुत्र का लालन पालन किया। इनकी मैया बडी व्यावहारिक अरु साहित्य प्रेमी ही। तुलसी दास की रामचरितमानस को नित्य परायण थोडी भौत पढी इनकी मैया की नित्य की धार्मिक साधना ही। मैया क मानस के पाठ की धार्मिक साधना ने बालक नन्दकुमार जी क म हित्य के अनुराग की प्रारम्भिक सुरुआत करी। 'रामचरितमानस' के नियमित पाठ द्वारा म वनगमन, लक्ष्मण शक्ति जसे मार्मिक प्रसगन सामनो सिसकती मैया के हृदय के साहित्यकार के भावनें बालक नन्दकुमार कू इतनो प्रभावित कीनो क मानस की एक एक पक्ति विनके काव्य की प्रेरना को स्रोत बन

गयी। शिक्षा के नाम पै विनें एट्रेंस परीक्षा पास कीनी हो। प्रभाकर, साहित्य रत्न की विसेस योग्यता प्राप्त करके भरतपुर स्टेट की प्रेस की नोकरी कीनी। पत्नी को नाम कमला हो। इनके कोई संतान नाय भई। सन् 1953 के आसपास पहले पत्नी अरू फिर मैया को देहान्त है गयौ। साहित्यकारन के बीच उठनो बैठनो, दिन रात काव्य सृजन मे दत्त चित्त रहनो अरु इनते जो कछू समै बचतो वामे विद्यार्थीन कू हिन्दी पढनो ये पण्डित नन्दकुमार जी को एक प्रकार सो व्यसन बन गयो हो। दिन भर हुक्का पीनो। एक खटिया पै पण्डित जी लैटे रहते। राजा महाराजा की तरियां हुक्का की नली पास रहती। पढाते या कविता करते हुक्का गुडगुडाते रहते। हुक्का की तमाखू जब चुक जाती तो जब तानू नयो हुक्का तैयार होतो तब तानु इलायची अरु सुपाडी चबायवो बिनकी दिनचर्या को प्रमुख अंग हो। दिनभर बीच-बीच मे चाय की चुस्की अरू सजा कू कविता कामिनी के उपासक कविन के संग भंग पीनो अरु ता पाछे भंग की उमडती-घुमडती तरंग मे एक पै एक तैरते कवित्त सवयान की ठुमकती बहार ते इनको छोटो सो मकान गूंज उठतो हो। घर के काम-काज अरु पत्नी की मीठी मनुहार को पण्डित जी के पास समैई नाय हुतो। परिनाम स्वरूप इनको गृहस्थ जीवन कछु तो कविता कामिनी की दिनरात आराधना अरू कछू वीतरागी वृति के कारन वियोगी सोई रह्यो व्रज कविता के भावन के संसार म खोय या प्रतिभा के धनी कवि की कविता कामिनी की आराधना की सप्तपदी को जि हाल हो कै घर मे रहते भये सालन तक पत्नी ते इनकी परस्पर बातचीत नाय होती ही।

पत्नी ने पति के पास रहते भये घुट-घुट के वियोगी बनके अपनो सिगरो जीवन व्यतीत करके मौत को आलिंगन कर लीनो। सन् 1953 मे पत्नी अरु मैया के देहात के पाछे नन्द कुमार जी के हृदय मे संसार ते मन उचट गयो अरु इनै संन्यास ले लीनौ। भरतपुर अनाह दरवज्जे बाहर गोल मोल की बगीची इनकी साधना स्थली बन गयी अरु अब वे पण्डित नन्दकुमार शर्मा ते सन्त गुरूमुखदास उदासीन बन गये। यही रहते भए पण्डित जी ने सम्वत् 2018 सन् 1961 मे या लौकिक संसार को त्याग कर दियौ।

श्री नन्दकुमार जी अपने समय मे लौकिक संसार मे पंडितजी के नाम सों जनता के बीच सम्बोधित किये जाते हे। हमकू इनके लिखे छोटे-मोटे इक्कीस ग्रंथ मिले हैं। इन ग्रंथन म सात अरू आठ छंदन के अलावा पाँच हजार छंदन तक बेजोड ग्रंथ 'अत्याक्षरी कल्पद्रुम' तक है। पण्डित जीनें ज्यादातर व्रजभाषा मेई काव्य लिखो है पर बीच बीच मे हिन्दी भाषा की कविता वेऊ इनकी काव्य पुस्तकन मे हमकू दरसन भय हैं याके अलावा इनैं भरतपुर के प्राचीन साहित्य संकलन मेंऊ काफी प्रसंसनीय काम कीनो है। भरतपुर हिन्दी साहित्य समिति के मंच सों जब या क्षेत्र मे साहित्य कू लैंबे

एक इतिहास ग्रन्थ लिखवे की योजना बनी ही तो डीग के निवासी अरु भरतपुर म सेवारत वैद्य स्व देवी प्रकाश अरु पण्डित न दकुमार जी ने वरसन तक भरतपुर के घर-घर जायके प्राचीन पाडुलिपि एकत्रित करके कवि के व्यक्तित्व अरु कृतित्व विषयक सूचना एकत्रित करी ही। इन सूचनान के आधार पै ई आगे चलके हिन्दी साहित्य समिति ने अपनी स्वण जयन्ती के औसर पै भरतपुर कवि कुसमाजलि' सीसक सो या छैत्र के साहित्य को इतिहास प्रकासित कीनो है। पण्डित जी के सिस्य कवि राधाकृष्ण सो प्राप्त इनके समग्र साहित्य व अन्य स्रोतन ते हमकू जो इनके लिखे पन्ना मिले है वाके आधार पै इनके रचित इक्कीस ग्रन्थन के नाम या तरिया हैं।

(1) श्री राम विवाह
(2) रुक्मिणी परिणय
(3) श्रोता वक्ता लकन
(4) ज्ञान प्रदीप
(5) भावत भागीरथ
(6) श्री गोवधन लीला
(7) नेत्र पच्चीसी
(8) उद्धव गोपी कुब्जा शतक
(9) अलकार परिचय
(10) श्री राधाकृष्ण सवाद
(11) श्री राधिका नख शिख
(12) पीयूष प्रवाह
(13) रम्भाशुक सवाद
(14) श्र गार तिलक
(15) अष्टावक्र
(16) अत्याक्षरी कल्पद्रुम
(17) भरतपुर को इतिहास
(18) व्रजपति चरितामृत
(19) पच परिजात
(20) गुरुमुख सतक
(21) ऋतु सौन्दय

इन ग्रन्थन म अलकार परिचय पण्डित जी के कवि के आचाय कम को प्रतिनिधि रचना है। या ग्रन्थ मे कवि न प्रमुख 99 अलकारन को विस्तार सों सुबोध सैली मे लक्षण अरु उदाहरन दीनें हैं। प्रत्येक अलकार को सव प्रथम विस्तत विवेचन कू एक छोटे से दोहा द्वारा पण्डित जी लक्षण समझाबे हैं। दोहा म उदाहरण सों पुन लक्षण की पुष्टि करी जाय है। पुन वे सवया छन्द मे लक्षण कू पुष्ट करते भये उदाहरन और दे हैं। कई ठौर तो वे एक उदाहरण सों जव सतुष्ट नाय होय तो पुन कई उदाहरन सो अलकार के लक्षण पुष्ट करे हैं। अलकारन के उपभेदन कीऊ गिनती करी जाय तो वाकी सख्या भौत ज्यादा बढ जायगी, जिनको विस्तार सों या ग्रन्थ म विवेचन भयो है। 'होत है सुदीठ जाप गिरिजा के लाल की' अरु वाहिनी है विद्या की अविद्या नासिनी है' जैसे भावन सों ओत प्रोत घनाक्षरी छन्दन मों कवि अलकार शास्त्र की अपनी या

आचाय-कौशल की रचना को आरम्भ करे है। बीरन की हुकार, धनु की टकार, अरु वीणा की झकार की जीवन के विविध पक्षन में उपयोगिता सिद्ध करते भये कवि काव्य कानन मे मधु ऋतु लायबे कू अलकारन की उपयोगिता बताय के याके प्रयोजन कू सार्थक करे है।[1] शब्दालकारन म अनुप्रास, यमक श्लेप आदि के बनन करि पाछ कवि अर्थालकारन पै आ जाय है। इनके द्वारा विवेचित अलकारन के भेद उपभेदन को नामकरण अरु बनन या क्रम सो है—

उपमा, पूर्णोपमा, लुप्तोपमा, धम लुप्ता, वाचक लुप्ता, उपमान लुप्ता, वाचक धमलुप्ता, धम उपमान लुप्ता धर्मोपमेय लुप्ता, धमवाचकोपमान लुप्ता, मालापमा 1 धर्मा, भिन्न धर्मा, समुच्चयोपमा रसनोपमा 2 उदाहरण 3 अनन्वय 4 उपमेयोपमान 5 प्रतीप प्रथम प्रतीप-द्वितीय प्रतीप तृतीय प्रतीप, चतुथ प्रतीप पचम प्रतीप 6 रूपक अभेद, तद्रूप, सम अभेद अधिक अभेद न्यून अभेद सम तद्रूप अधिक तद्रूप न्यून तद्रूप साग निराग परपरित 7 परिनाम 8 उल्लेख प्रथम द्वितीय उल्लेख 9 स्मरण 10 सन्देह 11 भ्राति 12 उत्प्रेक्षा वाच्यावस्तु उक्त विपया, अनुक्त विपया, हेतु उत्प्रेक्षा, सिद्ध विपया प्रसिद्ध विपया, फलोत्प्रेक्षा प्रतीयमान 13 अपह्नुति-शुद्धा-हेत्वा पर्यस्ता छेका कैतवा भ्रात 14 अतिशयोक्ति रूपक भेदक, सम्बन्ध असम्बन्ध कारक अक्रम-चपल-अत्यन्त 15 अत्युक्ति 16 तुल्ययोगिता प्रथम द्वितीय तृतीय 16 दृष्टान्त 17 दीपक 18 आवृति दीपक पदावृति-अर्थावित्ति पदाथवृत्ति 19 व्यतिरेक अधिक न्यून सम 20 विरोधाभास 21 प्रतिवस्तूपमा 22 निदसना प्रथम-द्वितीय-सदय असदय-माला 23 सहोक्ति 24 विनोक्ति प्रथम द्वितीय 25 समासोक्ति 26 परिकर 27 उपमा 28 परिकराकुर 29 अप्रस्तुत प्रससास्वरूप्य निबन्धना-सामान्य निबन्धना विशेष निबन्धना-कारण निबन्धना- कपि निबन्धना 30 प्रस्तुताकुर 31 पर्यायोक्ति प्रथम-द्वितीय 32 व्याज स्तुति निंदा मे स्तुति स्तुति मे निन्दा अन्य स्तुति मे अन्य स्तुति 33 व्याज निंदा 34 विभावना प्रथम द्वितीय-तृतीय-चतुथ पचम पष्ट 35 असम्भव 36 विशेपोक्ति अचित्य निमित्ता-उक्त निमित्ता अनुक्ति निमित्ता 37 असगति प्रथम द्वितीय ततीय 38 आक्षेप प्रथम द्वितीय-तृतीय 39 नियम प्रथम द्वितीय तृतीय 40 सम प्रथम द्वितीय ततीय 41 विचित्र 42 अधिक प्रथम द्वितीय-ततीय 43 अल्प-प्रथम द्वितीय 44 अन्योन्य प्रथम-द्वितीय ततीय 45 विशेप प्रथम-द्वितीय तृतीय 46 व्या-

---

1 अरि उर तावन को क्रूरन भजावन को, विरद बढावन ज्यो बीरन की हुकार।
मेदिनी कँपावन को सिन्धु उफनावन को, अचर चलावन ज्यों धनु की हो टकार।
सुख सरसावन कों सुधा बरसावन कों, हिय हरसावन को ज्यों वीणा की झकार।
त्यों ही काव्य कानन मे मधुरितु लावन को सुमन खिलावन कों पावन अलकार॥

—अलकार परिचय पाण्डुलिपि

घात प्रथम द्वितीय 47 करण माला-प्रथम द्वितीय 48 एकावलि 49 माला दीपक 50 सार-प्रथम द्वितीय-तृतीय 51 यथा सख्य 52 पर्याय प्रथम द्वितीय 53 परिवत्ति प्रथम द्वितीय 54 परिसख्या 55 विकल्प 56 समुच्य प्रथम-द्वितीय 57 कारक दीपक 58 समाधि 59 प्रत्यनीक 60 काव्यर्थापत्ति61 काव्यलिंग पदार्थ हेतक काव्यार्थ हेतक 62 अर्थातरायस प्रथम द्वितीय 63 विकस्वर 64 प्रौढोक्ति 65 सभावना 66 मिथ्याध्यवासिति 67 प्रहपण प्रथम द्वितीय-तृतीय 68 विषाद 69 उल्लास 70 अवज्ञा 71 अनुज्ञा 72 लेश 73 मुद्रा 74 रत्नावली 75 तद्गुण 76 पूवरूप प्रथम-द्वितीय 77 अतदगुण 78 अनुगुण 79 मीलित 80 सामान्य 81 उन्मीलित 82 विशेष 83 गूढोत्तर 84 चित्र 85 सूक्ष्म 86 पिहित 87 व्याजोक्ति 88 गूढोक्ति 89 विवतोक्ति 90 युक्ति 91 लोकोक्ति 92 छेदोक्ति 93 वक्रोक्ति काकू श्लेष 94 स्वभावोक्ति 95 भाविक 96 उदात्त 97 निरुक्ति 98 प्रतिषेध 99 विधि ।

[आखर आखर अनुराग

नन्दकुमार जी को ज्यादातर अलकार लक्षण अप्पय दीक्षित के 'कुवलयानन्द सों प्रभावित है । बिन्न समझायवे कू सवप्रथम लक्षण कू दोहा ते पाछै बिन्नै सवैया के माध्यम सो लक्षण कू समझायवे को अनुकरणीय प्रयास कीनो है । यथा पूर्णोपम को लक्षण या तरिया इन्नै समझायो है—

वाचक धर्मुपमान युत, होय जहाँ उपमेय
ताको देखत ही कवी पुर्णुपमा कहि देय।

यथा

आनन चन्द्र समान समुज्ज्वल कोकिल से मृदु बन उचारैं ।
दीठ फिरावत ही तनके मनके जनके सब ताप निवारैं ।
देत सदा फल चार उदार गुनौगुन ओर न रच निहारे ।
मूढ कहो तिहि सौं वढ़ि को अस स्वामिनि राधिका पाय बिसारैं ।

कई स्थानन पै बे एक अलकार कू कई-कई उदाहरन सो समझाम है । हतुत्प्रेक्षा के सन्दभ म दखो उदाहरन—

जह अहेत म हेतु की सभावना दिखाय ।
तहाँ हेतु उत्प्रेक्षा, दीजै तुरत बताय ।

यथा

ग्रीष्म तप तापित दहैं, नतरू काम की ज्वाल ।
लाल बसे इन दृगन मनु, भये याहि सो लाल ।

अब औरऊ स्पष्ट करते भये वे या तरिया द्वै उदाहरन और दे हैं हेतुत्प्रेक्षा को—

प्राण मिलै न कहू मन को जित देखहु जात तितैंहि जर्‌यो है ।
धूरि सो पूर मही नभ लौं बन बागन जीवन हू उजर्‌यो है ।
सीतलता तहखानन मे कछु देख मन अनुमान कर्‌यो है ।
बीज मनों हिम को भुइ गोइ उगाइवे को बिधिना नें धर्‌यो है ।
आली गये जब सों मथुरा घनस्याम हियें बिच लागी दरार है ।
नीके लगै सुख साज न ये अरू फीकौ लगै सब ही घर द्वार है ।
सॉंध सकै नहिं कोटि उपाय अर्‌यो बिच आय वियोग पहार है ।
ननन नीर है जात बह्यौ इहि हेतु मनो इहि जीवन सार है ।

या ग्रन्थ मे कवि ने 97 अलकारन को बनन कीनो है ।

अगर इनके भेद उपभेदन की चर्चाऊ करी जाय तो जि सख्या सैंकडन ते ऊपर पहोंच जायगी । अलकार लच्छन अरु उदाहरन द्वारा वाय समझावे को पडित जी को तरीका ऐसो सहज अरु सरल है के पढवे बारे के मन के भीतर तानू अलकार के अर्थ ते प्रगट हैवे बारो मधुर सौरभ सीधौ प्रवेस कर रोम रोम कू महकाय दे है । वचन चातुरी सौं काय सम्पन्न है जाय म्हा सुगधित पर्यायोक्ति अलकार के नीचे लिखे उदाहरन मे अब तुमई देख ल्यो हमारे मत को समथन अरु प्रमाण—

मान किये अलि वैठ रतै कस देखत काहि न दीठ उठाय है ।
भागन सों गन भावन पायकें सो सतराय के औसर जाय है ।
बातन बाद बढाये कहा कछु आय न हाथ वृथा पछताय है ।
योग सयोग बन्यो भल क्यों न हिये हरपाय के अक लगाय है ।

मन नई भर्‌यो होय या हमारे तक सो आपकू अबई वी या विसबास नई भयौ होय तो एक उदाहरन और देखो सामान्य सो विसेस की पुष्टि करतो अर्थान्तरन्यास अलकार को एक उदाहरन–

रीति यही खल की पर वैभव फूटिहु आंखन देख न पाय हैं ।
और को देख बुरो न मरैं मन नेक न फूलेहु अग समाय हैं ।

आपुनी नाक कटै कट जाय पै आन की जान कुसो न कराय है।
पावस देख हरयो सिगरो जग द्वेष सो अक जवास जराय है।

पडित जी को दूसरो वेजोड ग्रथ है 'अन्त्याक्षरी कल्पद्रुम'

पाच हजार दोहा छद के या ग्रथ मे ब्रजभाषा म एक एक आखर पै अन्त्याक्षरी प्रतियागिता के प्रतियोगीन के हिताथ या बिसाल ग्रथ की रचना करी गई है। कवि ने 'अन्त्याक्षरी कल्पद्रुम' नूँ सबसो पहलै 'ह' व्यजन सो सुरू करो है। दोहा के अन्तिम वण सो कवि ने गिनती सुरू करी है। जैसे 'ह' अक्षर ते दोहा को अतिम पद समाप्त होय है तो तैंतीस व्यजन के हिसाब सो ऐसे द्व-द्व जोडान सो दोहा बनाये गये हैं। यथा दाहा वे पदात 'ह' को क्रम या तरिया है—

अ-ह, इ ह, उ ह ए ह, क-ह, ख ह, ग ह, घ-ह, च ह, छ ह, ज ह झ ह-ट ह ड ह, ढ ह, त-ह, थ ह, द ह, ध ह न ह प ह फ ह, ब-ह भ ह म ह य ह, र-ह ल ह, स-ह, ह ह। या तरिया प्रत्येक व्यजन के पदात के 62 62 दोहान के हिसाब सों 2790 व्यजन के अरू 12 स्वर म प्रत्येक के 62-62 दाहान के हिसाब सो 744 दोहा है। इनके अलावा 5 आदि जसे कठिन व्यजन के दोहा या अद्भुत ग्रथ मे है। जैसे—'पदात' ह के कछु उदाहरन देखो—

अ-ह

आधि व्याधि सो भरयो यह, विश्व प्रपच लखाहि।
जो इनसों बचनो चहै, हरि चरनन चित लाहि।
आगत को स्वागत करत जो नहिं हिये उमाहि।
अस पाहन हिय के निकट, सुजन भूल नहिं जाहि।

इ-ह

इष्ट विना सब भिष्ट है केतहु जतन कराहि।
विना लक्ष्य साधन न, कोउ तीरदाज बनाहि।
इच्छा करतहि सुकृति की मन अभिलाष पुजाहि।
कमहीन के मनोरथ, मन के मनहि विलाहि।

उ–ह

उलटे पथ प्रसार ना फूले अग समाहि ।
इन सुधारवादीन को अकर सुकर कछु नाहि ।
उठत न केते मनोरथ, दुबल के उर माँहि ।
पैं जल बुद बुद सरिस सब, उठ उठ तुरत विलाहि ।

ए–ह

एकहि रूप अनूप जो, प्रतिबिम्बित जग माहि ।
किंतु लखहि बुध बृंद सो, मूरख जानत नाहि ।
ऐरे गर की कहा, विधि हू जाय थकाहि ।
मूरख कों उपदेश दै पण्डित कोन रहाहि ।

क–ह

काल बली सो बचहि को, जो जनम्यौ सो जाहि ।
जो दसमुख बदी कियौ, गयौ ताहि हू खाहि ।
कमलापति कौ द्वार तज, दर दर वाद भ्रमाहि ।
काम धेनु तज मूढ सो, छेरी फिरत दुहाहि ।

ख–ह

खल जन बीछू एक, सम याम नहि सदेह ।
बिन स्वारथ मारग चलत, औचक ही डस लेह ।
खूनस हिये जब सुभत है किहु बिधि निकसत नाहि ।
अहि फण कटक लौ, भल अग-अग गर जाहि ।

ग–ह

गणिका गणिक दुहुन मे भेद लखै कछु नाहि ।
दोनों ही पजाग की, सदा कमाई खाहि ।
गोली खाये हू लसे, लाखन वीर बचाहि ।
पै बोली की चोट सो, बचत न देखे जाँहि ।

घ–ह

घरनी घर के द्वार लों घेपल सग निवाहि ।
परिजन मीत मसान लों आगें वहु पो जाहि ।
घास पात तृन सात जो, तिनम इतो सनेह ।
पटरस व्यजन हू भसत, वादहि मानव देह ।

च–ह

चिवुक अधर नासा नयन, भृकुटि विलास अथाह ।
कु चित केसन भँवर पर, मन नहि पावत राह ।
चलत सलत पिडुरी थकी, सिथिल भई सब देह ।
तऊ अजों ना लखि परयो वा प्रियतम को गेह ।

छ–ह

छिद छाती छलनी भई, रह रह निकसत आह ।
कल न परैं पल एक हू छ्य छ्य मह चाह ।
छिद्र पराय सब लखै, निज औगुन न लखाहि ।
ज्या लोचन सबको लखैं, निज को देख न पाहि ।

ज–ह

जाके जुता जार है, तासो सबहि डराहि ।
इकसो लखि लगूर ज्यो बानर जूथ पराहि ।
जब सों निज निज धम पँ चलन दियो बिसराहि ।
तब सो दुख दारिद्र जग- दिन दिन बढतो जाहि ।

झ–ह

झूठ साँच कर जार धन मूरख मनहि सिहाहि ।
नष्ट भये ताके पुन, कर मीजँ पछताहि ।
झर छोटी मोटी लगँ सो, जल सो बुझ जाहि ।
लाग जो प्रलयागनी, कौन बुझावँ वाहि ।

ट—ह

टूटे हिय पुन जुरत ना, लाख जनाहु सनेह।
बीतराग है जो कढत, पलट न आवत गेह।
टुटत तनिक सी ठेस सो, दरपन इक छिन माहि।
खात चोट पै चोट पै धिक हिय दरकत नाहि।

ठ—ह

ठौर कुठौर न देखि हैं जलधर बरसैं मेह।
त्यो सत जन भाव सों, सब पै करत सनेह।
ठसक-ठसक ही म मरत, फशन अमित बनाहि।
धन कलजुग के सूरमा, नित उठ औषधि खाहि।

ड—ह

डाट सुनत जाकी बडे, सूरन धीरज जाँहि।
धन तिनकी सतान को, अब श्रगाल घुर्राहि।
डार नवहि फल भार सो, सतजन विभव नवाहि।
खल जन सतत खजूर सम, अधिकाधिक सतराहि।

ढ-ह

ढके दबे हिय भेद कों अश्रु प्रगट कर देह।
अस घर के भेदीन को, रखै कौन कहु गेह।
ढकत न तन ना उदर भर, दर ठोकर खाहि।
तापै जो अपने बनत, निसदिन आख दिखाँहि।

त—ह

तुला चढत ऊपर उठत, हलको अति गर वाहि।
पै भारी भरकम सरिस, नवत भूमि लग जाहि।
तन बल धन बल विभव बल जेते बल जग माहि।
तप बल के आगे सबै बल निरबल पर जाँहि।

थ–ह

थर थर कांपत सबल लखि निबल निरख घुर्राहिं ।
अस अवसर बादीन के जन्म भ्रमत ही जाहि ।
थक्ति रहे लख रवि शशिहु रति पतिहू सरमाहि ।
विधि गति इक दिन ताहि सो लघु सो लघहु घिनाहि ॥

द–ह

दीनबन्धु बिन दीन की को करि सकै सहाहि ।
ज्यो चातक की स्वात घन बिन ना तृषा बुझाहि ।
दाबे दबत न काहु विधि जो मुख सो कढ जाहि ।
ज्यो कस्तूरि सुगन्ध सत यत्न करे न दुराहि ॥

ध–ह

धन धन भारत के सुभट तुम सम जग कहु नाहि ।
हितु मीतन की बात का अरिहू अधिक सराहि ।
धम कम जो लौ सुदढ तौलौ भय कछु नाहि ।
याही बल सो सुभट रण कालहु सो भिर जाहि ॥

न–ह

ना तरु एते कटु बनो सो थूक जो खाहि ।
ना एते मदु है रहो सब जग दाँत गडाहि ।
नाम भयो तो का भयो सार तत्व कछु नाहि ।
ऊंची भल दूकान पैं फीकी वस्तु बनाहि ॥

प–ह

पेट चपटन पर मनुज कहा न कम कराहि ।
एत हू पैं भली विधि सो कबहू न भराहि ।
पश्चिम कतो हूं बढ़ै पै पूरब सम नाहि ।
प्रात होत पूरबहि सों भान मान प्रगटाहि ॥

फ—ह

फूट न फैलन दीजिये फैले कछु न बचाहि ।
जानत जग पाने दई, सुबरन लंक जराहि ॥
फूले फलहि सदैव तरु निज रितु कालहि पाहि ।
प मूरख मानव कितो बिन रितु काल उमाहि ॥

ब—ह

बांबी सूधौ अहि चलै टेढौ जगत फिराहि ।
धिक मानव जो गेह निज सूधौ नाहि रहाहि ॥
बस-बस टकराय बन दावा लगै जराहि ।
बैरी जब घर के बनै पुनि को सकै बचाहि ॥

भ—ह

भाँति भाँति के जगत मे रूप अनूप दिखाहि ।
थिर न रहत पै तडित लौ चमक-चमक दुर जाहि ॥
भूल न अरि को छोडियै छोडे पुनि पछताहि ।
चोट खाय कें उरग लौं बदलौ अवस चुकाहि ॥

म—ह

माला फेरे होय का जो मन नाहि फिराहि ।
का कुम्हार कर पात जो निस चाक भ्रमाहि ॥
मोती कितो अमोल है सब जग ताहि सराहि ।
धिक निकस्यौ जा सीप सो ताके काम न आहि ॥

य—ह

यासों बढ़ जग दु ख नही हिय घन मिल बिलगाहि ।
माखन निकरे दूध को का महत्व रह जाहि ॥
यश मिलनौ विधि मे लिख्यौ जा ललाट मे नाहि ।
ता निरीह को हवन हू करतहि हाथ जराहि ॥

र—ह

रहे धम सव रहत अरु गये धम सब जाहि ।
प्रान बिहूनी देह ज्यो टिकत न तुरत नसाहि ॥
रूप ज्वाल सो विश्व मे बढ कोऊ ज्वाला नाहि ।
आन ज्वाल परसे दहै, इहि दरसेहि दहाहि ॥

ल—ह

लकुटि टेक मारग चलत साँसहु लेत कराहि ।
श्रवन नैन पग थके प न गई चित चाहि ॥
लोक लाज कुल कान नहि पर सनेह ठहराहि ।
कर कपूर वेतिक जतन राखौ तऊ उडाहि ॥

स—ह

सीस जटा नख वर बडे अग भभूत रमाहि ।
भार ब्रह्मस्थिन के बने बाबा मौज उडाहि ॥
साँग सेल तरवार की जिहैं रच भय नाँहि ।
नन बान की चोट सो ते बिन मौत मराहि ॥

ह—ह

हरि सा हलधर है बडे की नहि जानत याहि ।
समै परे हलधर हरिहि द है आँख दिखाहि ॥
हेरत तुमको सव विथा जान वित डुरजाहि ।
रवि लखि जलज समान मुख आभासी प्रगटाहि ॥

'अत्याक्षरी कल्पद्रुम' म नवस अत्याक्षरी प्रतियोगीन तक की बात नाय अपितु याम हरेक दोहा मे नीति अरु जीवन क विविध पक्षन कू कवि ने विस्तार के सग खोल के धर दीनो है। वैसे मूल रूप सो नीति विसयक जीवन का प्रबल अनुभव के निचोड की बेजोड प्रस्तुति या ग्रथ म भयी है। मोटे अरु खरे अर्थात बात के धनी व्यक्ति की येई सबन ते बड़ी पहचान है के खोटी छन छन मे विचार बदले है खरो अपनी टेक कू त्यागे नाय अनुभव के या सत्य की काव्य अभिव्यक्ति देखो—

खोटे और खरेन की अहै कसौटी एक।
खोटो छिन छिन बदलि है खरो न त्यागें टेक।

दूसरे के गरो घोट के अपनो स्वाथ सिद्ध करिवे वारे ससार के लोगन को कच्चो चिट्ठो खोलते भये कवि बतामे हैं जब इनपे मुसीबत आवे है तो इनकू विधि की रेखान को स्मरण होय है—

घोटत गरो निरीह को लागें नही निमेख।
जब अपने सिर आय तो सुमरें बिधि की रेख।

ठसक मे अकडे अहकारी लोग सद्सीख मानबे मे अपनी तौहीन माने है। ऐसे हटी लोगन को का गति होय है। तुमई पढ़ ल्यो—

ठसक भरे घूमत सदा, मानें ना सद् सीख।
ऐसे मूढ हटीन कों माँगे, मिलत न भीख।

अगर बालक कू बालपने मेई सस्कारी बनायो जाय तो ई बू देस को सही भावी नागरिक बन सके। राष्ट्र समृद्धि के या सत्य कू देखो कवि ने अपने अनुभव के आलोक सों जा तरिया प्रकट करो है—

डार डार सीचत कहा, मलहि काहि न देख।
जो मूलहि सींचें सरुचि, लें फल फूल बिसेप।

मूरख की परिभासा के सन्दभ मे देखो कवि को कथन—

तोता कों सिखयो जितो, ते तो ही मुखभाख।
त्यो मुरख गुन सकत ना, भलें पढाओ लाख।

आजकल भौत से लोग ऐसे होय हैं जो थोरो सों स्रम करके समाज के बीच मे अपनी साख बनाय ले हैं अरु समाज के बिस्वास के आधार पें चाए बे लाख पाप करें फिरऊ लोगन को ध्यान बाकी बुराईन की तरफ नाय जाय। आधुनिक समाज के या सोच पें देखो कवि की टिप्पणी—

थोरो श्रम कर आदि मे, जमा लेत निज साख
पुनि कोऊ पूछत नही औगुन करें न लाख

गाँधी जी की आँधी ते श्वेत शैतान अर्थात् अ ग्रेजन के सुनहरे सुपने कैसे भग भये हैं। कवि की भासा मे सुनौ–

गाधी की आधी चली भयो देख जग दग,
भये श्वेत शैतान के स्वप्न सुनहरे भग

हि दी के प्रति कवि को उत्कृष्ट प्रेम की झाकी देखो–

हिदू है जाको नही, हिदी सो अनुराग
ताके सब ही वृथा तेज विभव बल त्याग

'अत्याक्षरी कल्पद्रुम' निस्चितइ एसो महान ग्रथ है जामे अत्याक्षरी प्रतियोगिता म सफलता के सग सग जीवन मे प्रगति प्राप्त करिबै के सग मानव के करणीय प्रसगन को सफल चित्रण कीनो गयो है। ऐसो दुलभ विसाल ग्रथ प नदकुमार जी की उद्‌भट काव्य प्रतिभा को सटोक प्रमाण है।

तीसरो पण्डित जी का करीब पाच मो छदन को विसाल ब्रज काव्य ग्रथ है भरतपुर को पद्यमय प्रामाणिक इतिहास। या काव्य ग्रथ को कवि ने भरतपुर नरेसन के नाम पै अलग अलग सगन को विभाजन कीनो है। ग्रथ को प्रारम्भ द्वै छप्पन छन्दन मे नृपति ब्रजेद्र क रूप म श्री कृष्ण की लीलान की आराधना के सग भयो है। अस्तु,

जै जै जै गिरधरसरन सुभ असरन जन के।
जै वदारक बद वघ्य हिय घन ब्रज जन के।
जै व दावन चद जयति ब्रज बीथि बिहारन।
जै नटनागर स्याम जनति इच्छा वपु धारन।
जै जसुदा के लाडले तीन लोक तारन तरन।
जै-जै नपति ब्रजेद्र की ज जन के सकट हरन।

अगले छप्पय म जे वसुधा आधार जयति ब्रजभूमि सुपावन जै जाको सिर मुकुट भरतपुर मुनि मन भावत' अरु 'जै वीरन की खान सतन् अरि हृदय कँपावत' कहवे वीर प्रसूता भरतपुर की धरती के आज को अभिनदन कीनो है। वस परिचय, महाराजा बदनसिह, श्री महाराजा सूरजमल श्री महाराजा जवाहर सिह, महाराजा केसरी सिह महाराजा रणजीत सिह महाराजा रणधीर सिह, महाराजा बलदव सिह महाराजा बलवत सिह, महाराजा जसवन्त सिह महाराजा रामसिह, महाराजा कृष्ण सिह, महाराजा बृजेद्र सिह क रूप म ई काव्य ग्रथ 12 भागन म विभाजित है। वस परिचै

सूदन के 'सुजान चरित्र' के वस परिचै भाग ते लीनो गयो है। अन्तर इतनो है के सूदन ने जो बात बस परिचै मे कही है पण्डित जी ने बाय बदनसिंह सीसक मे कही है। कवि की भासा मे स 1703 मे बदनसिह ने जयपुर नरेश सवाई जयसिह के सग कुम्हेर मे महलात बनवाये[1] अरु स 1807 म डीग के भवन अरु किले की नीम डारी।[2] बदन सिह के छब्बीस पुत्र भये सेस बीस बचे जिनमे सूरजमल्ल सबन मे प्रवल प्रतापी हे।[3] बदन सिह के समस्त पुत्रन के नाम अरु दीग मे बिनके सासन प्रबन्ध आदि को यामे वनन है। या ग्रन्थ की भासा में बदन सिह ने 37 बरस तानू राज कीनों अरु स 1812 मे बिनको स्वगवास भयो। श्री महाराजा सुरजमल मे सबसों पैले छप्पय छद म श्री कृष्ण की वीरता को उल्लेख करते भये 'जै जै नृपति बृजेन्द्र की जे जन के सकट हरन' पक्ति ते श्री कृष्ण अरु 'नृपति बजेन्द्र' के रूप मे भरतपुर नरेस की प्रसस्ति करी गई है। या ग्रन्थ मे कवि ने स 1821 म सूरजमन को सिंहासन आरूढ बतायो है। प्रथम मेवात युद्ध, स 1805 के सलावत खान के युद्ध को को प्रसग आदि के रूप मे आठ युद्धन को यामे तिथिवार वर्नन कियो है। पानीपत की तीसरी लडाई अरु स 1820 की दिल्ली के रूहेलन के सग सूरजमल के युद्ध को यामे वनन है। पौष कृष्ण तिथि द्वादसी स 1820 कू सूरजमल की कवि की भासा में युद्ध के मैदान मे या तरिया मृत्यु भई—

श्री ब्रजेस बन कों चले कर मृगया को ध्यान।
हौनों हो या खेत में ब्रज रवि को अवसान।
भागत भागत यवन सैन पहुची तहूँ जाई।

---

1 सवत नभगुण ताल ससि मिल जयसिह के साथ
किना महल कुम्हेर मे बनवाये ब्रजनाथ
—भरतपुर को इतिहास—पाण्डुलिपि सों

2 सम्वत ताल अकास वसु चन्द चारु मन मान
दीग भवन अरु किले को डारी नीव निदान
—भरतपुर को इतिहास—पाण्डुलिपि सों

3 अल्प आयु मे चार सुत भये काल के ग्रास।
शेष रहे वर बीस जो तिनको यह इतिहास।
प्रबल प्रतापी सबन मे सूरज मल्ल कुमार।
जग जाहिर जाको विकट अरि मदन तलवार।
—भरतपुर को इतिहास—पाण्डुलिपि सों

परै तहा व्रजराज करत मृगया दिखराई।
कियौ मतौ मिल सबै न औसर चूकौ भाई।
सदा-सदा कौ बैर आज सब लेहु चुकाई।

महाराजा जवाहर सिंह की सुरुआत कवि न पूव क भागन की तरियां श्री कृष्ण की बालकोचित लीला के छप्पय म 'जै नटवर घनस्याम जसामति अजिर बिहारी', 'जै व्रजजीवन प्रान जयति जय नाग नथैया', ज जै माखन चोर प्रभु अमित ललित लीला करन जसी भासा के प्रयोग सो करके अखीर म 'नृपति व्रजेन्द्र' को 'जन के सकट हरन' के रूप मे उल्लेख कीनो है। जवाहर सिंह ने फारुखनगर म पिता के देहान्त क समाचार सुनतेई 'खाय तरारो' बे 'व्रज देस पधार' अरु 'विधिवत कर सब काज राज के भार सभारे।' स 1820 म जवाहर सिंह ने राजगद्दी प्राप्त कीनी।[1] या पाछे कवि जवाहर सिंह द्वारा पिता के सामै करे गये युद्धन को वनन है। 'घासहरे मे प्रथम जाय निज शौय दिखायौ', पुनि दिल्ली रणखेत कठिन खाडो खटकायौ' निज भुजबल सों' बलूची मार के भगाय दिए अरु बिनको सिगरो राजपाट छीन लीनो। झज्जर फारुखनगर अरु पटौदी नगर युद्ध म जीते। इन सहरन मे कवि की भासा म आजऊ या वीर के स्मृति चिन्ह हैं, जाके प्रति सिगरो ससार सीस नवावे हैं।[2] जवाहर सिंह के फिर के बेरीन त बदलो लेव की प्रतिज्ञा को कवि ने उल्लेख कीनो है। कर यवनन मद चूर बाप कौ बैर चुकाऊं' अरु 'बिना विजय दिल्ली किए सीस ताज नहिं धारि हों' आदि काव्य वाक्यन सों कवि ने इतिहास प्रसिद्ध जवाहर सिंह के दिल्ली आक्रमण की मन स्थिति कू खुलासा कीनो है।

कवि ने बतायौ है के जवाहर सिंह क सग या युद्ध म जाट-सिख अरु मराठन सहयोग दीनो हो। नजीबुद्दौला मल्हारराव की मध्यस्थता सै जवाहरसिंह की शरण मे जब पहौंच गया तो लूट बन्द को हुक्म तब दिय व्रजेस हरसाय' गो या युद्ध की समाप्ती भयी। जवाहर सिंह के दिल्ली के आक्रमण की व्यस्तता त लाभ उठाय के कृपाराम अरु

---

1 सम्वत नभ भुज सिद्धि ससिलियो राज को भार।
बदलो अरि सां नैन को कीनो मत निरधार।

—भरतपुर को इतिहास—पाण्डुलिपि सो

2 चिन्ह स्मृति वर वीर के, अजौ जगत विख्यात है।
सहि जिनकों जग जन सकल, निज निज सीसी न्वात है।

—भरतपुर को इतिहास-पाडुलिपि

उदयसिंह ने नाहरसिंह कू अपनी तरफ मिलाय लीनौ। पेमसिंह मुल्तान ने बीस हजार सना लैके पिचूना लूट लीनौं। गृह कलह के समाचार पातेई जवाहर सिंह युद्ध कू तत्पर है गयो। रूपवास के पास मे नाहरसिंह अरु जवाहर सिंह को भयकर युद्ध भयौ। कृपाराम ने गुसाइन सो सहायता लीनी अरु बितकू जवाहर सिंह ने नागा साधु लटवे कू आमन्त्रित कीनें। नागान के ध्यानदास सेनापती की गुसाइन की सना सो जबदस्त भिड़न्त भई। गुसाइन के मुख्य मुख्य सरदार मारे गये। नाहर सिंह युद्ध के मैदान सौ भाग के जयपुर आय गयो। जयपुर म नाहर सिंह की मौत है गई। जवाहर सिंह की अटेर भिण्ड बालाजी, कालपी, महुआ आदि के युद्धन को उल्लेख है। कामा कू लके जयपुर नरेस अरु जवाहर सिंह के मतभेद, पुष्कर स्नान, जयपुर युद्ध आदि को कवि ने उल्लेख कीनो है। स 1825 सावन मास की पूनो के दिना किले के निरीक्षण के समैं सत्रु ने जवाहर सिंह कू धोखे ते मार दीनौ। जा तरिया स वि 1825 सावन मास की पूनौ के दिना किले के निरीक्षण के समै सत्रु ने जवाहर सिंह कू धोखे ते मार दीनौ। जा तरिया स वि 1825 पूनौ सावन मास कू ब्रज पुन *अनाथ है गयो*।[1]

महाराजा रतनसिंह भाग में प्रारम्भ के वदना के छप्पय मे श्रीकृष्ण अरु 'जै ज जै वषभान भूप तनया पावनि जे ब्रजेस की आदि सक्ति ब्रजबीथ बिहारनि, ज जै राधा नागरी तीन लोक तारन तरनि द्वारा आदि सक्ती की आराधना करके छप्पय की अन्तिम लाइन मे भरतपुर नरेसन को उल्लेख कीनो है। 1825 वि मे जवाहर सिंह की मृत्यु पाछे बिनको छोटो भया रतन सिंह गद्दी पै बैठो।[2] रतन सिंह ने एक बरस राज कीनो[3] कवि ने रनत सिंह कू व दावन के एक गुसाई द्वारा छल कपट करिबे को उल्लेख कीनो है। गुसाई ने रतन सिंह कू मौत के घाट उतार दीनौं।

---

1 साल भूत भुज याम ससि श्रावन पूनत जान
कर अनाथ धरा को त्यो अययो ब्रज भान
—भरपुर को इतिहास—पाण्डु

2 अठारह सौ पच्चीस म, रतन सिंह महाराज
भ्रात जवाहर निधन सुन, धर्यो भरतपुर ताज
—भरतपुर को इतिहास—पाण्डु

3 एक बरस लो भोग के, पूरण सुख को साज
त्याग्यो नश्वर देह श्री रतन सिंह महाराज
—वूई—वूई

रतन सिंह की मृत्यु पाछे स 1826 नू जवाहरसिंह के पुत्र केसरी सिंह राजा भये ।[1] स 1833 म केसरी सिंह की चेचक सों मौत है गई है ।[2] महाराज केसरी सिंह सीसक म पण्डित जी नें भरतपुर राज्य की ऊथल पुथल अरू गद्दी प्राप्त करवे की राजनैतिक चालन को विस्तार ते उल्लेख कीनों है । याई समै जवाहरसिंह के भैया नवल सिंह अरू बाके सग रणजीत सिंह को युद्ध भयौ । नजफखाँ को आक्रमण, समरू की सैना के युद्ध के क्रिया कलाप, राज परिवार को आन्तरिक कलह आदि के विस्तार ते उल्लेख या स्थान पै कवि ने कीनों है । कसरीसिंह की मौत पाछे म 1834 मे जवाहर सिंह को सबन ते छोटो भया गद्दी प बैठो । रणजीत सिंह के सगै म दीग मे सनिक उत्पात मैया किसोरी के साग रणजीत सिंह को नजफखा ते मिलबो ।[3] मिरजा नफी कू दिल्ली को बजीर बनायो जाय है । इस्माइल बैग ने षडयन्त्र करके शफी कू मार डारो आगरा ग्वालियर की घटना चक्र भरतपुर व इन बुमे दिनन म रानी किसोरी की रणजीत सिंह के सग मथुरा म सिंधिया सो मिलनौ । सवत 1843 की जयपुर को तोंगा युद्ध । रणजीत सिंह अरू लाड लक को युद्ध एव अग्रेज अरू भरतपुर नरेस म भई सधी को या ग्रन्थ म विस्तार ते उल्लख भयो है । अगरेजन ते कवि न तीन जनवरी 1803 के लाड लेक के भरतपुर क पैले आक्रमन को या तरिया बनन कर्यो है—

तीन जनवरी के दिवस लियौ भरतपुर घेर ।
रह अवसर की ताक म करी चार दिन देर ।
प्रलयकारी युद्ध सात सो लेक मचायो ।
पै नौ के मध्याह्न तलक रघुनाथ न आयो ।

---

1 सवत् ऋतु भुज सिद्ध ससि भये केसरी भूप
वीर जवाहर सिंह सुत लघु वय परम अनूप

—भरतपुर को इतिहास – पाण्डु

2 है चेचक को रोग ठारह सो तेतीस मे
द परिजन को सोक स्वग सिधार कसरी

—भरतपुर को इतिहास – पाण्डु

3 मातु किशोरी सग ल जाय नृपति रणजीत
नजफ खान सों भेट किय स्वागत कियो सप्रीत

—वई

चारों तरफ विकराल तोप चलवे लगी। बिचारे गिरिराज के रक्षक इन तोपन को कहा तानू सामनो कर पाते। नौ तारीख की संजा सात बजे परकोटा तोरवे कू भारी सैना भेजी।[1] भरतपुर वीरन्नें अंग्रेजन कू मार कं भगाय दियो। पाच सौ अंग्रेज या हमले मे मारे गये। दूसरे दिना टूटे किले की मरम्मत करी गई। फिर 16 जनवरी कू लार्ड लेक न दूसरो आक्रमण कीनों। या आक्रमण म किले को कछू भाग टूट के गिर पड़ो। 17 कू पुन आक्रमण। किले को टूटो भाग ठीक कियो गयो अठारह तारीख कू आगरे ते स्मिथ सैना लैके अंग्रेजन की सहायतार्थ आय गयो। याके सग तीन सौ गोरेन की पलटन ही।[2] इक्कीस तारीग कू नसैनी पै ते किले पै चढते समै लेफ्टीनेन्ट मौरिस के राग मे गोली लगी। जाघ मे घाव के कारन जैसेई वू लौटवे लगा तो वाकी गदन पै एक गोली और लगी अर मौरिस को प्राणान्त है गयो।[3] अगरेजन की बुरी हालत देखके कप्तान वेल्स ने सैनिक साजो सामान लैके भरतपुर की तरफ आयवे लगो। औसर देख के अमीर खान न वाय घेर लीनो। जैसे तेईस तारीख कू वू लौटवे लगो। तुरत कनल नीड अंग्रेजन की सहायता कू आगे आयो। या युद्ध म अमीर खान के छै सो सैनिक मारे गये। एक एक दिना के युद्ध को विस्तार के सग या ग्रन्थ मे उल्लख है। स 1826 कू रणजीत सिंह को स्वगवास भयो।

स 1826 कू पोष कृष्ण तिथि कू रणजीत सिंह के जेठे सुत रणधीर सिंह गद्दी पै बैठे। नये नरेस ने कुसलता से सासन प्रबन्ध सभारो अरु जवाहरलाल नामक व्यक्ति कू अपनो दीवान बनायो। इक दफै वेतन बटवे मे देर है गई तो राजा ने तुरत दीवान

---

1 चली तोप विकराल घो गजन तजन कर
जब रक्षक गिरिराज शत्रु कर सकै कहा पर
नौ की स ध्या समय सात बजिके जब आये
परकोटा विध्वस करन भट लेक पठाये

—भरतपुर को इतिहास

2 सग मे पलटन तीन अरु सौ गोरे है ज्वान
मिल्यौ लेक सो आयकैं कीहो धैय प्रदान

—भरतपुर को इतिहास

3 घाव खाय घायल भयौ लोटन लग्यौ तुरन्त
गोली ग्रीवा मे लगी भयौ तहा ही अन्त

—भरतपुर को इतिहास

कूं निरार के स्थिति म सुधार कीनो । स 1836 म मोतीराम नाम के व्यक्ति कू नरेस ने लाड लक के पास भेज्यो अरु सहर म कोतवाल बनायवे की आग्या प्राप्त कीनी । रणधीर सिंह न गोवरधन मे अपने पिता की भ०य छतरी बनवाई । रणधीर सिंह की मृत्यु पाछे बल्देवसिंह गद्दी प बठे बल्देवसिंह रणधीरसिंह के छोटे भैया हू । रानी न रणधीरसिंह कू राजा नई मानो अर कोस की चाबी लके व दावन चली गई । बल्दवसिंह को जल्दी निधन है गयो । बलवत सिंह बालक हो । या कारन अनक सेनापतीन सासन तन्त्र अपने हाथ म लनो चाहो । स्वार्थीन की चाल अरु बलवत सिंह के हितैसीन द्वारा तरकीब ते अंग्रेजन की सहायता सो षडय त्र पै विजय पाई जाय सकी । स 1835 कू बलवत सिंह कू शासन के अधिकार प्राप्त भये ।[1] गगा म दिर अरु जामा मस्जिद के निर्माण की सुरूआत अयाग्य अफसरन कू हटानो अपने पिता की गोवरधन म छतरी बनवायवै को बनन है । सा 1907 कूं जसवत सिंह को ज म अरू सा 1909 म बलवत सिंह की मृत्यु की सूचना या ग्र थ म । सा 1910 को भरतपुर की विपति धाऊ गुलाबसिंह नृप के रक्षक बने ।

हैनरि लारेंस को भरतपुर आगनम, डीग–भरतपुर म अदालत की स्थापना स्वा-वल की बगावत दवानो । बाबू डाक्टर भोलानाथ को राजा को शिक्षक नियुक्त करनो । भरतपुर को बोबरी अ ग्रेज नयो एजेन्ट बनके आयो । सन् 1865 म भरतपुर मे रेल आई । सन् 1871 म जसव त सिंह कू पूण राज्य अधिकार प्राप्त भये । सन 1886 कू कछु गाम खालसा कीने गये । पथेना वासीनें याको घोर विरोध कीनो । पथना युद्ध की कवि न यहाँ द्वै छ दन म सूचना दीनी है । सन 1893 कूं रामसिंह गद्दी पै बठे । 1899 म किसन सिंह को जनम भया । रामसिंह के पागल हैवे पाछे किसन सिंह गद्दी प चढे । सन 1919 म भरतपुर मे उरदू लिपि समाप्त कर नागरी हिन्दी कू राजकाज की भासा बनायो गयो । सन 1927 म हिन्दी साहित्य सम्मेलन सन 24 की भीषण बाढ, 22[म राज माता को स्वगवास बक की स्थापना प्राथमिक सिच्छा की अनिवायता, 1922 कूं ब्रजेन्द्रसिंह को जनम । सन 1929 म वतमान नरेश ब्रजेन्द्रसिंह गद्दी पै बैठे । ब्रजेन्द्रसिंह की मैसूर म भये ब्याह की सूचना के सग पण्डित जी को जि पद्यमय इतिहास समाप्त होय है । जि पूरो ग्र थ निमग ब्रज भासा म लिखो भयो है । ग्र थ म दीनी गई ऐतिहासिक तिथि अरू सूचनान की परख करबो इतिहास वेत्तान को काम है ।

पद्यमय इतनो विस्तार ते ऐतिहासिक दस्तावेज स्यात सूदन के पाछ पण्डित न द कुमार जीन्नेई लिखो है । एक एक घटना की तिथिवार आदि या ग्र थ म दीनी गई है ।

---

1 ठारह सौं पैंतीस सुभग सन् ज्यो ही आयो
पूर्णाधिकार नपति बलव त सिंह न पायो
—भरतपुर को इतिहास पाडु

रणजीत सिंह अरू अंग्रेजन के युद्ध की एक-एक घटना अरू यौद्धिक मोर्चेबाजी की विस्तार ते सूचना या ग्रंथ में भई है। इतिहास की दृष्टि सौं 'भरतपुर कौ इतिहास' पर्याप्त उपादेय सामग्री प्रदान करे है। अबई जि ग्रंथ पाण्डुलिपि में बंद है। प्रकाशन पाछे यापै ऐतिहासिक विवेचन होयगो। दुर्भाग्यवस पं नंद कुमार शर्मा के या दुर्लभ ऐतिहासिक पद्यबद्ध ग्रंथ के विसैं में एकऊ पंक्ति नाय लिखी गई। हमने पैली दफै याय पढके ग्रंथ के कछू निस्कस प्रस्तुत कीनें हैं।

पं नंदकुमार जी की 'उद्धव गोपी कुब्जा शतक' नाम की बडी भावनामयी कृती मे प्रेम को वर्णन कछू परम्परा ते हटके एक नई बानगी अरू नये तेवर के संग कीनौ है। गोकुल के प्रेम की कहानी को भक्तिकाल तेई कवि'न' अपने अपने भावन के अनुसार बनन कीनौ है। रीतिकाल मं या प्रसंग कू लके भौतेरे सतकऊ लिखे गये हैं। ज्यादतर सतकन के प्रसंगन मे कृष्ण अरू ऊधो के संवाद ऊधो को ब्रज आगमन, प्रेम भूल के निराकार की अराधना को ऊधो द्वारा गोपीन कू संदेस गोपीन द्वारा ऊधो कू प्रेम को महत्व बताते भये निराकार का उपहास, गोपीन के प्रेम ते प्रभावित हैकें उद्धव द्वारा कृष्ण के सामै गोकुल के प्रेम की प्रसंसा। ये कछू प्रसंग हैं जाके आस-पास ब्रज के या दिव्य प्रेम कू साकार करिवे कू उद्धव सतक लिखे गये हैं। पर पं नंदकुमार जी को उद्धव गोपी प्रसंग नई सैली अरू नये विवेचन के आलोक में लिखो गयो है। या रचना के प्रमुख पात्र तीन हैं—पैली गोपी – दूसरे उद्धव अरू तीसरी कुब्जा। पण्डित जी के सतक मे कुब्जा वाका-यदा एक प्रमुख पात्रा के रूप मं गोपीन के प्रेम को उपहास करै है। कवि ने गोपिन के प्रति कुब्जा के उपहासन के विविध प्रसंगन के माध्यम सौं प्रेम की तीव्रता को एक नये तेवर के संग या कृती मे चित्रन कीनौ है। स्यात याई कारन पंडित जीने या कृती को नाम 'उद्धव गोपी कुब्जा शतक' दीनौ है। 'उद्धव गोपी शतक' मे कुल 95 छंद हैं जामें 86 मनहरण कवित्त अरू 9 सवैया हैं। कृती की सुरुआत श्री कृष्ण की वंदना के संग भई है। गोपी सीधी कूबरी को उल्लेख करकें कृष्ण कू फटकारते भये अपनो नेह कू उजागर करैं है। नेह के या तरियाँ के प्रसंग जीवन मं बा समै आवैं हैं जब व्यक्ति प्रेम के आनंद की परांकाष्ठा पैं पहौंच जाय है तो आराध्य या प्रेमी की निंदा ते बाके मन के अनुराग की पीयूसधारा अनायास मन के बाँधन कू तोडके एक संग प्रवाहित है उठे है। देखौ उदाहरन –

टूकन पराये एक छैल परे नन्द गाम,
सेवा अलबेली एक कंस की बजाई है।
एक चीर चोर दधि गोरस चुरायो सदा,
लाख घर घाले एक पूरी हरजाई है।

एक तौ त्रिभंगी लखि कोटिन अनंग लाजैं
दूसरे कूब एक कौ रती हू सरमाई है।
कहाँ लौं बड़ाई करैं तेरी विधि बारम्बार,
खूब का हू कूबरी की जोड़ी मिलाई है।

पंडित जी की गोपी स्पष्ट कह है कि 'कूबरी कसाइन करेजा काढ लीनो है' अरु हमारे प्रिय ते 'कहेगो सदा ही विश्व गोपीनाथ राधानाथ, कोटि हू उपाय कुब्जानाथ ना कहावगो', चौंके 'तुम तो सखा हो तुम्हें स्याम सोंह साँची कहो, कौन गुन कूबरी में कान्हा लखि पायो है' वू 'राधे का विसार आप रीझ्यौ रिझवार स्याम वा कुब्जा के कूब पै करोड़ काम वारि है हमारे प्रिय ने 'कूबरी मिलारिन को कान्हा दान दीनो है।' हमारे प्रिय की तो लीलाई अजब है जाकी कोख जायौ ताहि त्याग के सिधायौ सुत' बिचारी ब्रज बनितान की तो बात ही कहा है ऊधो।'

या रचना में तरे तरैं ते ऊधो कू योग के विष फटकारवे के संग संग गोपी कुब्जा कूबरी कू ऊधो के सामै मोतई भलो बुरो कहै है— कूबरी कसाइन, कुब्जा ठकुरानी', 'कूबरी सौत', कूबरी ही दासी एक कंस की 'कूबरी की कारी करनीन का कहनो है', कुब्जानाथ बनके सनाथ', का हू त्रिभंगी है तो कुब्जा विकलांगना', कुटिला कूबरी नें का कारिख लगाई है आदि सम्बोधनन सों गोपी कुब्जा को उपहास कर है। हमारा निवेदन हो के पीड़ा की पराकाष्ठा पै बानी ते दु:ख जा तीव्रता के संग उपकारन के उल्लास के संग प्रकट होय है वाकी एक सफल बानगी देखौ पण्डित जी के नीचे लिखे या रचना के एक छंद में—

जाकी कोख जायो ताहि त्याग कें सिधायो सुत,
भूल हू न कीनो सुधि तनिक बिचारी की।
उर पय प्यायो बट चावन लड़यायो जानें
ऐसी नन्दरानी की हू आछी मनुहारी की।
ब्रज बनितान की तो बात ही कहा है ऊधो
दसा का कहिये वृषभानु की दुलारी की।
कर सैं गुमान प्यारी चार दिन मान पाय
कुब्जा ठकुरानी सू कहायकैं बिहारी की।

कवि ने 'तलफै निस दिन चख चकोरा पर कहू, विरह विराग की विथा सों बिलखावें हैं, कूप कूप कालिंदी करजवा जरायो है', 'मोहन सुनाय सो चाहौ की सुरीली तान', 'व ही हैं कालिन्दी कूल व ही हो ललित कुंज पुंज तिनमें कहौ को अब असन जगायगो',

चेली बनी डोलें सब बालानन्द लाला की', 'कौडी के मोल कोऊ ब्रज म अब पूछे नाहि' जसे वाक्यन को प्रयोग करके पण्डित जी की वियोग मे डूबी गोपिका अपनो हृदय निकार के या तरिया धर दे है—

प्रेम पाठशाला की यह चेली नन्द लाला की,
बनी ब्रजबाला है रीत अनरीतिन मे।
छिन न भूलें हैं चाहि प्रान हू ह्वै हैं भलें
बौरी बनी डोलें देखो कैसी निसीथिन म।
ऊधो यह सूधो स्याम कैसो हू कलाच बनै,
आनो ना यहाँ है कोऊ ऐसी कूटनीतिन मे।
रखो योग पारद सँभार भली भाँति लगै,
विषम वियोग बडवाग्नि ब्रज बीथिन म।

ब्रज मे चतुर्दिक फैली बिरह की बडवाग्नि कू केवल स्याम घनई बुझाय सकै है। स्याम के वियोग मे रोमती-बिलखती प्रेम के सागर मे डूबी गोपी की दारुन दसा देखो—

वे ही हैं कालिन्दी कूल वेही केलि कुज पुज,
बिना मन मोहन के उड उड खाइनी।
जोहत सचाह बाट बासर बितात ऊधो,
तारे गिन काटें रात रो दुखदाइनी।
कैसी करै कहा जाय कासों कहे कोन सुनै,
काढयो है करेजा क्रूर कूबरी कसाइनी।

गोपीन के मन की पीडा कू कवि ने एक दूसरे भाव ते या तरिया प्रकट करके अपनी काव्य प्रतिभा के आकास को स्पस कीनो है—

गोरस माखन आदि खवाय कें पुष्टि कियो जिहि कों बड चायन।
मान तज्यो कुल कान तजी न मुरयो मन नेंक घनेर चवायन।
त्याग गयो सु गयो ब्रज को भल भूल गयो इन गोपिन गायन।
ऊटाव स्याम की सोंह तुम्हें कहु रीझिगो कूबरी के किन भायन।

पण्डित जी नें अपने उद्धव शतक के अन्त मे कुब्जा को कथन लिखो है। जैसे आप कोई कू खरी खोटी सुनावें अरु वू बाय सुनके सामै बारे की कमीन कू बताते भये अपने व्यवहार अरु मत को तार्किक समर्थन करें। कछू या तरियाँ को विवेचन नन्दकुमार

जीनें अपने उद्धव सतक म 'कुब्जा द्वारा उत्तर' सीमक म कीनौ है, चाऐ मू कूबरी है, चाए काहू सौ प्रेम करबे वारी है पर गोपिन की तरिया न वू ब्रज वीथिन म काहू छबील द्वारा घेरी गई है, न वू काऊ के अधरान की रपस करिय म् केलि कुंजन म मारी मारी फिरती रही है न वानी के जालन सौ वाने अपन आराध्य ते मिलब कू पुत्र, पति अरु सास कू भ्रमित कीनौं है, अरु न ई वू हाल बहाल भयौ समाज के बीच लजाई है, नई वाने कुल की मर्यादा कौ त्याग कीनौ है ।[1] कुब्जा गोपीन कू खूब इन्के खोटी खरी सुनायवे है के तुमने पहल तो अच्छी भौत श्री कृष्ण कू रखो नाय अब व्यर्थ म झुझरायवे सौं का फायदा है । मैं कोई गुर की पुआ ता हूं नाय जाय जब चाहा गरे त निगल जाओ । तुम्हारे नैनन के निकारे ते ह्या कौन डरपै हैं । अरे ! बावरी गोपी अब मिमयाय ते का काम बन सके है । अब तो चिडिया खेत कू चुग गई । अब पछताये ते का हाथ है । उपयुक्त भाव म डूबो कवि को कथन दखौ ।

आछी भाँति पहिलें अहैर कें रख्यौ ना काहि
हौ मो ही कहा है अब झझर उतारे ते ।
गुड़ को है पुआ को निगल जाओ जाहि झट,
डरप इहा है कोन नैनन निकारे ते ।
बावरी बनी हौ खिसियाये त न काम सरै,
अब तो बनेगी बात मन को सँभार ते ।
चुग चुक खेत जब चिडिया चहू लग मा,
हाथ कहा आव फिर बौरयान तारे ते ।

नारीगन परस्पर डाह सौ उत्पन्न वाग्विलास की भंगिमान कू कवि ने या कृति म विभिन्न आयामन ते सजाया सँवारौ है वू देखत इ बने है । गोपीन के कुब्जा के प्रति

---

1 कूबरी हू कूबरी हू चेरी चाहि काहू की हू
घेरी न गई बन बीथ कभू ग्वालन सौं ।
भाजती फिरा ना अधरात केलि कुंजन म,
पूत पति सास भरमाय ना जालन सौं ।
प्रात होत आईना कबहू रति चिह्न लिय,
मातर लजाई कभू हाल बेहालन सौ ।
कहि का बनी हौ आज गार कुल कान लाज,
पूछौ ता ब्रज कुंज पुंज पुंजन तमालन सौं ।

—उद्धव गोपी कुब्जा सतक-पाण्डुलिपि सौं ।

कथन, 'कहे सब विश्व गोपीनाथ राधानाथ कि तु दासीनाथ कुब्जानाथ ऊधो को कहात है' या 'कहैगो सदा ही विश्व गोपीनाथ राधानाथ कोटि हू उपाय कुब्जानाथ ना कहावैगो, जैसे गोपीन को जवाब कुब्जा बडी कुसलताके संग देती भई कहे है के कौन कह सके है के कृष्ण कू गोपीनाथ या राधानाथ। या रचना म ऐसो लगे है के एक तरफ गोपी अरु व्रजवासी हैं अरु दूसरी तरफ कुब्जा है। दोनोन के अपने अपने तक है जाते दोनू स्वय कू सही समझे हैं। उपयु क्त स दभ म अब आप देखो कुब्जा को कथन —

कबै नहनाई बजी कहो तो बरसाने म,
कौन सी तिथी कों कर लगन धरानी है।
कोन घूम धाम ओर धोसन पै चोव परी
कौन सी बरात नन्दगाम सो चढानी है।
कबै भये नेगाचार भौन वृषभान जू के,
आगें बढ कहो कबै भई अगवानी है।
कोन सो हिसाब जासो खाओ पेच ताव एते,
कोन घर घाले ते बनै ना महारानी है।

गोपी वियोग की व्यथा की गहराई मे डूबके कवि की भासा मे स्याम के सखा ऊधो कू कह है—'तुम तो सखा हो तुम्ह स्याम सौंह साँची कहो, कौन गुन कूबरी मे का हा लखि पायो है, 'छछिया भर छाछ पै रिरयातो रह्यो ऊधो जो, आज वही मथुरा बन्यो महाराज है', 'कूबरी कसाइन करेजा काढ लीनो है' 'कूबरी भिखारिन को का्हा दान दीनो है 'कुब्जा कृष्ण चन्द्र ही को गहन लगाई है', एक विरह दूबरी दूजें ऊबरी तीजें कूबरी है सौत बस अ त आज आओ है' 'ऊधो जाय कहियो वा कुब्जा के सघाती सो पाती प्रिय पठाई कै करेजा की काती है' जावो जगदास सुर मुनि गन आस करें, सोई अब कहात वहा दास को दास है। अदि काव्योक्तीन के संग गोपी कुब्जा कू जम के भलो बुरो कह है तो दूसरी तरफ ये श्री कृष्ण कू फटकारे है — 'रमे रगरेलिन मे नागरि नवेलिन मे वरु व्रज वालन ते रहत उचाट है', 'हाँसी सी कराय प्रेम फासी सी लगाय ऊधो निठुर बनमाली मधुपुर सिधायो है 'मोहन कहात पर मोह को न नेककाम' जानेपय प्यायो तिन सुधि बिसराई है, मथुरा मे चाहे जम गात ना अघात जाको' जैसी काव्य की वानी सो श्री कृष्ण कू डाटे हैं। कुब्जा गोपीन के एक एक कथन को या कृती मे बडा सोतिया सारगर्भित उत्तर दे है। कवि सौतिया नारी विज्ञान को या स्थल पै बडोई मनोहारी चित्रन खीचो है। गोपिन कू कुब्जा जवाब दे है—'जसो होय तैसो प्रतिबिम्ब दिखै आरसी मे भोंडो होय भोंडो ओर कानो होय कानो है', जो कछु करी सो भरी काहे कों परेखो अब, मिल ना बडाइ बड बातन बघारे ते', 'मदमाती बनमे फिरत

इठला सी रही, करती सदा ही रही निजमनमानी है' 'औसर चूके पै कहा होत पुनि पछताये होत हौ अधीर मूर्खता की सो निसानी है।' 'सेत सग डोली कु ज पु ज खोर खारन मे, जमुना कछारन म कहा अहसान है', कस कौ मरैया यदुरैया जब दाहिनौं हैं, ननन निहार कान पूछरी उखारैंगी, 'गाओ गीत लाख हू अतीत के न लाभ रच', 'हौ तौ जो तिहारौ तौ रहतौ ना तिहारे सग नन्दगाम त्याग काहि मथुरा सिधावतो', साँच बात कहौ नेंक सोह तुम्है गोधन की कोन सी है तुम मे जो स्याम सग ब्याही है', 'जैसी करी तुम तसी भरौ अब होत कहा इतनौ इतराये। गोपी अरु कूबरी के एक द्वै उदाहरन सों अब आपई निस्चै कर लें के प नन्दकुमार जी की कवि दृष्टि ने नारी विसयक सौतिया डाह के भाव कू कितेक पैनोपन सों व्यक्त कीनौ है–

रूप सरूप की न जाई काहू भूप की है,
जात की न पात की न कुल की न वस की।

मर गयी मथुरा की कहा कुल बाल सबै,
रही सेप कूबरी ही दासी एक कस की।

समझयौ है ब्रज मे गहन लग्यौ उधो तामे,
कूबरी भिखारिन को काहू दान दीनौ है।

नन्द कुमार जी के उद्धव सतक मे भौतेरे स्थान ऐसेऊ आये हैं जिनमे प्रेम की पीर काव्यानन्द की सरसता सौ महकते भये प्रसग बरबस मन कू आकर्सित करे हैं–एकई उदाहरन भौत है–

वे ही कालिन्दी कूल वे ही केलि कु ज पु ज,
तिनमे कहौ को अब अलख जगायगो।
रम्यौ रास रस मे बनवारी के सदा ही जो,
मन मतवारौ कसे ब्रह्म मे समायगो।

भाव अनुभूति अरु ब्रज के कन-कन मे रचे पचे प्रेम की सटीक अभिव्यक्ति 'उद्धव गोपी कुब्जा सतक की अपनी अनूठी विसेसता है। ब्रज के प्रेम की ई कहानी आकठ असुआन ते भीगी भई है। कवि ने रोमते बिलखते ब्रजवासीन के असुआन के पावन मोतीन सों 'उद्धव गोपी कुब्जा सतक काव्य के भावन की माला पिरोयी है। असुआन के या पावन त्रिपथगा म स्वाभिमान के सूय की ताप नेकऊ तो कम नांय भयौ है किन्तु चाटु कार नन्दगाम माहि एक माहि कहिबे मे साँची यहा कोऊ न सकात है कहू के ब्रजवासीन

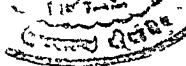
परम्परित स्वाभिमान को झण्डा कवि ने नैंकऊ कम नाय होन दीनौ है । भासा की दृष्टि सो या रचना मे परम्परित व्रज के अनुराग को रस तो पग पग पै सब्दन मे छलकतो चलेई है सगई मुहावरे लोकोक्ती अरु जन समुदाय के ओंठन पै थिरकवे बारे वचन विलास को कवि द्वारा या कृति मे बडोई मनोरम चित्रण भयौ है । 'करेजा काढ लीनौ है', 'करोड काम वारि है 'सीखो चाल काग की विहाय गति हस की, ऊधो को न लैनो हमे माधो को न देनो है 'सूठ पै चलावै चोच त्याग दूध दास है' 'बोये जो बँवूर अब कहा होय रोये धोये ।' व्रज की जमीन मे ढुरकी अनुराग को रस व्रज के कन कन मे व्याप्त सरसता मधुरता की मिसरी की अनुपम छवि व्रज के वाग्विलास सों सजी नयनाभिराम सो दय सौं लदी कविता कामिनी को रूप सौष्ठव मन म मधुर मधुर गुदगुदी की गदराई गरज की होले होले चलबे बारी वासती गजना जसे कछू काव्यगत वैसिस्ट्य पण्डित जी के 'उद्धव गोपी कुब्जा सतक' की अपनी अलग विसेसता है । देखौ एक उदाहरन जो कीरीट सवया के साचे मे वैसो अनूठो फब रयौ हैं या रचना म—

> बाहर भीतर कृष्ण अहै नहिं नामहि स्याम सबै जग गावत ।
> प्रेम सुमानिक मोल भलो छलिया मलिया कछु जान न पावत ।
> कूवरि सग करै रस रग हमे अब योग सदेस पठावत ।
> उधव जाय कहौ किहि कारन काट करेजवा लोन लगावत ।

पडित जी ने राधा कृष्ण विसै कू लैके कई व्रज काव्य ग्रथन की रचना करी हे । इनमे 'श्री राधिका नख सिख' अरु श्री राधाकृष्ण सवाद' विसेस रूप सो उल्लेखनीय रचना है । 'राधिका नख सिख' मे पाच मगलाचरन के दोहान सो या काव्य ग्रथ की सुरुआत होय है । नख सिख म —पद नख, तरुवा, पदागुली, पजा पिंडुरी जघा, लक, उदर नाभि, त्रवली, रोमावली भुजा, ग्रीवा श्रोन उरोज चिबुक गाढ, कपोल कपोल गाढ, कपोल तिल, आनन, दसन, नासिका, नेत्र भ्रू, ललाट, कच, बेनी के वनन के रूप म राधा के उपयुक्त सारीरिक अवयवन को बडो मनोहारी चित्रन या ग्रथ मे कवि नन्दकुमार जीने कीनौ है । कवि के मगलाचरण म स्पष्ट कर दीनौ के कवि राधा कृष्ण के पद कमल कू हृदय मे धारण करके नन्दकुमार श्री कृष्ण कू प्रमुदित करिवे कू या ग्रथ की रचना करी गइ है ।[1] यद्यपि पूव के भौतेरे कविन्नै अपनी अपनी मति के अनुरुप व्रजरानी के रूप को बनन कीनौ है पर नारी की या आदि सक्ति के रूप लावण्य का

---

1 श्री राधे पद कमल युग मन मदिर म धार
नख सिख छवि बरनन करत प्रमुदित नन्द कुमार
—श्री राधिका नख सिख—पाण्डुलिपि



बनन है नई सक्यौ । [1] श्री राधा के नख सिख बनन मे रीति कालीन कविन की तरिया सिगार की सुकुमारता के सग सग सत कविन की भाति भक्ती की पीयूस धाराऊ सगई चलै है। जा कारन या रचना कू पढिबे वारे के मन मे भक्ति को ओज पदा होय है न के सिगार को माह । भुजा बनन को उदाहरन दख ल्यौ अरु हमारे मत कौ प्रमान हाथो हाथ परख ल्यो--

धरी सीस पै जाके कहे दुख ताके सबै मन काम सदा पु ज है ।
वरदा भरदा सुख सपत्ति की लखि चम्पत होत भव सग है।
अति कोमल कल्पलता की छरी सी खरी कल कीरति रूज है ।
छवि पेटिका भेटिका मगल की वृषभानु लली की दुहू भुज है ।

उरोजन के बनन म 'सबै सुख लाडली मातु के पावन कहकै कवि भक्ती भावन की रक्षा करै है ।[2] कवि ने नख सिख बनन मे 'कलीन खिली वर कल्प लता की' 'रस कपूर सुधा', कज करोरि खरो , 'पराग छक्यौ अलि बढयौ ललाम है', कु द कलीन की कै अबली', 'मोतिन पाँति लसै छवि छाई', घन मे बिजुरी प्रगटाई', दुति चम्पक की हु विलोकत फीकी', 'खजन कज मृगी मद गजन', सार सुधा के लुनाई के भौन' 'प्रतयच्छ मयक कलक है' 'चन्द्र कौ चीर बनायो बरासन' रस पूरि छता मधु कौ, आदि के रूप मे विभिन्न उपमान अरु प्रतीकन के बनन सों ब्रज कविता के माघ्यम सों राधिका रूप चनन मे सटीक सु दरम कू साधक कीनौ है । या रचचा के अ त मे कवि ने याको रचना काल स 2008 मधुमास अर्थात फरवरी 1951 बनायौ है । [3] राधा विसयक दूसरी

---

1 यदपि विविध पूरब कविन निज निज मति अनुरूप
बहु प्रकार बरनन कियौ ब्रजरानी कौ रूप
-श्री राधिका नख सिख पाडुलिपि

2 पोपक है सिगरे जग के अरु शोपक तापन दाप नसावन ।
शभु समान सुवत भरे सुर साँई सलौन को चित्त चुरावन ।
कु भ सुधा परिवार खरे सुर कदित सो उर आस पुजावन ।
दैय उरोज सदौ वसुधा के सब सुख लाडली मातु के पावन ।
-श्री राधिका नख सिख पाण्डुलिपि

3 सम्वत् सिधि नम नयन सित पाख शुभ मधुमास
श्री राधा नख सिख सुभग रच पच कियो प्रकास
-श्री राधा नख सिख-पाण्डुलिपि

उल्लेखनीय रचना 'श्री राधाकृष्ण सवाद' म कवि नैं स्यामास्याम के अद्वैत जुगल रूप कू राधा कृष्ण के परस्पर वार्तालाप के माध्यम सों साकार कीनो है। 'पयोधर' अरु 'बिजुरी' में उपमा मे देखो या अद्वैत भाव की झाकी मगई या छद मे पयोधर सब्द मे श्लेष की मन मोहक भगिमा की मधुर ध्वनिऊ है रही है —

होत पयोधर म बिजुरी सिगरो जग जानत याहि मुरारि।
पँ बिजुरीन म होय पयोधर नैंनन आज लों नाहि निहारी।
रावरो रूपहि दीठ परें जब भासत विज्जु लता अनुहारी।
ता पर पीन पयोधर की छवि देखत जात न को वलिहारी।

राधा की पावन भक्ति मे समपण को महत्व वताते भये स्वय कवि न कृष्ण के मुख सों या भासा मू कहवायो है–

का विधि रावरी भक्ति करू कहु कौन उपायन साध रिझाऊ।
साँच कहो न दुराव रखो कछु कौन सो भाव हिये अपनाऊ।
आत्म समपण सो बढ राधि के कौन सो पथ कहो जु बताऊ।
जो इहि मारग पै पग देय पलो तिहिं छोड म जान न पाऊ।

इन द्वै राधिका विसयक रचनान के अलावा 'श्री राधिका चरण सप्तक', श्री राधिका अष्टक अरु 'श्री राधिका चरण' नाम सो छोटी-छोटी रचनाऊ हमकू पण्डित जी के काव्य ग्र थन मे मिली है। 'श्री राधिका चरण सप्तक' म राधा के चरन 'कल मल कदन सदन सुख सम्पत के', 'मगल के करन अमगल हरन', राम ब्रज वासिन के सुहाग भू मडल के', सागर सुधा के भूरि भाग बसुधा', के है सुष के अगार दुख दुग्ति विदारि सार 'भव निधि असार मे अम्बुज वरन हैं, 'चार फल दायक सब लायक प्रभा पुंज', दीन के सहायक औ तारन तरन हैं', सुख सरसैया जन मन हरसैया अहैं', 'छवि के अगार पूत प्रेम सुधा धार चारु' के रूप मे श्री राधा के चरनन को महिमा को कवि नै बरनन कियो है तो दूसरी तरफ 'श्री राधिका चरन' नामक अ य कृति मे राधा के चरनन को बनन कीनो है–सूम की थाली सम सगाथी जन-जीवन के' दैन सुख अगाधा सब साधा करन पूण, करन भव बाधा चरण राधिका के हैं' आदि के रूप मे अ य भाव सों राधा के चरनन की महिमा गाई गई है। 'श्री राधिका अष्टक' राधा की व दना 'वेदन की सार हरि प्रेम की सुधा धार ब्रज की आधार नमो कीरति कुमारी की भक्तन पन पारिका है -खलन साहारिका मुनि मन हारिका श्री कीरति कुमारी का', सुखमा की सार है अधार

तिहु लोकन की, परम उदार पूत प्रेम की प्रचारिका', 'प्यारी घनश्याम की दुलारी वृष भान की जैसे भावन सो राधा की महिमा को बनन है ।

बैसे पण्डित जीनं कई अष्टकन की रचना करी है । अगर इन छोटे-छोटे ग्र थन को उल्लेख करें ता इनके रचे भये करीब पचास काव्य ग्र थ बन जाईगे । इन अष्टकन मे 'श्री गणेशाष्टक, दुर्गा अष्टक विटुक अष्टक', हनुमान अष्टक', 'श्री परुपराम अष्टक आदि कछु इनके अ य प्रमुख अष्टक है । इन अष्टकन म ओज जैसे कठोर भाव कीऊ सफल अभिव्यक्ति भई है । देखे परसुराम की महिमा को एक कवित उदाहरन-

देत है दुहाई आत ताई भृगु नदन की
धर पद सीस भीख मागत है प्रान की ।
छीन छत्र धारिन सो सत्ता माँहि मडल की,
कश्यप ऋषि को भक्ति भाव सो प्रदान की ।

हनुमान के छ दन मे कई जग तुलसी की रचना हनुमान बाहुक' को प्रभाव दीख है । एक उदाहरन देखो—

गोपद सो सत योजन सि धु उलाघ गयो छिन लक जराई ।
धीर बधाय सिया को सब सुधि आय के राम को जानै सुनाई ।
लाय सुपेन सजीवन मूरि सुभूरि प्रभा जन मे प्रगटाई ।
ताको कहा जमदूत करै अस वायु को पूत है जाको सहाई ।

'दुर्गाअष्टक को एक उदाहरन देखो—

ध्यावत भीत अवशेष हरै जनकी दुरगे न विलम्ब लगाव ।
जो सुमिर चित लाय सुबुद्धि निसशय ही अति निमल पावै ।
दारिद दुक्ख हरै पल मे भय हारनि तो सम दीठ न आवै ।
सब पकारि दयाद्र मना तु ही तो सम मातु दुनी म लखावै ।

'श्री कृष्ण ज म लीला अरु श्री गोवधन धारण लीला एव 'रम्भाशुक सवाद' नामक छोटी सी तीन कृतीऊ पण्डित जो के अ य ब्रज काव्यन की तरियां भौतई सुन्दर रचना है । आकार की दृष्टि सों 20 25 छ दन मे सिमटी कृतीन मे कवि ने कोमल अरु

कठोर एव शान्त भावन की प्रसोद माधुय गुणयुक्त काव्या नन्दमयी सरस धारा प्रवाहित कीनी है। 'श्री कृष्ण जन्म लीला' मे जेल मे कृष्ण को जनम बिनकी महिमा, वासुदेव द्वारा गोकुल जानो एव गोकुल म पुत्र जन्म पै बधाई के भाव या कृती मे हमकू देखवे कू मिले है। कृष्ण जन्म बधाई पै कवि के भाव परखों—

धाय चली ब्रज की बनिता अरु गोपन भीर भई नद द्वारे।
देव सुरागना हू तिनमे मिलि होस हिये की लगी सुवि वारे।
कोपन के पट खोल दिये नद मोद महामणि मुक्तक बारे।
मगल गान मयक मुखी कर बाजन लागे बधाये नगारे।

गोवधन लीला म कृष्ण के कहे प गोवधन पूजा के कारन इन्द्र के कोप सों भयभीत ब्रज वासिन की एक झलक देखो—

अति अकुलाय भय पाय गोपी ग्वाल धाय,
मतौ सो बनाय नद द्वार जाय घेरो है।
ननन म नीर लाय पूँछत जसोमति सो,
कित मे दुरयो सो लडतो लाल तेरो है।

भयानक भाव की परिनती देखो—

खाय-खाय जोम पौन पर्सों न उसास लेत,
झझ' झहरात नेक लेत ना उसारो है।
धुरवा घुमड घूम घूम झूम झूम बढ़ें,
दीखत ना मान अममान भयो कारो है।
गरजै निसान घनघोर सो भरी है दिसा,
निसा सी भई है द्यौस चलै कहा चारो है।
पच पच हारो करै मघवा विचारो कहा
छप्पन पहर गिरि छिगुनी पै धारो है।

दन्द कुमार जी ने विभिन्न देवी-देवता ब्रज के तीर्थ ब्रजभासा, ब्रजभूमि महिमा श्यामा श्याम युगल रूप श्री राम चरण वदना, शिव को हलाहल धारण रूप, राधिका चरण महिमा, यमुना महिमा आदि क विसय म ब्रजभासा में परम्परित छन्दन मे खूब लिखो है। अगर इन सिगरी रचनान कू इकठौरी करी जाय तो छन्दन की सख्या हजारन

के ऊपर पहोंच जायगी। कवि न, 'जप की उठत तरग जहाँ ब्रजराज झूमे महारानी श्री राधिका अष्ट सखिन के झु ड, डगर बहुरत साँवरो जय जय राधाकु ड' कहन राधा कु ड की महिमा गाई है अर 'दायक है फल चारहु को वर हेमथली ब्रजभूमि सुहावनी कौतुक केन्द्र यही हरि को अज शमहु के चित चाव चढावतो', मोहन को मन मोह लियो अस हेमथली ब्रजभूमि सुहावनी, 'तिहु लोक विशोक करो मन भावन पावन ये ब्रज की रज है।' जैसें भामा वारे छन्दन म ब्रजभूमि की महिमा गाते भये कवि हया तानू लिख दे है ब्रज रज की पावनता को स्मरन करत भये—

छाई जग धूम जस गावें जग झूम-झूम,
दुरित दुरूह रेख मेट भव सूम की।
पाप पु ज नासें पूव पु यन प्रकासें भासें,
भूलहू बिनासें भव बंधन हजूम की।
कम्पत क्लेस करें चम्पत अशेष ताप
जन मन हारी मनों सपति है भूम की।
महिमा अकूत जम जाहि सदा दूर भजें
सुख की प्रसूति पूत रज ब्रजभूमि की।

कवि न अपन देस के राष्ट्रीय महापुरसन पेऊ ब्रजभासा म जम के कलम चलाई है। भीष्म शिवाजी, महाराणा प्रताप, महात्मा गाँधी जैसे राष्ट्रीय नेतान को कवि न सैंकडन छदन म बिनके महान कामन की महिमा को उल्लेख कीनो है। 'चतक के असवार प्रताप सो, देख्यो दुना मे न दूसरो सूर है, दावा है कि वडवा वि शिव का तृतीय नैन ऊग्यो प्रलै भानु के प्रताप को प्रताप है, जैसी भासा वारे छदन म कवि ने महाराना प्रताप की बीरता को वनन कीनो है। याई तरियाँ महात्मा गाँधी क सैकडन छदन मे कवि ने फूट फर फदिनी उखाड के समूल फेंक, मोहन सम मोहन सुना के स्वदेश राग, सोये हुए भारत को फिर सो जगाय दियो', जैसे भावन सो स्वदेश प्रेम की जन जन के हृदय में अलख जगावे है या तरिया—

रिद्धि सिद्धि सम्पति की सरिता प्रवाहित हो,
दृष्टि जाय जहाँ तहाँ दुख को न लेश हो
सभी कमयोगी सम माता के लडैते लाल
शाय वीर्य तेज रोम रोम मे अशेष हो।

पण्डित जीनें विभिन्न रितुन को सवडन कवित्त सवैयान म विस्तार सो मनोहारी चित्रन कीनो है । प्रकृति चित्रन के परम्परागत वनन के अलावा मानवीकरण अरु अलकार रूप मऊ नद कुमार जीने विस्तार सो अपने चित्रन को माध्यम बनाया है । परम्परागत उद्दीपन अरु आलबन रूप में वनन के सग साग करे गये वननन को आनन्द बाई तरियाँ खिलो-खिलो इनकी कविता मे लगे है । जैसे नसगिक सौदय म डूबी गदराई ग्रामवधू के सरीर पै अलकारन की छवि दुगनो फबै है । नव परनीता की महक, नव यौवन की सी चमक, मधुमास की सी लहक के सम ऋतु वननन के कविता कामिनी के मनोहर नावय मे डूब के आनन्द की वहक सा आकठ डूबो भये हैं इनके ऋतु चित्रन के विभिन्न प्रसग पढवे बारे के हृदय मे अनूठी मिठास घोर जाय है । 'सुण्ड वितुण्ड उत लहरात इतै जलधार अपार सुहावत, हीतल भयो सीतल सब जगती तसको वहि चल्यों रस श्रोत लागत अषाढ है', 'धूम घूम झूम झूम लूम लूम चूम चूम रिमझिम बू दैत अकास भूइ छू रहे', 'बारि बूँद परै मद झरत सुहात है', 'दीठ परै जिन ही तित मे उमगात लसै सुख श्रोत प्रगाढ है', 'बन घनश्याम घिरे नभ घनश्याम है', जैसे छदन मे बरखा की सरसता 'शरद जुन्हाई है कि छवि गिरि चूर कर कूल पै कलिन्द जाके बिधि बगराई है पावस थ्यावस दैन विल्यो शरदागम घूटी समाधि मुनीन की', 'चूरिकै रजत गिरि भुइ बगरायो बिधि क्षीर निधि शेप किधौं बालुका बनाई है', 'चन्द की मयूखन पियूप सो झरयो करै' मे शरद की रसवतता', राजन को राज महाजन को हिमत सम, जाहि देखै ताहि नित बाँटत रजाई है', 'हूल हूल हूलै तन चूलै उन मूल भूलै, भूलै हू न भूलै हा हिमत के हलान को', थर थर कापै हाट होटन विनय करै, हरो ना हिमत रही नाम की रजाई' मे हेमत की सुन्दरता 'शिशिर सास मानो विश्वबाल अलबेली को प्रेम घर घारन की पाठ सो पढ़ात है', 'सुख सरताज बर बुद्धि को जहाज सो, एक दत बारो ऋतु राज गणराज है', ब्याहन को पहुमी दुल ही दुलहा सो बन्यो ऋतु नायक आवत', 'बसुधा नवेली अलबेली रसबेली मनो, बालम बसत लै समोद विहरत हैं', 'साज कै सिंगार वर वसुधा नवेली मनों, करत बिहार लिये बालम बसत है', कोयल की कूक सुन हूक सी करेजे उठै, बालम विदेस तो बसत बस अत है', मे ऋतुराज की मधुर महक को कवि ने बडो मनोहारी चित्रन अपने छन्दन म कीनो है ।

होरी अरु बसरी के सौन्दय कू बी कवि ने अपने सैकडन छन्दन की माला गूथी है । डोलै नव नारि नेह नदी उमगाई है', फाग सुभाग मच्यों ब्रज म ब्रज बालन बीच फँसे गिरधारी, ओत प्रोत लाल पै न ललिता चढात है', लालन गुलाल लै धूम सो मचाई है, 'फाग फौज साज आज करत चढाई है', भारत मे फाग भली आग सी लगाई है', 'जिधर देखों ऐसी नवीनता को घोप है', 'आठो याम हियरा म होरी सो दहात है', 'कर दीनी सुद्धि बुद्धि बाणी भावन की इबारत कू खोल के घर दीनो है ।

मे कवि ने फाग के सौन्दर्य पू साकार कीनो है। कवि ने बांसुरिया मे छदऊ मौतई रोचक अरु महक भरे बन पड़े है—यथा –'नियर रस पीवत अघर सुघा की है', पर अघर बजावें डर लगत सुहायो है 'ऐसे निर मोही मे अघर बास पायो है', भूल खान पान कुल कान को ना मान रख', जैसे छन्दन म बसी बादन के सौन्दय क एक एक भाव को बड़ो मनोहारी चित्रन कियो गयो है।

पण्डित नद कुमार जीने आधुनिक जीवन की आपाधापी, समाज सेवी पाखण्डी नेता बनने को ढाग जैसी विसयन के सग-सग परतन्त्र भारत की पीड़ा तक कू बड़ी संजीदगी क साथ अपनी कवितान म उतारो है। सन्यास लये पाछेऊ इनकी काव्य रचना प्रक्रिया समाप्त नाय भयो। सन्यासी जीवन म इन्ने पीयूष प्रवाह' सीमक सों पण्डित राज जगन्नाथ की गगा लहरी को अनुवाद कीनो। वैराग्य सतक' 'परोस अनुभूति' जसे काव्य ग्रथ पण्डित जीनें अपन सन्यासी काल मे लिखे।

हजारोन प नान मे बिखरे भये पण्डित नन्द कुमार शर्मा के ब्रजकाव्य को अबई तानू मूल्याकन नाय है पायो। अनुपलब्ध हैबे के कारन ब्रज साहित्य की जि अमूल्य निधि अबई घनघोर अन्धकार मे परी भई है। स्यात हमई पैनी दफै पण्डित जी के साहित्य को मूल्याकन कर रये है। पण्डित जीनें डायरी के छोट-छोटे पन्नना म कवित्त सवया अरु छन्द लिखे हैं। 'डायरी के ऊपर छन्द लिखब की तारीख अरु नीचे अपने हस्ताक्षर करबो नाय भूले है। इन तिथीन के आधार पै पण्डित जी नें सन 1934 म समय कवि की तरियाँ कविता लिखनो सुरु कर दिनो हो। अरु जी क्रम सन 1961 तक चलतो रहयो जब तानू बिनके सरीर मे सास बाकी रही। पण्डित जी के बिसाल काव्य भडार मे ब्रज के अलावा हिन्दी अरु उर्दू की शेर शायरीऊ काफी मात्रा मे लिखी है। समाज मे फैली बुराइन पेऊ पण्डित जीन अपनी कविता म बेबाक है के कलम चलाई है। गद्य के रूप मे हमकू इनकी कोई रचना नाय मिली। पत्नी मैया के देहा त पाछे इन्नें अपने एक सिस्य कू मकान जायदाद अरु दूसरे सिस्य कू अपना सिगरो साहित्य प्रदान कर दीनो।

ब्रजभाषा के अमर गायक—कवि नवरत्न

हिन्दी को वीरगाथाकाल, भक्तिकाल अरु रीतिकाल ब्रजभासा को काल है। इतेक समरिद्धसाली अरु अपार वैभव सम्पन्न ब्रजभासा नें आधुनिक काल माहि अपनो सब हिन्दी खरी बोली कू दान दे दीनो। ब्रजभासा नें अपने आंचर के दूध ते खरीबोली को लालन-पालन कीनो है। वाकू अगरिया पकर के ठाडो करिबो सिखायो है तुलाल भरिवो सिखायो है अरु वाकू अभिव्यक्ती को वैभव दीनो है। खरी बोली कू चलिवो फिरबो अरु उठबो बैठबो सिखायवे म ब्रजभासा ने खुसी खुसी आनन्दित है के अपनो तन मन, धन न्योछावर कीनो है। जा दान मे ब्रजभासा के कविन को कितेक बरो योगदान रह्यो है जापे अबई चरचा नाय भयी है। ब्रजभासा को जि ऐतिहासिक दान युग की माग को परिनाम बनो है।

पंडित गिरधर शर्मा नवरत्नऊ वा युग के ब्रजभासा के साहित्यकार अरु कलावन्त हे जा युग मे ब्रजभासा हिन्दी खरी बोली कू अपनो स्थान दान कर रही ही। नवरत्नजीनें ब्रजभासा की रचनान के मग अपने काव्य भावन कू सबा तें पैले पखान पें उतारों हो। ब्रज को मिठास अरु लालित्य विनके दिल दिमाग पै आखीर तानू छायो रह्यौ हो। बिनें ऐसी हिन्दी कू जनम दीनो जामे ब्रज भासा को लालित्य अरु मिठास ज्यो की त्यों बनो रहै।

हम ब्रजभासा के इतिहास के पखान को अवलोलन करे हैं तो प्रमानित होय है के अधिकास पुराने साहित्यकार ब्रजभासा के काव्य ससार ते होमते भये हिन्दी खरीबोली मे आय हैं। ब्रजभासा के कविन्ने विपरीत परिस्थितीन मे खरी बोली कू सहारो दीनो वाकू उचित स्थान दिवायवे कू सघस कीनो है। पंडित गिरधर शर्मा 'नवरत्न' को सिगरो व्रज काव्य जा सघष को खुलो भयो दस्तावेज हुते। सिगरे देस के साहित्यकार जा सघस मे अपनो योगदान दे रये है। जा सघस मे ब्रजभासा ने अपने आंचर तें हिन्दी खरी बोली कू चिपकाय के कह्यो—

राजसभा सौं अलग कई सौं बरस वितावत ।
दीन प्रवीन कुटीन बीच सोभा सरसावत ।।
बरसावत रस रही ज्ञान हरि भक्ति धरम नित ।

—प्रेमघन

गरी बोली पै आरोप लगाये गये के बामे कितेक कवि भये है ? बाकौ साहित्य कहाँ है ? व्रजभासा वे सन् 1855 म जनम लेबै बारे मलयपुर मु गेर के कवि जगनाथ दास चदुर्वेदी ने जाको जवाव दीनो ।

वानी हि दी भासन की महारानी ।
च द सूर तुलसी से यामे कवी भये लासानी ।
दीन मलीन कहत जो याको है सो अति अज्ञानी ।
या सम काव्य छद नहि देख्यौ है दुनिया भर छानी ।
का गिनती उरदू बगला की, भरे अगरेजहु पानी ।
आजहु याको सब जग बोलत गोरे तुरुक जपानी ।
है भारत की भाषा निश्चय हि दी हि दुस्तानी ।
जगनाथ हि दी भासा को है सेवक अभिमानी ।

—जगन्नाथ दास चतुर्वेदी

अगरेज ने खरी बोली अरु उदू क बीच लराई अरु सघस के बीज बोय कै अपनो सासन तन्त्र कायम करिबे की दुरभिसधी चलाई ही । व्रजभासा के कवि ने जा समै मे हि दी खरी बोली कू सहारौ देकै अगरेजन की गुप्त चाल की जबाव दीनो हो । रास्ट्रहित मे व्रजभासा के साहित्यकारन को खरी बोली की समरिद्धी मे अपनो सबकछु दान द दियो । जाई दान कौई आज जि परिनाम है के खरी बोली अपने पामन पै ठाडी है कै सरपट दोरबै म लगी भई है । अ गरेजन की कुचालन के कारन बा समै के भ्रमित भये भारतवासीन कू अपनी भासा की तरफ आकसन अरु प्रेम पैदा कर आगे बन्दि को उद्बोधन कीनो हो आजमगढ के कवि शिव सम्पति ने जा तरिया–

प्रेम परिवार सो बढावै शिव सम्पति जू,
सबही मों मोद भरी बोले बैन प्यारी है ।
भारत निवासी ब धु ताहि क्यों बिमारी हाय,
गमी गुनबारी भापा नागरी हमारी है ।

—शिव सम्पति

भरतपुर के कवि सिरी नन्दकुमार शर्मा नैऊ जाई समैं लोगन के मन मे ब्रजभासा के जा दान कू इन सब्दन मे अरपित कीनो हो —

सुन्दर सुवर्ण स्वर व्यंजन सुहात सबै
थोरी ही श्रम सौं मन आस जो पुजात है।
भात ही रसीली मनमोहनी लचीली प्यारी,
रस अनुरूप होय सुख सरसात है।
घात न लगावत यामे नेक फन्द फदन की,
जो कछू लिख्यौ सो ही सुभाव पढ्यौ जात है।
आत है हिये मे एक बात यही मेरे मित्र,
भाषा देव कानन की हिन्दी पारिजात है।

—नन्दकुमार शर्मा

प गिरधर दामा नवरत्न जाई पीढी के कवि हे। बिन्ने ब्रजभासा के मंच ते हिन्दी खरी बोली कू रास्ट्रभासा के पद पै बैठायबे कौ संघर्स कीनो हो। जा संघर्स मे बिनकी ओजस्वी रूप देखते ई बनै है—

नवरत्न राजस्थान मध्य हिन्द आगे आये,
देख के फिरंगी के करैजे लगे धडकन।
उत्कल बिहार की क्या सारा हिन्द एक हुआ,
रास्ट्रभासा हिन्दी की भुजा ही देख फरकन।

बिन्ने रास्ट्रभासा हिन्दी के हित माहिं अपनी कमी की तरफऊ लोगन कौ ध्यान आकर्सित करिबे मेऊ कसर नाय छाडी। बे ब्रजभासा ते निकासि के हिन्दी खरी बोली कू रास्ट्रभासा के रूप म तो स्थापित करनो चाहते है परि जब बाकी स्थिति दूसरी भासान के संग देखते हे या तुलना करते हे तो बे दुखी होमते हे। जा कारन बिन्ने हिन्दी के हिमायती कोरे भावुक लोगन कू आड़े हाथ लेवे फटकारौ हो—

अंग्रेजी, जरमन ग्रीक, फ्रेंच लेटिन त्यों,
रसियन, जापानी चीनी प्राकृत प्रमानी है।
तमिल, तैलग, तेलू, द्राविडी, मराठी ब्रह्मी,
उडिया, बंगाली, पाली, गुजराती छानी है।
जितनी अनाय आय भाषा जग जाहिर है
फारसी अरबी तुर्की सब मन आनी है।
जनम बृथा है तो भी मैरे जान मानव को
हिन्दी मे जन्म पाके हिन्दी जो न जानी है।

जा तरिया 6 जून, 1881 के झालरापाटन म जनम लवै बारे प गिरिधर दार्मा नवरत्न के साहित्य म एक पूरे युग की प्रतिधुनि सुनाई परै हैं। वे ब्रजभासा के बा गेमे के कवि हे जिन अपनो सबकछू अरपित करक राष्ट्रभासा हिन्दी को प्रचार प्रसार करिवे मे अपनो जीवन लगाय दीनो हो। ब्रजभासाय रीतिकाल की कामनीन के मोहनी रूप त किनार कै धरती की कविता बनाय के हिन्दी भासा कू समरिद्ध बनायबे म काऊ तरिया की कसर बाकी नाय छोडी ही बिनै।

नवरत्न जी एसे सधिकाल मे भय है जाम पुराधीन लालित्य को वैभवऊ है अरु नये युग के प्रभात की लौनी-लौनी किरनऊ है। बिन पुराने वैभव कू आत्मासात करि के नये युग को मन ते अभिनन्दन कीनो है। अपने समै की युवा पीढी की पीठ थपथपाय के बिनकू भरपूर समरथन दीनो है। जाई कारन उभरत कवि बच्चन कू स्याबासी दवे वे झालावाड त चलिके प्रयाग बिनक घर पहोंच हे।

राजस्थान ब्रजभासा अकादमी नवरत्न अक प्रकासित कर राजिस्थान के जा पुरोधा माहित्यकार के कृतित्व के अजान पच्छ कू उजागर करिवे को प्रयास कर रही है। जैपुर की नवरत्न शताब्दी समारोह ममिति' न नवरत्न जी की सताब्दी मनाव की सुरुआत करी ही। राजस्थान साहित्य अकादमी न बिनके व्यक्तित्व अरु कृतित्व पै दो सौ सतरह पनान को मधुमती को विसाल अक प्रकासित कर नवरत्न जी के विसै म मूल्यवान सामगरी प्रकास म लायव को स्तुत्य प्रयास कीनो है। राजस्थान सस्कृत अकादमी नऊ स्वर मगला' को अक प्रकासित कर बिनके सस्कृत ग्यान कू उजागर करिब को प्रससनीय काम कर दिखायो। झालावर राजकीय महाविद्यालय ने जुलाई म देस के नामी-गिरामी मनीसीन कू इकठौर करिके 'नवरत्न' जी के साहित्य पै विश्व-विद्यालय अनुदान आयोग की आर्थिक सहायता ते अखिल भारतीय परिचर्चा आयोजित कीनी। इन प्रयासन के होमते भयऊ बिनक ब्रज-काव्य पै चर्चा अरू प्रकासन को अभावई रह्यो। जाई अभाव की पूर्ती करिब कू राजिस्थान ब्रजभासा अकाम्मी ने 8 नवम्बर, 1986 कू नवरत्न जी के ब्रज काव्य पै परिसवाद को आयोजन एव ब्रजशतदल' के अक मे बिनके ब्रज काव्य कू समेटवे को प्रयत्न कीनो है।



रास्ट्रीय ब्रज-काव्य प्रनेता पडित गिरिधर शर्मा 'नवरत्न'

सन् 1881 मे तत्कालीन राजपुताने को एक पुरानो पिछड़ो भयो राज्य झालरा-पाटन हो जामे एक ऐसे बालक ने जनम लीनो जो भविस्य मे हि दी भासा को ख्याति प्राप्त अरू मन मोहक वक्ता बनो। आजादी की तरपन भरी काव्य भावना को प्रनेता बनो। देस के कोने कोने मे जाने अपने मोहक व्यक्तित्व ते भोग विलासन म डूबे भये साम तन एव राजान कू स्वदेस प्रेम को सर्जीवन मन्त्र दीनो। ऐसे जा विद्वान, स्वदेस प्रेमी मनीसी को नाम हो-प गिरिधर शर्मा नवरत्न। गुजराती प्रवासी ब्रज, हि दी, अ गरेजी, बगला, फारसी, उदू, मराठी आदि भासान मे रचना करबे वारे नवर न जी न जाने कौन सी माटी ते निर्मित हे, न जाने कौन से वे जीवट के पुस्कल सुदर्सन भाव है। न जाने वु कौन सी देस पै मर मिटबे वारी गुरुन की प्रसादी सिच्छा ही, न जाने वु कौन सी अमोघ जीवन सक्ती ही, न जाने कौन सो वु तेजस्वी चमत्कार हो जामे रास्ट्रीयता एव ब्रज प्रेम की ऐसी अमिट सजीवनी काव्यधारा बिनकी कमल ते निसरित भयो। अस्सी बरस के लम्बे जीवन मे बामन बरस तक वे ईसुर प्रदत्त अपनी आखिन ते जा मायावी ससार कू देख सके। सेस बिनको जीवन सूरदासी रह्यो। अटठाईस बरस तक नैनन की ज्योती के अभाव मे बिन अपनो बानी ते बोलिकें निरतर काव्य रचना करकै साहित्य की अमूल्य सेवा कीनी। लेखिका ही घरवारी रतन ज्योत्सना जाकू पडित जी ने ब्याह पाछे अच्छर ज्ञान करवायो हो। अटठाईस बरस तानू पति की रात दिना आँख बनकें रतन ज्योत्सना ने आजादी के अमर गायक नवरत्न जी के काव्य कू लिपिवद्ध कीनो है। वु साहित्य के सत्य की ऐसी मार्मिक यसोगाथा है जाको उदात्त उदाहरन अ य त्र मिलबो दुलभ है।

प गिरधर शर्मा 'नवरत्न' ने पैली दफै ब्रजभासा मे स्वदेस प्रेम अरू स्वत त्रता आन्दोलन विसयक प्रेरनादायी काव्य को सजन कीनो है। बिनकी रास्ट्रीयता के भावन ते भरी भयी 'मातृ व दना' नाम की ब्रजभासा की रास्ट्रीयता के भावन ते भरी ऐसी लम्बी रचना है, जाने साहित्यकारन कू एक नई प्रेरना दीनी है। सन 1857 के स्वत-

न्त्रता आदालन की असफलता के कारन हमारे देसवासीन के सग सग साहित्यकारन केऊ मन मर चुके हे । प्रबल सक्तिसाली होमनेऊ योजनाबद्ध लराई के अभाव म बिखरी भयी आजादी की जा लराई कू अ ग्रेजन ने बरी क्रूरता के सग दबाय दीनी हो । जा क्रूरता को भारी आ तक लोगन के दिमाग पै छा गयो हो । अत काऊ साहित्कार की इतेक हिम्मत नाहि जा वू अपनी रचनान के माध्यम ते लोगन के मन मे स्वदेस प्रेम की बात कर सकै । ऐसे समय म 'मातृ ब दना' के नाम ते बगाली साहित्य मे स्वतन्त्रता के सुरन की सुरुआन भई ही । हि दी भासा बा समै आजादी के विसे साहित्य मच पै पूरी तरिया मौन ही, जाकै पवर भाव सबन ते पैले पूरे उभार अरू प्रेरना के सग हिन्दी मे ब्रजकाव्य की जा अनुपम कृति नवरत्न जी की 'मातृ व दना' नाम त सरस्वती पत्रिका म प्रकासित लम्बी कविता ते भई ही । ब्रजभासा म सन् 1887 म 'भारत भजनावली' अरू मन 1901 म गुरूप्रसाद सिंह की भारत सगीत' रचना प्रकासित जरूर भई ही परि नवरत्न जी की मातृ व दना' रचना मे स्वदेस प्रेम के भाव जितनी प्रखरता के सग ऊभरे है बितेक इनते पैले लिखी भयी जा विसै की इन दो रचनान मे नाय उभरे है ।[1] जा तरिया राजस्थान के छोटे से राज झालरापाटन के तत्कालीन कवि सिरी गिरधर शमा 'नवरत्न कू ब्रजकाव्य म पैली बेर स्वदेस प्रेम पै लिखबे बारो आधुनिक भावन क पोमक कवि के सग सग वाकू जा विसैको पैलो हिन्दी को कवि मानो जा सकै है ।

'सरस्वती' पत्रिका के मच ते अपनी काव्य कला कू सान देवै बारे मैथिलीसरन गुप्त ने निस्चैई नवरत्न जी की मातृ वन्दना रचना कू पढिकें सन् 1912 मे प्रकासित भारत भारती लिखबै को प्रेरना लीनी ही । परिस्थिती प्रमानित कर रही है क 'भारत भारती के प्रेरना के सुर झालरापाटन के एक साधारन परि स्वदेस प्रेम के भावन ते लबालब भरी ब्रजकाव्य की रचना मातृ व दना' तेई हुतै ।

नवरत्न जी न अपने ब्रजकाव्य म देस प्रेम को प्रबल प्रेरनादायी अलख जगायो हो । बिने मातृ वन्दना नाम की स्वदेस प्रेम की लम्बी कविता म ईसुर ते बरी कातर बानी मे अपनो सब कछू देस प्रेम मे लगायबै की कामना करी है । बै ईसुर ते प्राथना कर है क बिनकी जीभ केवल बाई जगह प खुले जहा पै देस प्रेम की चरचा है रही होय । बिनके कान देम भक्तन के गीत सुनबे म लगे रहैं । जाके अलावा वे काऊ तरिया के गीत नाय सुननो चाह है । अन्त म तो बे ह्या तक कह दे है कै मरो मन तन अरु धन सबई दस प्रेम म लग जाय । मातृ वन्दना के जा एक छोटे से कवित्त म बिन्ने आजादी के भावना की एसी आग बरसाई है बाकै विसै म जितक कह्यो जाय, वितैक ई थोरो है ।

---

1 हिन्दी साहित्य कोश भाग 2-पन्ना-12।

चर्चा जहा देश की हो मेरी जीभ वही खुले
और नही खले कही खुदा की खुदाई मे ।
मेरे कान गान सुने साचे देश भक्तन के,
और गान आवे कभी मेरे ना सुनाई म ।
मेरे अग रग चढे एक देश प्रेम को ही
और रग भग हो वे बूढे जा तराई म ।
मेरो धन, मेरो तन, मेरो मन जीवन,
मेरो सब लगे प्रभो ! देश की भलाई मे ।

देस प्रेम की महिमामयी भावना नवरत्न जी के ब्रज काव्य ते होमती भई हिन्दी साहित्य मे आई है। स्वदेस प्रेम की वा जमाने मे बातऊ करबे को मतलब हो अगरेजन की क्रूरता को सिकार होबो। जा कारन काव्य मे लिखबे की तो बातई का म्हारे देस की चर्चा करबो कोऊ नाय चाहतो हो, चोंकि अगरेजन को प्रचण्ड आतक छायो हो। ऐसे समै मे नवरत्न जी ने छाती ठोक के अपनी कवितान ते लोगन कू देस की भलाई मे भारी दुख सहके जीवन अर्पित करिवे की प्रेरना दीनी है। बिनको नीचे लिखो भयो कवित्त आज की परिस्थितीन मेऊ जितेक साचो है, वितेक वा देस काल मेऊ सूरज की तरिया प्रखर साच के प्रकास कू ऊजागर करबे वारो हो। लोगन के मन मे कैसी प्रेरना दीनी है, या छोटे से कवित्त ने—

दुख दे मनायो सुख जान न वह पायो दुख,
सुख दे उठायो दुख छायो सरसाई मे ।
लेत रहयो जौन सौ ही खोत रह्यौ साची कहौ
देत रहयो सोही पात रह्यौ सुघराई मे ।
जानो ना बिचित्र कछू मानो बात मेरे मित्र
जग के बिलोको रग राच निपुनाई म ।
अपने ही लिये जियो मर गयो मानव वो,
जी गयो वही जो मर्‌यो देश की भलाई मे ।।

तत्कालीन परिस्थितीन मे ऐसे विस्फोटक अरू राजद्रोह की स्रेनी मे आयवे वारी काव्य रचनान कू नई करिवे की मित्रन ने अरू रिस्तेदारन ने बिनकू भौत सलाह दीनी। तरै तरे ते समझायो। पर देस प्रेम के धधकते भावन वारे जा कवि ने बिनकी एकऊ नाय सुनी। काऊ ने बिनकू कारे पानी को भय दिखायो, काऊ नें धाल बच्चान की बिनके जेल जायवे के पस्चात दुरदसा के दारून चित्रन करिके बिनकू समझायबे की

प्रयत्न कीनो। जब बात माथे पे है कै ऊपर निकरबे लगी तो नवरत्न जी ने उत्तर दीनो जा भासा मे, जा तरिया—

निर्मल अपनो मन रखिगें सदा ही हम,
वीर श्याम सुन्दर को चित्त म विठावेगे।
देख देख वाकी ओर, कहेंगे वचन साचे,
कहनी की सी करनी करके दिखावेगें।
बोलेगें न झूठ कभी चाहे प्रान चले जाय,
भूल पडे पथियों को पथ पै लगावगे।
गहेगें परोपकार करेगें स्वदेश हित,
भारत को एक कर भारती कहावेगें।

बिन्ने देस हित अरू देस प्रेम कू अपनो सब कछू बनाय लीनो हो। याद करो बा समै कू जब देस प्रेम की बात करिबै को मतलब हतो अपने परिवार अरू स्वय के प्रानन कू जोखिम म डारिबो। पर हडौती के जा सिंह नें नाय परवा करी काऊ की। हुकार भरि कै बिन्ने कायरन कू ललकार के कीन्हीं, अरे चो मरो हो ! चौ डरपाओ हो मोय ? मैं नाय डरपू —

देश के लिए न कभी करूगों बुराई मे
भीषण भयकर प्रसग मे ऊ भूल केऊ।
भूलुगो न देश हित राग की दुहाई मे,
जब लौ रहेगी सास, सबस्वऊ लुटा केऊ।

नवरत्न जी नें भारत के जन मन मे स्वदेस प्रेम को सखनाद फूक कै ह्या क निवासीन के कुम्लायें मन माहि अपने देस अपनी माटी, अपनी सभ्यता, अपनी सस्कृति अपनी परम्परान ते प्रेम करिबै को उदबोधन कीनो है। कहब की आवस्यकता नाय क नवरत्न जी जा साच कू अच्छी तरिया जानते हे के जब लौ यहाँ के सपूतन कू अपनी मातृभूमि ते सच्चो अनुराग नई होयगो, सच्ची ललक नई होयगी, सच्चो पुस्कल मोह नई होयगो तब तलक बाको रच्छा कू हसते-हसते प्रानन को बलिदान करिबे को पावन साहस पैदा नाय है सके। जाई कारन नवरत्न जी ने अपने काव्य ते अपनी माटी ते पावन अनुराग को सगीत पदा करिबे को महान काम कीनो है। जाई कारन बिन्ने कही ही—

ज्ञान को भान उग्यो जग मडल,
भारत के जन काहे जगो ना।

काहे विलब करो शुचि काल मैं,
काहे अकम ते दूर भगो ना।
काहे तजो नहिं आलस को पुनि,
कम के मारग काहे पगो ना।
काहे करो नहिं कारज नूतन,
काहे स्वदेश के नेह लगो ना।

बिने अपने काव्य मे स्वदेश प्रेम के भावन कू साकार करिबे कू देस के कन कन कू महत्व दीनो है। गरीब, सत्रस्त धमभीरू जातिगत रूढीन मे दबे भये, धारमिक अधबिसबासन की अमर बेल ते सोसित, जादू टौना के प्रति अगाध बिसबासधारी, विभिन्न कामन ते परिवार को पालन पोसन करिबे बारे कोटि कोटि भारतवासीन कू कह्यौ कै तुम्हारौ अन्नदाता भारत है, ह्य की माटी है। जा कारन विदेसीन की चाटुकारिता छाडि के गुलामी की चादर उतार क फैंक देऔ। अपने देस की रच्छा करिबोई तुम्हारी रोजी रोटी हतै, तुम्हारो स्वाभिमान हतै। बातेई तुमकू सच्ची जीवन सक्ती मिलेगी। बा समै रास्ट्रीयता अरू देस प्रेम के जा मम कू समझबे बारो महावीर प्रसाद द्विवेदी युग मे एकमात्र कवि हो राजिस्थान की वीर भूमि मे जनम लेबै बारो प गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' है जेई भाव नीचे लिखी भयी कविता को मम हतै —

कोई वस्त्र बुनकरे जुलाहे कौ काम कोई,
करत सुतारी कोई शिल्प काज सारत है।
मोचीपन करे कोई बनावें मिठाई कोई,
लगो कोई फर्नीचर आलम सवारत है।
दीपक बनावे कोई रग लावे कोई कोई,
सेवकी मे द्रव्य पाय उमर गुजारत है।
सब देश चाकर है भारत के वाह वाह
एक मात्र अन्नदाता सरदार भारत है।

नवरत्न जी को सम्पूरन काव्य स्वदेस प्रेम की दिव्य भावधारा ते आप्लावित हतै। सुस्क पत्थर जैसे नीरस अरू दस प्रेम ते सून्य नौजवानन के मन मे स्वदेस प्रेम की रसधारा पैदा करिबे बारे, बिनके ब्रजकाव्य को एक-एक सब्द प्रखर जीवन्त सक्ती ते भरो भयो है। परि अपने देस की दुदसा कू देख कै वे भौतइ चिंतित होमते। सायद अपनी मातृभूमि की दुदसा देख कै भारतेन्दु जी के पस्चात यदि काऊ कवि की बानी सापक भई है तो बामे नवरत्न जी को नाम सबन ते ऊपर है। नीचे लिखी भयी कविता मे जेई भाव पूरी प्रखरता के सग देस की आजादी के सुपने माहि डूबे भये कवि के मन ते देस की दुदसा के कारन निकरो भयो व्यथा को महासागर हतै —

छिन भिन राजतन्त्र छह सौ छियासी राज्य,
लाग बाग भिन्न भिन्न भाषा को उचारत है।
संकड़ा जाति पाति सगठा ठीक नहीं,
मतिगति सारे जन न्यारी-न्यारी धरत है।
मन अकुलावें महादेश दशा दम-देग,
ध्यय को न पता यही बुद्धि मादक भारत है।
मारग लगावे बारो नाम शक्ति दाता कोऊ,
नेता है न साचों यासो गिरो जात भारत है।

नवरत्न जीन अपन ब्रजकाव्य म कम कू महत्व दीनो है। रीतिकालीन मोहनी दुनिया को ब्रजकाव्य धीरे धीरे बुझतो जा रह्यो हा। चौके रीतिकालीन काव्य कम की अपेच्छा साहित्य के लालित्य अरु जीवन की रागमयी वृत्ती को काव्य हो। राग के उल्लास क चित्रन माहि ब्रज कवीन की पूरी सक्ती लगी भयी हो। जा कारन जीवन के कम छेत्र के भाव साकार नाय है पाय रह है। भारतेन्दु जीऊ रीतिकाल के मनोहर राग की अभिव्यक्ति ते पूरी तरिया मुक्त नाय है पाये जद्यपि बिन ब्रजभासा कू स्वदेस प्रेम को बानो पैराय दीनो हो। परि नवरत्न जीन अपने ब्रजकाव्य म स्वदेस महिमा के प्रखर भावन कू स्थान दे क कम को महत्त दीनो हो। बिन ब्रजकाव्य माहि पली दफ क्रान्ती अरू परिवर्तित जीबन कू अपनायो हो। जाई कारन बिने क्रान्ती के भावन को आहुआन कीनो अरू कम को स देस देके अपने रास्ट्रीय भावन कू मायक कीनो हो। जा क्रम म नवरत्न जी को एक उदाहरन देबोई प्रर्याप्त होयगो—

काहू म चलत बाण काहू के कृपाण चले,
काहू के सुभाल तेग, बल्लम कटारी है।
काहू के तमचा चले, चलें ब दूके काहू की,
तोपें चलि के काहू की करें गोलाबारी है।
अस्त्र चलें, शस्त्र चलें चाले चले नाना देश,
भारत है पराधीन बीरता प धारी है।
बातन की बातन में दुश्मन उडा देगें
लम्बी चोडी तीखी जीभ चलती हमारी है।

रीति कालीन ब्रजकाव्य की रोमानी दुनिया पे बा समै नवरत्न जी न जो करारी-करारी चोट कीनी है ऐसो उदाहरन बा समै के सिगरे ब्रजकाव्य माहि ढूढे ते नाय मिले है। रात दिना नारी के मोहनी छल मधुर रूप की तरफ ध्यान देव बारे ब्रजकाव्य ते बे भौतई दुखी हे। जाके सग सग हमारे समाज मेऊ तो भौतई बुराई घुस गई ही, जा

सक्तीसाली होमते भयेऊ हमकू सक्तीहीन बनाय रहो हो। नवरत्न जीने इन पुरानी परम्परान कू उखार फैंकवे को आहुआन कीनो हो। आज की परिस्थिती मे बिनको व्रज काव्य चाये पुरानो लगे है, परि वा समै कू अरु परिस्थितीन कू सुमरन रखनो होयगो जब हमारे देस मे नारी मनोरजन की सोभा मात्र ही अरू बाल ब्याह पावन सस्कार हो। वा समै नवरत्न जीने मामाजिक बुराईन कू जर ते उखाड फंकके रास्ट्र प्रेम को सन्देस दीनो हो—

सीरी सीरी पीरी पीरी जोति की सी फीकी नारी,
मानसु कुमारी ताहि अगना अनावेगे।
रहेगें विलास मे रचे ही दिन रात सदा,
बल के बिनास की न बात मन लावेगे।
अचपल शक्तिहीन उदासीन पराधीन,
अपाहिज मद मूढ मतति बढावेगे।
कहावेगें बाल पिता पालेगें पुरानी रीति
छोडेगे न बाँकी चाल आन को निभावेगे।

पुरूसाथ को सदेस नीचे लिखे भये बिनके काव्य ते और का ज्यादा होयगो—

उन्नति मे अपनो चित दीजे।
दीज सबै कर दूर स्वदोषन
निबलता हि विसजन कीजे।
कीजे महापुरुषारथ रत्न जू,
भारत को न कलकित कीजे।

नवरत्न जी को कवि परम्परान अरू समाज की बुराईन को बिसेष विरोधी हो जाकी बिसे म विचारनीय भाव हूर्ने के वे राजपूताने के परम्परावादी सामत के दरबार के आश्रित कवि हे। पूरे व्रजकाव्य म ढूढे ते नवरत्न जी जैसो जीवट को कवि नाय मिल है, जाने अपने आश्रयदाता की जमात कू खरी खोटी सुनायवे म कमर छोडी होय। जब कै वा समै अन्य राज्याश्रित कवि अपने आश्रयदाता कू रिझायवे म लगे भये हे। कवि कम की नैतिकता बिन्ने अपने आश्रयदाता की रूचि के चरनन म समर्पित नाय कर दीनो हो। नवरत्नजी न ऐसो करिके अपने कवि कम के सग पूरी ईमानदारी बरती है। अपन पुरखान की वीरता को उल्लेख करिव वारे परिभोग विलास म डूबे भये इन राजपूतन पै बिन्ने बिसेक कठोर भासा म चोट कीनी है। ऐसो उदाहरन वा समै के काऊ व्रज कवि मे नाय मिले है—

छिन भिन राजतंत्र छह सौ छियासी राज्य
लोग बाग भिन भिन भाषा कौ उचारत है।
सैंकडन जाति पाति सगठन ठीक नहीं,
मतिगति सारे जन न्यारी-न्यारी धरत है।
मन अकुलावें महादेश दशा दख-देख,
ध्येय कौ न पता कही बुद्धि माद्य भारत है।
मारग लगावे वारो ज्ञान शक्ति दाता कोऊ,
नता है न साचो यासो गिरो जात भारत है।

नवरत्न जीने अपने ब्रजकाव्य म कम कू महत्व दीनो है। रीतिकालीन मोहनी दुनिया कौ ब्रजकाव्य धीरे धीरे बुझतौ जा रह्यौ हो। चौके रीतिकालीन काव्य कम की अपेच्छा साहित्य के लालित्य अरू जीवन की रागमयी वत्ती को काव्य हो। राग के उल्लास के चित्रन माहि ब्रज कवीन की पूरी सत्ती लगी भयी ही। जा कारन जीवन के कम छेत्र के भाव साकार नाय है पाय रहे है। भारतेन्दु जीऊ रीतिकाल के मनोहर राग की अभिव्यक्ति ते पूरी तरिया मुक्त नाय है पाये जद्यपि बि ने ब्रजभासा कू स्वदेस प्रेम को बानो पैराय दीनो हो। परि नवरत्न जीने अपने ब्रजकाव्य मे स्वदेस महिमा के प्रखर भावन कू स्थान दे कैं कम को महत्त दीनो हो। बिन ब्रजकाव्य माहि पैली दफै क्राती अरू परिवर्तित जीवन कू अपनायो हो। जाई कारन बि ने क्राती के भावन को आह्वान कीनो अरू कम को सन्देस देके अपने रास्ट्रीय भावन कू साथक कीनो हो। जा क्रम मे नवरत्न जी को एक उदाहरन दैबोई प्रर्याप्त होयगो—

काहू मे चलत बाण काहू के कृपाण चले,
काहू के सुभाल तग, बल्लम कटारी है।
काहू के तमचा चले, चलें ब दूके काहू की,
तोपें चलि के काहू की करें गोलाबारी है।
अस्त्र चलें, शस्त्र चलें चाले चले नाना देन,
भारत है पराधीन वीरता प धारी है।
बातन की बातन मे दुश्मन उडा देगें
लम्बी चौडी तीखी जीभ चलती हमारी है।

रीति कालीन व्रजकाव्य की रोमानी दुनिया पे बा समै नवरत्न जी न जो करारी-करारी चोट कीनी है ऐसो उदाहरन बा समै के सिगरे ब्रजकाव्य माहि ढूढें ते नाय मिले है। रात दिना नारी के मोहनी छन भगुर रूप की तरफ ध्यान देबे बारे ब्रजकाव्य ते बे भौतई दुखी हे। जाके सग सग हमारे समाज मऊ तो भौतई बुराई घुस गई ही जो

सक्तीसाली होमते भयेऊ हमकू सक्तीहीन बनाय रहो हो। नवरत्न जीने इन पुरानी परम्परान कू उखार फैंकवे को आहुआन कीनो हो। आज की परिस्थिती मे विनको ब्रज काव्य चाये पुरानो लगे है, परि वा समै कू अरू परिस्थितीन कू सुमरन रखनो होयगो जब हमारे देस मे नारी मनोरजन की सोभा मात्र ही अरू बाल ब्याह पावन सस्कार हो। वा समै नवरत्न जीने सामाजिक बुराईन कू जर ते उखाड फैंकके रास्ट्र प्रेम को सदेस दीनो हो—

सीरी सीरी पीरी पीरी जोति की सी फीकी नारी,
मानसु कुमारी ताहि अगना अनावेगे।
रहेगें विलास मे रचे ही दिन रात सदा,
बल के विनास की न बात मन लावेगे।
अचपल शक्तिहीन उदासीन पराधीन,
अपाहिज मद मूढ मतति बढावेगें।
कहावेगें बाल पिता पालेगें पुरानी रीति,
छोडेंगे न बाँकी चाल आन को निभावेगे।

पुरूसाथ को सदेस नीचे लिखे भये बिनके काव्य ते और का ज्यादा होयगो—

उन्नति मे अपनो चित दीज।
दीजै सर्व कर दूर स्वदोषन,
निबलता हि विसजन कीजै।
कीजै महापुरषारथ रत्न जू,
भारत को न कलकित कीजै।

नवरत्न जी को कवि परम्परान अरू समाज की बुराईन को विसेस विरोधी हो जाव विसे म विचारनीय बात हतै के वे राजपूताने के परम्परावादी सामत के दरबार के आश्रित कवि हे। पूरे ब्रजकाव्य म ढूंढे ते नवरत्न जी जैसो जीवट को कवि नाय मिल है, जान अपने आश्रयदाता की जमात कू खरी खोटी सुनायबे म कसर छोडी होय। जब कै या समै अन्य राज्याश्रित कवि अपने आश्रयदाता कू रिझायबे म लगे भये हे। कवि कर्म की नैतिकता बिन्ने अपने आश्रयदाता की रुचि के चरनन म समर्पित नाय कर दीनी हो। नवरत्नजी ने ऐसो करिकै अपने कवि कर्म के संग पूरी ईमानदारी बरती है। अपने पुरुखान की वीरता को उल्लेख करिब वारे परिभोग विलास में डूबे भय इन राजपूतन प बिन्ने विसेस कठोर भासा म चोट कीनी है। ऐसो उदाहरन वा समै के एकऊ दूसर कवि मे नाय मिल है—

प्यालो पर प्याली पी पी लाली करा पीपे,
नशा करो आफू भग चरस आपूती को ।
घर को बिगारो रारठानों घर वारिन सों,
करो वार वनिता को मान भेज दूती को ।
लोहा करिबे की ठौर, हो हा करो, सीख्यों मत
अस्त्र शस्त्र विद्यारण चातुरी निपूनी को ।
देश क कपूतो ! राजपूता ! डूब मर जाओ,
नाम न लजाओ वीर, प्यारी रजपूती को ।

प गिरिधर शर्मा 'नवरत्न स्वदेश के रग माँहि रगे भये ऐसे ब्रजकाव्य के प्रनेता है जिनें ब्रजी कू रीतिकालीन मोहपास ते निकार कै धरती की कविता बनाई है । परम्परान के प्रति विद्रोह के सुर बिनके ब्रजकाव्य के प्रान रहे हैं । राजाश्रय मे रहते भयेऊ नवरत्न जीनें अपने स्वदेस प्रेम अरू रास्ट्रीयता के भावन कू उजागर करिबे म नेकऊ चिंता नाय कीनी । बिन्ने अपने ब्रजकाव्य म आजादी के गीत गाये हैं अरू प्रेनना के सुरन कू सबनते ज्यादा मान सम्मान दीनो है । नवरत्न जी की 'मातृ वन्दना' लम्बी रचना के स्वदेस अरु रास्ट्रीय भावन ने कविन कू इतेक प्रभावित कीनो के 'भारत-भारती' जैसी रचना बन सकी । भारत भारती' सन् 1912 म प्रकासित भई ही । 'मातृ वदना' सरस्वती मे भारत-भारती के दस बरस पैले छप चुकी ही अत जा सत्य कू मानिबे मे कोई सक नाय के 'भारत भारती' के प्रेरना के सुर नवरत्न जी की 'मातृ वदना' रचना हतै ।

डा रामानन्द तिवारी कौ बालकाव्य

डा रामानन्द तिवारी भारतीनन्दन कौ जनम उत्तर प्रदेस के प्रसिद्ध गगा तीर्थ सोरो मे 3 अगस्त, 1919 कूँ भयौ। 1919 ते 1948 तक डा तिवारी कौ समै उत्तर प्रदेस के सोरो, एटा, चन्दौसी अरु प्रयाग आदि सहरन मे व्यतीत भयौ है। 1948 के पाछै बिनकै स्वगवासी हैबे तक डा तिवारी कौ सिगरौ समै राजस्थान मेई व्यतीत भयौ है। बिनकौ बालकाल अरु स्कूल एव महाविद्यालय स्तर कौ शैक्षिक काय उत्तर प्रदेस मे भयौ। सेस तिवारी जी कौ कृतित्व राजस्थान मे रहते भये भयौ है। हिन्दी खडी बोली मे तिवारी जी ने पावती' महाकाव्य के अलावा भौतेरे खण्ड काव्यन की रचना की ही जिनमे ते कछू प्रकासित भये है। सेस अप्रकासित है।

डा 'भारतीनन्दन' कौ व्रज काव्य ज्यादातर बिनके बालजीवन की रचनान माहि सिमटौ भयौ है। सोरो मे सन् 1928 ते सन् 1938 तानू दस बरस कौ तिवारी जी कौ बाल जीवन कौ वु काल है जाम बिन्ने व्रजभाषा मे कविता करी हैं। इन दिनान मे व्रजभाषी प्रदेसन मे व्रजी मे समस्यापूर्ति के काव्य रचनान की परम्परा विपुल मात्रा म ही। सोरोऊ या दृष्टि सौं व्रजभाषा भाषी प्रदेस हैबे के कारन समस्यापूर्ति के काव्य गोष्ठी कौ केन्द्र हो। मेले ठेलेन पै काव्य गोठ अरु कवि सम्मेलन होते रहते है। इनम डा तिवारीऊ किशोर कवि के रूप मे भाग लेते ह। एक एक समस्या पै सात या दस-दस छन्द लिखकै विभिन्न भावन ते समस्या पूर्ति के छन्द लिखबे की बिन दिनन मे आम प्रथा ही। समस्यापूर्ति की ये काव्यगोठ व्रजभाषा काव्य प्रनयन की गुरु परम्परा की देन ही। छन्द अलकार अरु रस की दृष्टि सौं नये होनहार रचनाकारन की रचनान कूँ तरासो जातौ हौ। गुरु अरु अग्रज कविगन नवाकुरन की रचनान मे सुधार करते हे बिनके रग अरु अलकारन के प्रयोग पै गुरु सिखापर्व बिनके काव्य सस्कारन की प्रक्षालन करते। या तरिया व्रजभाषा के नये नये कवि पैदा करिबे कौ अभियान चला राखौ हौ, काऊ समै हमारे देस म डा रामानन्द तिवारी 'भारतीनन्दन' कूँ कविता लिखबे की प्रेरना समस्यापूर्ति की ऐसी गाठन मई मिली। बिनके बाल काव्य पै सस्कारन की बालपन म सोरों मे रहत भये जो परिमाजन अरु परिमीलन भयौ, वाई कौ परिनाम है कै वे आगे

चलके 'पावती' जसे युगा तकारी महाकाव्य को प्रनयन कर सके हे। या दृष्टि सो ब्रज बानी को आभार माननो चइयै कै बानै डा तिवारी के कोमल बाल भावन मे काव्य के सम्कार अरु छ द अलकार एव रस को वैभव भरो है।

डा रामानद तिवारी के बाल्यावस्थान की ब्रजभाषा समस्यापूर्ति के काव्य पै विचार करै है तो स्पष्टत प्रमानित होय है, कै काव्य सस्कार बिनके हृदय ते सहज प्रस्फुटित होमतो दीखै है। तिवारी जी ने बारह बरस की आयु मे माच 1931 कूँ एक कवि सम्मेलन मे सोरो मे "नई बात है" समस्या की पूर्ति कवित्त मे करी ही। ब्रज म स्यातई कोई ऐसो घर होय जामे कृष्ण की अराधना नई करी जाती होय। सुदामा को प्रसग अरु कृष्ण भक्ति की महिमा के जि छ द तिवारी जी के बालभाव क सोचकूँ प्रकट करै है—

एक दिन सुदामा विप्र कान्हा के जौरी गयो।
पास मे न अन्न वस्त्र मन मे लजात है॥
प्रेम सो पसारि भुजा भेंट प्रभु सुदामा सो।
दीन दीनबन्धु मिलन कैसो सुहात है॥
सौने के सिहासन प सादर बिठायो विप्र।
धोय पद करसो सुदामा सकुचात है॥
सारी पटरानी आज चौकि कै विलोकि रही।
एसो अति अद्‌भुत अनोखी नई बात है॥

जाई तरिया 'अग फूले न समावते' समस्यापूर्ति कवित्त मे डा तिवारी के बालकवि नै अपन समै के देसकाल को अनायास प्रयोग कर दीनो है। या समस्या क साथ कवित्त म डा तिवारी जी ने विभिन्न भावन ते, "अ ग फूले न समावते" समस्या की पूर्ति कीनी है। सोरो म रहते भये म्हा के निवासीन की दिनचर्या कैसी ही, याको आखिन देखो हाल तिवारी जी ने अपन या कवित्त म दिखायो है। देखो उदाहरन—

गगा क तीर जाय हस होय दस पाय।
भक्ति और श्रद्धा सों सीस निज नबावते॥
उठ भक्ति क प्रसग, सोहै गग की तरग।
पानकर गग गाता गग म लगावते॥
करि करि स्नान रैनु सिव को निर्मान करै।
पुष्प गगाजल आदि प्रेम सों चढावते।

गगा सौं प्रेम सिव शकर सौं भक्ति कर ।
मगन भये विप्र अ ग फूले ना समावते ।।

याई समै हमारे देस मे भगत सिंह कू फासी भयी । भगतसिंह के साहसिक काय अरू अ ग्रेज सरकार के कायरतापून कम ते भगतसिंह कू दई गई फासी ते सिगरे देस मे आ दोलन सौ है गयो हो । वा समै हमारे देस म काऊ जगै द्वै मानुख इकठोरे होमतेतो वे अ ग्रेज सरकार के भगतसिंह कू दिये गये फाँसी के समाचारन की चर्चा जरूर करते । 12–13 बरस के डा रामान द तिवारी नेऊ अपने स्कूल अरू बडे लोगन ते जा जघ य काड की चर्चा सुनी । बिनके बालसुलभ कोमल काव्य हृदय पै याको बडो भारी असर पडो । तिवारी जी के बाल हृदय म कैसी उथल पुथल मच रही । वे भगतसिंह जी के फासी के काड अरू अ ग्रेज सरकार के व्योहार एव आजादी की लडाई मे बिनके योगदान ते डा तिवारी को बालकवि का सोच रह्यो हो । याकी मु दर अभिव्यक्ति डा तिवारी के हायन ते तेरह बरस की आयु मे 'अ ग फूले ना समावते'' समस्यापूर्ति मे जा तरियाँ हुई है—

जग मे सवत्र यह कहावत प्रसिद्ध भई ।
मृत्यु आये स्यार ग्राम ओर को परावते ।।
याही कहावत को सिद्ध करिबे को लाड ।
भगतसिंह हुक्म फासी को सुनावते ।।
भारत के नाहर है फासी से न खामे डर ।
काल के समक्ष ना पीछे पायन हटावते ।
फासी निर्दोस देकर देश म असाति कीनी ।
भये है प्रसन्न अ ग फूले नासमावते ।।

पिता की अपार सम्पत्ति पै वैभवसाली जीवन व्यतीत करिबे बारे छोरो बासीन कूँ, "आई है" समस्यापूर्ति कर फटकारते भये डा तिवारी के बालकवि नैं जि कवित्त कवि सम्मेलन मे पढो हो—

जुल्फन मे तेल डारि दपन मे देख मुख ।
रोरी की आड म जु मस्तक पै लगाई है ।।
उजरे फकाफक वस्त्र धरे सिल्क रेसम के ।
उज्ज्वलता मानो पूनच द ते सवाई है ।।
सग यारबासन के पान हू चबाय लेई ।
मुख की छवि पुष्पहार दूनी बढाई है ।।

शोक और भोजन मे सम्पति समाप्त भई।
बीतो ठाठबाट सब तगी जब आई है।।

सन् 1931 को समै हमारे देस मे ऐमो हो जब आजादी की भावना सिगरे देस मे बडी तीव्रता ते फैल रही ही। हमारे देस मे स्यातई कोई एसी जगै होय जहाँ प स्वतन्त्रता की लडाई सुरू नई भई होय। "आई है", समस्यापूर्ति म जेई भाव डा तिवारी जी की कलम ते जा तरिया प्रकट भयो है—

अमन सभा सोरो मे कीनी ही कलकटर नै।
भई जब पिकेटिंग गाली चलवाई है।।
खेत रहे वीर बहु घायल अनक भये।
कैती मनमानी गिरफ्तारी करवाई है।।
सजा कौ दिवाय भय ठूसे हैं जेलखाने म।
सोरों बासिन सो यों माफी मगवाई है।।
तीन वीर सोरों के गरजे हैं मानिंद शेर।
माफी मगयन कूँ किन्तु लाज हू न आई है।।

आजादी की लडाई के समै कासगज के कछू लाग माफी माग कैं जेल ते छूट आये हे। बालक तिवारी जी ने बिनके या कम कूँ धिक्कारो हो अपने नीच लिखे कवित्त मे जा तरिया—

याही केस माहि गये पकडे कासगज बारे।
दोउन मिलाय दयो केस चलवाई है।।
कायर कासगज बारे माफी माग आय कई।
माफी मगवैयन नै नइया डुबाई है।।
कैसे हैं सहानुभूति हीन लाग सोरो बारे।
अपन भय्यन विरूद्ध दत गवाई है।।
माफी मँगवाई काम दोनो ही निवकमे कीने।
कौन जानैं ई लाज आई कैं न आई है।।

"सोरो हमारो है", समस्यापूर्ति मे तिवारी जीन अपनी बालपने की भूमि को नमन करते भये या समै लिखो हो—

आदि सब देश म सवश्रेष्ठ तीर्थ सोरों।
निवसो बिराजे जिन सीसगधारो है।।

सृष्टि के उधारन को बाराह अवतार भयो ।
दैत्य मारि कीनो जिन भूमि निस्तारो है ॥
जानि सर्वोत्तम तीथ त्यागो पचभूत मात ।
प्रभु ने स्वग सवश्रेष्ठ याही विचारो है ॥
ऐसो अति उत्तम अपूव मजुपावन तीथ ।
जन्म स्थान श्रेष्ठ अहो ! सोरो हमारो ॥

सोरो की महिमा क सग सग बिनके समै म या कस्बा की का दुगति है रही ही वाको खुलासा चित्र प्रस्तुत कीनो है नीचे लिखे छद मे । सोरों की पावनता कसे बिगडती जा रही, पापाचार कैसे बढ़ रहे हे जाको ज्यो की त्यों चित्रन कीनो है डा तिवारी जोने । देखो वाकी झाकी–

महिमा महान हाय ! तीरथ की लुप्त भई ।
फैली अविद्या, भयो घोर अधियारो है ॥
विप्रन को तेज और तीथ को महत्व महा ।
नास कीनो, चलो जब अविद्या दुवारो है ॥
त्याग नीद गहरी को सोरों के पडितवर ।
जाग्रत होय पुन करो विद्या उजारो है ।
जल्दी ते उबारो याय, जावै ना रसातल को ।
मान मर्यादा सहित सोरो हमारो है ॥

सोरो मे सट्टेबाज कैसे पनप रहे हे । याको सही खाको बालक रामानन्द के कवि ने सही सही उतारो है । या नीचे लिखे भये कवित्त म बालकवि डा तिवारी ने सट्टेबाजन की भाषा को ज्यों को त्यों प्रयोग कीनो है । कहबे की आवश्यकता नाय कै सट्टेबाजी बुरो व्यसन मानो जाय है । सट्टेबाजन की धर पकड करिबे मे प्रशासन सदैव तत्पर रहे हैं । या कारन सट्टे के चतुर चितेरे गोपनीय भाषा को प्रयोग करो करे है । 'सात मुडन' मैं बालकवि तिवारी ने सट्टेबाजन की गोपनीय भाषा को प्रयोग करो है । यात सिद्ध होय है क तिवारी जी को बालकवि कितेक दुखी है । अरू बिनकी कितेक पैनी दृष्टि ही । लगे हाथ उदाहरन देखो–

सोरो मे सट्टे की भारी मची है धूम ।
साधुन ने आप बचन सत्य ही उचारो है ॥

जानत नाहि योग ध्यान दिव्य दृष्टि उनम नाहि।
धन कं ही लोभ को बनायो ढोंग भारी है ॥
आज सात मुडन को हल्ला परो शहर माहि।
काहू हय काहू शोक छायो अपारी है ॥
हाय ! शोका महाशोका !! मोक्ष द्वार विद्यार्केंद्र।
सट्टे को केन्द्र भयो सोरी हमारी है ॥

डा तिवारी जी ने अपनी बालकविता माहि भक्ति भाव के ब्रजकाव्य कोऊ स्पस कीनो है। इनमे कछु छन्द तो परम्परागत है अरू कछु म सहज भाव ते बालक के कोमल सहज भक्ति भावन की अभिव्यक्ति भई है। गणेश उत्सव के औसर पै 15 सितम्बर 1931 कू सोरों मे आयोज्य कवि सम्मेलन की शुरुआतई जिनकी गनेस वदना के सवैयान ते भई ही। या गनेस वन्दना के द्व सवैया देखो जाम निमल बाल भाव की सहज अभिव्यक्ति भई है–

बालक मे कवि नाहि कछू कविताकर भेदहु जानि न पायो।
प्रेम हिये कविता सम है कछु जो कवि मैलन म दिखलायो ॥
सज्जन वृन्द क्षमा करियो त्रुटियाँ यह योग सुयोग बनायो।
मैं कविताहि करो हिय सों कछु काहु न मो कहँ भाव बतायो ॥
सिद्धिपती सब काज सुधारक कीतिमहा जग मे यश छायो।
गावत वेद पुरान सबै गुणगान सदा पुनि पार न पायो ॥
पूजत गाय सदापहिले तव सिद्धि सुदायक नाम कहायो।
जै सुखदामक जै गणनायक पाप निवारक वेद बतायो ॥

सात अगस्त 1932 कू जनम आठे के दिना बालक डा रामानन्द तिवारी ने ब्रजराज की महिमा की आराधना म कछु सवैया लिखे हे। इन सवैयान मे बालकवि के स्वाभाविक कामल हृदय की अभिव्यक्ति भई है या सजह भाव ते बालकवि के हृदय की अनुभूति निसरत भई है। याम 'नद के द्वारे' की सहज भाव ते समस्यापूर्ति बालकवि डा तिवारी के कवि हृदय ते भई–

बीत गयो दिन धेनु चरावत साझ भये घर आय पधारे।
दरसन की अभिलाष बढ़ी हृदयातुर म नारि बिचारे ॥
सुनकै मधुरी मुरली धुनि कू ब्रज के नर नारिन काज बिसारे।
दरसातुर गोपिन ग्वालन की बहुभीर गई जुरि नद के द्वारे ॥

समस्यापूर्ति के डा तिवारी के बालकाव्य मे भाव प्रवणता अरु सहज अभिव्यक्ति की उपस्थिति बिनकी काव्य प्रतिभा के चमत्कार कू प्रमानित करिबे कू पर्याप्त है। नेक्ऊ तौ नाय लगै कै कविता लिखबे कौ प्रयास कियौ जा रह्यौ है। ''नन्द के द्वारे', समस्यापूर्ति मे सुदामा की घरबारी कैसें सुदामा कू अपने सखा श्री कृष्ण के पास जायबे की सलाह दे रही है।

ब्रजराज सखा तिय नै अकुलाय महादुख सौं यह बैन उचारे।
इहि भाति व्यतीत भयौ बहुकाल सहे दुखघोर कठोरहु सारे॥
कछु देय सहाय कहौ तुम ही प्रिय, द्वारिकानाथ हैं मित्र हमारे।
नाथ अनाथन के नित वे, तुम जाहु न क्यों नद नद के द्वारे॥

घरबारी की बात सुनकें बिचारौ सुदामा ब्रजराज के धाम माऊँ चल दीनौ। अगलेई छद मे दूसरे भाव ते 'नन्द के द्वारे' समस्या की पूर्ति दखो–

तिय की सिख सुन्दर धारि हिये द्विजराजसु द्वारिका धाम सिधारे।
तन छीन मलीन दुखी द्विज वे मग के दुख घोर कठोर सहारे॥
द्वारिका जाय कै लोगन सौं उन द्वारिकानाथ के धाम पुकारे।
पूछत पाछत यौं सब सौं पहुचे तब वे नद नद के द्वार॥

याई तरिया एक छद अरु देखो–

नारद सारद व्यास रटै नित पार न पाय सबै पचिहारे।
गोपिन के सग रास रचौ कबहू बनि राम फिरै बन मारे॥
ब्रजराज अलौकिक लौकिक हू समुझे नहिं जात प्रपच तिहारे।
वसुदेव प्रिया गह जन्म लियौ अरु दुदभि बाजत नद के द्वारे॥

आठमे दर्जा मे पढते भये डा तिवारी ने बालछवि पै अपने मन के भावन कू उतारौ है। छोटे से शिशु की मुसकान छोटे छोटे दूधियां दांत अरु तोतरी बोली कौ देखौ कैसौ सुन्दर चित्र खीचौं है किसोर कवि डा रामानन्द तिवारी नै–

हे शिशु *तव मुसकान, मृदुलता है मन हरनी।*
काया अति छवियुक्त मनोहर कचन बरनी॥
कजकली सम खुलन अधर की सुन्दर सोहत।
चमकत मोती तुल्य दांत मन मोहत जोहत॥

सोहत सुषमा मूर्ति मनोहर तव चन्द्रानन।
रत्न जटित द्युतिमान विराजत कुण्डल कानन ।।
माता के हिय मोह भरत तव तोतरि बोलनि।
लाजत मस्त मतंग लखैं तव डगमग डोलनि ।।

डा तिवारी नैं अपन बालपन की ब्रजभाषा काव्य रचनान म जगैं जगैं प्रकृति चित्रनऊ करौ। आठमे दर्जा म आते भय डा तिवारी कूँ काव्य अरु सैली कौ कछु कछु ज्ञान है गयौ हो। जाईकारन जा समै की कवितान म प्रौढता के दरसन होय है। सन 1934 मे दसम दर्जा की परीच्छा क आस पास बिन्ने विभिन्नि रितुन पै कछु सवैया लिखे हे। 'सरद' के आनन्द की एक झाकी प्रस्तुत है—

मोहत दृश्य सबै मन रंजन खंजन बोलत है मृदुबानी।
काम सुचीर धरे तन ऊपर सारदि सुन्दर नारि सयानी ।।
आनन चन्द्र की चारु घटा मन मोहत जोहत ही सुखदानी।
चारु सिंगार अमोल लखे रति सुन्दरता बिन मोल बिकानी ।।

किशोर डा तिवारी जीनै अपन ब्रजकाव्य मैं ब्रज के कृष्णप्रेम केऊ एक ते एक सुन्दर सुरूप प्रस्तुत कीनो है। वियोग की सरसता को सहज प्रवाह दर्सनीय है—

अलबलनि बेलि कलोलनि मैं करकंज सौं बांह दई समकी।
मुसकान मनोहर लाल तिहारी अजौं सौ अजौं उर मे कसकी ।।
बनकुंजन बेलि मन्दिन कै बतियां तब मानो सुधारस की ।।
सुधि आवत लाल तिहारी अजौ घनश्याम घटा लखि पावस की ।।
बिन ज्वाल जगाई हिये कल कोकिल तान सुनाइ सुधारस की।
सुनि घोर घटान की मोर मरोज म पानि विथा उर की मसकी ।।
बरियो घन सोचि के घार घनी अब बात न बाक रही समकी।
कढ़ि जैहै जु आह वियोगिनि की उड़ि जैहै घटा घन पावसकी ।।

पावस को वियोग कितेक दुखदायी होय है या को सच्चो आभास तो भुगत भोगी जान सकैं हैं। डा तिवारी के किसोर कवि हृदय ते सुनौ पावस के वियोग की वेदना—

जब सौं प्रिय प्राननिधु ज तजो सब भूल गई बतियाँ रसकी।
भई दाहक सीतल मन्द समीरहू बोझ सौं आज धरा धसकी ।।

किन सों कहो कौन सुनै सजनो कहु जानहि को मन की कसकी ॥
नहि जाति हि नाहि सु आजु करैं नहि काटि विभावरि पावसकी ॥

डा तिवारी नै अपने बालपने मे सामाजिक परिवेस की बुराई कौऊ जगै जगै पै उल्लेख कीनो है । परतन्त्रता के निदान मैं बिदेसी सरकार की सिच्छा प्रणाली की बुराई कूँ उघारते भये बिनै लिखो—

शिक्षा पाश्चात्य सभ्यता-अति घनकारी ।
महाभोग यह लसत पडितन हू मे अतिभारी ॥
किन्तु वस्तुत महाभ्रष्ट शिक्षा यह आई ।
सेवक वृति प्रसार हेतु जग मे चलवाई ॥

डा रामानन्द तिवारी के बालकाव्य माँहि अपने परिवेस के भावन कूँ बानी दई गई है । सैली छदविधान अरु भाषा की दृष्टि सौं डा तिवारी के ब्रजभाषा के बालकाव्य माँहि दोस देखे जा सक हैं । पर भावन को सहज प्रवाह या बालकाव्य की सबसों बडी बिसेसता है । कालिदास को ऋतु सहार अरु सुमित्रा नदन पत को 'वीणा' काव्य सकलन इन महाकविन की बाल सुलभ कविता है । सैली अरु काव्यगत सौन्दर्य की दष्टि सौं इन महाकविन की प्रारम्भ की इन दोनू रचनान माहि भौतेरे दोस ढूढे जाय सकें हैं । परि काव्य के ममग्य जिज्ञासु भाव प्रवनता के सहज आलोक मे इन दोसन कू नाय गिनैं । याई तरियाँ डा रामानन्द तिवारी के बालकाव्य की समीक्षा करनी चइयै । तिवारी जी के बालकाव्य मे भौतेरी रचना शादी ब्याह के मौके पैऊ लिखी भई हैं, बिनै अपने मित्र अरु अध्यापकन कू ब्रजभासा म भावुकता भरे पत्र लिखे है । मित्रन कु ब्याह के औसर पै प्रेम भरे भावी जीवन विसयकऊ पत्र इनमै मिल हैं । पर एक बात कहनो चाहे है कै डा तिवारी के अजाने जा ब्रजकाव्य ते जि प्रमानित है कै बालक तिवारी मे सहज काव्य सस्कार ईसुर प्रदत्त है जो आगैं चलकैं बिनके 'पावती जैसे महाकाव्य अरु, अन्य खण्ड-काव्यन मे प्रकट भये है तिवारी के बालकवि नैं अपने परिवेस की बुराईन कू पूरी ईमानदारी के सग काव्य मे उतारो है यामे स देह नाय ।

डा रामानद तिवारी जी के जीवन अरु रचना प्रक्रिया के कछू सस्मरन

डा रामान-द तिवारी जी के पास मोय चार बरस रहवे को औसर प्राप्त भयो है। इनमे ते दो बरस ऐस व्यतीत भये के चौबीस घटा मै छाया की तरिया बिनके पास रहतौ। बात सन् 1960 की है जब हाई स्कूल की परीक्षा दैकें प्री यूनिवर्सिटी म प्रवेश लियो। कालेज मे एक दिना खेल मैदान मे तिवारी जी ने मोय समझायौ कि जीवन साधना ते बने है। मैंने नतमस्तक है कें बिनकी बात कू स्वीकार कीनो। वे चले गये। इतेक मेई सगी साथी आ गए अरु हम सब मिलके रसिया गायवें लगे। सब रसिया गा रहे, मैं नाच रह्यौ। सब जोर जोर ते हल्ला कर रहे। आवाज प्रिंसिपल के कमरा तानू पौच रही। बिन्नें चपरासी भेजो। मैं तनमय है क नाच रह्यो। चपरासी कू देखकें सब भाग गये। चपरासी नें माकू पकर लियौ। मेरी पेसी भई। पन्द्रह मिनट पैलें जीवन निर्मान की साधना को पाठ पढवे बारो विद्यार्थी एक अपराधी की तरिया ठाडो। बिननैं मेरी तरफ देखौ अरु मुस्काय। बिनके देखबे अरु मुस्कावे ते ऐसे लगौ जैसे हिमालय कौ पहाड टूट परौ, हजारो कारे बिच्छुन नें काट लियौ होय। ऐसो लगौ मोय समुद्र म फक दियौ। काटो तो खून नाय। म्हो सूख गयौ, धरती घूमबे लगी आकास हिलबे लगौ। तब मुस्करामते भये तिवारी जी ने आदेस दियौ के कल सौ तुम मेरे पास रहोगे। कवि साधक चितक के जा व्यक्तित्व की ऐसौ प्रभाव पडौ कि मै अपने घर बार कू छोडके तिवारी जी के घर रहवे लगौ। जीवन की धाराई वदल गई।

तिवारी जी मैं मैंने सब भावन मे अरु सब परिस्थितिन म लोप ह्वैबे की एक प्रखर शक्ति देखी है। मैं समझ ना पा रह्यौ कि बिनके या व्यक्तित्व के सत्य कू कैसे उजागर कियौ जाय। गर्मी की छुट्टीन की बात है। भरतपुर म इन दिनान मे पतग उडें है। तिवारी जी की इच्छा हुई कि पतग उडाई जाय। मोय लैकें वे मथुरा गये। बिनें कही कि मथुरा मे डोर पतग सबसो अच्छी मिलें है। चौके में पतगबाजी म दखलदाजी रखतो हो। मथुरा मे बिन्नें चार पाँच सौ रूपया की पतग डोर खरीदी अरु भरतपुर मे आये। बिन्नें पतग उडावो सिरु कियो। कैसे पतग उडानो चइये, कसो मजो होनो चइये, पतग

की काप कैसी होनी चइये । पतग उडाते भये   बिन्नै कही पतग उडाबो हमारे देश की ऐसो खेल है जामे एक व्यक्ति पतग उडावै ।   यामे तिवारी जी को दाशनिक बिचार हो पतग मे हम ऊपर देखे । जाते हमारो अहकार नष्ट होय है । सिरू मे एक पतग उडायी कि बिनकी 3-4 पतग एक सग कट गई । बिन्नै कही को मजो बेकार है । फिर तिवारी जी की खोज सिरू भई अच्छो मजो मिलनी चईये । बिन्नै मजो बनावे की कही । बिजली के बल्बन कू दिनभर पीसते रहे ।   तिवारी जी के सग बैठ'र माँजे की लुगदी बनाई । धोती काछ कै एक तरफ ते तिवारी जी एक तरफ ते मैं माँजो सूतवे लगे । दो दिना के कठिन परिस्रम सों   माँजो तैयार करयो अरू पतग उडाई । पतगबाजी के बारे मेऊ मैंने तिवारी जी मे एक साहित्यकार के दशन किय । वे उमग के सग बाल भाव सो छोटे छोटे बालकन के सग पतग उडाते । छोरा जब परेसान है जाते तो तिवारी जी मन मे मुस्कराहट अरू नेह याई तरियाँ प्रकट है जातं जैसे प्रसन्नता के छन मे मन मे उठे है ।

सन् 1962 मे वे भरतपुर महारानी कालेज के प्रिंसिपल बना दिए गए । बिनकी अनिच्छा के बावजूद जबरदस्ती प्रिंसिपल बननो पडो ।   पूव प्रिंसिपल रिटायर है गय । सरकार न कोऊ को या पद पै नियुक्तो नाय कीनो । सिगरे या काम कू तिवारी जी सो करानो चाहते । याही समै चीन ने भारत पै आक्रमण कर दियो । तिवारी जी भौत दुखी भये । रात भर जागते हिमालय पै है रहे रक्तपात ते बिनके मन म भौत पीडा ही । अपन रचे भये काव्य को जोर ते पाठ करते अरू भावाथ करते जाते । मै बिन बातन कू सुनतो पर मैं   बिनकी का व्याख्या करतो जाते हमारो साँस्कृतिक गौरव सामे आ सकै है । हमारी सस्कृति मे   हिमगिरि को स्थान है । अपने एक–एक छन्द म व्याख्यान देते । पर मैं का समझातो टी डी सी को छात्र हो । बिनके व्याख्यान कू का समझतो । मैं दखतो कै बिनके मुख मडल सो तेज निकरतो ।   बिनके पास बैठके अरु बिनसो बात करकं दिव्य आनद को अनुभव हो तो । जा तरियाँ रान के तीन बज जाते ।

एक अध्यापक के रूप मे बिनके   सस्मरण कहा तानू सुनाये जाय । तिवारी जी कहते कि अध्यापक को काम पढावो है । बाकी काम थानेदार को नाय है । वे या बात ते दुखी है कै उपस्थिति के नाम पै डडा के जोर ते विद्यार्थी कू ढोर-ढकर की तरियाँ कक्षा मे बेठा लियो जाय । वे कहो करते जो   छात्र मेरी कक्षा मे नई आनो चावे ना आवै । जा कारन वे हाजरी करते अरु अपना म्हो नीचो कर लेते । जो छात्र केवल हाजरी कू आते वे चुपचाप निकर जाते । वे चाहते कि मैं ऐसे विद्यार्थी तैयार करू जो हृदय मे वेद अरू हाथ मे परसु थामे । वे परसुराम कू गुरू मानते अरू कार्तिकेय कू आदर्श विद्यार्थी ।

अबई दो बरस पैले की बात है । वे प्रोस्टेट (पीयूषग्र थी) के बढबे के कारन दुखी हे । जीवन ते निरास है गये । मैने बिनते जयपुर चलबे की की्ही । जबरदस्ती आपरेशन कराबे को हट करके बठ गयो । जब तानू आप जयपुर नई चलोगे, मैं नई जाऊगो । कछु दिना पीछे बे जयपुर आये । तीन महीना मेरे सग रहे । बिनकी वाणी बिनके भाव मे कितेक कष्ट हो । बनन नई कियो जा सके । वे जयपुर ते ठीक हैकँ गये । वे मानते हे कै बालक कू बचपन त अगर स्वावलबी बनायो जाय तो बू शिक्षा के जगत मे श्रेष्ठ सो श्रेष्ठ अक प्राप्त कर सके । बिनै अपनो य प्रयोग अपने बालकन पै करो । तिवारी जी के बालक दसवे दर्जा तक काऊ स्कूल मे नाय पढे । वे घर पै ई पढे हे । वे अपनो काम स्वय करते । वे बालक अपनो काम काऊ दूसरे ते करवाबे की कोसिस करते तो तिवारी जी फटकारते हे ।

मैं तिवारी जी के साहित्य सजन को साच्छी हू । मैंने सुरसुनी के वरद पुत्र डा तिवारी जी के सग बे छन ब्यतीत किये है जिनको आनन्द बानी ते बखान नाय कियो जा सके । बे अपने हाथ ते भौत कम लिखो करे हे । सब कछु बोलके लिखायो करते । मैंनेऊ बिनके कई ग्र थ लिखे हे । जाके बदने वे विद्यार्थी कू कछु उपहार या आसीरवाद रूप म पत्र-पुस्प दियो करते हे । मोपे बिनकी इतेक किरपा अरू नेह हो के बिनै मोय घर के सदस्य की तरिया राखो हो । मैई का बिनको तो प्रत्येक छात्रई घर को सदस्य हो । ब जब कोऊ ग्र थ लिखते हे तो बिनके मुख मण्डल की अवस्था कछु भिन्न है जाती है । एक दिव्य आन द को अनुभव हो ता हो । आनन्द मे तनमय है के वे बोले जाते अरु मैं दत्तचित्त है के लिखतो जातो हो । एसो लगतो हो जैसे समय को बधन टूट गयो है । पतोई नई पडतो हो के तीन चार घण्टा कसे निकस गये । गोपन बिनके लेखन की सक्ति ही । वे अपने ग्र थ के लेखन के बिसै मे काऊ कू बतायो नाय करते हे । मौसी जी (धम पत्नी डा शकुतला तिवारी) या मोय मालुम रहती । कऊ दफे तो जब वे काव्य रचना करते तो बाकी भनक तो मोकू तक नाय लगती ही । पावती महाकाव्य रचना के बिसै म बिन्न एक दफ मोय बडोई चमत्कारिक प्रसग बतायो हो । ब जयसकर प्रसाद की कामायनी के सौदय विधान पै पी एच डी कर रय हे । कोटा म सजा के समै सौदय सास्त्र के कछु ग्र थन कू पढिबे कू बे मकान की छत पै बैठे हे । शकराचाय की सौदय लहरी के कछु छद बिन्नै पढ़े हे । छद पढतेई बिन्नै सक्ति रे छद लिखबे की प्रेरना भई । अरु अनायासई बिन्नै द्वै छन्द सक्ति की आराधना मे लिख डारे । वम बाई दिना ते पावती' को लेखन सुरू है गयो । जे दोनू छन्द 'पावती महाकाव्य के मगलाचरन के सुरू के द्वै छद है । ब अक्सर बतायो करे है के पावती ने सूरज नाय देखो । ब कोटा म सवरे चार बजे उठते अरू छे बजे तानू रोज नियम ते 'पावती' लिखते । जा तरियाँ द्वै बरस तानू 'पावती लिखी गई । धरती प मोय बे एक साधक के नियमन को कठोरता ते पालन करते भये 'पावती' लिखो गई

है। मैंने 'पावती' के लिखे भये दस्ता देखे हैं। जसै हम पसौट म लिखे हैं वैस पावती लिखी भई है। छ द यति अलकार काऊ चीज को दोस नाय। 'पावती लिखानो अरु अच्छे कागज प वाको प्रकासन ये सिगरे काम स्वय तिवारी जी ने करे। एक अध्यापक न अपने पइसा तें चार सौ पन्नान को ग्र थ प्रकासन कू तिवारी जी ने कहा तें पइसा इकठौरे करे याकी तरफ काऊ ने आज तक ध्यान नाय दीनो। धम पत्नी के आभूसन तक हिन्दी के या वरद पुत्र कू बेंचने पडे हू 'पावती प्रकासन मे।

सिक्षा के विसै मै बिनके अपने विचार हे। बिनके द्वै पुत्र अरु पुत्री याको ज्वलन्त उदाहरन है। बिनके बच्चा सीधे कालिज मे भरती भये। इन बच्चान को बाल जीवन अरु बिनकी सिच्छा दीक्षा को मैं साक्षी हू। मैं जब प्रथम वष म पढ़तो हो एक भाषा प्रतियोगिता भई ही मैनेऊ वाम भाषण दीनो हो। अध्यापकनै तिवारी जी तें कही—'तुमने विष्णु कू अच्छो भाषन लिखो है। याने रटऊ लियो।" घर आय के तिवारी जी ने मेरी पीठ ठोकते भये हरसित है के मोतें कही—'आज विष्णु मैं तोतें भौतई प्रसन्न हू। तुमन मेरी भासा कू अपने हृदय मे उतार लियो।' या बात कू व सबै सबै पै उद्धृत करो करते। तिवारी जी के ग्र थन कू लिखते-लिखते बिनकी भासा इतेक हृदय मे पठ गई ही के मन तें वई प्रतीक अरु सब्द योजना निकरते हे तिवारी जी को सबनतें प्रिय अलकार रुपक रयो है। बिन्नै अपने गद्य अरु पद्य मे रूपक को जगै-जगै प्रयोग कीनो है। प्रयाग की गगा सुरसुती, यमुना हिमालय, गगोत्री प्रात कालीन उषा के एक तें एक सुन्दर साग रुपक तिवारी जी के सत्य-शिव सुन्दरम्' अरु 'पावती मे हैं। सत्य-शिव सुन्दरम् को कविता क्या है। मै गद्य मे साग रूपक की छटा के का कहने। मोय ई लिखवे मे नेकऊ सकोच नाय कै 'सत्य शिव सुन्दरम' की कविता क्या है अध्याय कू हिन्दी को सव श्रेष्ठ गद्य काव्य कह दें तो अतिसयोक्ति नई होयगी। हिमालय अरु गगोत्री कू यामे मानव की काव्यकला के सग जो रूपक के द्वारा कविता की परिभासा दई है बाको मुकाबलो नाय। प्रयाग को रूपक बिनके मानस मे इतेक छायो भयो हो के वे जगै-जगै इलाहबाद के सगम के रूपक को अपने गद्य पद्य मे प्रयोग करत हू। बे या बात कू बेर बेर कहतेउए के इलाहबाद को प्रभाव बिनके जीवन म इतेक छायो भयो है के बे बाते मुक्त नाय है सके।

स्यात् सन 1961 की गर्मीन की बात है। तिवारी के घर पै मानो बीमारी को पहाड टूट पडो हो। मोसी जी (धरबारी) अरु प्रमोद कूँ मोतीज्वरा बुखार है गयो हो। विनोद अरु अचना छोटे छोटे हे। वा समै बे आय समाज भरतपुर पर स्थित एक ठेकेदार के मकान की तीसरो म जिल प रह्यो करते है। घर को हाल खराब है गयो। नल म पानी आबे नई अरु तीसरी मँजिल पै तो सवालई पैदा नाय होय। मै बिन दिनान मे चौबीसो घण्टा तिवारी जी के ढिग रहतो। बाजार ते दवा लानो साग-सब्जी

लानो, डाक्टर के पास जानो अरु नीचे की मजिल ते पानी भरके लानो। घर के सिगरे पइसा मैर पासई रहते। सबरी व्यवस्था मोई कूँ करनी पडती। तिवारी जी तो बीमारी के कारन निढाल स है गये। भौनई दुखी। भौनई व्यथित। प्रमोद एक बिस्तर प दूसरे पै मोमी जी। थोर दिना पीछे सब स्वस्थ हू गय अरु फिर पतगबाजी को खेल सुरू भयो। याई समै मेरी वषगाठ आई। तिवारी जी न सौरो ते रताल् मगवाये अरु अपन हाथन ते जलेबी बनाई। हम सबन कू वटार के अपन हाथन ते परोसगारी करी। बीच बीच म वे जलेबी बनवाबे को तरीका अरू रतालू के साग की विसेसता बताते जाते। कैसो आनन्द को दिना हो वु। आजऊ 1961 की गर्मीन के वा दिनान के छनन कू याद करू हू तो मन आनन्द ते भर जाये है। तिवारी जी कू रतालू को साग सबाते ज्यादा प्रिय हो। वा दिना पैली दफै मैं जान सको हो क बिनकू काई साग अति प्रियऊ रह्यौ है। बिन मो स्नेहासीस देते भय एक छद लिखके 'पार्वती' भेंट करी ही। 'पावती' की जि प्रति आजऊ मेरे पास सुरच्छित है। जब जा महान साहित्यकार ने अपनी आँखिन ते द्वै बूद नह के झरते दिव्य मोतीन के मग मोय पावती दीन्ही ही तो मेरो मन अचानक एकाग्र है गयो हो। कछु छन तो मोय अपनोई भान नाय रह्यौ। हिन्दी के महान साहित्यकार क हृदय म स्थित मानव कल्याण की आनन्दमयी विराट चेतना के मैंन दरसन करे हे वा दिना। बिनकी आँखिन मैं असुआ अरु देदीप्यमान ललाट ते तेज के विराटत्व को मोय एसो भान भयौ के मैं तो आनन्द मे वेसुध सी है गयो। लगी हो के कोई अलौकिक सक्ति बिनके भीतर ही जो बिनते साहित्य को सृजन करवाती ही। जाई अलौकिक सक्ति को कछु आभास मोय वा दिना भयो हो।

सन् 60 या 62 मे बिनकू कालिज की परीक्षान म एडीशनल सुपरिडण्ट बनाया गयो। वे तो नेकऊ नाय चाहते या पद कू लनो। पर प्रिंसीपल साहि स्वरूप नई माने। बिन दिनान मे परीक्षा सवेरे अरू सजा कूँ हुओ करती ही। छात्रन मे टीपबे अरु परीक्षा मे धमाचौकडी करिबे को बिन दिनान मे रिवाज सुरू नाय भयो हो। परीक्षा दस बजे है जायो करती ही। फिर सजा कू तीन बजे सुरू होती ही। पाच घण्टा की खाली समै मिल जातो। मैं आय समाज रोड क घर ते बिनको भोजन लेके आतो। वे भोजन करते अरु ग्यारह बजे पेड क नीचे लिखाबे लगते। राज एक दिनै मैं एक लख लिख जातो। डेड महिना तानू परीक्षा चलो। जामे तीस या चालीस विभिन्न बिसयन के लेख मैंन लिखे हे। वे बस एक पन्ना म कछु सब्द लिख लत। अरु धारावाहिक रूप सो बोलते जाते। मैं लिखतो जातो। बिनके बोले सब्द अरु वाक्यन कू लिखते लिखते मोय इतेक सक्ति आय गई ही क मोय परीक्षा म उत्तर लिखबे म नेकऊ जोर नाय पडतो हो। आजऊ मेर पास तिवारी जी की भाषा बिनक आसीरवाद क रूप म सुरक्षित हे। कई दफे लोग मेरी भाषा की प्रससा कर है। मै जब भाषण दऊ हू तो तिवारी जी की भाषाई मेरे मोह ते फूटे है। लोग कह है— पाठक जी बडो अच्छा

बोलो हो।" मैं जानू हू या सत्य कू । मैं नाय बोल वू तो तिवारी जी की भाषा बोले है। बिनके सम्पर्क की विराट चेतना बोले है जो बिन मोय दई है। भाषा के रूप मे अनमोल धरोहर मेरे पास है जो मोय बिनते मिली है। जब मैं राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी को अध्यक्ष बनो हो तो ब्रज शतदल' के प्रवेशांक कू देखके बिनें माय लिखा हो— तुम्हारे हाथो से ब्रज अकादमी निरंतर उन्नति करेगी। ब्रजराज सहायक और सरक्षक है।" पाँच बरस के अंतराल मे बिनकी बानी सफल भई या नई भई ई तो मोय पतो नाय। पर इतेक मैं जानू हू के अकादमी के कार्यकलापन मैं वे हमेसा मेरे सग रहे हैं। चाहे सम्पादन की बात होय, चाहे पत्रिका निकारवे की बात होय तिवारी जी की भासा चेतना मेरे हमेसा सग रही है। सजा कू सात बजे प्रेस ते कहनावत आवे है के दस पेज को मेटर चइये। वा समैं तिवारी जी की दई भई भाषा की धरोहर मेरे काम आवे है। मैं दनादन स्टेनोग्राफर कू बोलतो जाऊ अरु एक घण्टा मे दस पन्ना तैयार। जाई कारन अकादमी की मुख पत्रिका 'ब्रजशतदल' के प्रकाशन मे गत पाच बरस ते एकऊ अंक की चूक नाय भई। पत्रिका के सम्पादक या सत्य कूं जाने है क कई दफै जब मैटर चुक जाए है तो सम्पादक कू दूसरे के नाम ते लिखनो पडे है। याको मेऊ भुक्त भोगी हेतू। पर तिवारी जी की दई बई भाषा अर चिंतन सक्ति के कारन मोय तो नेकऊ जोर नाय आयवे।

तिवारी जी की साहित्य लेखन-रचना प्रक्रिया के विसै थोरो और बतानाऊ मैं जरूरी समझू हू। मैं बिनके पास लिखतो हो। कालिज के गौनेरे प्राध्यापक मोतें पूछते हे खोद खोद के। बिनकूँ मोतई आस्चर्य होतो हो बिनकी लेखन कला के विसै मे। मेरो एकई जबाब होतो हो के 'वे बोलते जाय अरु मैं लिखतो जाऊ। कई अध्यापक तो यहा तानू कह दे—'जि होई नाँय सके।' वे बैठे रहते। बिनके सामै एक रजिस्टर रखो रहता हो। बस बापे कछू वाक्य अरु एक सब्द ते दूसरो सब्द तानू जोडबे बारी टेढी मेढी रेखा सी खीचते जाते हे। जब ग्रंथ या लेख लिखवाते हे तो जे पन्ना बिनके सामन धरे रहते अरु धारावाहिक रूप ते बोलते जाते हे। कई दफै बीच बीच मे मैं रुकके पूछ लेतो हो के आपन जो ई तथ्य लिखायो है वू स्यात या तरियाऊ है सके। बिनको लिखबो अचानक बद है जातो अरु अपन विचार कूँ समझायबे लग जाते। एक दिना की बात तो मोते कबऊ नाँय भूली जाय। वे समात्मभाव के विसै पै लिखाय रह है। मैने लिखते लिखते बीच म कही—'समात्मभाव बालकन मेई सुद्ध रूप सो पायो जा सके।' मेरो इतनो कहनो हो के वे लिखायबो करबो सब भूल गये अरु मोय समात्मभाव के विसै मे समझायबे लगे। तीन घण्टा निकस गये। पतोई नई चल्यौ। बिनके मुख मण्डल पे अजब तरिया को तेज हो बा दिना। स्यात बिनके भीतर को साहित्यकार एक सग लगै हो बाहर झाँक रह्यो होय। दिव्य आनन्द की अनुभूति भई ही बा दिना मोय। वे छन भूले नाय जाय सके। मेरो नौ रोम रोम रोमाचित है रह्यो हो। चार पाच बरस

पीछे विनकू या दिना के आनन्द को स्मरन करायौ तो वे एकई वाक्य बोल—'विष्णु तुमने समात्मभाव कू समझ लीनो है।" समात्मभाव तिवारी जी के चिंतन मनन, लेखन काव्य आदि सबनको केन्द्र बिन्दु है। समात्मभाव के आधार पै बिनें साहित्य कला संस्कृति की व्याख्या करी ही। वे जीवन के स्वस्थ निर्मान म समात्मभाव कू मूल मंत्र मानते है। बिनें भारतीय संस्कृति की समात्मभाव के आधार पै विवेचना कीनी है। कविता अर अन्य कलान को मूल स्रोत समात्मभाव मे ढूंढते भये बिन्नें 'सत्य शिव सुन्दरम्' ग्रंथ म भारतीय अरु पाश्चात्य मनीसीन के कला के उद्गम अरु रचना प्रक्रिया विसयक सिद्धान्तन को खण्डन करते भय कलान की मूल उत्स समात्मभाव मे स्थापित करते भये अपनो एक नयो सिद्धान्त प्रतिपादित कीनो है।

तिवारी जिन कई ग्रंथ तो सिफ पन्द्रह दिना के अन्तराल म लिखे है। स्यात सन् 1961 के अक्टूबर की महिना की बात हे। राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर ने मीरा पुरस्कार कू पुस्तक माँगी ही। बा साल आलोचना की पुस्तक पै अकादमी न पुरस्कार देवे को निनय कीनो हो। इतेक मेई दसहरा की छुट्टी भई। नीस दिना को समै हो। वे भारतीय रसशास्त्र पै नई उद्‌भावनान के संग ग्रंथ लिखना चाहते ह। योजना बनी। हरिश्चन्द शर्मा पाचाल ने लिखवे का काम सम्हारो, द्वै टाइपिस्ट तैयार कीन गय। मौकू अरु मौसीजी (धमपत्नी) कू टाइप की त्रुटि सुधारवे को काम दीनो गयो। सवेरे छै बजे सो दस बजे दुपैरी मै बारह बजे सौं दो बजे सजा कूं छै बजे सौ, दस बजे तानू तिवारी जीन बोलके पाँच सौ पन्ना को अभिनव रस मीमांसा' ग्रन्थ लिखो। युद्धस्तर पै टाइप को काम चलतो। मैं दिनभर बठके टाइप के कागजन मे सुधार करतो। यां तरिया पन्द्रह दिना मे 'अभिनव रस मीमांसा' ग्रंथ लिखो गयो। निश्चित तारीख त पैले मीरा पुरस्कार कू उदयपुर यां ग्रंथ की तीन प्रति भेजी गई। फिर बिनकू अकादमी न या ग्रंथ पै दो हजार को मीरा पुरस्कार प्रदान कीनो। याते पले तिवारी जी कू 'भारतीय संस्कृति के प्रतीक' पै दो हजार को मीरा पुरस्कार और मिल चुको हो। प्रसगवश एक बात मोय और याद आय रही है। भारतीय संस्कृति के प्रतीक' ग्रंथ की पाडुलिपि तत्कालीन 'धमयुग के सम्पादक डा धर्मवीर भारतीय ने पढ लई ही। वे तिवारी जी के विचारन ते इतेक प्रभावित भये के भौतेरे भारतीय संस्कृति बिसयक लेख बिन्ने तिवारी जी सो लिखवाये ह। वे सब धम युग मे प्रकासित भय। इनम ते अधिकास लख बिन्न मोय बोलके लिखाये है।

तिवारी जी की साहित्य साधना की कथा बिनकी ग्रहनी डा शकुन्तला तिवारी के उल्लख के बिना सवथा अधूरी है। नह दुलार अर ममता की साक्षात् प्रतिमा डा शकुन्तला तिवारी न डा रामानन्द तिवारी की साहित्य साधना कू सफलता की तरफ बढायवे म जो प्रान फूके है बाको वनन सब्दन मे नाय है सके। मोय वे छन

आजऊ फिल्म की तरियां याद है जब अन्याय अर अत्याचार के कारन तिवारी जी को साहित्यकार फुंकार के ताण्डव करबे लगतो हो। वा समै नेह की कल्याणी वनके मासी जी साक्षात सृजन की पार्वती' बन जाती ही। बच्चा दुबक जाते। मैं बाहर निकर जातो। वा समै तिवारी जी के साहित्यकार के रौद्र के कठोर पापणन ते गंगा बनके मासी जी प्रकट होमती। या सत्य कू तिवारी जिन अपने एक कथन म गदगद है के स्वीकार कीनो है। तिवारी जी की साहित्य साधना अर साहित्य लेखन मे विनकी धर्मपत्नी डा शकुन्तला तिवारी ने जो समर्पित योग दीनो है बाको हिन्दी जगत हमेसा बिनको रिनी रहगो।

मेरे पास तिवारी जी के एक ते एक अछूते सस्मरन भरे परे हैं। विस्तार को भय है। अखिर मैं अपनी बात त या गेम कू समाप्त करना चाहू हू। 10-12 90 कू सवेरे दस बजे तिवारी जी के निधन की सूचना भया मोहन लाल मधुकरजी नै फफकतो बानी ते फोन पै भरतपुर त दई। मैं तत्काल भरतपुर रवाना है गयो। अचानक श्री गोपाल प्रसाद मुद्गल आय गय। मैंने तो सयम रख रखो। पर मुद्गल जी पै नाय रह्यो गयो। वे तो बच्चान की तरिया फफक-फफक के रोय पडे। मैं भीतर खिसक गयो। कोन म जाय के असुआ पोछे। भरतपुर आये। सोची सहर मे लोग भौत दुखी हुगें। चौके तिवारी जी भरतपुर क ई है गय है। या सहर कू बिनें इतेके प्यार कीनो के समय अपने बच्चान के पास जायबे की जगें वे भारी सारीरिक रोग की यत्रणा सहते भयेऊ भरत-पुर कू नांय छोड सके। चाहते तो वे अपन कोई से पुत्र के पास ठाठ ते रह सक्ते हे। चौके एक कलेक्टर है अर दूसरो एस पी। दोनों पुत्रनै कई दफै तिवारी जी ते जिद्दऊ करी। एक दफै वे चलेऊ गय। पर मन नई लगो। भरतपुर की याद बिनकू बराबर सताती रही। अर एक दिना अपनी घरवारी कू लैके आय गये भरतपुर। मैं बिनतें मिलो हो आये पाछें। भरतपुर आयके वे इतेक प्रसन्न है के सब्दन मे नाय कही जाय सके। पर निधन पाछै समसान मे जब तिवारी जी को नस्वर सरीर धू धू करके पच भूत कू समर्पित है रह्यो हो तो या समै भरतपुर के कुल जमा सौ आदमी म्हा इकठौरे हे। इनमेऊ ज्यादातर कालिज के अध्यापक वग ह। भरतपुर के कन-कन ते प्रेम करिबे बारे साहित्यकार कू भरतपुर वासिन्ने एकदम भुलाय दीनो। मोय अपनी जमीन को सिष्टाचार समझ मे आय गयो वा दिना। हमारी माटी म नेता की पूजा है एम एल ए की पूजा है मत्री की पूजा हैं पर मानव कल्याण की प्रसव पीडा भोगबे बारे साहित्यकार की पूजा नाय।

ब्रज मे रचे बसे कवि श्री जयशकर चतुर्वेदी

श्री जयशकर प्रसाद चतुर्वेदी जय' राजस्थान के ब्रजभाषा क एस सरस-मधुर अरू मनोहर कवि है, जिने अपने ब्रज काव्य उपवन कू नीति, हास्य, भक्ति ऋतु वणन एव अन्य भौतेरे नयनाभिराम पुष्पन ते सजायो सवारो है। इनै अपने काव्य म परम्परा के सग सग आधुनिक जीवन के भावबोध कू स्थान स्थान पै उजागर करके ब्रज-माधुरी म एक ऐसी नवीनता कौ समाहार कीनो है, जाते शोषण की व्यथा की अभिव्यक्ति मे ब्रजभाषा के शिल्प की अपनी एक अलग पहँचान बन गई है। मीठी मधुरी ब्रजभाषा जब इनके कवि के द्वारा सोषण अरू अधुना आपाधापी की कुठित एक एक पतन कू उघारबे कौ जब सिलसिलो सुरू करै है तो याकै तीव्र तेवर अरू ब्रज कौ मिठास आग की तरियाँ घातक बन गयौ है। सीतल चन्द्र की मनोहर चादनी ते आग की लपट की बरसात की 'तरिया श्री जयशकर प्रसाद चतुर्वेदी के सोषण के खिलाफ लिखी गई काव्य रचनान के तीखे तेवर विसम रूप ते उल्लेखनीय है। कोटि काटि लोगन के मुख ते निसरित ब्रज कू भक्ति एव सिंगार की मनोहर छटा ते निकार के आम आदमी कौ कण्ठहार बनायबे मे वयावद्ध कवि शिरोमणि श्री जयशकर प्रसाद चतुर्वेदी 'जय के काव्य कौ एक एक सब्द भोगे भये सत्य की सटीक अभि यक्ति कौ तोरन द्वार बनौ है। जन भाषा मे सामान्य जन के हृदय के शोषण के रिसते नासूर कू बडी आसानी के सग उतारौ जाय सकै है बितेक विदेसी आखिन त सामान्य के दुख कू काव्य म उतारनौ चाहे अच्छौ लग पर कागज के फूल तो कागज कई रहिगें। ड्राइग रूम सजाय के घर की चारदीवारी की सोभा बढानौ अरू खेत खलिहान धौंकनी की तरिया आग उगलती बडी बडी चिमनीन मै जीवन पजारते मजदूर भूखे पेट भयकर गर्मी म पसीना मे नहाई भई पत्थर तोडती असहाय मजदूरनी के भावन कू अपनी बानी के सग समाहित कर कविता म उतारनौ बात दूसरी है। ब्रज के या अनौखे कवि जयशकर प्रसाद ने पीडित की पीडा कू अपने मन मे उतारो है बाकी वेदना कू अपने भावलाक मे आत्मसात कीनौ है अरू अपने मनोहर काव्य के गगा-जल म मिलाय के सामान्य की पीडा कू जन जन की पीडा बनाय दीनौ है अपनी काव्याजलि के पुष्पन के समपन ते। असहाय के निरीह सत्य कू अपने काव्य मे सच्चे अथन मे आदरणीय स्थान दकै वाय कोटि कोटि उपेक्षित लोगन कौ चन्दन बनाय दीनौ है ब्रज के या अनोख कविवर जयशकर प्रसाद चतुर्वेदी ने अपने काव्य म।

कवि जयशकर प्रसाद आज अठहत्तर बरस की लम्बी आयु पूरी कर चुके है। चालीस बरस तानू अध्यापन ते जुडे रहे। सुरू मे वकालत करिवे की सोची। कचहरी मे चोखी बहुसऊ कर लीनी। पर मन म सज्जनता अरू कम मे ईमानदारी के सस्कारन के कारन वकालत म मन नई रमो। अध्यापक बन गये अर अध्यापकई ते अ त मे अवकास लीनो। श्री जयशकर प्रसाद चतुर्वेदी को जनम 17 माच 1911 कू बयाने मे श्री भाजराज चतुर्वेदी के घर भयो। ग्याहर बरस की उमर म अपने चाचा सोमराज जी की प्रेरना ते ब्रजभाषा की कविता लिखबो सुरू करों। नीतिकाव्य अरु हास्य रचनान के सग सग श्री चौबे जी नें समस्यापूर्तिन के रूप म ऊ अपार ब्रज काव्य को प्रनयन कीनो है। समस्यापूर्तिन के काव्य मे परम्परागत ब्रज की भक्ति अरू ऋतुवनन की सदाबहार छवि के सग सग इन अपने परिवेस की समस्यान कू उभारबे मे कोई कसर नाय छोडी। 'नारद मोह' अरू 'विजया कारिका' सीसक ते चौबे जी नें खण्ड काव्य ऊ लिखे है। जाके सगई 'नीति कुसमावलि के रूप आधुनिक परिवेस के नीति काव्य को बिसाल काव्यऊ इनके कवि हृदय ते प्रस्फुटित भयो है।

समाज म रिसवत, चोर बजारी के बढते भये सामाजिक रोग ते चौबे जी को कवि उद्वेलित है उठौ। जाई सत्य कू बि न अपनी एक साधारन कु डली म हजामत' प्रतीक के द्वारा देखो कितनी सच्चाई के सग उतारो है।

आजु हजामत को फिकर बिरथा करि है लोग।
रिसवत चोर बजार नें, पून कियो सयोग।
पून कियो सयोग, खोपडी दाढी मूढें।
मिलत न तऊ सन्तोस मुडावन हारो ढूढें।
कह सकर कविराम रहै न कोऊ सलामत।
महगाई मुँह जोर बनावन रोज हजामत॥

श्री जयशकर प्रसाद चतुर्वेदी जी के कवि ने समाज म जो कछू देखो वाको ज्यो को त्यो बनन करिबे के सग सग बि नें नई क्रांति को आह्वानऊ करो है। लम्बी गुलामी पस्चात आजादी आई। चौबे जी बा पीढ़ी के साहित्यकार हैं जि नें आजादी की लडाई अपनी आँखिन ते देखी ही। दूसरे सब्दन म यो कह सकें है के चौबे जी बा पीढी के साहित्कार है जि न आजादी पाछे एक ऐसे देस की कल्पना करी ही जामे आगे बढबे के सबकू समान अधिकार हुगें। न कोई छोटो होयगो नई कोई बडो। योग्यता कू पूरो आदर दियो जायगो। पर आजाद भारत मे बि नें देखो के सिफारिसई सबते बडी योग्यता हैं तो बिनके कवि के बनाये गय आदस के सुपने को सिगरो महल खण्ड खण्ड है गयो।

सत्तर वें दसक म आय के तो सिफारसऊ पीछे रह गयौ । वही कठोर भासा म हमारे देस के या नये सत्य कू उभारत भये बिन 'डडा राखौ हाथ' प्रतीक ते नयी क्राति को सख फूकौ है । चापलूसीऊ अब नाय रही—

अर सिफारिस मर गई, अब गुडन को जोर
चापलूस तू व्यर्थ ही यहा मचावत सोर ।
यहाँ मचावत सोर लद गयौ समय तिहारौ ।
काम करावन हेतु नई तरकीब निकारौ ।
कह सकर कविराय, डड पेलौ कर मालिस ।
डडा राखौ हाथ अरे ! क्यों करो सिफारिस ।

समाज की आपाधापी, याई तानू नाय रुकी । हमारे देस म एक समै हो जब सक्तिमाली कमजोर कू सतायबो सबन ते बडो पाप समझते है । पर आज तो बाके पास सारीरिक पसु बल है बू सबनते ज्यादा सुखी है । सारीरिक पसु बल के सामै तो हमारे देस को पावन प्रजातत्रऊ कराहुयबे लग परौ है । भले लोगन की विचारेन की आज का बिसात है । हमारे समाज के प्रजातत्र को जि दुर्भाग्य देखौ कवि जयशकर प्रसाद चतुर्वेदी के कवि हृदय ते कितेक तीखे यथार्थ म लिपट के आयौ है—

लूटो निधरक सान सौं यही सयानौ काम ।
सादा बन सुख पाइए कर लीजै जग नाम ।
कर लीज जग नाम, भले लोगन दुख दीजै ।
नेता को धरि रूप आपुनो घर भर लीजै ।
कहे सकर कवि पाप घडा फूटै तो फूटै ।
ढाल पोल सब ढोल ताव मूछन दै लूटै ।

प्रजातत्र को नेता वूई है जो ऊल जलूल भाषन पल सके और उसूल को पक्को नई होय । 'दलबदल' जैस प्रजातत्र के असाध्य कू रोगऊ चौबे जी नै अपने तीखे तेवर के सन्दन ते नाय बकसी है—

जोर जोर सौं दे सकै भासन ऊल जलूल ।
नेता पक्को है वही राखै नाहि उसूल ।
राखै नाहि उसूल कर अपनी मनमानी ।
झटपट दल को बदल कर निज स्वारथधानी ।
कह सकर कवि नह करै जो तोरफोर सौं ।
अपसर पै मद जाइ बोल जा जोर जोर सौं ।

समाज को एक एक इकाई म पनपती नैतिक पतन की सच्चाई कू चौबे जी ने एक-एक करके अपने काव्य म उतारके रख दीनी है। डाक्टर वकील अध्यापक, व्यापारी आदि समाज की ऐसी इकाई है जिनके व्योहार अरू चरित्र पै हमारे प्रजात त्र को सुनहरो भविस्य टिको भयो है। चौबे जी के कवि ने समाज के या छेत्र के लोगन कू देखो के बेऊ धीरे धीरे अपने धम ते च्युत है रयै है। आध्यात्म को रस्ता बनायबे बारे साधु आज कैसे अधर्मी है गये है। याकी तीखे तेवर की अभिव्यक्ति देखो कवि जयशकर जी के या काव्य कथन मे—

साधू के सिर जटा हो राखे डाढी मू छ।
तन भभूत कर चीमटा, हो पडित की पूछ।
हो पडित की पूछ बेधडक धडा बतावै।
पीव गाढी भाँग चरस दम खूब लगावै।
कह सकर कवि माल उडाकै भोजन स्वादू।
चेली राखै सग बौहरा हो सोई साधू।

याई तरियाँ अध्यापक वगऊ अपन सच्चे कम ते च्युत है गये हैं। आज के अध्यापक न तो ज्ञानाजन कू पढे हैं अरू नई पढावे के प्रति बिनके मन मे काऊ तरिया को आकसन बचो है। कोऊ समै मे हमारे देस मे अध्यापन सबन ते ज्यादा पावन कम मानो जातो हो। राष्ट्र के भावी नागरिक को निर्माता मानो जातो हो अध्यापक। पर बूई अध्यापक आज कैसे भटक गयो है। अध्यापनऊ व्यापार बन गयो है। याई सत्य की यथाथ झाँकी दीनी है कवि जयशकर प्रसाद चतुर्वेदी जी ने अपने ब्रजकाव्य मे कई स्थानन पै। विनमे ते एक झाँकी उपयु क्त भाव की प्रमान में प्रस्तुत है—

अध्यापक सोई चतुर गाल बजावै जाई।
बात बिरानी जतन सों जगह जगह दे पोई।
जगह-जगह दे पोई, पढै न नाहि पढावै।
अपने गुन प्रगटाय छवि म चढे चढावै।
कह सकर कविराय करै जो टयूसन व्यापक।
चटक मटक सौं रहे भ्रमित सोई अध्यापक।

अध्यापक की तरियाँ सरकारी कार्यालय मे काम करिबे बारे बाबू तक्न के प्रजातन्त्र की मौज मस्ती अरू अफसरान कू अपनी अगुरिया पै नचायबे के विनके दृश्य चौबे जी की पैनी कवि दष्ठि सों नाय बच पाये। सरकारी कार्यालयन मे भ्रस्टाचार की

अमरबेल कैसी फूल फल रही है याकी साची साची सपाट बयानी करिबे मेऊ चौवे जी को कवि पीछे नाय रह्यो है ।

बाबू बढ़िया है वही बात करें इक्कीस ।
कागज कूँ अ गी करें मिल नही जो फीस ।
मिलै नही जो फीस गलत तो नोट लगावै ।
ऊपर भेजी मिसल, झूठ कह जन बहकावै ।
कह सकर कविराय करैं अफसर पै काबू ।
उल्टी सूधी करा लेई बढ़िया सोई बाबू ।

रोग निदान अरू चिकित्सा क नाम पै निदान करिबे बारे डाक्टर कैसे दु खी जनता कू लूट रयै है । हमारो नजरिया इतेक व्यक्तिपरक अरू स्वाथ मरौ है गयो के चिकित्सक जैसे सेवाभावी व्यवसाय तक मे डाक्टर की ज्यादा ते ज्यादा जेई इच्छा इरू प्रयत्न होय है के कसे मरीज की अटी मे ते पइसा निकारो जाय । बस अ दाज ते रोग को निदान कर आजकल के डाक्टर इलाज सुरू कर दे है । महगी ते महगी दवा लिखे है, चाए मरीज की आर्थिक स्थिति कितेकऊ विसम चो ना होय । बिचारो कर्जा लेके डाक्टर की जेब भरे हैं । बीमारी कछू तरिया की है अरू दवा दूसरी बीमारी की दई जा रही है । कविवर श्री जयशकर प्रसाद चतुर्वेदी के कवि ने ऐसे चिकत्मक को यथाथ वनन करते भये लिखो है —

सकै न नाडी देखि रोग अन्दाज लगावै ।
इन्जक्सन लिख सकै कीमती दवा मगावै ।
कह सकर कवि स्वेत भकाभक पहिरै झगुला ।
लूट मरीजहि सकै चतुर डाक्टर सो बगुला ।

ब्रजभाषा सदाते आदस की भाषा रही है । परि श्री जयशकर प्रसाद चतुर्वेदी जी ने जीवन के घनघोर यथाथ कू या भाषा मे उतार ब्रजी के आधुनिक आयामन म चार चाँद लगाये हैं । सस्कृत भाषा सो होमती भई ब्रजभाषा म आयबेवारी नीति विषयक काव्य धारा कोऊ चौबे जी ने ब्रज माधुरी मे पर्याप्त प्रयोग कीनो है । चौब जी के अजाने ग्र थ—' जय कुसमावलि' मे नीति विसयक ई काव्य सुरक्षित है । नीति काव्य लिखबो तलवार की धार पै चलबे की तरिया है । नैक चूक और गये रसातल म । जीवन के विभिन्न घात प्रतिघात को विसाल अनुभव को निचाड नीति का य को आधार बन है । शृ गार ते लके सा तरस तक की विभिन्न मनोहर बीथीन म लहरायबे बारी कविता के सफल ते सफल चितेरे नीति के गम्भीर महासागर क सामें मौन है जाये हैं । साँची तो जि है के जान जीवन के विराट महासागर म जितेक गोता लगाय हुगे, वू वित-

कई नीति की एक ते एक अमूल्य सीपी निकार के लाय सक है। चौवे जी को ब्रजनीति काव्य जाई तरियाँ में अमूल्य मोतीन की सुघर लडीन ते भरो पडो है। इनके नीति काव्य में गम्भीर परायन त हम या निस्कस पै और आये है के इनैं अपने नीति काव्य मैं सर्वाधिक ध्यान आज के भाव बोध पै राखो है। केवल परम्परा को निर्वाह या सस्कृत अपभ्र श अथवा ब्रज के पुराने कविन के कथन को पिस्टपेषण इनके नीति काव्य मे नाय। ब्रजभाषा को नीतिकाव्य ज्यादातर सस्कृत या अपभ्र श के पुराने विवेचन की पुनरावृत्ति है या पुरानी बात कू घुमाफिरा के कह दीनो गयो है। देखो नव भाव बोध के कछु नीति विसयक दोहा—

कदा चार दिन रात करि, नित प्रति मंदिर जाहि।
सो ढोंगी पाखड रचि, सकल जगत कर काँहि।।

देखत बोलत मैं लगें, भले भले जो लोग।
नीच घिनोंने करम करि साधत ढोंगी जोग।।

गाजा सुलफा चरस दम, सुरापान को भोग।
तिलक माथ कठी गरे, धारत ढोंगी लोग।।

श्री जयशकर प्रसाद जीनैं परम्परित समस्या पूर्तिन के विसाल काव्य की रचना करी है। समस्यापूर्ति के इन छदन म आधुनिक भाव बोध रितु वनन एव श्री कृष्ण की विभिन्न लीलान की झाकी के एक ते एक सुदर ब्रज कविता के नमूने हैं। भाषा मे चौवे जी ने भरतपुर की बोल चाल की ब्रज कू अपनो आदर्स बनायो है। सिफारिस मुवक्लिक, ट्यूसन, मिसल, उसूल जैसे विदेसी सब्दन को ऐसो ठाठ के सग अपनी कविता मे प्रयोग कीनो है कै लगै ही नाँय के ये सब्द उधार लिये भये है। कई जगै पै तो अग्रेजी सब्दन को ज्यो की त्यों सटीक प्रयोग भयो है कै लगै ही नाय कि ई सब्द विदेसी भाषा को है ब्रज को नाय—देखो उत्तर-धनि कानै को अवास सुखद हीटर तपाइवैं को' ?

ह्या पै हीटर को प्रयोग हमारे ऊपर कहे गये कथन को प्रमान है।

मरुभूमि कौ सरस ब्रज कवि ठाकुर नाहर सिंह

हिन्दी साहित्य क इतिहास के लिखवैया ज्यादातर उत्तर प्रदेस के रहे है । हिन्दी साहित्य को भक्तिकाल अरु रीतिकाल ब्रजभाषा को कालई है । उत्तर प्रदेस के हिन्दी साहित्य के इतिहासकारन के कारन इन्नै उत्तर प्रदेस की ब्रजभूमि तानू जा भासा के साहित्य कूँ अपनी चर्चा को विसै बनायौ है । मरुभूमि वे ब्रज साहित्य की तरफ इन लोगन को ध्यान नाय गयो । डा सत्येन्द्र ने राजस्थान म रहते भय ब्रज साहित्य को इतिहास लिखौ है । पर बेऊ मरुभूमि के भौतेरे ब्रज साहित्यकारन कूँ अपन इतिहास मे नाय समेट पाये । राजस्थान सदा तेईं डिंगल अरु पिंगल साहित्य सरजन की पावन भूमि रही है । यहाँ के साहित्यकारन एक सग डिंगल अरु पिंगल के नाम ते राजस्थानी अरु ब्रजभासा की रचना करी है । मरुभूमि के साहित्यकारनै अपन मन के भक्तिभावन कूँ ब्रज म लिख क गौरव को अनुभव कियौ है । जि अविच्छिन्न परम्परा आजऊ राजस्थान माहि अबाधगति ते चल रही है ।

प्रस्तुत राजस्थान क अजान ब्रज साहित्कार प्रकासन के पहल पुष्प प्रकासन म हम राजस्थान क एस रचनाकार की ब्रजभाषा की रचनान कूँ प्रकासित कर रये हैं जान डिंगल के सग-सग अपन मन के भक्तिभावन कूँ ब्रजभासा मे उतारी है । कृष्ण भक्ति क मन की पीर कूँ इन्नै ब्रज की माधुरी म उतार क जि सिद्ध कर दीनी है कै मरुभूमि म ब्रजभूमि के प्रति नेह अरु दुलार काऊ त कम नाय । जिला जोधपुर के पाली सहर क पास आउवा ठिकाने के ठाकुर नाहरसिंह अस्सी बरस की अवस्था मेऊ नित्य ब्रज के छन्द रचकें अपनी भक्ति भावना की पीयूसधारा बहाय रये हैं । इनकूँ न तो प्रकासन की चिन्ता है अरु नई इनकूँ यस को लोभ है ।

ठाकुर नाहर सिंह की भक्ति भावना म मोहन कृष्ण की मोहनी मूर्ति क एकते एक सुन्दर सटीक मनोहर चित्र मन कूँ बरबस भक्ति क आनन्द म डुबाय कैं निहाल कर देय हैं । कृष्ण सौन्दर्य के इनके भक्ति भावन में सरसता अरु प्रेम की पीर को एसो रम-

णीक पुस्कल भाव है जाकी सरसता अरु मिठास की महक आद्योपान्त रनक झुनक फगनौटी गमक की परिचायक है। कृष्ण के सौ दय अरु वाकी रूप माधुरी के आकसन मु ठाकुर साहब को लिखौ एक चित्र देखौ—

लाज लुटैया लाल लाकरी लकुट लिये, कुण्डल कन्दोरो करा, काजर कडैया है।
मोर मुकट मूँदरीमाला, मुसकान मृदु, बलैया ले ब्रजवाला, बासुरी बजैया है।
पीताम्बर, पेरनरी, पासल पादुका पाँव चवल चलैया चख चित्त को चुरैया है।
नाहर निहार नाथ नित नवनीत नेही, कामर करैया कारो कैसो री क हैया है।

ठाकुर साब ने ललित लाल बनवारी श्री कृष्ण की छवि कूँ उतारबे मे काऊ तरियाँ को कसर नाय छोडी। एक त एक सु दर श्री कृष्ण की रूप माधुरी के चित्र इनके काव्य मे भरे पडे हैं। साहित्यकार अरु आलोचकन की दृष्टि सो ओझल ब्रजभाषा को *अनुपम साहित्य नीरस मरुभूमि की जीवन्तता अर सरसता को परिचायक है।*—जाकी मृदु मुसकान के सामै सिगरो जग फीको फीको लगे है—

मोर को मुकट माथे तिलक उद पुण्ड ताने, कुण्डल कज्जर केस, नैनरस नीको है।
मोह माला भुजबन्द कन्दोरा अ गूठी करा नूपुर मुरली नाय, हरे चित्त ही को है।
चन्दन केसर चव पीताम्बर नीलपट, अन्तर सु ऊप वस्त्र, गोरोगुलाबी को है।
सुन्दर नाहर स्याम मुख मुसकान मृदु, छवयो जाय अग छवि फब्यो जग फीको है।

ठाकुर नाहर सिंह की या पोथी मे छपी भई बिनके अजाने व्रज काव्य ते प्रमानित होयगो क राजस्थान को नीरस मरुभूमि म ब्रजभूमि अरु ब्रजभाषा के प्रति कितेक नेह अरु आदर है। यात जेऊ सिद्ध होयगो क ब्रजभाषा को सुगधमय लालित्य ब्रजभूमि ते चाए धीरे-धीरे लुप्त है रह्यो है पर राजस्थान के मरुभूमि के साहित्यकारन बाय पूरे आदर के सग आजऊँ जीवित बनाय राख्यो है। मरुभूमि म रहते भयऊ ठाकुर नाहर सिंह नैं अपनी कविता म ब्रज होरी की सरसता केऊ एक ते एक अनूठे चित्र प्रस्तुत कीने हैं। होरी की मस्ती म छैल छबीले के रग मे भीजी भई ब्रजगोरीन को दखो ठाकुर साहबनें कैसो अनूठो चित्र खीचो है।

होरी लखि होरी आई कीरनि किसोरी आई, सखियाँ सजोरी आई 'झोरी आई पेलरी।
घर रग घोरी आई, ढेर चोवा ढोरी आई, ब्रज मे बिसोरी आई पौरी आई पेलरी।
गुलाल लें गोरी आई ब्रजचन्द बोरी आई, काऊ नाहो मेरी आई, खोरी आई सेलरी।
भीगती भिगोरी आई, अबीर ने ओरी आई, भग मखी मोरी आई, रारी आई रेलरी।

ब्रज ललनान क पावन रूप की एक छटा और देखो —

शोभा सरसारी है कैं घटा छहरारी है कैं प्रीत रग पारी है कै, केसर की क्यारी है।
यौवन उज्यारी है कैं छवि सुधा छारी है कैं भव्य कला भारी है कै सुन्दरी सवारि है।

कृष्ण चित्रकारी है कैं माया मोहनारी है क पराशक्ति प्यारी है कै, दमक दुलारी है।
नाहर निहारी है कैं, सोहन सितारी है कैं बसीकन बारी है कै कीरति कुमारी है।

ठाकुर साहब न प्रेमरस की रूप माधुरी वनन मेतो कमाल ई कर दीनो है। रूप माधुरी की छटा कू साकार करबे म ठाकुर नाहर सिंह ने भावन के लालित्य म सब्दन के सटीक प्रयोग की जा मिठिया अलख जगाई है, बाके रमणीक मनोहर आनन्द को कहा तानू बखान करें। मीठे भावन के सग, मीठी ब्रजभाषा ठाकुर साहब के मीठे हृदय ते निकस के मीठे मीठे सब्दन की रिमझिम फुआरन में कभी मथर गति त इठलाती-इतराती चितवन मटकाती नह की चकाचौंधी गुलाबी बीजुरी कौंधती भई जा रही है याको एकई उदाहरन भौत है। लजील लुभावन लोचनन के कटाक्षन ते कीरति कुमारी कैंम मदमाती मस्त मगन है के ललचाय रही है। देखो तो मही याकी करामात ठाकुर नाहर सिंह के बूढ़े जजरित सरीर म मधुमय धडकत सदा बहार भावना के मकरद भरे हृदय की एक बानगी —

कीरति कुमारी कृष्णा कोमल कटाक्ष कर
पलक पकज परसैं प्रभा पसरावै है

जुरत जतावैं जोम जोबन जगति जात
मार मदमाती, मिलैं माधुरी सुहावै है।
झूमत मिलन क पैं झिझक झुकन झाँके
छटत छबीली छटा छनन छकावै है।
नाहर नुकीले नैन, नवल नसील नहीं
लोचन लजील लगा लुभा ललचावै है।

प्रियतमा अर श्याम की जुगल जोरी के अनुरागी कवि ठाकुर नाहर सिंह की प्रिय के ब्रज भूमि के दिव्य प्रेम त हृदय को एगो तादात्म्य भयो है क प्रेम की पचरगी पुरवैया की सुकोमल सुरभि क गिवार या म कछु नाय। वृषभानु दुलारी अर निर्मोही कन्हैया की प्रीति क प्रसर उमई तेज इनकी कविता में पूरी तन्मयता में संग बिखरी भयो

है । सन्दन म कहा तानू समेटी जाय नीरस मरुभूमि के ब्रज कवि के हृदय की या सरसता अरू प्रेम की गगोत्री कू । ब्रज के छबीले छैला के सग राधेरानी के त मय है कै नृत्य करते ब्रज वे रसीले रास को एक उदाहरन भीत है ।

सरस श्री राधेश्याम सजे सरसात सोभा छबीले छटालू छाजत छनक री ।
लोचन लुभात लखी लगन लगात लजी मोहन भ्रमात मदू भूसन मनकरी ।
सखा सखी साथ साज सुराग सगीत सोर झूमत झूकत झोक झाझर झनक री ।
नाहर निहार नैन नवल नचत नीके थाथा थई थ ग थौंत, थिरक थनकरी ।।

सलोने स्याम के सजे भये सरूप की झाकी मे देखो तो सही सहज भाव ते प्रयुक्त करे गये अनुप्रास की महिमा की घटा टोप घटा, मरुभूमि के भक्त कवि श्री ठाकुर नाहर सिह के विपुल ब्रजकाव्य के सैकडन उदाहरन मे याकी एक बानगी—

सुन्दर सलोने स्याम, सिगार सरूप साजे, सुगध सुरग सीस, सुमन सजैया सो ।
स्वामिनी सहित सदा, सखा सखी सत्य सार सेवक सरन सेवा, सुफल सिखैया सो ।
सस्वन स्तुतित श्रेष्ठ, सन्दन सुजस सव स तन साधुन स्नेह सिदून समैया सो ।
सारेद सुरन सेस, सुकृत सराहैं सुद्ध सगुन साकार सोभा, सावरे सनैया सो ।।

ठाकुर नाहर सिह जोर्न श्री कृष्ण राधा वे प्रेम अरु कृष्ण लीला के भौतरे पद ऊ लिखे हैं । इन पदन मे सूर की सी सरसता अरु नददास जैसी लालित्य अरु मिठास दसनीय है । उपमा उत्प्रेक्षा की लडी पै लडी की झडी के बरसायबे मे ठाकुर साहब कू कमाल हासिल है । यथा–

पयोनिधि सी उठि तरग प्रीति की मन मे मोदन मावत है ।
कमल गोर नील सी काया बै सोडस विकसावत से हैं ।

याई तरियाँ राधा कृष्ण के तन्मय झाँकी की एक घटा और देखो ।

पहर राधा सग नूपुर पांयन नटवर नाचैरी ।
सखियन गात मोद मन साजा मितिधुनि माचैरी ।।

याई तरिया होरी के रग मे श्यामा-श्याम की अनौखो अनुराग म डूबी भई एक घटा और देखो ।

मिलि राधाकृष्ण धूम मचावै ।
आली ब्रज मे होरी आवत खेलत फाग खिलावै ।

[आखर आंखर अनुराग

सखा सखिन की टोली सग म गीतन फगवा गावै ।
बहु भाँतिन ढप बाजत बाजे अबीर गुलाल उडावै ।
पिचकारिन भरि रगन पानी भीजत सबै भिजावै ।

ठाकुर नाहर सिंह न स्याम के वियोग म विलखती गोपी, राधा अरु रोमते सिसकते ब्रज कोऊ बडोई करुना भरो चित्रन कीनो है । दखो बानगी —

अरी ! साम भई पर स्याम न आय मन सखिरी मरो मुरझाए ।
गहकाज करत उनके गुनगावत ज्यो त्यों दिन कट जाए ।
अस्ट पहर राधा के उनकी छबी रहत उर धाए ।
बिसरू पल भर नही प्रेमबस पुरुषोत्तम पिय पाके ।

आखिर म हमारो निस्कस है के राजस्थान की मरु भूमि मेऊ ब्रज के स्यामा स्याम के प्रेम की दिव्य बरखा काऊ तरियाँ कम नाय भई है । हिन्दी के खोजी इतिहासकारन राजस्थान के मरुभूमि के ब्रज काव्य की भारी उपेक्षा करी है । ज्यादातर लोग जि मान रहे है कै मरु भूमि म ब्रज की सी सरसता कहाँ धरी है । म्हाँ तो डिंगल क काव्य की धाराई बहै है ई बात सही नाय । डिंगल क मर स्थल के कविन्नै अपने मन की भक्ति कू पिंगल भाषा मेई उतारी है । पिंगल के रुप म आजऊ राजस्थान मे ब्रज भाषा कूँ बूई नेह अरु दुलार मिल्यौ भयो है जो काऊ समै सिगरे भारत म मिल्यो भयौ हो । जोधपुर सभाग के वयोवृद्ध डिंगल भाषा के कवि ठाकुर नाहर सिंह को ब्रजकाव्य याको सबनते बडो सटीक प्रमाण है । ठाकुर नाहर सिंह जैस भौतेरे डिंगल भाषा म कवि आजऊ राधाकृष्ण के दिव्य प्रेम कू पिंगल भाषा म पूरी तन्मयता के सग लिख रहे है ।



ये अनुराग के रंग रँगे



ब्रजभासा के वैष्णव कवि बागरोदी बलदेव शर्मा 'सत्य'

बागरोदी श्री बलदेव शर्मा 'सत्य' नाथ द्वारा के ऐसे कवि कलावन्त ब्रज साहित्य सेवी है जिन्नें बल्लभ सम्प्रदाय के परम आराध्य श्री नाथ जी के भावलोक म डूब के काव्य रचना करी है। इनकी कविता को एक एक सब्द अष्टछाप के कविन की परम्परान को परिचायक है। अष्टछाप के सत कविन्नें अपनो सब कछू अर्पित कर बल्लभी वैष्णव साधना मे दीक्षा लैके अष्टसखा के पावन भाव ससार प आरूढ है के भक्ति काव्य की जो पीयूस धारा प्रवाहित कीनी है कछू वैसोई बागरोदी श्री बलदेव शर्मा 'सत्य' के भाव लोक की स्थिति है। अष्टछाप के भावलोक अरु बागरोदी जी के भाव ससार अरु आराध्य श्री नाथ जी के प्रति वैष्णवी समर्पित भक्ति मे भौत साम्य है। 'करत सहाय रहे सकट परे पे सदाँ, नाथन के नाथ प्रभु गोवधन हमारे है।' 'प्यारे श्री नाथ तेरी शरण सत्य आयो है', 'सब विधि श्री नाथ को सत्यगुण गायो है', आदि भावन सों अपनें सिगरे ब्रजकाव्य मे बागरोदी जीनें बल्लभ वैष्णव भाव कू चरितार्थ कीनौ है।

बागरोदी बलदेव शर्मा 'सत्य' के पूवज तैलगाना प्रदेस के हे। बेऊ श्री बल्लभाचार्य जी के पुरखान के सग उत्तर भारत आये हे। जि तथ्य श्री हरिहर भट्ट के 'विष्णु स्वामी चरितामृत' ते सिद्ध होय है। उक्त ग्र थ के गाम ज्ञाति खण्ड म 'बागरोद' गाम की चर्चा आई है। जि गाम तैलगाना प्रदेस मे आजऊ विद्यमान है। वल्लभाचाय के दूसरे कुमार गोस्वामी श्री विट्ठलेष की पत्नी रूक्मिनी बागरोदीन की सतान ही। तैलगानो छोडिबे के सग बागरोदी परिवार अपने इष्टदेव भगवान श्री गिरधारी जी कू बी सग लेतौ आयौ अरु ब्रज मे राधाकुण्ड पै मन्दिर निर्मान करवाय के म्हा वाकी स्थापना करवाय दीनी। तत्कालीन जयपुर नरेश के आग्रह सों जि सेव्यनिधि जयपुर पधराई गई अरु जेई कारन हो के बागरोदीन के परिवार राजस्थान मे कोटा, जयपुर, बीकानेर, अलवर आदि स्थानन में आय के बस गये। श्री 'सत्य' जी के पिता श्री मधुसूदन शर्मा जयपुर राज्य के पचेवर गाम निवासी हे। बे श्री नाथ जी के परमभक्त हे। जब सत्य जी बालकई हे तो इनके पिता को देहान्त है गयौ। अनाथ अर निराश्रित बालक बलदेव के ऊपर चारो

तरफ मुसीबन के बादर एक सग टूट परे । खायबे-खेलबे अरु चितारहित बालकोचित क्रीडान के जीवन मे बलदेव कू पग-पग पै काटेई काटेई आयब लगे । जलपात्र अरु उपकरन मात्र के सबन सो वे श्री नाथ जी की नगरी नाथद्वारा म करुनामय गोवर्द्धन धारण की सवा मै अपनो सवरदू त्याग के आय गये । श्रीनाथ जी के करुनामय आश्रय म रहकै बिनकी विभिन्न लीलान को गायन करते भये इन्नै विद्या अजन कीनौ । अष्ट छाप के कवीन के हृदय त निकरे भावन कू ये जब श्रीनाथ जी के सामै नेत्रन ते अ सु-आन की धारा प्रवाहित करते गाय गाय के विभोर है जाते है तो आस पास के वातावरन मे अष्टसखा अपने पदन के माध्यम सो साकार है उठते हैं । भक्ती की एसी पीयूस धारा प्रवाहित है जाती ही के आस पास दरसनार्थी भगत लोगऊ कछु छन कू अपनी तन मन की सुधि भूल जाते हे । इनके पिता मधुसूदन शर्मा यद्यपि अकिंचन हैं पर अपने तपोनिष्ठ वैष्णव व्रत अरु स्वाभिमान के तेजस्वी रूप के कारन भौतई लोकप्रिय है । पिता ते विरासत म मिली आत्म सम्मान की ठसक के सामै जाई कारन इन्नै अपने स्वाभिमान कू नीचौ नाय होन दीनौ ।

ऐसे स्वाभिमानी ब्रजभासा अरु श्री नाथ जी के अनन्य सेवक बागरोदी श्री बलदेव शर्मा 'सत्य' का जनम वि स 1966 अषाढ सुक्ला त्रयोदशी रविवार कू मैया कमलावती की कोख सो भयौ । स 1937 मे मुण्डन अरु कछु समय पाछ ननिहाल बीकानेर म इनको उपनयन सस्कार भयो । श्री मदू लाल जी के चरनन म बठ कै इन्नै विद्या-अभ्यास कीनौ अस म्हाई स 1914 जेठमास म गोकुल निवासी दही द्वारकानाथ लाल जी की सुपुत्री श्री यमुना देवी के सग इनको ब्याह भयौ । पुराण वेदा न म शास्त्री की परीक्षा बनारस सो पास करै पाछे इन्नै अपने फूफा श्री गोस्वामी द्वारक श जी महाराज सों वल्लभ वदान्त अरु पुष्टिमार्गीय प्रेमलक्षणा भक्ति के रहस्यन को ज्ञान प्राप्त कीनौ । तिलकायत गोस्वामी गोवर्द्धन लाल जी महाराज सों अष्टाक्षर मत्र अरु ब्रह्मसबध की दीक्षा प्राप्त कीनी । पुष्टीमार्गीय कला को ज्ञान गोस्वामी हरिप्रिया बहू जी महाराज कोटा अर विविध शास्त्र एव व्याकरण को अध्ययन श्री शकर लाल जी नाथद्वारा, लाडली लाल जी वदावन श्री माकण्डेय मिश्र दरभगा काशीनाथ शास्त्री प गिरधारी लाल जी कोटा एव श्री दामोदर जी रायला जैसे अपन समै के ख्याति प्राप्त विद्वानन सों कियो । समाज सेवा, साहित्यिक गतिविधि एव अन्य रचनात्मक काय क्रमन को स्यात ई कोई प्रसग होय जामें सत्य जीनै भाग नई लीनौ होय । इनकी लोक-प्रियता को जेई रहस्य है कै आप आबाल-वृद्ध साक्षर निरक्षर, नर नारी दलित सम्पन्न सबन की समानभाव ते जीवन भर सवा म रत रहे है । बरसन सों अखिल भारतीय पुष्टि मार्गीय वैष्णव परिषद नाथ द्वारा साखा के मत्रीपन पै रहत भये नाथद्वारा के वैष्णव सम्प्रदाय के विभिन्न कायक्रमन को सचालन करते रहे है । गोस्वामी श्री कृष्णकुमार महाराज

के सग शास्त्री के रूप मे रहते भये सत्य जीनें लखनऊ, इलाहाबाद, कानपुर आदि प्रदेसन मे पुष्टिमार्गीय प्रचार प्रसार के माध्यम सो ब्रजभासा की अभूतपूव सेवा करी है।

सत्यजीनें ब्रजभासा मे गद्य पद्य दोनू मे समान भाव सो साहित्य को सजन कीनो है। इनके सिगरे साहित्य को विवेचन करें है तो विदित होय है के इनें ब्रजभासा मे तीन तरिया की रचना करी है-(1) भक्ति परक साहित्य (2) श्री नाथ जी उत्सव (3) फुटकर साहित्य। भक्ति परक साहित्य मे इनें सैकडन श्री नाथ जी की भक्ति मे डूब के कवित्त-सवैया अरू पदन की रचना करी है। श्री नाथ जी उत्सव परक साहित्य मे श्रीनाथ जी के विभिन्न उत्सव, विनको सिगार अरु अ य साधनान को ब्रज काव्य मच सो सूक्ष्म विवेचन इनें कीनो है। फुटकर साहित्य आधुनिक जन जीवन नायक नायिका भेद जसे परम्परित काव्य मजन इनो साहित्य की प्रमुख विसेसता रही है। याके अलावा 'श्रीनाथ सेवा रसोदधि' सीसक सों पांचसौ छहत्तर पन्ना को पुष्टि सम्प्रदाय के आलोक मे श्रीनाथ जी की सेवा पूजा पद्धति, उत्सव आदि को ब्रजभासा गद्य मे विस्तार ते विवेचन वारो विसाल ग्र थऊ इनें लिखो है। श्रीनाथ सेवा पद्धति को स्यात याते ज्यादा प्रामानिक सूक्ष्म विवेचन हमारी निगाह मे आज तानू देखबे म नाय मिल्यौ है। श्रीनाथ जी की सेवा पद्धति के एक-एक परम्परा को या ग्र थ मे विस्तार ते वनन कीनो गयो है। याके अलावा ब्रजभासा के हजारो दोहा अरु कवित्त इनके पोथीन मे दबें प्रकासन के अभाव म बद पडे भये हैं। सत्य जी हृदय सो इतेक उदार है के इनें अपने कई सिस्यन कू ग्र थ लिखवा डारे है। श्री नवनीत गोस्वामी ने लिखो है—'सत्य जीने हजारों कवित्त एव दोहा की रचना की। उनके दो महत्वपूण काय की चर्चा किये बिना उनके कृतित्व का विवरण अधूरा रह जायेगा। 'नाथद्वारे का सांस्कृतिक इतिहास' उनका महत्वपूण ग्र थ है जो उन्होंने अपने प्रिय शिष्य कविवर श्री प्रभु दास जी वैरागी ने लिखवा डाला। इसी प्रकार श्रीनाथ सेवा रसोदधि तो उनकी जीवन भर की श्रीनाथ सवा एव भक्ति का निचाड है। यह ग्र थ उनकी जीवन साधना की चिन्तामणि है।[1] श्रीनाथ-सेवा- रसोदधि ग्र थ के विसें मे ब्रजभाषा के प्रकाण्ड पण्डित स्व डा गोवद्ध ननाथ शुक्ल ने लिखो है— ब्रज साहित्य, दशन कला धम भक्ति सवा का यह ग्र थ सम्प्रदाय का एक लघु एनसाईक्लोपीडिया बन गया है, जिससे साम्प्रदायिक वैष्णवों, सेवकों, मुखियाओं का तो लाभ होगा ही—ब्रज साहित्य सस्कृति के अनक शोधकर्त्ताओं के लिए भी यह उपयोगी सिद्ध होगा। ग्र थ के अनेक सकेतो से विदित होता है कि तिलकायत परम्परा के अनेक आचार्यों की ब्रजभाषा साहित्य की सेवा पर शोध काय हुआ ही नही है।' हमकू ई लिखबे म नेकऊ सकोच नाय के चौरासी वैष्णवन की वार्तान के पाछे चार

1 श्रीनाथ सेवा रसोदधि पृ 9

सो बरस के अंतराल म श्री बल्देव सत्य जी को वेजोड़ ग्रंथ 'श्रीनाथ सेवा रसोदधि' पुष्टि सम्प्रदाय के मंच सो ब्रज-साहित्य कला अरू संस्कृति को निमग सुद्ध साहित्यिक ब्रजभासा मे लिखौ गयौ एक मात्र ग्रंथ है।

श्री बलदेव सत्य' के ता राम राम मे ब्रजभासा को अनुपम तेज बसो भयो है। राजस्थान मे जनम लके अरु श्रीनाथ जी की आराधना म दिन-रात भावन मा सवारत सत्य जीने ब्रजभूमि सौ सैकडन मील दूर रह के अपने विसाल ग्रंथ 'श्रीनाथ सेवा- रसोदधि मे सरस साहित्यिक ब्रजभासा गद्य को पाचसौ पन्नान ते ऊपर लिखे ग्रंथ मे जो प्रयोग कीनो है वाते या पुष्ट प्रामाणित सत्य कू सावजनिक रूप त लिखवे म हम महान गौरव को अनुभव करें है के राजस्थान की मरुभूमि ने ब्रजभूमि की जितक महनीय सेवा कीनी है बिनक स्थान ब्रजभूमि तऊ नाय कीनी। ब्रजभासा गद्य के या विसाल ग्रंथ की सुरूआत कवि श्री बल्देव सत्य न ब्रजभासा के वैष्णवी कविन की तरियाँ बडे पावन विनम्र भावन के मग अपने हृदय के नवनीत कू उडेलते भय इन सब्दन म कीनी है—

श्रीनाथ जू को सेवा रसोदधि बनायो ग्रंथ यह
परिपूरन कियौ है गोवधनधारी न।
बरस लगे सात 'सत्य' ग्रथित विचार बहु
देखि-देखि सवा क्रम नाथ नगर वार न।
गोवद्ध गोवधन धरण के घर को प्रणालिका मह,
जानी न समझी मै तोऊ बुद्धि दरसाव है।

श्रीनाथ जी मे प्रति कवि क हृदय क भाव अनायास अष्टछाप के दिगदिगन्त सरस साहित्य की मूल प्रेरना की चेतना के दरसन कराय द है। अष्टछाप के कविन राग द्वेष त ऊपर उठके अपन हृदय क सत सुभाव क सात्विक तेज कू जन जन के कल्याणार्थ ब्रजभासा कविता में माध्यम सो उडेलौ है वाकी मूल चतना अरु सत्य क काव्य सजन के हृदय की मूल चेतना म भारी साम्य भारी वचारिक एकता अरु भारी आत्मिक तेज के दरसन होय है। अरु अनुभूति क स्तर म सवथा नयो साच प्रस्तुत कर है। श्रीनाथ जी क अनुपम सिंगार म—'चतुरानन आनन चार मुख गावैं तऊ पार नाहि पावैं नित्य नूतन शृंगार सों', नूतन शृंगार, भाग राग रग रागरीति नित नित नवीन य छटा रस धार सो अरु 'दवन म दव तुम निस्साधन 'सत्य' कवि प्राणनाथ गोवधन गुरु कृपा मोर्ये कीजियौ, 'करत सहाय रह सकट परे प सदा नाथन के नाथ प्रभु गोवधन हमारे हैं।

'प्यारे श्री नाथ तेरी शरण सत्य आयो है ।' जैसी भासा म इनको श्रीनाथ प्रेम प्रमानित है ।

'सत्य' जी को भक्ति परक साहित्य अधिकासत श्रीनाथ जी की सेवा, प्राथना अरु अचर्ना मे लिखो गयो है। अय वष्णव अरु अष्टछाप कविन की तरिया श्री बल्देव 'सत्य' की भक्ति की पीयूसधारा विनय तेई सुरु होय । सूरदास जैसे अष्टछाप कविनं जा तरिया विनय के पदन मे स्वय की विनम्रता के सग-सग अपन दुगु नन को उल्लेख करते भये जस आराध्य सो भवसागर पार करायबे को सकल्प दुहरायो है कछू याई प्रकार की भक्ति को मोहित सुरुप सत्य जी के भक्ति हृदय के मन की आतपुकार है । दोन बधु दीनानाथ प्यारे श्री नाथ जी सो पतित कू उबारबे को कवि के हृदय की आतनाद को देखो एक रूप—

कुटिल कुकर्मी कामी कलकी कुमाग गामी,
तिनके बचावन को आगे बढ रहे ।
दीनदुखी दुबल को हिय सो लगावत हैं,
सत्य जो गरीवन के हित मे चढ रहे ।
कोऊ नहि जाके आप बनि जात सत्य,
शरणागत वत्सल के पाठ को पढ रहें ।
दीनब धु दीनानाथ प्यारे श्री नाथ ऐसे,
पतित उबारिब कों सदा ही खडे रहे ।

विनय के पदन म स्वय के दुगु ण अरू श्रीनाथ जी सों उबारबे के स ग स ग बल्देव सत्य जी भौतेरे छ दन म या तरियों की भासा को प्रयोग कर है जैसे बे अपन इष्ट या आराध्य श्रीनाथ जी के सामे ठाडे हैके बातचीत कर रये होय । श्रीनाथ जी तिहारे एक बेर के दरसन किये ते जनम जनम क सिगरे बधन दूर है जाय हैं । भक्तगन या प्रकार भौतेरे उदाहरन देके अपन आराध्य सों उबारबे की प्राथना करे—

एक बार स्मरण किय सारे दुख दूर होत,
जनम के पुराने सब बधन कुटाव हो ।
भारत म भीसम सो आपने कह्यो हतोया
किन्तु विपरीत आज काह को मनात हो

श्रीनाथ जी की सबसों बडी विसेसता है के एक बेर बिनकी शरण जो आ जाय है बाकी सदा-सदा कू रक्षा को भार श्रीनाथ जी अपने हाथ मे ले लें है । पर सम्भी

अवधि बीते पाछेऊ श्रीनाथ की कवि प कृपा नाय भई। जा कारन कवि की हृदय भौत दु खी है व्यथित है। देखौ उपयु क्त भाव की कविता म परिनती—

जानतो जा पहल ता शरण क्यों आतो ना
ध्यान म न लातो आप दीनबन्धु दानी हो।
शरण गहे की रक्षा करत सदा ही सुने
यात विश्वास लई शरण गहि आनो हो।
किंतु हाय यहाँ दीसे कलि के प्रभाव परे
अज हू सुनत नाहि ऐसे अभिमानी हो।
बात नहिं झूठी तो शाघ्र ही दश देऊ
अपनो जन मान मोय अभय हस्त दानी हो।

कवि ने दीन औ मलीन हीन सब विधि अनाथ हो ताकी नित रक्षा करि अपनो बनायो है, 'आशा है बहुत अरू जीवन तनक सौ है लाये पुनि नह गेह कीनो बहु रासा है के सग सग श्री नाथ जी के रूप सिंगार को अलौकिक वनन इनके भक्ति काव्य की महती विवसता रही है। देखौ उदाहरन–

सीस पे धरे हैं सुभ पिटारा गुलाबी वर,
चमक को जु जोड घेरा गोकण सुहावना।
हीरक के भूषण वनमाला श्रृंगार भारी,
मन श्याम ठाडे पट सुन्दर सजावनो।
केशरी धरे है गोल काछनी किनार वारी,
पायल ओ नूपुर को शब्द मन भावनो।

भक्ति क भावन म डूबके जबके 'सत्य जी को कवि हृदय श्रीकृष्ण के बाल की बल्लभी आराधना म डूबे है तो वात्सल्य की अनुपम छवि इनकी कविता म ते हीरा की तरिया स्वत ई जगमगाय उठे है। एक हाथ म माखन लैके खाते चाते मैया कू रिझाव है। सावन सुदी नोमी कू सात सुरूपन की एक सग आयबे वारी झाँकी मे या उपयु क्त वात्साल्यभाव कौ प्रसग कवि के हृदय ते या भाँत प्रकट भयौ है।

एक हाथ माखन है एक हाथ मार लियो
मातु ढिग आय धाम मोद हि बढ़ावे है।

भीजि रस -मन आप-गावत सु तान लेय,
छोट से क हैया सत्य नितत-रिझावे है।

हाथी करें गज्जन कों ,कबहू सवार होत,
ग्वाल बाल साग लेय ऊधम मचावे है।
एक हस्त भूमि दाबि एक कर माखन लें,
घुटुवन चलत जबै सत्य देश पावे है।

मातु अंक खेलें सदा प्यारे श्री मुकन्दराय,
सुदर श्री हस्त चन नीके ही हिलावे है।
कबहु मातु अंचल उठायके निहारे हैं,
कबहू अलक खेंच मातु हि खिजावै है।

कवि ने बड़े सुन्दर सब्दन मे सातों स्वरूप के सुरूप की तरह-तरह के भावन सो वात्सल्य भाव के अराधन मंजुल भाव धारा बहाई है। वात्सल्य भाव के कोमल सनि-बानेन मू कवि सत्यजीम अपने व्रज काव्य मे घा.तरियाँ के अनुपम रस में डूब के निहाल है उठ है 'धूसरित अंग सों तो भसम लपेटी मानों, केहरि के नख मानों बाघम्बर छ्वि तिरह्यो' जैसे सब्दन वारे कवित्त मे भ्रान्तिमान अलंकार के लालित्य के संग-संग सिवजी के आभास श्रीकृस्न की बालपोषित अनूठी छवि कू कवि ने जो धरातल पै काव्य में उतारो है। बाते कोमल भावन की स्थापना एक नये सिल्प के सग भई वाकी जितेक प्रस सा करी जाय वू थोरी है। वल्लभ सम्प्रदाय के सात पीठन के प्रति कविने स्थान स्थान पै हृदय के भक्ति भाव प्रकट कीनें है। ऐसो लगे है के विग्रहन के आगे कवि इतेक विभोर है गयो है के वाय अपने सामे लीला के सुदर सुन्दर प्रसग एक संग साक्षात है गये है। 'चपल यशोदा तेरो श्रीनाथ 'सत्य' प्रेम रस बारो तामे मेरी मति बनी रहे', 'कर मे लिये है प्यारो नवनीत सदा, हित सों दिया है मातु ताम मेरी मति बनी रहे', 'गोपीगण मुग्ध होय देखत है बाल छवि देह दसा भूलें तब मेरी मति बनी रहे', 'खेलन म रसावेन भक्तन को देत सत्य, मेरे प्रभु श्रीनाथ गोवद्धनधारी है', इत्ती वारे भोतेरे कवित्तन मे श्रीनाथजी की भक्ति आलोक म विनके बाल रूप-भाव की एक ते एक सरस झाँकी को सौस्ठय इनके काव्य मे बिखरो भयो है।

कविने श्रीनाथ जी के, विभिन्न उन्धवन कोऊ, अपने काव्य मे विस्तार ते बड़ो मनोहारी चित्र अंकित कीनो है। इनमें श्रीनाथ जी के नित्य श्रृंगार की महिमा के लम्ब-लम्बे पद 'सत्य जीम' लिखे हैं—'सूपन केसरि हो धरे मोचा दो रग-रग पाग-र

चाग'हि म लघु पटका शुभ ढग, 'ढग बहुत ही देसकें द्वै दिन मग गुलाम, मतरा मोती का धर्यो भूषण स्वण समान', 'फूल भरी साटन भरी सामे पचरग पाग मध्य शृ गार के साथ मे भूषण नीलम लाग, 'मोर चन्द्रिका शीष प मीना को सिर पै' 'पाग छींट की शीश पै मोती भूषण अक', कुण्डल हीरा रि धरे मोर पख को जोट' जैसे छन्दन में श्रीनाथ जी के नित्य नूतन शृ गार को चखिने आमों देखो चित्रन कीनो है। माघ बदी एकम की 'पिछवाई छप रग सी हासिया म मन भाय', माघबदी दौज पिछवाई है भरत की हीरा प ना सग माघबदी पांच, पिछवाई अरू म जु मों स्वत वस्त्र रग रग', माघ बदी बारस, 'पिछवाई है भरत की ठाड़े पट हैं श्याम' के रूप म एक एक दिना की पिछवाइन के सग-सग श्रीनाथ जी के सिंगार अरु राजभोग में पकवानन को सत्यजीनैं विस्तार ते काव्य म उतारो है माघबदी सातैं ने राजभोग की एक झांकी दखो-

गेहू की अरु चावल हि खीचड़ि राज सभोग
भीगी ठूमर जो कहे यही खीचड़ा योग

श्रीनाथ जी की भक्ति म आकण्ठ डूबके सत्य जी-नें अपने भावन कू ब्रज कविता मे उतारो है, या मत में द्वै राय नाय है सक। सूरदास, कुम्भनदास आदि अष्टछाप के कविन्नें जा तरियां श्रीनाथ जी के विग्रह में साक्षात श्रीकृस्न के लीला प्रसगन को आभास पायके, बिनके पदन के लीला गायन कीनें हैं अरू जे लीला गायनई तो हिन्दी साहित्य की आगें चलके विभूति बनें है। सत्य जी-नऊ या प्रकार सो श्रीनाथ जी के विग्रह के सामै भाव ससार के रस सागर मे डूबके अपने हृदय के अनुभूति के चदन कू कविता मे बिखरो है। मैया यसोदा की गादी में खेलते बालक श्रीकृस्न की अनुपम छटा, मैया द्वारा बेर-बेर अपनो पुत्र की छवि पै ममतामयी आंखिन सों निहारबो अरु बालक द्वारा बेर-बेर मैया को आंचर खेंचबो अरु मैया द्वारा पुत्रछवि निहारबे कू आंचर हटाबे की आंख मिचौनी को दखो चित्र----

मातु अ क खेले सदों प्यारे श्री मुकुन्दराय।
सुन्दर श्री हस्त चन मीके ही हिलावैं है।
कबहू मातु अचल उठाय के निहारैं है
कबहू अलक खैंच मातु हि खिजावैं है।
इह विधि लीला रस दत निज भक्तन के।

'ग्वाल बाल सग लिय ऊधम मचाबे है' 'एक हस्त भूमि दाबि एक कर माखन लें' 'घुटवन चलत जबै सत्यदस पाव है, मैं कृष्ण की बालकोचित लीला के एक सों एक

मनोहर भावन कू कविता मे कवि न उतारो है। याई तरियाँ छप्पन भोग के वर्नन कविनें भाँत-भाँत ते करें है। सत्यजीनेऊ छप्पन भोग कू कविता मे उतारो है। उदाहरन कू एक कवित्त मे देखो याकी झाँकी—

आज को सिंगार नीको सबही सरूपन को,
एक सो भयो है सत्य आनंद बढावनो।
सीस पे धरे हैं सुभ टिपारा गुलाबी वर,
चमक को जु जोड घेरा गोकण सुहावनो।
हीरन के भूपण वनमाला श्रृंगार भारी,
मेघ स्याम ठाडे पर सुंदर सजावनों।
केसरी धरे है गाल काछनी किनार वारी,
पायल और नूपुर को शब्द मनभावनो।

बागरोदी बल्देव सत्यजीनें श्रीनाथ जी की भक्ति भावना, उच्छव वनन, विभिन्न लीला प्रसग, सात स्वरूप की भावना, वल्लभ महिमा श्रीनाथ अरु अन्य सुरूप महिमान के विस्तार ते मनोहर काव्य वर्नन के अलावा देसकाल अरु अपने आस-पास के सामाजिक परिवेस के भावन कू कविता के माध्यम सो उतारवे मे कसर नाय छोडी है। जाके अलावा जीवन अरु आस पास के विविध प्रसगऊ इनकी कविता मे उतरे हैं। भारत माता को सुरूप, ब्रज की बाला, काकरोली की ललना बीकानेर महिमा लखनऊ की नारी राष्ट्रीय वैभव, गाधी महिमा, पन्द्रह अगस्त, 26 जनवरी, जवाहर लाल नेहरू, लालबहादुर शास्त्री, गजानन, गरीब मॅगता को बनन, तनखा नई मिलवे पै मजदूर की स्थिति, गणपति की बाललीला, युग की पावाग्नि घरमा लगान लगो, कविता व्यर्थ सच्ची कविता की पहिचान आत्मभत्सना अष्टक, चाप चालीसा जैसे जीवन अरु राष्ट्र एव समाज के विविध विसयन पैऊ इन अपनी कलम चलाई है।

इनें विविध स्थानन की नारी पै अपन भाव सुमन तरें-तरें के प्रसगन सो उडेल है। ब्रज की बाला कू ये सुदर सरोज सम सरस सरोवर तें, कमल कली सी होय पवि फूलमाला है' कह हैं तो काकरोली नगर की बाला कू ये 'कचन सी देहवारी गजगति चालवारी, कटि मृगराज वारी गुणन अमोली की' कहे है तो बीकानेर की बाला है, 'रूप की डाल सी सब अंग प्यारी पुष्टपूण, महिला अतिरग सों गरर दरसावें है', कहे हैं तो लखनऊ की नारी है — कचन जडित साडी दामिनी निहारी है, भूपण जडित माहि नगीना नगनवारी' कह कै हमारे देस के विभिन्न सहरन की नारी जैसी कवि कू

लगी वैसी लिख दीनी है। बरसाने बारी कमनीय नारी को कवि के हृदय सों निकरो एक रूप देखो–

[आंखर आंखर अनुराग

कोमल कलमसम माखन सी मुलायम,
मद मुसकान नारी मोहत ब्रजभारी है।
कचन कलेवर तें काम कमनीय कान्ति
केशर सुरग सारी रजत किनारी है।
गोल मुख मजुल पे बडे बडे नैन राजे,
काजर फब्यौं जाम मनिग तिहारी है।
सुदर सलोनी सत्य सरस सुहाग भरी,
नदलाल सँग सोहे बरसाने बारी है।

याई तरिया मानवीकरण अलकार के आलोक म नायिका रूप मे सिगार सों सद ब्रजभूमि के सौन्दय की कवि के हृदय ते निकरी एक और झाकी देखो–

रतन खचित गोवधन शीश फूल बिन्दा है
नदगाँव बरसानो कणफूल साजे हैं।
द्वादश निकुज कुज हिय हार हारावली
ककण वल पचारु वट से बिराजे है।
लाल ओत ले या कोटि काणनी भिनक सोहे
लीला स्थल सारे सप्त सारिका विराजे है।
भावना सुभाव भरे चणन म नूपुर सब्द,
नाईका सरूप ब्रजभूमि सुख साजे है।

हमारे देस के आधुनिक निर्माता राष्ट्रीय पुरसन के महनीय कृतित्व के विसै मेऊ इन्नें अपनी कविता म विभिन्न भावन सो अपनो सोच उतारो है। महात्मा गाधी ने अपने साहस अरु निर्भीकता सों अग्रेजन के षड्यन्त्रकारी सासन व्यवस्था कू देखते उखाड़ फैंको हो याई सत्य कू कवि ने देखो नीचे लिखी ब्रज कविता में उतार के सत्या-ग्रह को अभिनन्दन कीनो गयो है–

सासन कृतघ्नता को भारत म विपनता को।
जनता सों क्रूरता को ब्रिटिश षड्यन्त्र हो।

नष्ट नीति करिवेको हिय म जो समरिवे को।
हिंसा वृत्त त्यगिवे को सत्याग्रह मन्त्र हो।

याई तरिया 'आज दिन आयो है' के नाथ द्वारा के साहित्य मण्डल की पुरानी एक ब्रजकाव्य गोष्ठी मे सत्यजी न समस्यापूर्ति के एक प्रसग मे भारत की आजादी मे राष्ट्रीय नेतान के योगदान को उल्लेख या प्रकार करो है–

कमठ शिवानाना तात्या गुरु गोविन्दसिंह,
बन्दा बहादुर तेज शासन जमायो है।
प्रबल प्रतापीगण शक्ति सिंह दुर्गादेवी,
सेखर आजाद लक्ष्मी वीर रस छायो है।
तिलक नौरोजी दादा मालवी सुभाष गाधी
रखेवे अहिंसा बल भारत बचायो है।
सत्यवृत धारिन को प्रबल प्रताप पाय,
भारत स्वतन्त्रता को आज दिन आयो है।

कवि ने आधुनिक जीवन के परिवेस मे दिन रात बढती भयी बुराईन की तरफ अन्य भक्त कविन की तरिया आँख नाय मीची हैं। कुलीनता, उदारता जैसे परम्परित गुणन के स्थान पै बढते भये भ्रष्टाचार झूठ प्रपचन के समाज मे अमरबेल के समान बढ़ते पापाचारन कू देखके सत्य जी को कवि चुप नाय रह्यौ। बाने इन बुराइन को घोर तिरस्कार करते भये लिखो है–

कुलीनता उदारता दयालुता नशानी चहु
घर-घर भ्रष्टाचार पूरनब हृत है।
विप्रन म छत्रिन मे वैष्णव औ शूद्रन म
सबमे ते घृणा भेद छारन चहत हैं।
ऐसो सबै देख सत्य की गली कहा
झूठ पर पंच चहु दौरन चहत है।

छल, प्रपंच, व्यभिचार के समाज म बढते भये रूप कू देख के बागरोदी बल्देव सत्य को कवि भौतई दुःखी है। इनके सग नेतान की सस्कृति के तादात्म्य कू लैके कवि की यथार्थवादी सोच की एक झाकी देखो–

या जग म एते सुखी गुण्डा कपटी चोर,
व्यक्तिचारी नहि प्रेमरस नेता रिश्वत खोर।

नेता रिस्फतखोर माल जो सबको मारे
करे मनोरथ पूर्ण आपनी इच्छा धार।

धन जन बल सब लेई बनावे सबको अधा
रात दिवस म करें अनोखे नूतन धधा,

कहे सत्य बलदेव दम्भ छल इनके मग म,
दया धरम सब छाडि सुखी म सारे जग म।

सत्य जी ने निधन की दीनता की पीडा कू हृदय ते भोगो है। गरीब, निधन अरु असहाय व्यक्ति ते सबई अपनो काम साधनो चाहे पर विचार वाकू निधनता के पक ते निकारबे की कोई कू फुरसत नाय। निबल निधन दुखी की असहाय अवस्था को देखो कैसो यथाथ अर बेलाग भासा मे कवि ने यथाथ रूप प्रस्तुत कीनो है--

दुबन के निबल क दीन दुखी प्राणिन क।
कोइ नहि साथी होत भाग हीन बारे जे।

काल हो अकाल हो सुकाल औड काल होऊ।
मार ही सहत रहे सब विधि हारे जे।

इन्हे करि आगे लोग अपनो व्यापार साधे।
नामधन वभव लकर मन धरि जे।

काहू कीने सत्य इन्हे धमकावत है।
जनता के दिखान काज नता धम धारे जे।

मजदूर की पीडा कू हमारे आलोच्य कवि न अपनी कविता म जितनी गहराई ते देख्यो है बितेक स्यात ब्रज कविता म अयत्र दुलभ सो जान पडे है। ब्रज क रास रग अरु भक्ति की पावन धारा के सग सत्य जी के हृदय ते जब यथाथ के धरातल सो जन जन के हृदय की पीडा पूरे उद्दाम क सग मुखरित होय है ता बिनकी कविता को मुहावरो अचानक सच्चाई की कठोर भूमि पै ठहर क जीवन की सचाई की एक एक पत कू खालतो चलै है। मजदूर की निधनता की पीडा कू सिर्फ भौनरे छदन म ते एक बानगी देख के आपई निनय कर ल्यो के धरती पुत्र की पीडा के अभिनदन म लिखो या पक्तीन ते ज्यादा और बा परा को यथाथ है सके है—

दिन अरु रात की मजूरी बितयो दिन,
सब जन की सेवा को साथ तो सदा रह्यो ।
घृणित सौं घणित औ नीच ते नीच काम,
कठिन ते कठिन काम करतो सदा रह्यो ।
एक कौन दूजे को दूजे कौन तीजे को,
या विधि की बात छानि राख तो सदा रह्यो ।
डाट फटकार कौन सत्य कहू मार भयो,
एते पर तनखा को तरसतो सदा रह्यो ।

गरीब भिखारी के प्रति कवि के यथार्थ सोच की यथार्थ भूमि पै यथार्थ अभि-व्यक्ति देखौ—

कालो विकरालो गात फटे चीर धारि,
ठंड मे इठातो ठुठरातो दुख छायो है ।
लाठी को सहारा लेय ठाडो होय गिरी जात,
बोले कछु जोर करि शब्दना सुनायो है ।

झूठ प्रपंच मे डूबे आज के लोगन के जीवन के यथार्थ कू कवि ने या तरिया ब्या ख्यो है—

कौन दिना, कौन समै कैसे कहि बोलनो है,
सत्य को छिपाय झूठ साँचो दरसानो है ।
कैसे समै भिक्षुक औ कैसे समै रिस्कत मौं
कैसे समै डाटपाट चुप रहि जानौं है ।
एकक सुनाय दोष एक को प्रपंची कहि,
करिके खुसामद निज घात ही लगानौ है ।
ऐसे गुण होय जामे वो ही जग पूजित है,
व्यथ ही नही तो सत्य जीवन गुमानो है ।

यथार्थ धरातल पै लिखी यथार्थ मोह बोलते भावना मे लिपटी धरा की ब्रज कविता के अलावा सत्य जीनै अपने अपार ब्रज साहित्य के भीतेरे भावन कू ऋतु वनन अरु नाथद्वारा की सनेहमयी होरी जैसे प्रसगन मेऊ बाध्यौ हैं । सरद की सर्फैनी कू कवि ने या तरिया बाध्यो है–

सेत पहार नदी मद सत वनी सगरी महि सत लखायो ।
फूली फूली व्रज बेलि मनोहर कानन मे मृदु सौरभ छायो ।
देखि उदै नभ मडल को विधु नागर नेह रस रास रचायो ।
तारन के बिच चन्द्र लखे जिमि गोपिन म व्रजचद सुहायो ।

कवि ने आये रितुराज तुम व्यथ ही सजाके साज मेरे पास तेरो पिय स्वागत को अत है' कहके बसत को स्वागत कीनो है - चौके नाथद्वारा म बारह महीना बसत है । कवि के हृदय म सत्य तो यही है सुन गोवधन नाथ श्रीजी मोर पाँख वारो मेरे हिय मे बसत है' जैसी साँच जब पास है तो चारो तरफ बसत है चौके एहो ऋतुराज सत्य लाये क्यो समाज साज सबही समाज यहाँ कृष्ण के वीर है।'

विभिन्न रूपन म रितुवनन क अलावा चाय चालीसा जसी रचनाऊ कवि ने लिखी है। ऐसो लगे जैसे हनुमान चालीसा की तर्ज प कवि ने चाय चालीसा रचना लिखी है।- देखो उदाहरन--

आलस युत तन जानँ के सुमिरो चाय महान ।
बल बुधि देहु नहि चाय सत्य भगवान ।

जय जय चाय महा सुख सागर, जय सुखदा तिहु लोक उजागर ।
पीवत म अतुलित बलधामा सबै जन मोहके पूरन कामा ।
देश विदेश म होत बढाई नित पीवत जे मन हर साई ।
गुन अनेक याके सब गावैं, पी पी छिन छिन मोद बढावे ।
होटल म घर म अन बागा, चाय बैठक पिवत सभागा ।

कविरत्न बागरोदी बलदव शर्मा 'सत्य' को व्रजभासा गद्य का अनुपम ग्रथ 'श्रीनाथ-सेवा रसोदधि' मुद्रा दर्शन वसन की सूक्ष्म मीमासा क अलावा श्रीनाथ जी के मदिर की अतरग अरु बहिरग सवा पद्धति की आँखों देखा चित्रन या ग्रथ की अपनी अलग विसेसता है । श्रीनाथ जी को सुरूप 191 बरस व्रज म रह्यो है। श्री जी नैं सम्वत 1549 सो 1726 तानू बज म रहबे एवा स्वीकारी । धार्मिक उपद्रव अरु अन्य विषम परिस्थितीन क कारन तिनकायत दामोदर जी श्रीनाथ जी नू मवाड़ की तरफ ले जायबे कू मजबूर भय । फाल्गुन कृष्णा सप्तमी विस 1728 सनीचर कू, उदयपुर नरेश राजसिंह जी की छत्रछाया म श्रीनाथ जी को नाथद्वारा म पाटोत्सव भयो । या

तरियाँ स 1535 सो स 1726 तानू के 191 बरस की पूजा सेवा श्रीनाथ जी की ब्रज म भई अरु सम्वत 1726 सो आज तानू की सेवापूजा के तीन सौ इक्कीस बरस श्रीनाथ जी के राजस्थान के मेवाड मे रहके व्यतीन भय है। या तरिया पाच सौ बारह बरस की श्रीनाथ जी की सेवा पूजा कौ सिगरो बनन श्री बलदेव जी नैं 'श्रीनाथ सेवा रसादधि ग्र थ मे सक्षेप मे कीनौं है। या ग्र थ ते मालुम होयगी के अष्टछाप को दिव्य साहित्य याई सेवा पद्धति को एक अ ग रह्यौ है। सेवा पद्धति कू वैस्नव भक्ति की सम्प्रदाय विसेस को विवेचन कहके याकू छोडनौ समीचीन नाय। श्रीनाथ जी के देवालय की सेवा पूजाने ब्रज साहित्य अरु कला कौ जो सम्मान आदर के सग सग बाकी उत्तरोत्तर वढौ म जो अपनो अमूल्य अवदान कीनौ है बाकौ साहित्य के मच ते अभिनदनीय मूल्याकन होनौं भौत जरूरी है। याई कारन 'सेवा रसोदधि' ग्र थ कू केवल 'सम्प्रदाय विसेस को ग्र थ कहके छोड देनौ सही नाय। जाई कारन ब्रज के प्रसिद्ध विद्वान डा स्व डा गोवद्ध न नाथ शुक्ल ने सही लिखो है – 'पुष्टि मार्गीय सेवा मण्डान गहरी प्रेम लक्षण भक्ति भावना के साथ दर्शन साहित्य, कला, चरम सौन्दर्य बोध का पचामृत है।'

सेवा रसोदधि ग्र थ नाथ द्वारा के देवालय श्रीनाथ जी के तीन सौ पैंसठ दिना के नित्य के उच्छव अरु सेवा पूजा की आँखिन देखी डायरी है। श्रीनाथ जी की भौतेरी सेवा पद्धति को सुरूप भागवत के दशमस्कध म प्रतिपाद्य विसयन की तरिया है। सत्य जी नैं श्रीनाथ रसोदधि ग्र थ मे भगवत को जगै जगैं प्रमानरूप मे उल्लेख करके ई सिद्ध कर दीनो है कि श्रीनाथ जी की सेवा पूजा के सूत्र मूल रूप सौं भागतव सोई ग्रहीत हैं। बागरोदी जी नैं गहन अध्ययन अरु नित्य पूजा मे बरसन तानू उपस्थित रहके अष्टछाप कविन के बिन पदन को विस्तार के सग या ग्र थ मे सरस सरल ब्रजभासा गद्य मे विस्तार के सग उल्लेख कीनो है जो श्रीनाथ जी के विग्रह के सामै भाव विभोर है के गायबे की परम्परा रही है, याते जेऊ अन्दाज लग जाये है के अष्टछाप के कविनैं अपन पदन को सजन श्रीनाथ के सामै भक्ति रस मे डूबके कीनो है। कौन कौन से कविन के कौन कौन से पद कौन-कौन से औसर पै नित्य सेवा अरु वर्षोत्सव सेवा म कौन-कौन स ढगसन पै गाये जामिगे जाको विस्तार ते बनन 'श्रीनाथ सेवा रसोरधि' ग्र थ की अपनी विससता है। ग्र थ की साहित्यिक उपादेयता पै प्रकास डारते भये डा गोवद्ध न नाथ शुक्ल लिखे है— इससे ब्रजभासा काव्य पर नया प्रकाश पडेगा और उसके महत्व की एक नयी दिशा का बोध होगा। इस समूचे ब्रजभाषा काव्य को यदि पुष्टिमार्गीय-सेवा शास्त्र कहा जाये तो अत्युक्ति न होगी। ब्रजभाषा के ये सरल सुगम मधुर पद ही कन्हैया को रिझाते है।'

सत्यजी नैं ग्र थ कू प्रश्नोत्तर सैंलो म लिखो है–यथा

प्रश्न—महाराज लोग प्रभु सम्मुख आरती करें, तथा मुखिया जी जेमनहस्त कीच मंदिर की आडी आरती करें एसो क्यो।

उत्तर—मुखिया जी चन्द्रावली जी की आडी सौं आरती करें। वो स्थान जेमन तरफ चन्द्रावली जी का है तासों और महाराज स्वय चन्द्रावली जी एव स्वामिनी जी होवे सो सम्मुख दृष्टि मिलाय आरती करें। व मातृ भाव मे हु है। मगला आरती उतरे बाद मन्दिर वस्त्र होय के सम्मुख आव। फूलघरिया माला की पूछे वो सनेत भाषा म कहे।

'सेवा रसोदधि' के ब्रज गद्य की कछु झाकी और देखो—वैशाखवदी पचमी श्रृंगार महाप्रभु के उत्सव को।' परचारगी। नौवत की बधाई बैठे। वस्त्र रगील। ये श्रृंगार होय। ये सब उत्सव चार यूथनायिकान के एक एक श्रृंगार एव एक की आडी सो होय। परचारगी श्रृंगार पहले तथा दूसरे दिन उत्सव के तथा बधाई बठे तवा और उत्सव के दिना या प्रकार चार श्रृंगार होय। सो ये दूसरा श्रृंगार है। नो जोड काहू।

पाटोत्स को परिचया तरिया है, पाट अर्थात् सिंहासन नै बिराजमान करनो ही पाट बैठानो है। या उत्सव कू पाटोत्सव कहैं। भगवान श्रीकृष्ण को आसन सिंहासन पाट बठावे को वणन श्री मद्भागवत म कई स्थानन पै मिल है। फागुन सुक्ला तीज को सिंगार या प्रकार समझामे है बागरोदी जी, 'ग्वाल पगा किनारी को सफेद चाकदार वागा। श्रृंगार मध्य को। कणफूल चार को। मीना के आभरण आज की सेवा श्रृंगार श्री मधुराजी की आडी सो होय है।' सांझी के विसै म लखक की भासा देखो 'भाद्रपद सुक्ल पूर्णिमा महादान सोझी को प्रारम्भ। श्रृंगार वस्त्र ऐच्छिक मुकुट काछनी को ही श्रृंगार होय। दानन म य दान करहता को माने हैं। वहाँ दान लीनो यासो ये दूसरे दानलीला को श्रृंगार। आज पीरे वस्त्र धर। काछनी सूथन पीताम्बर आभरण पिरोजा के। वनमाला को श्रृंगार। मुकुट जडाऊ पिछवाई चितराम की दान एक ओर साझी के भाव की फूल बीन तन की जडाऊ पिरोजी को मुकुट ठाडे वस्त्र सफद।

कवि पुगव बागरोदी बलदेव सत्य जीनै ब्रजभासा को गद्य पद्य दोनून म सफल प्रयोग कीनो है। बागरोदी जी सस्कृत क प्रकाण्ड पण्डित हे अरु राजस्थान के मवाड क रहवैया है। नाथद्वारा म गुजराती भासा काऊ भारी प्रचार हे। या कारन बागरोदी जीन सस्कृत राजस्थानी अर गुजराती के त्रिवेनी के सगम प ठाढे हैय के ब्रजभासा को सफल प्रयोग कीनो है। नाथद्वारा म जन सामान्य क बीच आज जो ब्रज बोली जाय है याम नाथद्वारा की स्थानीय राजस्थानी को सम्मिश्रण है। सन्दन के सम्मिश्रण क सग

व्रज की मूल प्रकृति ह्या की वूई है जो तीन सौ बरस पैले व्रजभासा की ही । डा गोवद्ध न नाथ शुक्ला ने बागरोदी जी की भक्त व्रजभासा को नाम मंदिर की भासा दीनौ है । मंदिर की भासा आज की व्रज की अपेक्षा तीन सौ बरस पूव की अष्टछापी व्रज के सब्दन के संग ज्यादा लिपटी भई है । मन्दिर के परिकर आजऊ सेवक, मुखिया भीतरिया, जलघरिया, अधिकारी जी समाधानी जी, पौरिया, छड़ीदार सोहनीबोर, झापरिया आदि के व्रज प्रकृति के नामन के संग उपस्थित है । परिभाषिक सब्दावली के अलावा मंदिर की भासा के सब्द अरु बिनको अथऊ अलग तरिया को है । यथा विग्रह के श्रृंगार उतारवे कू कह्यौ जाय 'श्रृंगार वडे होय' भगवद् विग्रह के सामै पर्दाभोग या स्नानादि के समय आयवे पै वाय 'टेरा आवै' कहे है अंतिम सिंगार कू 'छेल्लो श्रृंगार' एव नैवेद्य चुकवे पै भोग सरन' कह है । याई तरियाँ बैठावे कू 'पधारना' 'विराजना' तरफ कू आडी इखठौरे हैवेकू 'भेले होना' आदि कह्यौ जाय है ।

बागरोदी बलदेव शर्मा सत्य को व्रजभासा कौ गद्य पद्य को साहित्य परिमान अरु परिनाम दोनू दृष्टि सो राजस्थान की अमूल्य धरोहर है । विपरीत परिस्थिति अरु प्रोत्साहन एव यश ते कोसन दूर रहकैं बागरोदी जी नै व्रजभासा म जो विपुल साहित्य सजन कीनौ है बाकी मूल चेतना भक्ति के पावन भावन सो अनुप्रेरित रही है । बागरोदी जी नैं व्रजभासा कू श्रीनाथ जी की पावन भासा मानके बामे साहित्य रचना करवै को राजस्थानी भासा के बीच मे रहते भये अपने साहसिक साहित्यिक सकल्प कू कार्यरूप मे परिनित कीनौ है । याई कारन कवि ने स्वय कू श्रीनाथ जी को अकिंचन भगत मानते भये बिनकी भासा म रचना करिबे को अपनो सकल्प दुहरायौ है—

नाथ नगर निवासी उपासी श्रीनाथ जू को,
बल्लभ के तनय को सेवक कहाऊ मैं ।
बागरोदी गोकुलस्थ आतरेय गोत्र युत,
मधुसूदन लाल जी का तनय कहाऊ मैं ।
पुराण ओ वेदान्त की शास्त्री को पास करि,
भापा मातृ हिन्दी व्रज कविता बनाऊ मैं ।
नाम बलदेव कहै सत्य उपनाम रासो
विधान हेतु आज परिचय सुनाऊ मैं ।

व्रजभासा के प्रति कवि बागरोदी जी के हृदय मे अटूट आस्था है । विनै अपनी

[आखर आखर अनुराग

या आस्था कूं प्रकट करिवै म सकोचऊ नेक्ऊ नाय कीनौ है। ब्रजभासा की मधुरता सरसता पै रीझ के कवि ने स्वय लिख्यौ है—

कोमल कमल सी है इख सी रसीली पन
मिसरी ते मीठी मधुभरी खासा है।
अमृत है सुब्रत शुद्ध परिशुद्ध पाव,
ज्ञानिन के काजे यामे सहित भरी भाषा है।
गौरव बढान वारी देवन की वन्दनीय,
मनुजन की दुलारी शीतल जल खासा है।
रस म सरस सत्य साहित सरोवर
ब्रज के कन्हैया जू की मीठी ब्रजभाषा है।

अस्तु वागरोदी बलदव शर्मा 'सत्य' अष्टछाप के कविन के समान ब्रजभासा की या सत परम्परा के रचनाकार है जिन जो कछु लिखौ है वू भक्ति रस मे डूब के लिखौ है जनता के करनीय मूल्यन कूं चरिताथ करिव कूं लिख्यौ है, लौकिक जजालन की आग म झुरसते कोटि कोटि असहाय लोगन कूं आनन्द ते जीवन यापन करिबे कूं लिखौ है। सत्य जी को काव्य सत्य मानवीय चेतना सों अनुप्रेरित है ब्रजभासा के सत कविनें जो कछु समाज कूं दीनौ है वू बिनकी अनवरत साधना को परिनाम है। बल्देव सत्य ने जीवन भर श्रीनाथ जी के भक्ति रस म डूब क साहित्य रचना कीनी है। प्रकासन अरु यस की कबऊ इन्नें कामना नाय करी। एयरकण्डीशन कमरान के वैभव म डूबके जन जन के दु ख दरदन की व्यथा कूं साहित्य म उतारवे को दभ भरबे वारे साहित्य सवीन कूं वागरोदी बल्देव 'सत्य' को साहित्य पढनो चइयै जामे एक एक सब्द भाव ससार मे डूबके लिखौ गयौ है। आजकल आप अस्सी बरस की अवस्था मे अपने पुत्र के सग बीकानेर म रहके नित्य लीलाधारी श्रीनाथ जी की मन सो सवा करते भये आजऊ साहित्य रचना म लगे भये हैं।

वागरोदी जी के प्र प—वागरोदी श्री बल्देव शर्मा सत्य अपने भावन कूं लिखबे के प्रति जितेक सचेत रहे है, बितेकई प्रकासन अरु साहित्य कूं सुरक्षित रखिव क प्रति उदासीन रहे है। इन्नें जीवन म अपने साहित्य कूं एक स्थान प सुरक्षित रखिबे की नेकऊ चिता नाय कीनी। हमने जब बिनते बेरन्तर सम्पक कीनो तो बिन्नें लिखा— 'मैया हौं बढ हौं। 80 बरस है जायेगें। हाथ धूजत है। 50–60 बरस ते साहित्य सवा करि रह्यो हू। जाम बिसेस करि श्रीनाथ जी, गोस्वामी बालक, पुष्टिमार्गीय पददई बनाय। समय समय पर अन्य हू जहां-जहां गया ताको बरनन कीनो। प्रभु

प्राथना, रोग मुक्ति छ्दन ते भई अरु ब्रज विलास में ब्रज के अनेक पद बनाये । नायक नायिका, प्रकृति चित्रन तथा षडऋतु वनन नवरस अरु देवतान के छद है । कई छ्द है कई छन्द कापी जयपुर-नाथद्वारा, बीकानेर है । बागरोदी जी के सिगरे प्रकासित अप्रकासित साहित्य कू की जितेक सूचना हमे मिली है—बाको विवरन या तरिया है—

अप्रकासित (पद्य)	पनघट लीला, छाक लीला, मानलीला, निकुज लीला, मधुराष्टक पद्यावलीं मधुनाष्टक, नायक नायिका भेद गीतोक्त वार्तासग्रह, श्री गुसाई जी के वचनामृत, बारह महिना के उत्सव भावना गोविन्द गुणावली, गणेशाष्टक अम्बाष्टक, लक्ष्मी दरिद्र सवाद श्रीनाथ बल्लभ विट्ठत स्तोत्र, तिलकायत चरितामृत चाय चालीसा ।
प्रकासित (पद्य)	पुष्टि रसाल, श्रीनाथ चिह्न भावना, सात स्वरूप भावना, विट्ठल वचनामृत, श्रीनाथ की बारहमासी, बल्लभ शतक ।
प्रकासित (गद्य)	श्रीनाथ सेवा रसोदधि



वीररस के ब्रज कवि श्रीनिवास ब्रह्मचारी 'श्रीपति'

डीग के वयावृद्ध ब्रजभासा के सरस मजुल कवि श्री निवास ब्रह्मचारी जी 'श्रीपति
उपनाम त गत पचास बरस ते ब्रज माधुरी की सवा म रत हैं । बहत्तर बरस
की वद्धावस्थामऊ आप नियमित जीवन व्यतीत करते भये ब्रजवानी के कोप कू बढायबे
मे समर्पित भाव त लगे भये है । ब्रह्मचारी जी ब्रजभूमि की वा परम्परा के साहित्य सेवी
है जब घर घर मे ल्होरे ल्होर बालकन कू हजारो हजारो कवित्त सवैया कण्ठस्थ करवाय
दिये जाते है । ब्रजभाषा की पढन्त परम्परा की पैली पाठशाला घर मई होमती ही ।
ब्रह्मचारी जी न अपने जीवन म भौतेरी पढन्त प्रतियोगिता के दगलन म बुलन्गीन के
झण्डा गाड है । रात रात भर आंख की वरोनी नैनन की चपलता विभिन हाव भाव प
पढन्त म प्रतियोगिता होयौ करै ही । पढन्त प्रतियोगिता कौ नियम हौ कै एक छद पढ
जाय ता बाये दुबारा बोलयो निषेद होय । अगर कोई कवि भूलतेऊ बोले भये छद कू
पुन पढ जातो हौ तो वाय प्रतियोगिता ते बाहर कर दियो जातो हो । जा कारन पढन्त
प्रतियागी साहित्यसवी कू निर्धारित विस पै छद बोलब के सग सग जेऊ याद रखनो
पडतो हौ कै कौन कौन स छन्द पढे जा चुके है । एसी पढन्त की भौतेरी प्रतियोगितान वे
श्री निवास ब्रह्मचारी श्रीपति हीरा रह ।

पढ़न्त प्रतियोगीन क सग सग श्री निवास ब्रह्मचारी श्रीपति पुरानी पीढी क
बचे भये ऐस कवि हैं जिनम हिन्दी के भक्तिकाल की सौंधी मीठी सुगध प्राप्त होय है ।
ब्रह्मचारी जी न परम्परित ब्रजकाव्य की वनस्थली म अपनी प्रतिमा के नये-नये फूल
खिलाये हैं । ब्रह्मचारी जी की गोवर्द्धन लीला' जसी लघुकृति म श्री कृष्ण क गोवर्द्धन
धारण अरु ब्रजवासीन क सुरूप के चित्रण की लघुकृति म महाकाव्य की सी विराट
चेतना कौ अनायासई समाहार है गयो है । शान्त रस के सग सग वीर भयानक रस की
उपस्थिति के बीच-बीच म ममतामय करुन रस की भीनी-भीनी फुहारन के कारन जि
रति महाकाव्य की सी गरिमा अरु विराट चेतना अपने माहि समेट भय है । इन्द्र की

पूजा के निसेध अरू गोवद्धन पूजा के आयोजन के कारन व्रज पै मूसलाधार बरखा कौ देखौ ब्रह्मचारी जीने कसो विराट चित्र अंकित कीनो है। सब्दयोजन अरू महीन विराट बिम्बयोजना के प्रयोग ते मूसलाधार बरखा की भयानकता एक मग मानस पटल पै चित्र की तरिया अंकित है जायें है उदाहरन प्रस्तुत है—

धाये चहु ओंर सौं गरजत घमण्ड भरे। बादर उतग युद बान झरलामेहै ।।
जाय है न नैंकुना अधा मे बरसान जल। हैं कारे रग वारे भय भोर दिखाम हैं ।।
श्रीपति चपला की चका चौंध चहु दिसमे। झूम झूम मेघ घूम घूम घिर आम हैं ।।
पामे अति दुख गोप-गोपी ग्वाल बच्छ गाय। ब्रज मे बरसा के फरमा से लखामे है ।।

ब्रजराज ब्रजबासीन की आर्त्त पुकार सुनकै जब गिरिराज कू उठाय लेय हैं तौ वे ब्रजबासीन कू वाके नीचै शरण लैबे कू पुकारे हैं। बिचारे ब्रजबासी डरप जाये हैं। ब्रजवासीन के भय मे ब्रह्मचारी जी ने देखौ कैसे मनोहर हास्य कौ पुट दीनो है।

कांपत है करेजा अरू भेजा भन्नाय रह्यौ। मुख है मलीन जान चक्कर म आई है ।।
बरसा की मार इतै, कृष्ण पै पहार उतै। एक ओर कूआ है तौ दूजो ओर खाई है ।।
श्रीपति कहा पते जो पटक दे पवत कौं। को है फिर ऐसौ लेय प्रानन बचाई है ।।
ऐसे गाप गुप्प चुप्प आपस म बात कर। सौंचें पछिताय पास कोऊ नाहि जाई है ।।

याई तरिया जब गोप भारी प्रमन्न है कै श्रीकृष्ण कू ब्रजब्रासीन कू बचायबे कौ श्रेय देय हैं तौ एक गोपी हँसके जो कछु कहै है वामे हास्य की सरसता कौ ऐसौ पुट आय गयौ है जाकी जितेक प्रसंसा करी जाये वितेक कम है। देखौ उदाहरन—

मोहन नौहर जाते डर जाते ग्वाल बाल। गिर गिर जातौ जो ना सैंन सौं सम्हारती ।।

हास्य क सग सग वात्सल्य भाव भारी ममता के भावन मे करुन भाव कौ या रचना मे ब्रह्मचारी जी नैं अनूठौ प्रयोग कीनो है। एक उदाहरन गोवद्धन लीला कू महाकाव्योचित चेतना के निकट लायबे कू पर्याप्त है। मैया जसोदा कू जब मालुम परै है कै वाके कोमल दुलारे बेटा कन्हैया जैसे कोमल बालक नें पवत कू उठाय लियौ है तौ वाकी हृदय विदारक दसा कू कवि ने एक दोहा मे चित्रन कीनो है। कोमल कन्हैया

अरु भयानक पवत एव मूसलाधार वरखा म मैया को रोयवो चीखवो स्वाभाविक है। ऐसी मैया जसोदा के हृदय की दसा को चित्रण देखो। 'कनुआ-कनुआ' पुनरुक्ति मे मैया की ममता अरु आसन संकट ते उत्पन्न मैया के करुनामय हृदय की झांकी गई काव्य चमत्कार है।

व्याकुल मन असुआ द्रगन प्रेम न हृदय समाय।
कनुआ-कनुआ कहत ही, पहुची जसुदा माय॥

'गोवर्द्धन लीला' जैसे परम्परित विसयन की रचनान के अलावा ब्रह्मचारी जी ने आधुनिक जन जीवन के भावबोध कू हू अपनी रचनान मे प्रमुख स्थान दीनो है। सत्ता की आपाधापी अरु प्रभुता म डूबे राजनेता कू फटकारते भये कवि नै लिखो है। वोट की राजनीति पै याते ज्यादा का व्यंग्य होयगो।

श्रीपति भरोसो कहा ऐसी सरकारन को। वोट पायब कू राष्ट्रनीति बिसारी है॥
हारी सब जनता दुखारी महामारी रहे। राज है हजारो पर मापा न हमारी है॥

हमारे मिठलौने, सलौने, सुठलौने ब्रजमाधुरी के सरस रचनाकार श्री निवास ब्रह्मचारी 'श्रीपति सौ बरस तानू जीवित रह, ब्रजराज सों याई प्राथना के सग मैं अपनो निवेदन समाप्त करु हू।

समस्यापूर्ति के बेजोड कवि प्रभुदयाल 'दयालु'

तिरासी बरस के राजस्थान के ठेठ ब्रज भरतपुर के कवि प्रभदयाल दयालु, को जनम 16 मार्च 1907 कू याई धरती पै भयौ। सन् 1912 मे स्थापित हिन्दी सेवी सस्था हिन्दी साहित्य समिति ने ब्रजभूमि के या सहर मे भौतेरे कवि पैदा कीन ह अगर फेरिस्त बनाई जाय तो प्रमानित होयगो क जनता द्वारा स्थापित ब्रज की या हिन्दी सेवी सस्था ने सैकडन लागन कू काव्य रचना के अक्षर ज्ञान ते सुरूआत करायकै काव्य के समय सृजन की सक्ति प्रदान करी है। दयालु जीऊ ऐसेई कवि है जो सन 1913 मे हिन्दी *साहित्य समिति मे आयोज्य एक कवि सम्मेलन मे कविन के काव्य पाठ कू सुनकै इतेक* विभोर अरू तन्मय है गये कै काव्य के सुसुप्त सस्कार इनके हृदय मे हरे है उठे। इनके हृदय सौं उमडती-घुमडती अरु रिमझिम रिमझिम बरसती कविता की बरिखा की फुहारन कू नेह की थपकी अरु लालित्य की गमक दोनी गुरू रूप मे कविवर मुरलीधर जमादार ने। सार है के दयालु जी के काव्य सस्कारन कू सान पै चढायौ जजी के एक साधारन चपरासी काव्य सृजन के पडित भरतपुर के अपने समै के समय कवि मुरलीधर जमादार जीनै। दयालु जीनै पेट पालन कू बस मिडिल तानूं सिच्छा ग्रहन करी। *1936 मे हिन्दी भाषा की उन्नति की राष्ट्रीय स्पर्धा मे प्रथम स्रेनी सौं साहित्यरत्न* की उपाधि ग्रहन कर लई। किताबी ग्यान को बस इतनोई खजानो है दयालु जी के पास। परि स्वाध्याय, अग्रज कविन को सत्सग, नियमित साहित्य गोष्ठीन को व्यावहारिक ज्ञान को विसाल भडार दयालु जी की रचनाधर्मिता को सवनते वडो वैभव रह्यो है। काव्य सत्सग मे, भावलोक कू मथके काव्य नवनीत उत्पन्न करिवे की कैसी अनुपम अजानी सक्ति है श्री दयालु जी याके जीते जागते उदाहरन है। आज जब रचनाधर्मिता अरु काव्य रचना प्रक्रिया की बात करी जाय है तो रस अलकार, गुण, *दोष ध्वनि अरु छद विधान दूसरे लोक की काव्य सत्य लगे है। परम्परित काव्य रचना* प्रक्रिया कू जड या माथा पच्ची तक कहवे मे सकोच नाय होय। अग्रज कविन के सत्सग के अभाव मे निस्चिई परम्परित काव्य शिक्षा दूसरे लोक की बात लगे है। परि दयालु जैसे कविन के काव्य अरू विनकी रचना प्रक्रिया के प्रशिक्षण काल को विवेचन करै तो निस्चई लगे है कै ब्रजभाषा ने जो काव्य सत्सग की परम्परा हमारे देस में सुरू

करी ही बाय हमनैं कठिन, नीरस बताय कैं अच्छी नाय कीनो। हमारे देस की काव्य कला की जो परम्परा रही है वू एक या दो दिना के परिस्रम की फल ना है। सदीन के काव्य वेधा के अध्ययन अध्यापन, मनन चिंतन की परिनाम ही ब्रजभाषा के काव्य की रचना प्रक्रिया रही है। दयालु जी याई परम्परा मे कवि हैं। बिन्नें ब्रजभाषा के अलावा हिन्दी मऊ काव्य रचना करी है। परि मन रमो है ब्रजमई।

प्रभुदयाल 'दयालु' जैम सौम्य, मधुरभाषी, नाप तोल के धीरे धीरे बोलबे वार गौर वन के व्यक्तित्व के धनी हैं वसीई बिनकी कविता है। एक एक सब्द जस बिनके मुख सों मन की भावनामयी तराजू में तुल के आव है वैसीई निखालिस बिनकी कविता है। एक एक सब्द भाव सों एसो अतरंग है के लिपटो भयो है कै सरसता की मीठी मीठी इनके काव्य की मिठास की महक बरबस मन कू एक निगूढ आनन्द म डुबाय कैं निहाल कर दे है। बनावटीपन या प्रयास के नैंकउ तो कही दरसन नाय भये इनके काव्य म भीत माथा पच्ची करे पाछेंऊ एसो दयालु के काव्य म ढूंढ सों एक उन्हरन नाय मिल्यौ जा तरिया को। मन म जो आयो है या यों कहें मन की तन्मयता ने जहाँ नकऊ एकाग्रता दीनी है बाय ज्यों की त्यों सहजभाव ते अपनी निराली काव्य सैली म प्रकट कर दीनो। भरतपुर के या वयोवृद्ध कवि दयालु ने अपने काव्य म। या युग के ब्रज के अन्य कविन की तरिया दयालुजीनैंऊ ज्यादातर काव्य रचना समस्यापूर्तिन की काव्य गाठन के रूप म करी है। समस्यापूर्तिन के प्रयास सो दयालु जी काव्य तन्मयता नकऊ तो खण्डित नाय भई। इनैं समस्यापूर्ति तवई करी है इनके कवि नैं काव्यगत तन्मयता ग्रहन कर लई है। जेई कारन है कैं इनकी पूर्तिन म प्रारंभ सों आखिर तानूं एक सहज श्रृंखला वनी भई है। कही व्यवधान या स्पीड ब्रेकर के दरसन नाय होय। दयालुजी की काव्य परम्परित ब्रज भाषा रचना प्रक्रिया कं विरोधीन कू खुलो प्रमानित उत्तर है कैं समस्यापूर्तिन के प्रयास म सहज काव्य सजन प्रक्रिया खंडित नाय होय है। पूर्ती विसै को इसारो मात्र है। अभिव्यक्ति तो कवि की अपनी है। तन्मयता की भूमि सो पूरी करी गई समस्यापूर्ती अरु स्वतंत्रता रूप सो लिखी कविता म नेकऊ तो अंतर नाय। तन्मयता को ओज मूल बात है। दयालुजी कविता म तन्मयता को ओज आद्योपान्त दर्शनीय है। अरु दयालु जी तो ऐसे मीठे ब्रज के रचनाकार हैं जिनको भावलोक आजऊ वृद्धावस्था मऊ बालक की तरिया सहज सरल बेलाग प्रवाहित हैव कौ हामी है। सन 1931 म श्री हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर म आयोज्य एक कवि सम्मेलन म दरबार' म समस्या दयी गई ही दयालुजीनैं दरबार समस्या की पूर्ति सहज सांग रूपक कैं माध्यम सों करी है। परोक्ष म मानवीयकरण अलंकार की छुटा ते वर्षा रितु म गान सभा को सटीक रूपक याम प्रकट कियो गयो है। सहज सरल भाव ते दरबार की जो पूर्ति करी गई है बाम कवि की काव्य रचना प्रक्रिया की तन्मयता म नेंकऊ बाधा पदा नाय भईहै। रूपक के संग मानवीकरण कं प्रयोग सों जो सहज काव्य

चमत्कार यहा पैदा भयो है, वू ई सिद्ध करिबे कू पर्याप्त है कै दयालु जी बालकोचित निश्छल भावाभिव्यक्ति मे मधुरे कवि है। मेरी बात पै विसवास नाय तो पढि ल्यो उदाहरन—

घन के नगारे बाजे नारे नद ताल देत
झीगुर की झाझ बजी सबरे घरबार म।
मधुर अलाप बारी कोकिल है गान हारी
नीलकठ नृत्य करी फिरे वक्ष ? डार मे।
जुगनू की ज्योत जर चपला प्रकाश करै,
धीमी धीमी रसबूद निशा अधकार मे।
बन म मोर सोर करै भृगी भेदि सब्द करै,
गान सभा जुड़ी मानो पावस दरबार मे।

दयालु जीनै परम्परित समस्यापूर्तिन के अलावाऊ सुतत्र काव्य रचनाऊ भौत करी है। इन्नै अपनी या तरिया की रचनान मे परम्परित ब्रजभाषा के छन्दन की डगर ते हटकै कछू ऐसे छदन कोऊ प्रयोग अपने काव्य मे करो है जो ब्रजभाषा म ज्यादा लोकप्रिय नाय रहे हैं। याई तरिया को छद है रोला। रोला कू ब्रजभाषा के काव्य दरबार मे वू आदर ना मिल्यो है जो हिदी मे मिल्यो है। दयालु जी ने रोला छद मे अपने ब्रज काव्य कू उतार के सिद्ध कीनो है के या छद मेऊ ब्रजबानी वाए तरिया इठलाती, गमकती अरु महकती चले है जा तरिया सवैया एव कवित्तन मे चले हैं। इनके कवि की सहज बेलाग सरस अभिव्यक्ति रोलाऊ मेऊ बाई भाँति आई है जैसी अ य स्थानन पै आई है। बरखा की बहार मे मानवीयकरण एव उत्प्रेक्षा की छटा कैसी फब रही है—

फूले सुदर भ्रमर पत्तीन झुलात
वारि बीच केऊ मनो सुदरी नैन चलावत
चहक चहक खग वृद, विजन मे चौल मचावत
मनहु सारदी गुनन गाय बहु भाट सुनावत

दयालु जी के काव्य मे रितु वनन प्रचुर मात्रा मे भये है। यामे ज्यादातर प्रकृति को आलबन अरू उद्दीपन रूप मे ज्यादा बनन भयो है। भौतेरे स्थानन पै तो कवि के अ तस ने जो कछू देखो है बाको सीधो सादो बनन कर दीनो है। ऐसे स्थानन की सब्द अरु प्रतीक योजना को एक के पाछै एक ऐसो बनन-भयो है कै पढिबे ते मानस पटल पै अनायास चित्राकन है जाय है। सब्दन के अथ को तादात्म्य निगूढ आनन्द में डूबकै

हृदय के केनवास प मनोहर चित्राङ्कन करे हैं। दयालु जी प प्रकृति सौंदय के वभव ते भरे भये बिनके काव्य चित्रन म त एक उदाहरन भीत है या क्रम म—

भटक पवन सग चटक चटक कलिका खिल जावत।
विकसित सुमनावली गध चहु दिसि बरसावत।
अपनो वैभव देख, सुमन लतिका हरसावत।
भ्रमर भिखारी देख, द्रव्य अपनो बरतावत।

प्रकृति चित्रन म भीतेरे स्थानन पै कवि न जसे एक के पाछै एक उत्प्रेक्षा की लडी पै लडी पिरोय कै धर दीनो है। 'बसत' की पूर्ती म लिखे भये पाच छन्दन में ते हम एक उदाहरन कू प्रस्तुत कर रये है। समस्यापूर्ति मे नैकऊ तो काव्यगत प्रयास नाय दीख याम। सहज काव्यागत तन्मयता की समाधि ते निकरो मयो है जि छद—

आयु म तरुणता ज्यों उषा म अरुणता ज्यों
तारावली बीच जैसे चन्द्रा लसन्त है।
सर म सरोज जैसे, सुदर मनोज जैसे
नागन म श्रेष्ठ जैसे भामत अनत है।
सुरन सुरेश जैसे नरन नरेस तसै,
गुननि म मान पावै श्रिष्ठ गुनवत है।
तैसेई दयालु धरा भारत बसुधरा पै
रितुन म राजै, रितु राज मे बसत है।

दयालु जी ऐसी पीढी के जीवित कवि है जिनकू अपने युग के ते एक एक श्रेष्ठ ब्रजभाषा के कविन के सत्सग में काव्य पाठ करिवे को औसर मिल्यो है। इनमे मथुरा के अपने समै के कवि शिरोमणी नवनीत चतुर्वेदी को नाम उल्लेनीय है। नवनीत चतुर्वेदी स्वय समस्या देते है। दूर दूर ते कविगन इनके सानिध्य म पूर्ति कर प्रससा कू आतुर रहते है। एक समै नवनीत जीन्ने समस्या दई 'अधरे न अधरात समै रवि मडल म रसि मडल देखो।' दयालु जिन्ने निम्नलिखित समस्यापूर्ति करिक नवनीत जी अरु मथुरा मडल के ब्रज कविन सौं भारी प्रससा पाई ही—

तेजमये वसभानुपू राजत, सूर कवि सपनो पखो
गोद म राजत राधिका सुदरि चन्द्र प्रभा हू ते रूप बिसेखो

या छवि को अवलोक कै दयालु जू भाव हिए बिचये लेखौ
आधरे नै अधरात समै रवि मडल म ससि मडल देखौ।

24 जनवरी, 1931 कू एक कवि सम्मेलन मे दयालु जीने 'कजरारेरी' पूर्ति मे पछू छन्द बनाये हे। नैनन की मार कितनी तीखी अरु असहनीय होत है याकौ सहज चित्रन पूर्ति के कवित्त म भयौ है। प्रयास की नैकऊ झलक नाय दीखै है या स्थान पै। कवि कौसल कौ जि चमत्कारई कहनौ चईयै कै नैन की मार की तीव्रता कू कविने विभिन्न प्रतीकन के माध्यम ते देखौ कितेक सटीक सैली के प्रवाह मे उतारौ है—

सुई के चुभाए नर नेक मे उछर जात।
भाले की घुमन खूब रुधिर प्रचारे री।
तीर तलवार वीर ऐसी ही उपाधि करें।
जिनकै लगै है दुख पाये तिन भारे री।
इनके जु घावनि की ओषधि उपाय घने।
भनत दयालु मैंने पोथी मे निहारे री।
कैसे परै कल कौन ओषधि भली है तिन्हैं।
जिनके हिए मे चुभै नैन कजरारे री।

आखिर मे निवेदन करनौ चाहू हू के समस्यापूर्तिन के कवि अरु कविता आज के माहोल मे कछू अटपटी सी लगे है। पर ब्रज भाषा की समस्यापूर्ति के काव्यपाठ काऊ समैं हमारे देस मे भौतई लोकप्रिय हो। हजारन की सख्या म जनता रात-रात भर कविन की कलान पै मत्रमुग्ध है के वाह वाह करती ही। वाग्वैदग्धता अरु वचनबक्रता कौ लालित्य जनता कू बाधै रहतौ हो। या दृष्टि सौं समस्यापूर्तिन की ब्रज कविता कोरे कागज या पुस्तकन की कविता नई है के जनता की कविता ही। जनता के दुख दद, गुलामी की सत्रासभरी पीडा भक्ति कौ मिठास आदि जीवन के सत्य जब हजारौं व्यक्तिन के मन मे उतरते हे तौ कविता जनता के कठ मे समा जाती ही। दुर्भाग्य को विसै है के हिदी की ब्रज भासा की समस्यापूर्तिन के कवि सम्मेलन की जगै आज भौंडे आधार हीन हास्य न स्थान ले लीनो है। ब्रजभाषा के मच ते हिदी को वैभव बढ़ायबे वारी पूर्ति की कला धीरे-धीरे लुप्त सी है रही है याते एक दूसरौ लाभ और हो कै परस्पर स्पर्धा अरू अग्रज कविन के सत्सग ते नवाकुर कविन कू अभ्यास के आलोक मे अपनी प्रतिभा कू निखारबे कौ जो सहज मच मिलतौ हौ याते नयी नयी प्रतिभा दिसा निर्देस प्राप्त करकै भविष्य के श्रेस्ठ कविन को पात मे स्थान ग्रहन करती

जाती ही। प्रभुन्याल दयालु याई तरिया के कवि हैं। बिनकी पूति की कविता भरतपुर अरु ब्रज अचर की जनता के कठ म बरसन तक घुमडती रही है। पुरानी पीढी के लोगन के कठन में आजऊ जि अवसेस विद्यमान है। वद्धावस्था के कारन दयालु जी के स्वाफ गौरवण अरु उन्नत ललाट के सग देखकें जि स्यात नाय लगे है कैं ई वू व्यक्तित्व है जाने रात रात भर जगकें पूति की अपनी कला कौ सत्व जनता के मनन में उडेलौ है। पुरानी यादन कू जब कुरेदवे कौ प्रयत्न कियौ तौ लगौ कैं पुरानी पडी दयालु जी की काया ते जैसे अचानक सोयो बिनको कवि पूरी उमग के सग तन क ठाडौ है गयौ होय अरु कह रह्यौ हमें— 'तुमन पूति की कला कू तहस-नहस करकें अच्छौ नाय कियौ। जनता ते तुमने कविता को लालित्य जबरन छिनाय लियौ है अरू दियौ है भौंडो हास्य जो छन भर कू हसाय तो दे है पर कठ में नाय उतरे।'

काव्य सौरभ

मत्तगयद

मौं उमग ब्रजभावन म नव नेह दयाकर सौं बरसैं तू।
मौं ब्रज कला हर म ममता वन नूतन सी सरसैं तू।
मौं ब्रज फूलन म मकरद भरी मधुमास बनी बिलसैं तू।
मौं ब्रज कानन कलि कन्य तरे सुर बाँसुरी सी सरसैं तू।

गणेश

मत्तगयद

ग स गुन प आर सग पर भूतन प्रतन डोलत पारे।
भीग पुटी दिर पीवत ? म साच गिरें उठ नाचत सारे।
गाजन ध्यान करें ि र र प्रभा विप अब का विधि टारे।
रोवत रोवत प्रान निम हूट बासक चाहत मा क प्यार।

आधुनिक समस्यान के कवि राधाकृष्ण 'कृष्ण कवि'

वीर अरु सिंगार के सरस कवि राधाकृष्ण ठेठ 'कृष्ण' ब्रजभूमि डीग के निवासी है। इन्हे भरतपुर मे रहकै ब्रज के प्रसिद्ध कवि प नदकुमार जी की प्रेरणा प्रोत्साहन अर बिनके चरनन म बैठकै ब्रज काव्य रचना को अभ्यास कीनो है। वीर रस म इनै अपनी कविता म अमृत ध्वनि छद के जौहर दिखाये है। अमृत ध्वनि छद मे कलात्मकता अरु अभ्यास को भौत बडो योग रहे है। अनुप्रास एक के ऊपर एक आयवे ते अक्षर अरू मन्दन की ध्वनि सुनवया के हृदय मे स्वाभाविक रूप सौं ओज की भावना पैदा करैं हैं। कृष्ण कवि राधाकृष्ण जी ने या तरिया की भौतेरी अमृतध्वनि लिखि है। अमृतध्वनि लिखनो अरू साथक भाव ते वाको पारायन भौतई कठिन है। पर कृष्ण कवि के ब्रजकाव्य मे य दोनों तत्वपूरी तत्परता के सग उपस्थित है इनकी ओजमयी वाणी के सग अमृत ध्वनि की अलकार याजना ऐसे सलोने रूप ते उभर के आवै है कै सुनवया अनायास ई ओज म डूब जाय है। ज्यादातर ब्रजभाषा के कवि ने अमृत ध्वनि को प्रयोग ओज के छदन म कीनो है अरू राधा कृष्ण कृष्ण कवि ने अपने अमृत ध्वनि म नृत्य को चित्रन ऊ कीनो है। नृत्य की थाप अरु आलोडन विलोडन की सगति इनके अमृत ध्वनि मे इतेक सटीक बैठी है के आखन के सामई नृत्य साकार है जाय है। याई तरिया इनै गणेश वन्दना अरु इष्ट वदना म क्रमश अमृत ध्वनि छद को प्रयोग कीनो है। नीचे के उदाहरन ते हमारी बात स्पष्ट हाय है—

जय जय जय मगल करन छज्जज्जत छवि छद।
सुकवि कृष्ण रज्जत नयन सज्जज्जत सिर चद।।

सज्जज्जत सि चददधर वर चददधर सुत।
दददधर इन सुड क्करिवर रिद्ध सिसद्धयुत।।

गधध्धर गर पददधर को मोदक मदमय।
बदज्जनन अमद अनदद् दायक जय जय।।

मोर मुकुट कर लकुटधर अधर बेनु गति मद ।
ठुमक ठुमक कवि कृष्ण त्यो नृत्ततत् नदनद ।।
नृत्तत्तत नदनद चकित्तत्तत् चित चित्तत ।
तत्तत् ताल बजत्तत्तत गति बाल बबृत्तत ।।
मत्तत्तत मन मुरनि घिति छनन छ छुम छछोर ।
छित्तत्तत धुनि धरनि हरि नृत्तत्तत जिमि मोर ।।

कृष्ण कवि ने ब्रजभासा कू सिगार अरू राधा कृष्ण को कोमलका त पदावलि ते निकार के आधुनिक जीवन की कठोर भूमि पै उतारो है । दूसरे सब्दन म या बात कू यो कह सक है के जो लोग ये कहै कै ब्रजभापा मे प्रेम सिगार अरु राधाकृष्ण की विभिन्न केलि क्रीडान के अलावा और कछु नाय बिनकू राधाकृष्ण 'कृष्ण'—कवि ? ने अपनी कविता ते उत्तर दैक बतायौ है कै आधुनिक जन जीवन की विभिन्न समस्यान अरु दैनिक जीवन के सघसन के घात प्रतिघातन कू साथक रूप म उतारबे मे ब्रजभापा मे नैक्ऊ कमी नाय । जेई कारन है कै दहेज प्रथा भ्रष्टाचार जैसे ज्वलत समस्या बारे बिसैन पैऊ कृष्ण कवि जी नें अपनी कलम चलाई है । हमारे देस मे दहेज प्रथा निस्चितई भौत बुरी बुराई है । दीन हीन व्यक्ति के घर म कन्या को जनम दहेज के कारन वाकू जीवत मृत्यु सी प्रदान कर दे है । दहेज प्रथा वास्तव मे धनिक लोगन की बनाई भई ऐसी व्यापार वृत्ति है जो जीवित व्यक्ति के खून के सग करै हैं । कृष्ण कविजीने दहेज पै भौतेरे करूना भरे छद लिख है । देखो कछु उदाहरन—

अ तकर दहेज की प्रथा को पूणरूप सो, सामाजिक क्राति की लहर लहराइये ।
करके अवाछनीय तत्वन को बहिष्कार, प्रबल प्रपच सो समाज को बचाइये ।
प्यार को बनायो व्यापार धनिक लोगन ने भ्रष्टाचार अत्याचार को ना पार पात है ।
कतो या कुरीन को उन्मूलन समूल करो ना तो वरदान अभिशाप बन्यो जात है ।

आजादी ते पल मानो जातो हो कै हमारे देस की सिगरी सम्पत्ति कू अ ग्रेज समेट के अपने देस कू ल जाय है पर आजादी के चालीस बरस पाछैऊ हमारे देस की समस्या नाय सुरझी । अन्न अरू जल की कमी आजऊ हमारे देसवासीन की सबते बडी समस्या है । आजादी कै पाछ विकास की बडी बडी पचवर्षीय योजना बनी है इन योजनान पै अरबन रुपैया व्यय कीयो गयो है पर प्रगति के नाम पै जितेक लाभ मिलनो चइय हो वो नाय मिलो देस की या दुरावस्था कू देखके कृष्ण कवि कौहृदय रोय उठो जाई कारन बिन्नै अपने मन की पीडा कू जा तरिया सब्दन म उतारो है—

अन्न जल समस्या हुई ना हल हिंद म हमारी योजनान की टिल्ली उड जायगी ।
बिल्ली सम बिलोक रहे देसी बिदेसी सत्रु मारेगे झपट्टा झट झिल्ली उड जायेगी ।।

आतंकवाद भाई भतीजावाद अरू नेतान की आपाधापीन के कारन हमारे देस की राष्ट्रीय एकता आज खतरा मे पड गयी है। एक तरफ पंजाब मे कछु लोग खालिस्तान कौ नारौ देक विदेसी सक्तिन के सहारे पै देस की एकता कू तोडवे कौ षडयंत्र कर रह है तो दूसरी माऊ देस के भीतर लोग अपन व्यक्तिगत स्वारथन की पूर्ति कू राष्ट्रीय एकता कू खण्डित करव म नेंकऊ सकोच नाय कर रहे। आज राष्ट्र के सामई राष्ट्रीय एकता के खातिर प्रेम, अरु एकता की जरूरत है देसवासी अपन स्वारथन कू भूल के जब तानू राष्ट्र की प्रगति म नाय लगेंगे, तब तक सच्ची राष्ट्रीयता की बात करनौ बेमानी है याई बात कू कृष्ण कवि ने सवया छद के माध्यम सो जा तरिया सन्दन मे उपयुक्त भाव कू पिरोयो है—

एकता की अनिवार्यता है छल छिद्रन छुद्रता छाटन सौं।
त्यों कवि कृष्ण विवेक विचार सो प्यार सुधारस बाटन कौ॥
भेद भुलायकें भाव सौं चाव सौं पाप पयोनिधि पाटन कौ।
सेस विसेस उपाय यही सब देस कलेसन काटन कौ।

अगर एकता भई तो सिगरी बिगडी बात कवि के सब्दन म बन जायगी अगर देस मे एकता नई हुई तो आज जो लोग हमारे मित्र है वेऊ सत्रु बन जायेगे। अगर देस एक रहे तो एकता की सक्ति के सामई बडे-बडे शत्रु कू मित्रता करनी पड जायेगी। राष्ट्रीय एकता की सक्ति के या मूल भाव कू नीचे लिखे सवैया म कवि ने कितेक सटीक यर्थाथ की धरती पै उतारो है–

एकता के बिन आपस मे अब भारत मे तन ते तन जायगी।
त्यों कवि कृष्ण कुनीत अनीतन सो ठनते ठनते ठन जायगी।
देस की मित्रता शत्रुता म बदली छन ते छन जायगी।
केवल एकता के बल पै सिगरी बिगरी बन ते बन जायगी।

बजट जैसे हमारे देस के हर व्यक्ति से जुडी समस्या तक कू कृष्ण कवि ने अपनी कविता कौ आधार बनायौ है। राधाकृष्ण जी को कृष्ण कवि हर साल लोकसभा मे प्रस्तुत हैवे बारे घाट के बजट सौ भौतई दुखी है हर साल लोकसभा मे घाटे कौ बजट प्रस्तुत होय है अरू या सभा के सिगरे सदस्य बडे हृप के सग या बजट कू प्रस्तुत करें है। चकाचक जीवनयापन करवे बारे घाटे के बजट के प्रस्तोता नेतागन निधन जनता के दुख दद कू का समझेंगे। हर साल प्रस्तुत हैवे बारे घाटे के बजट के प्रति कृष्ण कवि कौ मन पसीज उठे याई भाव कू या तरिया कविता म व्यक्त कीनो है–

घाटौ ही घाटौ बजट होय पेस प्रतिवर्ष।
सुकवि कृष्ण स्वीकार सौ लोक सभामे हृप॥

लोकसभा म हप विलोप अधीर प्रजाजन ।
जन जनदरसत दुगी अधमर सा है निधन ॥
धन धनराज सुराज काज मसर्क है माटी ।
चवर उच्चर्ण से नेता जनता की घाटी ॥

नेतान नें तौ कवि की भाषा म देस की भुर्ता बना दियौ है । प्रजातन्त्र क नाम प हमारे देस क नेतान नै जो आपाधापी मचायी है वाय स्यातई कोई एसौ आदमी होय जो नई जानतौ होय । कागजन प देस की प्रगति के नाम पै बडी बडी योजना बनाई गई है । वहू समाजवाद की नारौ देक जनता कू भ्रमित कियौ गयौ है पर जनता क दुख दद कू सच्चे ढग त कोऊ नेता न ध्यान दव की जरूरत नाय समझी नेतान की आपाधापी सौं कवि कौ हृदय भौत दुखी है । जि दुख स्वय कवि के सन्दन म जा तरिया प्रकट भयौ है—

सोच सोच हरि सकल नेता निहारे नैन, आजादी कहा महा ऊधम सौ मचायौ है ।
कृष्ण कवि आज तक सफल ना भयौ कोऊ विफल भई योजना खोज यही पायौ है ॥
गायौ है समाजवाद वद अपवाद करे भोरे भारतीन को विषय म भ्रमायौ है ।
खोटन की ओट खूब नोटन सौं वोटन सौ, चाटन सौं भारत कौ भुरता बनायौ है ॥

न्याय व्यवस्था भ्रष्टाचार, चमचा जसे जनता के दैनिक जीवन तें सदधित प्रश्नन कू कृष्ण कवि न अपनी कविता मे पूरी तत्परता क सग उतारौ है । भ्रष्टाचार तो हमारे समाज म ऐसें असाध्य रोग की तरिया फलतौ जा रह्यौ है जाकौ उपचार काऊ के पास नाय सरकार म उपर ते लके नीचे तानू भ्रष्टाचार ने अपनी जड जमाय राखी है । या असाध्य रोग के सामई जनताऊ असहाय है कै मूक बनी है । कवि की भासा म सहसबाहु की तरिया भ्रष्टाचार हमारे देस की सिगरी प्रगति कू लीलतौ जाय रह्यौ है–

भ्रष्टाचार बतात है भारत म सब लोग ।
मूक बने से सह रहे है असाद्य यह रोग ॥
है असाद्य यह रोग खाद्य सामग्री सारी ।
भरी भ्रष्टता सौं असली म नक्ली डारी ॥
कहै कृष्ण कवि चल रही याही सौ सरकार ।
सहसबाहु सम व्याप्त है व्यापक भ्रष्टाचार ॥

इनके अलावा कवि कृष्ण ने आजादी पाछे लडे गये विभिन्न युद्ध पै अपनी वीरता प्रकट करवे वारे सैनिक नायकन प विचार व्यक्त किय है । इनम फील्ड मासल मानेक

शाह मेजर शैतान सिंह हवलदार मेजर पीरू सिंघ कप्तान रामराघव राना लासनायक करमसिंघ, नायक यदुनाथ सिंघ, मेजर सोमनाथ जनरल चौधरी, एयर मासल अर्जुन सिंघ, कर्नल तारापुर, कप्तान कपिल सिंघ थापा, कर्नल गुरु बक्श सिंघ, कप्तान चन्द्र-नारायण सिंघ जैसे भौतेरे सैनिक नायकन के विसै म कवित्त छद के माध्यम सौ बिनकी वीरता कौ खुलासा कीनौ है । सन् 1948 मे कश्मीर की लडाई पै वीरता दिखायबै वारे चक्र प्राप्त सूबेदार सावल राम की वीरता कौ अभिनन्दन करते भये कृष्ण कवि न या तरिया अपने भावन कू सब्द दीनै है —

सूबेदार सावल राम वीर चक्रवारे नें उडी क्षेत्र मे कियौ आक्रमण करारौ है ।
कृष्ण कवि मशीनगन गोली और गोला दै, टोली लै अपनी युद्धभूमि ललकारौ है ।
अटा उर जमाय पाँच घटा लौ लडयौ वीर, अड़यौ ओज भारौ अरिन भजारौ है ।
सन अडतालीस कौ काम वीरता कौ जाकौ, अन्य उपमा कौ उर आत ना उचारौ है ।

इन सत्य अहिंसा समता जैसे मानव जीवन के कोमल भावना पैऊ अपनी लेखनी चलाई है, जाके अलावा ब्रजभूमि के परपरित विसयन पैऊ इनै अपने हृदय के भक्ति भावन कू काव्य म उतारौ है । भ्रमरगीत अरू गोपी-उद्धव सवाद कृष्ण कवि कौ भक्ति काव्य कौ प्रमुख विसै रह्यौ है । लब्बोलुआब जिहै क राधाकृष्ण के ऐसे कवि हैं जिन्न अपनी ब्रजभाषा की कवितान मे परम्परित भक्ति रस की रचनान के अलावा आधुनिक जनजीवन ते सबधित विसयन कू बी पूरी तत्परता अरू सजगता के सग उतारौ है । अन्त मे हम ब्रजभासा कू समर्पित कृष्ण कवि के एक छद ते अपनी बात समाप्त करनौ चाहैं हैं ।

या लाल गुपाल के बोलन की कल कलोलन गान की भाषा ।
कवि कृष्ण कहा कहनौ रस कौ ब्रज वासिन के प्रिय प्रान की भाषा ।
तुलसी अरु केशव सूर तथा ब्रज के कितने कविरान की भाषा ।
उपमान नही तिहु लोकन माहि बनी ब्रज नाथ नचान की भाषा ।

गुरु कमलाकर की ब्रज काव्य यात्रा एक विवेचन

रीतिकाल क रससिद्ध कवि पद्माकर के वगज कमालकर तैलग की जनम माघ शुक्ला वारस सवत 1971 कू भयो। इनकी [मिया को नाम वल्लीवाई हो। इनक पिता बलवन्तराय तैलगऊ ब्रजभासा के अपन जमान क श्रेष्ठ कविन की स्रेनी मे गिने जावैं हैं। सवत 1935 म एक छोटे स दोहा की रचना के सग कविवर कमला तैलग जीन्नैं अपनी ब्रजभापा की काव्य प्रनयन की यात्रा सुरू करी है। या दोहा की सब्द रचना अरु प्रात कालीन सुपमा को सहज चित्रन कवि क सहज रूप म ई प्रमानित कर है कै इनके हृदय ते आगे चलकै जो माधुय अर प्रसाद गुण को काव्य निरक्षर फूट्यो है। वाकी आधारशिला बाल्यावस्था म ई जम गई ही। जि पली कविता है—

तम थमयो उद्धयो चहत, अरुण अमल आकाश।
प्रात भयो उठ बैठ सुत करहु कछुक अभ्यास।

कवि कमलाकर तलग कविता म कमल उपनाम ते रचना करै है। सादा जीवन अरू आदशमय व्यवहार इनके एक एक कायप्रणाली म झलक है। बरसन ते गुरूजी ने खाली धोती पहिरबे को नियम ल राखो है। आज 76 बरस की उमर मऊ युवकन की नाई ओजस्वी अरू तेजमय व्यक्तित्व के सग सग प्रबल विनम्र सुझाव के गत साठ बरस ते विद्यार्थीन कू निसुल्क हिंदी अरु ब्रजभापा पढायबे म अपनो जीवन लगाये भये हैं। आज त पैंतीस बरस पैल इन्न जयपुर म साहित्य सदावत सस्था की स्थापना कीनी ही जामैं भौतेरे छात्रन कू इन्नैं हिंदी अरू साहित्य को पाठ पढायो। राजस्थान पत्रिका के सस्थापक कपूर चन्द्र कुलिश तारा प्रकाश जोशी बुद्धि प्रकाश पारीक श्री बाडदार जैसे राजस्थान के कछू यशस्वी साहित्य सवीन को उल्लेख करबो पर्याप्त होयगो। जिन्नैं इनके पास रहकै साहित्य सदावत के वातावरन म साहित्य की मूल चेतना प्राप्त कीनी है। याई कारन कमलाकर तैलग राजस्थान म गुरुजी के नाम ते जाने,जाय हैं। क न

परम्परा अरु गुरुन के पास नियमित अभ्यास ते इनकी कविता में धीरे-धीरे निखार आमतो चलो गयो। बाल शास्त्री, पिता, काका सुधाकरजी, काका गोविन्द राम तैलंग कछू ऐसे नाम हैं जिनकी प्रेरना अरु प्रोत्साहन ते गुरुजी की ब्रजभाषा की कवितान म धीरे धीरे निखार आयो है।

गुरुजी ने अपने ब्रजकाव्य म परम्परित भक्ति काव्य के सग सग आधुनिक जीवन के भाव बोध कू हू स्थान-स्थान पै चित्रित करवे को अभिनदनीय प्रयास कीनो है। सन् 1937 मे इन्नें भारत के स्वतत्रता आदोलन ते प्रभावित है कें लम्बी-लम्बी कविता लिखी ही। कहवे की आवस्यक्ता नई कै सन् 1937 को समै हमारे देस मे ऐसो समै हो जब हम पूरी तरिया ते विदेसी के शिकजे मे कसे भये हे। राम प्रसाद बिस्मल, अरु भगतसिह जैसे नौजवान न अपन प्राण अर्पित करकें आजादी के भाव लोगन के मन मे उतारवे को प्रयास कीनो हो। नवयुक कमलाकर तैलगऊ आजादी के या बलिदान ते इतेक प्रभावित भये कि इनके काकाकी रग रूप पूरी तरिया आजादी के रग म रग गयो। इनें निसकोच अरु निडर भाव ते अग्रेज कू ललकारते भये लिखो हो।

सुने विदेसी लोग, बात य एक हमारी।
वापिस घर को करें जायवे की तैयारी।
हमतो इहा सुतत्र होइकें रहिबो चाहत।
भारत अपनी सही हवा मे बहिबो चाहत।

अग्रेजन ने भारत मे आयकें यहा की गरीब जनता क सग जो अनाचार अत्याचार किय बाते युवा कवि कमलाकर के हृदय म भौतई पीडा ही। विदसी लोग निष्ठुर तो हुतेई ए सग ई बिन्नें हमारे देस के रीति रिवाज अरु सस्कृति कू बिगाडवे मे नैकऊ कसर नाय छोडी। याई सत्य कू युवा कवि कमलाकर जीनें सन् 1937 मे निर्भीक है कें या तरिया कही। 1937 म रचित या कविता ते जेऊ प्रमानित है कें कमलाकर जी के मन म अपन देस की आजादी की लौ कितेक प्रखर भाव ते जर रही ही। भारतेन्दु बाबू ने ब्रजभाषा काव्य मच ते देस मे सबन ते पैले जा लौ जराई ही वाय परवर्ती साहित्य सेवीन्नें निडर भाव ते जरायो है। ई दूसरी बात है के हिन्दी की तथाकथित प्रगतिशीलता की स्पर्धा मे ब्रज काव्य के जा रूप म चर्चा नाय भई है। कमलाकर जी की सन 1937 की जि पक्ति जाको सबन ते बडो प्रमान है।

तुमन आकर इहा बडोई जुलम कियो है।
अरे निदयी चलो हमारो बुरो कियो है।

भाषा भूषा वेश, बिगार हम लोगन के ।
तुमन अवसर दिये बुरे दुख में भोगन के ।

विदेसीन के अत्याचारी अरु अनाचारी रूप के संग संग बिर्न अपने देशवासीन की कमीन की तरफ अपने काव्य में ध्यान खचबे की काऊ तरिया की कसरत नाय छोडी । हमारे देसवासीन की परिस्रम ते भागबे की इच्छा ते बिनकौ कवि भौत दुखी है । कमलाकर जी के कवि के अनुसार अगर हमारे देसवासी परिस्रमी बन जाय तो बिदसीन कूं देस ते निकारबौ नकऊ कठिन नाय । याई लय बिर्न श्रम की आराधना करते भये या सत्य कू अपनी कविता में या तरिया उतारौ है—

श्रम के करिब म कहू होत न जाको खेद ।
स्वर्ग बनावत भूमि कौ, बाके तन को स्वेद ।।
सीघ्र स्वयं उत्पन्न करे जन जन म अनुरक्ति ।
श्रम की दम टूटे नहीं री श्रमकन की शक्ति ।।

मनुष्य लालच में कर्म की धरती कू त्याग के इत उतकू डोल है । कर्म त म्हौ छिपाय कें ईस्वर की मूर्तिन की आराधना ते स्वर्ग की प्राप्ती की कल्पना सही अथन में हमारे देस की प्रगति को सच्चौ रास्ता नाय या मम कू युवा कवि कमलाकर जीर्न आजादी ते भौत पैल स्वीकार कीनौ । याई कारन बिर्न बेलाग है कें विद्रोही कवि कबीर की तरिया देसवासीन कू ललकारते भये कह्यौ है—

मानव ! लालच में वृथा इधर उधर मत घूम ।
कमठ हाथन मौ पकड माँ की आंचल चूम ।।
ईस्वर प्रस्तर मात्र है स्वर्ग कल्पना मात्र ।
केवल तुमही हो मनुज अभिनंदन के पात्र ।

गुरुजी न एसे विषय कू अपनी कविता को आधार बनायौ है । जिनकी तरफ लोगन को ध्यान नाय जाय है । धूम्रपान अरु चायपान जसी बढती भई नसाखोरी तक कू मध्ययुगीन संतन की शैली म कमलाकर जीर्न तुमई दख लेओ नीचे लिखे दोहा म बिसेस सटीक सैली म उतारयौ है ।

मन्द मार मत खोल तू लम्ब हाटन को हाल ।
अरे धूम्रपान है दिल दिमाग को काल ।।

घर मे मचत अपार है हाय हाय की सोर ।
चाय पिये बिन सीस पै पूरो आवत जोर ।।
चाय पिय ते जिन्दगी पावत नही विकास ।
आयु घटत अरू काय की होवत सत्यानास ।।

आजादी पाछैं देस की हालत कू देखकै कमलाकरजी को कवि चुप नाय बैठयो बिन्नै देख्यो क महात्मा गाधी की प्रेरना ते ऊँच नीच अरू जातिन के ब धन तोड कै सिगरो भारत ऐसी एकता की डारी म बध्यो हो कै सक्तिसाली विदेसीन कू दुम दबाय कै भारत ते पलायन करनो पडो। कवि ने देख्यो कै जिन आदसन कू प्राप्त करवे कू आजादी की लडाई अरू सैकडान लोगन नै अपने प्राण न्यौछावर किये वाको सत्य आजादी पाछैं जीवित रह्यो जाति पाति की ऊँच नीच की भावनान नै आजादी के बलिदान के आदस कू झकझोर क रख दीनों। खिन्न है कै कमलाकर कमल नै एक आदसवादी कवि के रूप मे हमारे देस के या वडबस रूप कू या तरिया स्वीकार कीनो—

हिन्दू जैन क्रिश्चियन पारसी मुसलमान ।
बौद्ध सिख नागरिक आपस मे भाई हैं ।
जनमजात मानव की जात नाहि जात पाँत।
करमजात ब्राह्मण है करमजात नाई है ।
धम निरपक्षता की पद्धति को मान इहा ।
गौरव गुण बलिया ईश्वर की गाई है ।
एकता की आसन पै बठे भले भारत म ।
भारत निवासिन ने गाठे सुलझाई है ।

स्वाथ प्रपच अरु दुखदाई आपाधापी अरु जाकी लाठी वाकी भैस की बढती भई प्रवृत्ति ते कवि को मन खीज उठयो है याई कारन बिन्नै कठोर भाषा मे देस के या दुरावस्था को चित्रन देखो कैस कठोर दारुण भरे सब्दन मे कीनो है—

खाय रह्यो खोंपरी विवादन को गौत इहा ।
स्वारथ के पोत पै प्रपच चढयो आवै है ।
रचना विरच सकुचावे करे घात घनो ।
पूरो उतपाल करै प्रानन को खावै है ।

लज्जालुभाव है कै सूरदास तुलसीदास के अनुरूप भावन में सग महगाई जसे परम्परित आधुनिव विसयन कू गुरू कमलाकर जी न अपनी ब्रज कविता म पूरी तत्परता सै सग उतारी है। गुरुजी नें उद्धव शतक सीतक ते परम्परित गोपी की वियोग दसा को चित्रन 120 छद दन म कीनी है। गोपी अरु कृष्ण में या प्रेम प्रसग कू लैक शतक अरु पच्चीसी लिखिवे की एक लम्बी परम्परा ब्रज भाषा काव्य ससार म रही है। गुरजी नेऊ 120 छन्दन म या कथा कू या प्रेम प्रसग कू अपन मन के अँसुवान त भिजोयकै काव्य में उतारी है। गुरुजी क उद्धव शतक की एक लम्बी कथा है। या रचना ने चढे उतार चढाव देखे हैं। यान कई बर गुरजी के कठ कू आनन्द सौं आप्लावित कीनौ है। उद्धव शतक 40 या 50 बरस पैलै लिखी भई रचना है। गत चालीस बरस में ई रचना कई दफ खोइ अरू कई दफ लिखी गई है। कई प्रसग ऐस आये जब गुरुजी के सिस्य तीस बरस पैलें याये छापवे को सकल्प लक बिनक पास ते लै गये। भार भडारी गुरजी ने अपनी जि प्रेम पोथी सिस्यन कू द दीनी। सिस्यन त वू खो गई। ऐस एक नहीं कई प्रसग भये जाम गुरुजी के सिस्य बिनक चरन पकड के बैठ जाते अरु उद्धव शतक लिखिवे की कहते। गुरुजी अपनी स्मृति के आधार पै पुन उद्धव शतक लिखिवे बैठ जाते। एक दफै सुनव म आयौ क गुरुजी क थैला कू रेल मे ते चोर उठाय क ल गये अरु जि अमोल सपत्ति उन चोरन के ढिग पौंचकै नस्ट है गयी। दो बरस पलै मैंने गुरुजी ते नौत हठ कीनौ अरु बिनत प्रतिज्ञा करवाई कै वे याद करके एक छद रोज पुन उद्धव शतक लिखिगें मैं नियम त एक छद बिनते लैनौ अरू जा तरियाँ एक सौ बीस दिना म या उद्धव शतक की रचना भई। मूल रूप सौ या रचना मे 200 छन्द है। पर समय के या उतार चढाव म बडी कठिनाई त गुरुजी के कोकिल कठ ते बडी कठिनाई ते 120 छद ही निकर पाय।

गुरुजी को उद्धव शतक कारा परम्परित गोपी उद्धव प्रेम प्रसग ही नाय। यामे बिनें भाव प्रवण प्रम की अनुभूतिमय अभिव्यक्ति क सग आधुनिक जीवन के भाव बोध कौऊ समुचित स्पस कीनौ है। गुरजी के हृदय ते निकरी गोकुल के प्रेम की जि कहानी नह के अँसुवान ते भरी भई है। प्रेम के अँसुवान के उछाह की अपार आनन्द करुना के ओज म डुबाय क अद्वितीय भाव की सष्टि करै है। प्रेम की करुना के हिमालय ते बिग-लित नेह की गगा की भव्य झाकी प्रस्तुत करव कू एकई छन्द भौत है–

माधे बिन मुरके अबाध गतिबाघ मुख,
राधे राधे रटना म, ऊँची चढि जात है।
कहै कमलाकर उछाह को परस पाय,
काह म कराह म करारी बढि जात है।
गाकुल के प्रेम की, कहानी कहि आवन ना,

ऊरध उसास ह्वै, हिये तें कढि जात है।
स्याम जू को पानी भरो नैन पुतरीन माहि,

उद्धव शतक म गोपीन की तरियां कृष्ण की आंखिन मऊ अगाध असुवा भरे परे है। एक एक पक्ति म गुरुजी के हृदय के प्रेम की वेदना खुलती चली जाय है—

एहो स्याम सुदर तिहारे इन नैनन म
पीर भरयो नीर को प्रवाह चल्यो आवें क्यो।

उद्धव शतक की गोपी केवल रोवै ई नाय। बिनम कमलाकर जी ने आधुनिक युग को स्पस करते भये स्वाभिमान की विराट चेतना केऊ दसन करायँ है। जाई कारन वे दुखी हैं। व्यथित हैं। प्रेम की दीवानी हैं। पर वे अपने स्वाभिमान कू प्रेम के सामई गिरवी रखकै गिडगिडामे नाय अपितु छाती ठोककै कठोर जीवन को अभिनदन करै है। श्रम की याते बडो स्वागत ओर का है सके—

भाग्य को भरोसो धारि हिम्मत न दै है तोरि।
नाहिं घिघिये है कहू पेट भरि लैहैं हम।

छकिकै छटीकै दिन दूध जननी को पियो।
श्रम तो कठोर ते कठोर करि लैहै हम।

जोर कितनोई रहै विधन विरोधन को।
भार रूप छाती पै पहार धरि लैहैं हम।

काहू पै न जहै पराधीनता न सहैं हम।
द्वार खडी दीनता भलेई वरि लैहैं हम।

ऊद्धव शतक की गोपिका जब अपने स्वदेस प्रेम की बात करै हैं तो परम्परित काव्य की जा रचना मे अनायास ई आधुनिक राजनीति के भावबोध को समावेश है जाय है—

प्रानन ते अधिक हमारो हमै देस प्यारो।
नैंकहू तो हमकों दुलारो देसद्रोह ना।

अथवा

देस की प्रतिष्ठा को प्रभाव भरो पानी लियें।
जनम मनुष्यता निभायवे की ठानी है।

कवित्त ऐसो लगै है जैस गोपी नारी अपितु भारत के वीर जन देस क भीतर अरु सीमा पार कै सत्रुन कू ललकार रहे है—

वीरता के बम को भरोसो धरिभाखत है
गैरन को बैरन को बाट उठ जायगो।
जग म हमारी दृढ धर्मनिरपेक्षता सों
व्यापक अधमन को ठाठ उठ जायगो।
धारो नेंक धीरज धरा पै सुभ कमन सों
निश्चय दुश्मन को हाठ उठ जायगो।
नेंक जनजीवन की, आसुरी लगावतई,
ऊधो! पाव सासन को पाट उड जायगो।

गुरुजी अपने जीवन म जा तरिया सरस सरल भावनान ते भरे बाई तरिया जि रचना सरल अरु प्रबल बोधगम्य है। उद्धव कू कृष्ण द्वारा ब्रज गमन कै औसर प दियो गयो जि सदेस हमारी उपयुक्त मत को समथन करै है—

उधो पग धारत ई पहलो तिहारो काम,
नद सों जसुदा सों प्रनाम कह दीजियो।
कहै कमलाकर कृपाकर हमारो हाल,
कीरत किसोरी सों तमाम कह दीजियो।
अधिक रहेगे ना इहा पै मथुरा के माहि
और कुछ दिन को मुकाम कह दीजियो।
गोकुल की गैल ग्वालन मिलै जो कहू,
उनसों हमारी राम राम कह दीजियो।

गुरु कमलाकर जी के अथाह काव्य सागर म अवगाहन करबे ते जो थोडे से मोती हमैं मिलै वाकी कछु बानगी हमने प्रस्तुत करबे को प्रयास कीनो है भाषा अरु अभिव्यजना शिल्प की दृष्टि सों गुरुजी की कविता म माधुर्य अरु प्रसाद को मीठो अरु मजुल समाहार भयो है। जाकै पढबे ते मन प्रफुल्ल है जाय है। इनकी भाषा म पद्माकर

की मिठास के सग मे बीच बीच मे राजस्थानी सब्दन को ऐसो सटीक प्रयोग भयो है जाते गुरुजी की भाषा सौदर्य औरऊ द्विगुणित है के सहज नेह की छटा अरु ब्रज सस्कृति के ठेठ ठाठ ते अपनी एक अलग पहचान को परिचायक बन गयो है ।

नेह पगे गुरुजी ने अपनी कविता की सम्हार के नाय राखी हाथ सौं पेंसिल मिली या पैन मिलो बाते पन्ना पै भाव उमडे अरु गुरुजी ने लिख डारे ।

इनकू सजा सवार क सकलित करबो बहुत जरूरी है ।

काव्य सौरभ

किरीट

मोद भरे मुसकात गनेस सु मोदक खावति नाचति नाचति ।
भूतन बालक कातिक छै मुख सग सबै दु ख राचति राचति ।
आवत मात भगे सब बाल गजानन ऊधम भाखति-भाखति ।
रोसभरी लखि मात गनेस तजे लडुआ तब भाजति भाजति ।

खेलत खेलत थार चढ्यो लड्आन भरो झट आवत प्यारे ।
हाथन सो मुख सौं छक खावत सू ड उठाय सखा धर मारे ।
भूतन बालक रौर मची लख मात उमा सबरे पुचकारे ।
आय उमा बरज्यो गज आनन मात छुडाय भगे हँस न्यारे ।

धारण ध्यान धरे वर शकर पास गजानन खेलत दोडै ।
बाल विनोद लिये अनजान भुजगन की पुतरी हँस तोडै ।
क्रोध भरे फु कारत स्याप दिये झट सूड उठावत मोडै ।
मात उमा बरज्यो सुत कू झट रोवत स्याप दिये सब छोडै ।

ब्रज के सलौने कवि गोपालप्रसाद मुद्गल

ब्रज की रसमय सस्कृति के देदीप्यमान प्रचारक श्री गापालप्रसाद मुदगल ब्रजी के ऐसे बेजोड साहित्यकार है, जिनके बहुआयमी व्यक्तित्व मे गद्य अरु पद्य विधा की एक सग सफल साधकता पै दरसन होय हैं। इन्नैं ब्रज कविता के क्षेत्र में अपन मधुर हृदय ते निकर भावन की एक ते एक मनोरम माला गूँथी है म्हाई गद्य के क्षेत्र म एक ते एक हृदय स्पर्शी रचना प्रस्तुत करिकै ब्रजबानी के रीते कोष मे अपनी प्रतिभा के कानजयी झ डा गाडे है। ब्रजभूमि कौ सस्कारित प रपरागत मिठास मुदगल जी की गद्य पद्य की रचनान मे समान भाव ते मिल है। परिवेश की समस्यान कू मुद्गल जी की पनी दृष्टि भीतर तक पहोंच कै वाके एक-एक पक्षन कूँ खाल कैं रख द है। इन्नैं ब्रजभासा गद्य म परिवेस की घटनान पात्रन अरु समस्यान कूँ बखूबी ते उभार क मृत प्राय पड़े ब्रजभाषा गद्य म नय सोच के नय आयामन कूँ नई गमक के सग नये मुहावरेन की सटीक अभिव्यक्ति प्रदान करी है। समाज मे जड जमाये अ तस तक फैली भयी ऐसी समस्यान की तरफ इन्नै अपन ब्रज गद्य म उभारो है जाकी तरफ साधारणतय ध्यान भौत कम जाय है। मानवीय रिस्तन के हामी श्री मुदगल जीन कवि क रूप म आई अबई तानूँ कोई प्रबन्ध रचना कूँ अपनी प्रतिभा पै तरास के साधक नाय कीनी है। कवि के रूप म 'चन्द्रावली लीला' जैसी परम्परित लम्बी रचनान के अलावा इन्नै जीवन की विभिन्न समस्यान विषयक काव्य रचनान के अतिरिक्त ऋतु वर्णन, कृष्ण राधा अरु ब्रज के विभिन्न पक्षन ते सबधित रचनान कू अपनी कविता कौ ज्यादा आधार बनायौ है।

मुद्गल जी के अब तक रचे गये सिगरे साहित्य कू सामई रखिकैं विचार करैं तो ज्ञात होय है कैं इन्न ब्रज गद्य अरु पद्य म समान भाव ते एक सरस रचनान कौ सृजन कीनौ है। सन् 1947 म आजादी की पलो किरन के सग इन्नै तिरगा झडा कविता की रचना के सग अपनी काव्य यात्रा सुरु करी है। अब तक रची भयी रचनान मे समस्या पूर्तिन कौ विसाल काव्य भण्डार है, सग मे परम्परित ब्रज रस अप्लावित

काव्य की कमीऊ नायँ। इनके सग सग आज के जन जीवन की पीडान की व्यथा भरी बयान की पत पर पत भावन की बीथीऊ इनके काव्य में भरी पडी हैं। इन कवितान मे ढ़ेर सारी कविता ऐसीऊ हैं जिनको पाठ मथुरा दिल्ली अरु जयपुर आकासवानी पै करयो गयो है। समाज मे महगाई की मार नै इनके कवि कू भौतई उद्वेलित कीनो है। सुरसा के मोंह की तरियाँ बढ़नी मँहगाई के प्रति मुदगल जी के हृदय की पीडा की एक झलक हमारे उपयुक्त सक के समथन कू पर्याप्त है।

आई है कमर तोर, भारी मँहगाई आई पेट भरवे के तांई रोटी है न दार है।
हाड मास पेलत हैं, रोज हाय हाय करैं हाथ पाम फँकैं तोऊ, पावत न पार है।
फैसैं राम दूध दही घ्यौ का भाव आसमान, हर एक चीज पै चडाव ना उतार है।
सुरसा की भाँति महगाई मुख फार रही, हम पै न सही जात याकी पनी मार है।

आज के विज्ञान की भारी प्रगति नैं एक एक व्यक्ति कू क्लेक नजीक लाय दियौ है कै परस्पर के ओछरे भेद उपभेदन के बादर अनायासई छट जायौ करे हैं पर हमारे देस की रीत रिवाज ठीक याकै विपरीत चल रई है। विज्ञान के प्रभाव के कारन जहा पुरान दकियानूसी विचार स्वत ई समाप्त है जान चइयैं जाके कारन हमारे समाज की प्रगति तिराहित है ती जा रही है। जाई तरियाँ की हमारे समाज मे बढती भई दहेज की समस्या है। विज्ञान अरु मानव नान क विकास के कारन व्यक्ति-व्यक्ति म मोल-तोल की दहेज की गहित व्यवस्था समाप्त है जानो चइयैं, पर समाप्त हैवे की जगँ दहेज की प्रवति हमारे समाज म औरऊ प्रगति की तरफ बढ रही है समाज की या बुराई की तरफ मुद्गलजीने अपन काव्य हृदय म बडी गहराई ते प्रतीत कीनो है। देखो याई तरियाँ को एक कवित्त--

चारों ओर तेरौ ही, दहेज व्है सोर भयौ, जित देखौ तित भूत तेरौ ही सवार है।
फ्रीज इसकूटर सगाईं माँहि माँगत है, बीबी सोंहू पैले टी वी, पावै की बुखार हैं।
जापै नहीं खाइबे की ओढिबे बिछायबे कूँ देवे कू दहेज नाँहि, ताकी माटी ख्वार है।
औरे ओ दहेज हम, कबलौं सतावैगो तू हम प सही ना जाय तेरी पैनी मार है।

समाज की कुरीतीन कू मिटायव के तांई जैसी आग कवि के हृदय मे है तसी ही राजनीति के पचडे मे अपनी अगा सेकवे वारे राजनीतिज्ञन कू सही राह पै लाइबे के तांई कवि की मार देखिवे जोग है--

"हमनै जिताये फिर गादी पै बिठाय दिए,
सेवा कर जाईं गे तौ सोस पै चढाइगे।
अपन ही अपने जु, पेटन मल्हाते रहे,

जनता की नजरन, बेगि गिर जाइ गे ।
जोड तोड मई वहू, समै कू बिताते रहे,
एक दूसरे की टाँग, खीच जो सिहाइ गे ।
फूलदान जे सजाए, कूडेदान हारे जाय,
पाँच साल बाद फिर लौटिकै न आइ गे ।''

कवि रूप मे कवित्त सवैया जितेक सटीक बन पाए है बिनते ऊ ज्यादा बिनके गीत असरदार अरु जानदार हैं—

अब तौ सुधि लै लै सावरियाँ
भोर गई ढरि गई दुपैरी, मँझा सग परी भाँवरिया ।
भोर सुहानी की मत पूछौ, कब आई जानै कब बीती ।
भोरेपन के रस की गगरी, पतौ नही जानै कब रीती ।
ढुरक गई चुपचाप सपनसी बातन म अनमोल उमरिया ।

अब तौ सुधि लै ल साँवरिया ।
भोर गई दुपरिया आई चौक पुरे अरु धुरे नगारे ।
पर पल भर हू ठहर न पाई, मनुहारें करते हम हारे ।
आँख लगी तौ दुपहरिया नै, लगा लई झट झँझन किवरिया ।
अब तो सुधि ल लै साँवरिया ।।

सझा की अधियारी आई, हम तौ रह गए आँख पसारे ।
ज्यो ज्यों सास सिमटती आई, लगे दीखबे हमकूँ तारे ।
अब तौ साँस पुरानी पर गई, नाहि बजे तेरी बासुरिया ।।
अब तौ सुधि लै ल बाँसिरिया ।

निर्वेद के या गीत म जीवन दसन भरौ परौ है । हर एक बुढापे म यही कहतौ सुनाई पर । जीवन के तीना पन भोर दुपैरी अरु सझा के प्रतीकन के माध्यम सौं सटीक उतारे हैं । प्रतीकन क माध्यम सौं नवगीत की कछू पक्तीन म स्वतत्र भारत कौ चित्र देखो—

''जब सौं सत रगनि किरनन सौं बन महक्यौ
जब सौं इन बाहन उजियारौ आयौ है ।
तब सौं अपने पाँयन न पैंग भरे हैं
हमन थोरे दिन म यौवन पायौ है ।

श्री मुद्गल जीनै विविध छन्दन में समै-समै पै अपनी लेखनी सौं मिसरी ते मीठी रसधार बहाय कैं लोग नै सरस कवि हैवे कौ उपहार पायौ है। इनके गीत लोगन के होठन पै नाचै।

अब श्री मुद्गल जी के गद्य सृजन सौं हू परिचित करा देवौ उचित समझू। लोग कवि के रूप मेई इनकू जानै पर गद्य के क्षेत्र म कहानी, एकाकी, रेखाचित्र, रिपोर्ताज संस्मरण, डायरी, उपन्यास, साहित्यिक वार्ता आदि पै इनकी लेखनी नै युगानुरूप नए बोध कराए हैं। रेडियो रूपकन नैं तौ धूम मचा रखी है। राम राम सबन कूं' में एक व्यंग्य है जो सीख दे शिष्टाचार को। गाँव की चौपार पै जहाँ चार बैठे होय राम राम एक कू नांय होय राम राम सबन कू होय। पूछता मूरख ना कहावै' मे अपनी सेखी बखानवे वारे यारों खाने चित्त आवै, याकूं हँसी-हँसी म समझा दियौ है। याही तरियां "निन्यानवें के फेर" में धन संग्रह करवे वारे मानव की कुगत दरसाई है। "कल्ल की कल्ल देखी जायगी" रूपक में सन्तोषी सदा सुखी बतायौ है। भैंस को खन्ना' में निरक्षरता कौ खारौ खैंचौ है। "मन चंगा तौ खटौती में गंगा" मैं बाहरी आडम्बर पै चोट करी है। "दजन ऊपर दो" में परिवार कल्याण की बात कही है। "हरया म्हौर" मनोविनोद को अच्छौ अरु स्वस्थ सरूप प्रस्तुत करै है। "पौंगा पंच" मे आज के पंचन कू निस्पक्ष हैवे की कही है। याही तरिया विनके दरजनन रेडियो रूपक युग के अनुरूप दिसा दैवे वारे है।

श्री मुदगल जी के रेखा चित्रन मे हास्य व्यंग्य प्रधान अरु साहित्यिक चाचा युधिष्ठिर, गिर्राज मिश्र, कव्वू गुरु अरु भँवर स्वरूप जी भँवर है। "काजरवारो कावा" पिसन वारे मुंसीजी' "किसोरी पंडित" पन्ना चौकीदार' 'मुकन्दी" ऐसे रेखाचित्र हैं जो समाज के कोई न कोई वर्ग को प्रतिनिधित्व करै। गीता' 'बसन्ती' 'पाटूबाई' स्त्री पात्रन के औरऊ अधिक मजे भये रेखाचित्र है जिनमे समाज मे ऊपेक्षित पीड़ित नारी वर्ग को चित्रांकन कियौ है। पिनुआ अरु बब्बल' बाल स्वभाव को उद्घाटन करवे वारे हैं। 'पिनआ' मे सौतेली माँ की दुरव्यवहार ज्यों की त्यो उतार दियौ है।

हास्य व्यंग्य की वार्तान कू आप सन 1966 सौं ब्रज माधुरी दिल्ली मथुरा अरु जयपुर आकासवानीन ते प्रसारित करते रहे। राम बचावे संगीतज्ञन ते' 'अनचाहे को संग" 'बुरे फँसे फसन के चक्कर म' राम बचावे ऐसी बरात ते' 'लाटरी' 'ब्रजभाषा म हास्य को सरूप' तस्करी को माल' थाम लै चाकी ल लैं होस' 'बरसाने की लठामार होरी' आदि आपकी समसामयिक रचना हैं।

श्री मुद्गल जी की कहानीन मे साम्प्रदायिक सौहार्द की पुष्टि करवे वारी कहानी "टटा टूटो रार मिटी बहुचर्चित रही है। फूटी चूडी अमर सुहाग' मे बहुविवाह करवे

बारे युवक की धूर दच्छना करी गई है। 'और रथ लौट गयौ' ऐतिहासिक कहानी है। आजऊ पाऊआ गाव के राजा किसन के अन्याय अरु अत्याचारन कौ भड़ाफोड़ करवे वारी कहानी है।

'राम भरोसे जो रहैं पवत पै हरियाय' रिपोर्ताज म अपनी घरवारी के अरु अपन छोटा के माध्यम सौ या बात कूँ स्वाफ कियौ है कै जितेक चि ता हम अपने द्वारी छोरान की करैं बितेकई हम बिनैं सक्तिहीन बनावें। 'एक दिन की डायरी' अरु 'डायरी के पन्नान म, दैनिक जीवन माहि घटबे बारे सत्य कौ उद्घाटन कियौ है। समीक्षा करवे म श्री मुदगल जी पीछें नाय रहे 'ब्रज वसुंधरा कौ काव्य सौष्ठव" गद्य समीक्षा है ई पोथी श्री समन लाल अग्रवाल की लिखी भई काव्य कृति है याकौ नीर क्षीर विवचन कियौ गयौ है। याही तरिया कवि चम्पालाल मजुल के 'छिन-मे छिन जात" काव्य सग्रह को विवचन अबई (सन् 91) कियौ है।

राज ब्रजभाषा अकादमी नें मोनोग्राफ निकासवे की जो योजना बनाई है याम अब तक जितेक मोनोग्राफ निकसे हैं बिनमे मुद्गलजी कौ विसेस सहयोग रह्यौ है।

अखीर म श्री मुदगल जी क सिगरे साहि य कौ आकलन कियौ जात तौ ई कही जा सकै कैं ब्रजभाषा क गद्य साहित्य की अनकन विधान पै कलम चलाय कै नई पीढी कूँ माग प्रसस्त कियौ है। आपनें गद्य साहित्य म विपुल सजन करकै ई सिद्ध कर दियौ है कै आजहू ब्रजभाषा जीविन है अरु याम व्रू सामर्थ्य है जो रस की धार बहा सकै नीति कौ पथ सुझा सके, समाज कू एक बना सकै अरु देस कू जोड सकै। अन्त म दो सब्द म मुद्गल जी म अभिव्यजना सिल्प पैऊ कहनौ चाहू हू। इन्नें अपनी भाषा म ठेठ ब्रज के मुहावरे कौ प्रयाग कीनौ है। भाषा मे सूर की सी रमक, तुलसी की सी गमक, बिहारी की सी चमक अर भरतपुर अंचर क प्रसिद्ध कवि सोमनाथ की सी रमक क सग-सग ब्रजवासीन क जीवन की सिगरी ठुमक विसेस रूप सो दसनीय है।

ब्रज के मधुर चितेरे श्री मोहनलाल मधुकर

श्री मोहनलाल मधुकर के बहुयामी व्यक्तित्व पै लिखबौ भौतई कठिन है। विनम्रता अरु सादगी कूँ विद्वता के सग देखनो होय तो जाकों मोहनलाल मधुकर के व्यक्तित्व ते ज्यादा अन्य कोई दूसरा व्यक्ति नाँय है सकै। मोटी खादी की धोती ऐसोई कुरता अरू जाडेन मे एक जवाहर जाकेट या सादगी कै रूप कै सग हमेसा परदा कै पीछे रहकै साहित्यकारन कूँ आगे बढोयबे के नाम कूँ मोहन मधुकर कह सकै है। भैया मधुकर जो सघस की ऐसी जीती जागती मिसाल है जिनै ब्रज के निमग देहाती गाम म जनम लैकै विस्वविद्यालय की नियमित पढाई की ऊची ते ऊची डिगरी प्राप्त कीनी है। अरू हिदी साहित्य समिति भरतपुर के मच ते एक ते एक नई साहित्य प्रतिभा कू हीरा की कनी की तरिया घिस घिस कै या यो कहै कै साहित्यकारन के सोने कू अपनी प्रेरना की आच पै तपायकै कुदन बनायो है। साहित्य लेखन मच पै ते कविता गायबौ अरू इकठौरे भौतेरे मनीसीन कै बीच अपने व्यक्त बिचारन के ताने वाने बुनवे नई सभावना स्थापित करनो कठिन नाय जितेक कठिन नए नए साहित्यकारन को गढ़नो है। भैया मोहन लाल मधुकर ने अपने पचपन बरस के जीवन मे ते लगभग तीस बरस प्रजापति की तरिया साहित्य निर्माण मे गुजारो है। जा तरिया प्रजापति अपने चाक पै साधारन मट्टी कू हाथन की कला ते नये नय सुदर रूपन मे परिवर्तित कर दै है, वाई तरिया मोहन भया ने अपने साहित्यिक व्यक्तित्व ते एक ते एक छिपी प्रतिभान कू उजागर करबे को अपने जीवन म उल्लेखनीय काम कीनो है। इनने नै प्रजापति व्यक्ति ते हटक जब मोहन भैया के साहित्य कौऊ जब विचार करै है तो स्पष्ट परिलक्षित होय है कै इनै ऐसो कोई विसै नाय छोडो ज्याप अपनी कलम नाय चलाई होय। सम्पादन कला क मोहन लाल जो जितेक कुसल कारीगर है, वितेक या कला के प्रतिभा के धनी व्यक्ति ढूढ़बौ भौतई कठिन है। भरतपुर हिदी साहित्य समिति के ढं-चार पाच अकन के रूप मे निखरवे वारी समिति वाणी म इनके सम्पादन कला कौसल को दरसन कियो जा सक है। लेखन कू काट छाट के कोयला ते हीरा बनायबे की कला कै जितेक ये महारथी अरु पारखी हैं वितेक दूसरो मिलनो असभव नाय तो कठिन जरुर है। ब्रजभाषा के गद्य मे इनकी गति देखबे लायक है। इनै ब्रज को गद्यऊ लिखो है जैस कविता कै सोन के

डोरा म एक कै पीछे एक सुडौल भावन के मोती पीरो दीये हाय। सब्द योजना अरु वाक्यन म व्रज कला संस्कृति की मधुरता अरु रसिकता ऐसे कोमल रूप ते इनक हृदय ते मुखरित होय है कै जाकि जितक प्रसंसा करी जाय वितेक थोरी है राजस्थान की व्रज संस्कृति कू व्रज की भाषा म प्रकट करनो कैसो रोचक होय है याय देखनो है तो मोहन भैया के व्रज गद्य ते दूसरो स्थान मिलवो कठिन नाय तो दुष्कर अवस्य है।

तरह अगस्त 1936 कू भरतपुर के पास स्थित छोटे से गाम धौरमुई म एक ऐसे बालक ने जनम लियो है जाने विपरीत परिस्थितीन म रहते भय व्रज साहित्य कला अरु संस्कृति के प्रचार प्रसार मे अपनी कलम कोई सहारो नाय लीनो अपितु अपने विनम्र सुभाव ते भीतरे नवांकुर साहित्यकारन कू आरोपित करकें एसे फलदार वक्ष के रूप म परणित कीनो है' जाकि मधुर साहित्यिक छैया म भीतेरे दु खी पीडित लोगन नैं आसय ग्रहन कर अपनी तपन बुझाई है। कलम की ताकत ते साहित्य की रचना म जुटे भय भीतरे साधप सील साहित्यकार मिल जांमिग पर ऐसे लागन की कमी हमेसा रही है जा कलम के धनी के साग साग दूसरे साहित्यकार कूं अपनी जगं ते हटक स्थान देवे म गौरव की अनुभव करो करै है। भैया मोहन लाल मधुकर को गत चार दसकन को व्यक्तित्व जे प्रमाणित करवे कूं पर्याप्त है कै विनैं सदैव दूसरे कूं आगे चढायवे म आनन्द अरु गौरव को अनुभव कीनो है। चाए साहित्य गोष्ठी होय, चाए हिन्दी साहित्य समिति को मच होय, अरु चाए अपने स्कूल की कक्षा या प्रागन मे काऊ तरिया की प्रतियोगिता है रही होय। हमारे मोहन भैया कू नैंक मालूम परनी चइये कै अमुक बालक या व्यक्ति म अमुक तरिया की प्रतिभा छिपी पडी है, वे वाके पीछें ऐसे पड जाइगे जैसे कोई व्रज को धीरोद्दात रसिक रसिया नई नवेली मुग्धा नायिका की चिरोरी कर रह्यो होय।

मैं दूसरे की तो का उदाहरन दऊँ। मैं या सन्दभ म आप बीती सुनायवे की हक तो रखूँई हू। स्यात 1963 –64 की बात है। विन दिनान म पाक्षिक रूप ते श्री हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर म साहित्यक गोष्ठी होमती ही। या गोष्ठी म साहित्यिक विसै पैले दीनो जातो अरु विद्वान लोग नियत समै पैं इकठोरे हैक नियत विस पै अपने विचार प्रकट करो करते। श्री लाला जो एक कौने म बैठक बडे सुदर सब्दन म मनी पीन के मुख ते निकरे सब्दन कूं लिखत जाते हे अरु य सिगरी सामग्री हिन्दी साहित्य समिति य त्रमासिक पत्रिका समिति वाणी म प्रकासित होती ही मैं विन दिनान मे डा रामानन्द तिवारी जी के पास रहतो हो। मोहन भया डा तिवारी जी के सिस्य हे अर वे नियमित रूप सों विनके पास आयो करत हे। एक दिना तिवारी जी ते मोहन भैया की चर्चा है रही। पागई मैं बटो। विनकी चर्चा त ई मालूम पडी की पन्द्रह दिना पाछ हिन्दी साहित्य समिति म 'मीरा की भक्ति भावना' मीसक प साहित्यिक गोष्ठी है

रही है। मैं बालकचित्त परिहास म मोहन भैया ते ई पूछ लीनी 'का हमऊ बाम बोल सके।' मोहन भैया भोतई प्रसन्न भये अरु बिन्नैं कही, जरूर बोला।' बात आई गई है गई। तीन दिना पाछै श्री हिन्दी साहित्य समिति कौ चपरासी मेरे घर पौचौं अरु एक चिट्ठी दे आयो बाम आगामी हि दी साहित्य समिति की विचार गोष्ठी मे भाग लेवे कौ निवेदन हो अरु नीचे समिति वाणी के सम्पादक के रूप म मोहन भैया के हस्ताक्षर ह। मैंन बा चिठठी पै काई खास ध्यान नाय दियो। एक दो दिना पाछ मैं साईकिल तें साग सब्जी लैकें जा रह्यो अरु सामई मोहन भैया मिल गये। बिन्ने छूटते ई कही 'क अमुक तारीख कूँ मीरा की भक्ति भावना पै साहित्यिक गाष्ठी है रही है। वामें तुमकू जरूर बोलनौ है।' मैं मोहन भैया के सब्दन कूँ सुनक घबराय गयो मैंन कही—'मोहन भैया—मैं का जानू मीरा की भक्ति भावना कू' गोष्ठी मे बोलब की मेरी बस की नाय। मैं नई आऊँगो।' मोहन भया नै मोकू भौत समझायो। दूसरे दिना देखौ तो मोहन भया घर मे बैठे हे अरु फिर वूई बात कै तुम्हें गोष्ठी मे भाग लनों ई है। डा तिवारी जी के घर गयो तो म्हा मोहन भैया बैठे अरु बेर बेर ऐकई बात कै तुम्ह गोष्ठी म भाग लेनौ है। मेरी तो जान आफन मे आ गई। जित जाऊँ तित ई मोहन भया। बचवे की कोई सहारौ नाओ। मैंन ई बात डा रामानन्द तिवारी ते कही कै गुरुदेव गोष्ठी मे बोलबे की मरी बमकीनांय' डा तिवारी मुस्कराये अरु कही 'जब मोहन लाल जी कह रहे हैं तो तुम्हें जरूर भाग लैनो चइये।' हारके कालेज के पुस्तकालय ते मीरा की भक्ति भावना प किताब लायो कई दिना पढी। गोल मोल की बगीची पै सजा कू नित्य गयो अर एकात मे ठाडे है के बोलव को अभ्यास कीनो। नियत तारीख कूँ डरपतो डरपतो गोष्ठी मे बठे विद्वानन कै पीछे जायके चुपचाप बैठ गयौ। गोष्ठी के सचालक हे स्वय मोहन भैया। पेलो नम्वर बोलवे को डा हरदत्त सुधांशु को। दूसरे नबर पै कालेज के प्रोफेसर बनबारीलाल जी बोले। तीसरे नम्बर पै मोहन भया ने मेरो नाम पुकारो। मोहन भैया के वा दिना के एक-एक सब्द मोय आज तानू याद है। वे बोले—अब आपके सामई मीरा की भक्ति भावना पै विचार प्रकट करवे कू महारानी श्री जया कालेज को एक होनहार छात्र आ रह्यौ है। साहित्य के प्रति इनको अनुराग डा रामानन्द तिवारी जी के सिस्यत्व म धीरे-धीरे पल्लवित है रह्यो है। भविष्य मे हमकू इनते भौत आसा है।' मोहन भैया कौ एक-एक सबद ऐसो लग रह्यौ जैस मरे मानस कपाट के एक एक दरवज्जे कू खोल रह्यो होय मैं ठाडा है कै बोलवे लगौ। मोय पतौ नाय चलौ। दस मिनट तक बोलतो रह्यौ ? सब दत्त चित्त है कै सुन रहे। आज मैं हि दी साहित्य समिति की या घटना कूँ याद करूँ हू तो मेरे सरीर म बिजुरी सी कौध जाय चौंक मोहन भैया नै पतो नई सब्दन को बा सगी का ऐसो जादू कर दीनो हो जाते मैं बोलवे लग गयो। मेरे मन को तथाकथित साहित्य अनुरागी रूप मोहन भया ने अपनीचुम्बकीय शक्ति सो एक सग प्रकट कर दीनो फिर आगे गोष्ठी हुई। मैं सिगरी गोष्ठीन मे बढ चढकै भाग लेतो रह्यौ। साहित्यिक गोष्ठीन की सिगरी सामग्री दो चार अक के रूप मे निकरबे बारी श्री हिन्दी साहित्य समिति की मुख

पत्रिका समिति वाणी' म प्रकासित भयी है ।

या सत्य कूँ लिखवे म मोय नैंकऊ सकोच नाय क मोहन भया एम पारस पत्थर
की तरियाँ हे जा हर लोहे कूँ सोनो बनावे म विस्वास कर हैं । मोहन भैया की गुरु
भक्ति की का कहनो । अपने गुरु डा रामानन्द तिवारी के प्रति बिनकी अनन्य भक्ति एक
ऐसो उदाहरन है जो आज क भौतिकतावादी ससार म अत्यधिक दुलभ है । डा रामानद
तिवारी जी के भौतेरे सिस्य रहे है । पर डा तिवारी जी कू माहन भया क प्रति जितेक
विस्वास हो बितेक अन्य सिस्यन के प्रति नाय रह्यो । कई दफै डा तिवारी जी पै भौतेरी
पारिवारिक कठिनाई आई बिनके पुत्रन कू इम्तहान आदि देय बाहर जानो परो आई
ए एस अरु आई पी एस के सन्दभ म जब बिनकूँ बाहर जाव की आवस्यकता प्रतीत भई
तो डा तिवारी जी के सग म भैया मोहन लाल मधुकर जी कूँ भजो ।

माहन भैया म एक एसो सहज सनेह है जाम जुडाव है टूटन नाँय । बिनक
कई दफै मत भेद ऊ भय पर बि नै अपने विराधीन के प्रति सालीनता नाँय छाडी । श्री
हिन्दी साहित्य समिति के मच ते बिनके लोगन ते मतभेद भय । पर मोय एक ऊ
दिना या एकऊ क्षण याद नाय जब बिन मतभेद के कारन रात दिना उठते बठते अपने
सगी साथिन की बुराई करी होय । मोहन भैया भरतपुर की ऐसी प्रतिभा है जिन गत
30 बरस त या सहर की हर साहित्यिक गति विधीन म प्रत्यक्ष या पराक्ष रूप ते
निविकार भाव ते सहयोग दीनो है । गत तीस बरस ते भरतपुर की स्यात ई कोई रचना-
त्मक गति विधी होय जाम मोहन भया की काऊ न काऊ रूप म उपस्थिति नई रही
होय ।

अपने सो छाटे को सम्मान बाकी कठिनाई कूँ दूर करवो मोहन भैया की हौबी
रही है । मै महाकवि सोमनाथ पै पी एच डी कर रह्यो हो । सोमनाथ क ग्रन्थन की
पाडुलिपि हिन्दी साहित्य समिति म ही । बिन दिना हिन्दी साहित्य समिति के मोहन भया
साहित्यिक मत्री हे मरे पास इतक समै ना हो के हिन्दी साहित्य समिति म बैठके बिन
पाडुलिपिन नें पढ सकतो । मैंन अपनी व्यथा मोहन भैया त बताई चौक हिन्दी साहित्य
समिति त दुलभ पाडुलिपिन कूँ घर ले जाबे की मनाई ही । मोहन भैया ने बाको सहज
इलाज कर दीनो । बिन्ने अपनो एक छात्र भौत थोडे दामन पे चार घण्टा रोज कूँ हिन्दी
साहित्य समिति म बैठार दीनो जाने एक महिना तानूँ नियमित सोमनाथ की पाडुलिपिन
की नकल कीनी । एक महीना पाछे फुल स्केप के 1500 पना भैया मधुकर जी जयपुर
आयक दै गये । या सत्य कू लिखबे म मोय नैंकऊ सकोच नाय क अगर मोहन भैया
महाकवि सोमनाथ की पाडुलिपिन ने उतरवाय के नाय भेजते तो स्यात मैं पी एच डी
नाय कर पातो । मगी ई का मोहन भैया ने तो हर साहित्यिक अनुष्ठान मे आगे आयक

सदैव सहयोग दीनों है । 1970 के आसपास जब नागरी प्रचारनी सभा सों सुधाकर पाडे सोमनाथ ग्रन्थावली को प्रकाशन कर रहे या समै प्रचारणी सभा के कई कर्मचारीन नें मोहन भैया के प्रयासन ते सोमनाथ की पोथिन को नकल करवाई ही । मोय या विसै मे पतो नाँय कै सुधाकर पाडे ने मोहन भैया के या प्रयास की सामनाथ ग्रन्थावली म स्वीकारोक्ति करी या नाय । ई सत्य है के मोहन भैया आगे बढकें हिन्दी साहित्य समिति में नकल करवायवे की पहल नाई करते तो नागरी प्रचारणी सभा ते सोमनाथ ग्रन्थावली प्रकासित नई होती ।

मोहन भैया के विसै मे श्री हिन्दी साहित्य समिति की पत्रिका समिति वाणी' को उल्लेख किये विना विनके साहित्यिक कृतित्व की बात अधूरी रहेगी । 62-63 मे मोहन भैया के प्रयासन ते हिन्दी साहित्य समिति ने 'समिति वाणी' नाम ते समिति की त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका निकासी । स्यात पत्रिका के 4–5 अक ई निकरे पर ये सिगर अक अपन आप मे बेजोड है । मोय जि लिखवे मे नकऊ सकोच नाय कि या समै निकरवे वारी श्री हिन्दी साहित्य समिति की पत्रिका समिति वाणी अब तानू निकरवे वारी सिगरे भारत की कछु पत्रिकान मते एक है जामे प्रूफ की एकऊ गलती नाय । मोहन भैया ने घर-घर जायके समिति वाणी के अकन कूँ सामग्री जुटाई ही । मोहन भैया नें समिति वाणी के सजायवे सँवारवे, एक ते एक सुन्दर महत्त्वपून आलेख जुटायवे म जो समर्पित भाव ते प्रयास कीनों हो बू भरतपुर की साहित्यिक प्रगति की ऐसी मूल्यवान साहित्यिक धरोहर है जो अब तानूँ मौनभाव ते वा समै क लोगन के कठन मे अव्यक्त भाव ते दबी पडी है । डा रामानन्द तिवारी प्रो गुरुदत्त सोलकी के पास वे या पत्रिका के साहित्यिक रूप की घण्टान तानूँ चर्चा करत हे । एक एक लेख की पाण्डुलिपि म चार चार घण्टान तानू विचार विमर्श होमतो । लेख की आत्मा जीवित रखते भये हीरा की तरिया वाकूँ नये नये विचारन की सान पै तरासो जातो । तब जायके महीनान के परिस्रम के पाछे समिति वाणी क एक अक की सामग्री तैयार होती । स्यात नेशनल प्रेस भरतपुर मे समिति वाणी छपती ही । ट्रेडिल मशीन पै एक सग चार पन्ना छपते । ट्रेडिल मशीन जब छपाई करे है तो एक दो अक्षर टूटवो सामान्य प्रक्रिया होय है । मोहन भैया अरु नशनल प्रेस के प्रबधक हर पचास पन्ना पै मशीन रुकवायवे के एक एक अक्षर पढते । अगर नैकऊ मात्रा आदि टूटती तो तत्काल वाय बदलो जातो । प्रूफ पढवे ते लक मशीन की छपाई देखवे के पाछे मोहन भैया के मन म एकई बात ही की समिति वाणी की सामग्री कूँ जा तपस्या ते सजायो सवारो गयो है वाई साधना ते वाकी छपाई की जानी चइये, जामे एकऊ गलती नई होय । साँच तो जि है के मोहन भैया के मन म एकई धुन ही कै श्री हिन्दी साहित्य समिति की मुख पत्रिका 'समिति वाणी' देस की हिन्दी की सवश्रेष्ठ साहित्यिक पत्रिका होय । मोहन भैया की धुन नें सिद्ध कर दीनी कै समिति वाणी तीन अकन के प्रकासन मेंई देस की श्रेष्ठ हिन्दी की साहित्यिक पत्रिका बन गई ।

पर दुर्भाग्यई कह्यो जायगो क श्री हिन्दी साहित्य समिति के भाग मे देस की सवश्रेष्ठ पत्रिका प्रकाशित करबे को सत्य भाग मे नाँय लिख्यो हो। श्री हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर के तत्कालीन कायकारिणी के सदस्य मोहन भैया के अनुपम अनमोल परिश्रम अरु एक साहित्यिक पत्रिका को मूल्य नई समझ पाये। अरु अथ के नाम पै पत्रिका के प्रकाशन पै प्रश्न लगाय दियो गयो। पत्रिका बद है गई। अगर ई पत्रिका बराबर निरसतो रहतो अरु समिति कायकारिणी के सदस्य अर्थ के भावी भय ते या पत्रिका कू बद नई करते तो निश्चितई भरतपुर की धरती कू एक नयो महावीर प्रसाद द्विवेदी प्रदान करबे को सौभाग्य मिलतो एव हिन्दी साहित्य के विकास मे भरतपुर को नाम सोने के अक्षर मे लिखो जातो।

मोहन भैया को एक रूप और रह्यो है पत्रकार के रूप मे एक पत्रकार के रूप मे मोहन भैया ने जो मानक स्थापित कीने है बाकी प्रससा करकै बाके वैभव कू घटानो होयगो। बात 1977 की है। मैं विन दिनान मे मास्टर आदित्येन्द्र जी के नगर विधान सभा म चुनाव प्रचार मे काम कर रह्यो हो। चुनाव के दिना मने अपनो कायक्षेत्र जिद करबे वा गाम मे राख्यो हो जहाँ हर चुनाव म गोली चलबो एक सामान्य बात हो। चुनाव चल रह्यो हो। बदूक धारी यदा कदा इत वित कूँ निकस रहे हे। मै अपने बीस पच्चीस कायकर्तान के सग बडी तरकीब ते काम कर रह्यो हो। इतेक मई देखो क एक जीप आय क रुकी अरु बामे मोहन भैया निकसे। मैंने मोहन भैया ते पूछी 'मोहन भैया आप या इलाके म चौं आय। ह्याँ तो जान को खतरा है।' मोहन भैया बोले 'हम याई कारन तो ह्या आये है।' मैं मोहन भैया के पत्रकार रुप की हिम्मत देखक चकित रह गयो। दूसरे दिना मोहन भैया न सही रिपोटिंग अखबार म दीनी। मोहन भैया के स्नेही जान है कि मोहन भैया ने जन कल्याण के समाचार भेजबे म जीवन मे कितेक जोखिम उठाये है। पुलिस की अकर्मण्यता के कई समाचार जब विनै निर्भीक है कै भेजे तो कई पुलिसकर्मी विनते खफा है गये। वाको खामयाजो मोहन भैया कू भुगतनो पर। पर। व चुप नई। जन मगल के समाचार देब म मोहन भैया न काऊ की परवा नाय करी अरु नई विन पत्रिकान को सहारो लैकै अधिकारीन कू दबायक अपनो कबी उल्लू सीधो कीनो।

विनम्रता इन महात्म्य म इतेक है कै कई दफे इनके सगी साथी माथो धुनते रह जाये हैं। मोय ऐस एक नई भौतेर औसर याद है जब इन्ने विनम्रतावस प्रचार प्रसार या सावजनिक प्रसगन कूँ हठ पूवक अपन पास नई आन दियो। कई दफे एसो भयो है जब अपार भीड़ काऊ समारोह म बठी है अरु मोहन भैया को नाम बोलब कू पुकारो गयो अरु ये महाशय होले ते सयोजक ते अनुनय विनय कर रय है—'नाय साब मैं या विषय पै का कह सकूँ'। इनके याई सहज सरल ब्योहार पै भरतपुर के भूतपूव नरेस

ब्रजेन्द्रसिंह इतेक रीझे के सालन तानूं विनको जि नियम रह्यो के चौबीस घण्टा मे एक दफै वे इनते एक समें या टेलीफोन पै बात नई कर लेते तब तानूं चैन नई परती। रात के बारह बजे महाराज कूं याद आमती के आज मोहन भैया ते बात नाय भई। बस फोन बज उठतौ अरु महाराज घण्टान तानूं इनते बात करकें बतरस कौ सुख लेते। अनेक दफै ये जब नई मिलते तो लम्बे लम्बे फोनोग्राम महाराज के सकारे-स्याम दुपेरी डाँकिया एक के पाछे एक लैके दौरते आमते इनके घर पै।

सादा जीवन उच्च विचार बेहद विनम्रता, स्वाभिमान की प्रबल आस्था अरू छोटे कूं आगे बडायके आनन्द कौ अनुभव करबौ कछु एसी कौलिक विसेसता हे जाके सम्मेलन कौ नाम है श्री मोहनलाल मधुकर। मोहन भैया को मधुकर नामऊँ समिति वाणी ने दीनों है। समिति वाणी के पहले अंक मे नाम छपौ हो मोहन लाल घोरमुई। डा तिवारी ने सुझाव दीनो कै घोरमुई की जगँ मधुकर हातो चइये। समिति के दूसरे अंक म मोहलाल जी कौ नाम मधुकर छपौ। बाके बाद मोहन जी कौ नाम ऐसौ चमक्यौ स्यात भरतपुर मे कोई ऐसो नाय जो मधुकर जी कूं नाय जानतौ होय। साँचई इनें गुनन कौ भारी मकरंद इक्ठौरौ करक अपनो मधुकर नाम सार्थक करौ है।

काव्य सौरभ

श्रीकृष्ण—

ब्रजराज ललाम सुधारस की छवि ज्यों ममता महकै उजियारी।
जननी करुना रस सी सरसै मधुरी सत चदन सी किलकारी।
भानु भयो ससि सोम मनो सरसाय उठी धरती जग न्यारी।
रतनाकर सौं करुनाकर है घनस्याम मनोहर मंगलकारी।

ब्रजभाषा गद्य पद्य के बेजोड रचनाकार

डा रामकृष्ण शर्मा

डा रामकृष्ण शर्मा ने काव्य अरु गद्य विधा मे ब्रजभासा में विपुल साहित्य सृजन कीनो है 25 अक्टूबर 1936 कू पिता प प्रसादी लाल शर्मा के घर ग्राम सुहारी तहसील वैर जिला भरतपुर म इनको जनम भयो। डा शर्मा ब्रज के ऐसे प्रतिभाशाली साहित्यकार है जिनें कक्षा प्रथम सो एम ए तानू की परीक्षा प्रथम स्रेनी मे पास करी है। बिनें बालपने मे गाम के कच्चे पक्के मकान सलौनी मधुर धुनि करती मथनी, दोहनी गैया उछल कूद करत धेनु-छौना सजा के भनूके म आसमान म उडती गोधूरि, लहलाते खेत खलिहान टिमटिमाते सिरसो के तेल के दीये, सुख म सुखी अरु दुख म संग संग रोमने ब्रज के गामवासीन कू अपनी आखिन ते देखो है। बिनके यथार्थ कू छवि के पीयो है डा शर्मा ने अपने बालपने मे जाई कारण ब्रज ग्रामीन जीवन की सरलता निश्छलता अरु अलाग मिठास की सुगन्ध को स्पष्ट डा रामकृष्ण की धमनीन म इतेक गहराई ते पठौ भयो है क बिनके साहित्य मे ब्रज अंचर की ये सिगरी विशसता अनायासई सहज भाव ते आय गई है। अस्तु रामकृष्ण को साहित्यकार सहज भाषा, म सहज भाव कू सहज शली म प्रकट करे है। कहू तौ बनावटीपन को उजाल या प्रयास जन्य विवशता नाय दीख बिनके साहित्य सृजन मे। या यो कहैं डा रामकृष्ण अपने बालपने मे जा जीवन कू देखो अरु भोगो है वुई बिनके सृजन को सौरभ है। डा शर्मा ने या सत्य कू स्वय स्वीकार करत भय लिखो है—'लोक गीत, नर नारिन के हास परिहास बाल गोपालन के खेलकूद य सबई मनुआ मे पुलकन, सिहरन अरु तरग सी उठायौ करते।'

जेई कारन है के डा शर्मा को विशाल ब्रज भाषा सृजन परिमाण अरु परिणाम दान दृष्टि सो काऊ तरिया उन्नीस नाय है बिनके साहित्यकार की सत्य की परख भौतई पैनी अरु सटीक जाई ते बन परी है के बिनें असली भारत के जीवन मे रहके निरमान के गुरन को स्पष्ट कीनो है। जो कहना है जा लिखनो है यू साँची साँची भाषा मे साँचे-

साँचे विचारन के संग बेलाग भाषा में कह देनो है । साहित्य सृजन अरु इनके व्यक्तित्व में कहू तो विरोधाभास नाय दीखे नाई अभिव्यक्ति अरु अनुभूति के बीच काऊ तरिया के स्पीड ब्रेकर लगे भये हैं । जो देखो है वाको बेलाग सीधे सब्दन में कहनो डा शर्मा के नैसर्गिक ग्रामीण जीवन के संग पानी में नौन की तरिया घुरे व्यक्तित्व को परिनाम है ।

भारतीय संस्कृति के समर्पित आस्थावान गायक डा शर्मा जीने अपने ब्रज काव्य सौरभ में सम्प्रति राष्ट्र के निर्मान अरु प्रगति में बाधक समस्यान की साचो साँची अभिव्यक्ति अरु करनीय समाधान के काव्य के रमणीक मंच ते प्रकट करिबे में काऊ तरिया की कोर कसर नाय छोडी है । सदीन की दद भरी गुलामी ते संत्रस्त भारतभूमि की पावनता, मानवोचित संस्कार अरु नेहिल भावन कू आजादी के पश्चात धीरे धीरे जजरित हैते देखके देश की माटी में रची पची एक साहित्यवानी में जो पीडा जनित आक्रोश के दद की महनीय अभिव्यक्ति होनी चइये बू सब कछु भैया डा रामकृष्ण के काव्य सृजन को गौरवशाली अध्याय है । अपनी धरती की सौंधी सौंधी लावण्यमयी सुगन्ध अरु अपनी संस्कृति की विराट सात्विक चेतना इनके ब्रज साहित्य को मूल त मेरुदण्ड रही हैं । आज की परिस्थितीन में विग्यान के तीव्र गति ते बढते प्रखर अनुभव के कारन व्यक्ति के मानस पटल ते दिन प्रतिदिन सिमट के संकुचित होती भयी राष्ट्रीयता में, आपाधापी, व्यक्तिवाद जातिवाद अरु पाश्चात अन्धानुकरण ते भ्रमित आज की तथाकथित सभ्यता की बनावटी चकाचौंध में, व्यक्ति के मानस ते गिरते भये नतिक स्तर में, अन्धविश्वास रूढिवादिता की समाज में छायी अमरबेल के पाखण्ड में, सामाजिक कुरीतीन के छद्म में बढत भय संस्कार हीन जीवन में, परस्पर द्वेष, रिश्वत भ्रष्टाचार के बढते भये गरल में ऊँच नीचकी विषमता की व्यथा में पिसती भयी मानवता के भावन में भारतीय संस्कृति के अमर गायक डा रामकृष्ण शर्मा ने ऐसे पुष्कल ब्रज साहित्य को सृजन कीनौ है जो शोषित की करूनामयी भाषा के तेजस्वी शब्द हैं जो नई पीढी की विराट शक्ति की पावन चेतना हैं जो नारी की कल्याणी सृजन शक्ति की ममतामयी आराधना को दुलारो प्रोत्साहन है, जो निष्क्रिय में निर्मान की ऊर्जा की ऐसी श्रद्धा है जाको बीजारोपण भारतीय संस्कृति की भूमि पै भारतीय परिवेश में, भारतीयता के सटीक मंगल के आलोक में कीनौ गयो है ।

ब्रजधरा की नेह सिंचित तपोभूमि की साधना में नयनाभिराम सप्तरंगी प्रवाग सो जगमगाते यमुना की लहरी पादपलता वन्य प्रान्त, ब्रज ग्राम्य जीवन को निश्छल भोरोपन, वियोग के आनन्द की करुना में आकठ डूब ब्रज प्रान्त की अकथ वदनीय कथा, अत्याचार, अनाचार अरु उत्पीडन में सहज तेजस्वी गिरि गौरव गिरिराज को अटल विस्वास जसे ब्रज के सांस्कृतिक चिर परिचित आयाम डा रामकृष्ण शर्मा के ब्रज काव्य

की अटल थाती रही है। भक्ति की सहज सुवास परोक्ष रूप सों इनके सिगरे ब्रजकाव्य में भीतर तानूं बिखरी भई है। इनकी काव्य सृजन की चेतना को मूल उत्स भक्ति के प्रकाश पुंज तेई चेतना की सुगंध ग्रहन करे है। ब्रज संस्कृति भावलोक की संस्कृति है। भावलोक की या संस्कृति के सुरन तेई इनकी कविता के सप्तरंगी रंगन ने भक्ति के धवल प्रकाश की एकरसता ग्रहन कीनी है या सत्य कूं स्वयं डा. रामकृष्ण ने सहज रूप ते यों स्वीकारो है—'ब्रज को अनुराग तो सदा तेई मेरे सिरजन को मूल सुर रह्यौ है। 'ब्रज' नाम के उच्चारन सोंई मेरे रोम रोम मोहि पुलकन सी है जाये। जाने कहा जादू है या नाम माहिं मैंने तो सुपने मेऊ नाय सोची अरु न सोचि सकूं कै ब्रज मण्डल सों दूरि कबहूं मेरो जनम होय।' ब्रज संस्कृति ते बिनके कवि को कितेक तादात्म्य है या यों कहें कि साहित्य चेतना की आस्था ब्रज के विराट के प्रति कितेक मम रस है याय औरऊ खुलासा करें है डा. शर्मा अपने इन सब्दन में बडेई आनन्दित है के ह्यां तानूं बिनती करूं हूं के हे विधना। नर, पसु, पंछी पेड़, पौधा कंकर पाथर कछूई बनइयो पर रचियो ब्रज की रज पेई।' अष्टछाप के कविऊ याई तरियां ते रे विधना तोतें अचरा पसार मांगूं कहके ब्रज ते याई तरियां एकरस है के एकाकार है गये हैं। गोया ब्रज कोरो प्रदेस नाय ब्रज एक संस्कृति है जाने भारत की राजनैतिक पराजय कूं अनुराग, ममता अरु करुना की सृजनात्मक मानवीय पीयूस संस्कृति ते खिल खिलाती मोहनी विजय में परिवर्तित करके राष्ट्र की अस्मिता की रक्षा कीन्ही है। अष्टछाप के कविन की 'रे विधना' अरु डा. रामकृष्ण की 'जीवन पायो करु में ब्रज की याई जीवंत वा संस्कृति की समर्पित सृजनात्मक चेतना है जाने राष्ट्र की घनघोर निराशा कूं आसा में अरु राजनैतिक पराजय कूं सांस्कृतिक विजय में परिवर्तित कीन्हीं है एवं शक्ति के दंभ में चूर विदेशी दुर्दांत शक्ति कूं 'आवत जात पन्हैया टूटी बिसर गयो हरि नाम' कह के पूर पुसरित करके बौना बनाय दीनो है। हमारो कहवे को मतलब जि है के- रे विधना, अरु ब्रजभूमि पै जीवन पायो करु' एवं 'बिसर गयो हरिनाम में ब्रज की एकई विराट चेतना है एकई भाव है, एकई सुर है, स्वाभिमान की एकई अलौकिक विराट की तेज है। व्याख्या अरु कथन के स्थल की अंतर है सके है। पर भावन के सृजन के स्तर पे तत्व की ऊर्जा को मूल स्रोत तो ब्रज संस्कृति के वा भास्कर में निहित है जाने मध्य काल में देवालय के विग्रह के नाम पै अलख जगाई ही अरु आज डा. रामकृष्ण जीर्ण अपने सीमित साधन अरु बदलते परिवेस में भारत गाथा' 'भारत सतसई' के नाम ते याई आलोक कूं जन जन तक पहौंचायबे को गौरवशाली प्रयास कीन्हों है। ब्रज को अनुराग डा. रामकृष्ण के ब्रजकाव्य की चेतना को अनुराग बनके ब्रजवासी की बनस्थली में एक ते एक सुंदर भाव सुमनन को पोषक रह्यो है। ब्रज को जि अनुराग बिनके हृदय को अनुराग बनके स्वयं बिनकी भाषा में या तरियां व्याख्यायित भयो है—'ब्रज ब्रजराज राजेस्वर किसन कन्हैया अरु बिनकी प्रान प्यारी राजराजेस्वरी राधारानी के नामोच्चारन के संग बिनकी प्यारी जमुना तट जीवन सों प्यारी मथुरा नगरी त्रिलोक धन्यधाम

गोकुल, मनुआ मे आनन्द को इमरत घोरिबे वारी बिन्दावन नगरी, दाऊ जी ये सबई सावर है के अन्तर चकछुन सों पल छिन हू दूर नाय होय ।'

डा रामकृष्ण शर्मा ऐसे ब्रजकाव्य के मजुल कवि हैं जिन्न जात पाँत धरम के भेद भाव कू भूल के सदभाव की चेतना की आराधना कीन्ही है, जिन्नें बलिदान की वेदी पै अपने प्रानन कू हसते हँसते त्यागबे वारे आजादी के दीवानेन के मगल गीत गाये है । डा शर्मा ने 337 छन्दन मे 'भारत गाथा' काव्य ग्रन्थ की रचना करके ब्रजभाषा कू आधुनिक जन जीवन ते जोडबे को स्तुत्य प्रयास कीनो है । 'भारत गाथा' जा पैटन अरु सैली मे लिखी गई है या तरिया की रचना हिन्दी ससार मे याते पूर्व चार और मिले हैं । सन् 1897 मे गोपालदास कृत 'भारत भजनावली' सन् 1901 मे गुरु प्रसाद सिंह की 'भारत सगीत' सन 1902 मे प्रकासित गिरिधर शर्मा नवरत्न की 'मातृ वदना' अरु सन 1912 मे मैथिली शरण गुप्त की 'भारत भारती । ब्रजभाषा मे जा तरिया को पैलो प्रयास सन् 1902 म झालरापटन राजस्थान के कवि नवरत्न जीन्ने कियो है । इन रचनान को महत्व आजादी की लडाई मे ही । ये सिगरी रचना पुराचीन सास्कृतिक गौरव के निकष पै आजादी की प्रेरना देती ही । पर आजादी पाछे की समस्यान पै जा तरिया की यथाथ बेलाग भाषा मे समग्र दृष्टि सो लिखी भई रचना हिन्दी तक मे नाय लिखी गई । आजादी पाछे भारत के अतीत, वतमान अरू भविष्य को क्रमश गौरव, निराशा अरु आशा की त्रिवेनी के सगम पै आदश अरु यथाथ के आधार पै स्यात 'भारत गाथा' मे डा रामकृष्ण शर्मा नेई पैली दफे काव्य जगत मे चितन मनन कर अपने कवि के साँचे निस्कस प्रस्तुत कर विचार कीनो है । उल्लेखनीय सत्य है के ब्रज के परम्परित छदन मे कवि ने आधुनिक भारत की ज्वलन्त समस्यान को जैसा देखी वैसोई यथाथ लेखो जोखो एव समाधान को निचोड प्रस्तुत करिके ब्रजभाषा कू आज के जीवन के सग जोडबे को आदरनीय प्रयास कीनो है । ओठन पै मधु घोरबे वारी अनुराग के रग म रची पची, बासुरिया की मीठी तान पै थिरकबे वारी मिसरी सो मधुरी गोपिन के अधरान की भाषा, आज के साँचे कवि के भोगे भये यथाथ के सग जुरके कितेक पैनी धारदार है गई है याकी डा रामकृष्ण केई सब्दन म बानगी देखा —

सबरे जन की बीच उघारत हैं इक दूजे पै दाँतन भीच रहे।

आँधी पीसैं कुत्ता खाय साँची भई बात आजु आँधे बाँटे रेवडी सो अपनेन देत है ।
लाल फीतासाही आपाधापी, जातिवाद वग, जितै देखो वितै स्वाथ साधन सो हेत है ।

गारी बिन बोलें नाय चलत म सीटी देय छेड़त पराई नारि मजनू के रूप है।
पढ़िबे म गोल मछ्र काम काज करें नाय हाट गली नुक्कड़ पै बिना ताज भूप है।।

'भारत गाथा म टूटतो बिखरतो भारत की परम्परित पारिवारिक जीवन सली, पाश्चात्य सभ्यता क प्रभाव ने हमारे देस की बिखरती नैतिक मर्यादा, नोकरशाह अरु राजनीति में रक्तबीज की तरिया बढ़ते भ्रष्टाचार, सुरसुती के पावन मंदिर स्कूल अरु कालिजन म बढती भइ गुंडागर्दी शिक्षा व गिरत स्तर, पुलिस, वकील, न्यायप्रणाली आदि में बढ़ती भई आपाधापी अरु धींगामस्ती को साचों खाका खींचो है। दहेज नौजवानन म बढती भई नसाखोरी, सौन्दर्य के नाम पै नारी समाज म बढ़ती भई घर की उपेक्षा, जनता कू दोनों हाथन त लूटने बारे चिकित्सक, मिलावट आदि जैसे आजादी पाछे हमारे देस की बुराइन कू कविने सांची भाषा म भारतगाथा म उतारौ है। आजाद भारत की पुलिस की करतूतन कू देखो कवि के सब्दन म—

नैक दीठ डारौ वा विभाग पै जो रच्छा हेत, आरक्षी कहात बाके कैसे बुरे हाल हैं।
ध्येय निरधार्यो जन जन भयहीन होय, किन्तु करतूतन सो दीखें मानो काल हैं।
दीन की पुकार पहुंचे न काऊ विधिकाल उल्टे फँसि जाय ऐसे फंदावारे जाल हैं।
दुखी तो घिघायौ करें दोसी मुक्त मस्तफिरें, कोऊ मरें, कोऊ जिये नेक न मलाल है।।

फैशन परस्त नारी आज कैसे अपने परम्परित भाव भरे ममता के स्वाभाविक रूप कू छाडि क विलास क फंदे म फसके ह्रास की तरफ बढ रही है याको खुलासा खाकौ 'भारत गाथा' की अपनी एक अलग विससता है। आज के चिकित्सालय या अस्पताल मानव सेवा की जगँ स्वार्थपरस्ती अरु धनलोलुप स्पर्धा के पर्याय बन गये है, याए लिखबे मे कवि ने नेकऊ कोताई नाय करी है।

आमें जेतो औसधि सो बेच वामें हाट माँहि पट्टी, पत्र, दवा-दारू सब बिक जात है।
एक्सरे की प्लेट अरु सूई रुई बोतल हू ब्लैक सों बिकत तऊ कभूं न अघात हैं।
ऐसी-ऐसी बात जिन कहन हू लाज आवै, रोटी दारि, दूध हू के सौदा करे जात हैं।
इनकूं न लाज आवै कसे निर्लज्ज भये, हम ता रे भैया सोचि सोचि मरे जात है।।

परि कवि देस की या दुदसा कू देख के निरास नाय। भावी भारत पै स्वर्निम आसा में वाने इन समस्यान को समाधानऊ 'भारतगाथा' क तीसरे चरण 'विकास' में विस्तार ते दीनों है। विदेसी' वस्तु के बढ़ते भये आकर्सन को समाधान स्वयं कवि के सब्दन म या तरिया है—

छाँडि कै विदेसी वस्तु, देसी की खरीद करें, याते सुधरेगी ई प्रनाली चालू अर्थ की।
देस मे बढेगी पैदावार देसी चीजन की, दूर होगी घौंस जो विदेसी सहँ व्यय की।

कवि कू आसा है के हमारे देस मे एक दिन जरूर ऐसो आयगो जब लोगन के चरित्र मे विकास होयगो। जाई आसा मे कवि कहे है—

होयगो विकास मेरे देस को अनेक गुना जब देसवासी चरित बनाई गें।

सिगरे देस मे आतकवाद अरु फिरकापरस्ती के नाम पै बढती भई हिंसा के कारन कवि को मन भौतई दु खी है। सब देसवासीन मे एकई रग को रक्त है एकई तरिया की हड्डी है एकई तरिया को मोच है। फिर जि लराई काय की है।

तोड फोड मारकाट लूटपाट आगजनी, कारज ये निन्दनीय कौन करबैया है?
ऐसे दानवीय कृत्य करत वे राकस हैं देस के विकास की गती कू रुकबैया है।
सबकू सपथ राम-नानक मुँहम्मद की, लरो मिटो मति, सब सगे भैन भैया है।

अधुना ब्रजभाषा के राष्ट्रीय भावन के सरस चितेरे डा रामकृष्ण शर्मा ने प्रकृति नटी के एक ते एक सुन्दर चित्र प्रस्तुत करिबे मेऊ काऊ तरिया की कसर नाय छोडी है। सही मायने म डा शर्मा अपनी धरती के कवि हैं। जेई कारन है के इनके प्रकृति चित्रन म ग्राम्य जीवन की सौंधी-सौंधी सुषमा, खेत खलिहानन को लावन्य भरो सौन्दर्य जितेक भावुकता के सग बनी पाय सको है। वितेक दूसरे कवन नाय पाय सके। साची बात तो जि है के गामन मे बसबे वारे भारत को सौन्दय इनके मन मे इतेक गहराई ते पैंठो भयो है के बाके सहज सौन्दय के सामै इनकू हर चीज फीकी लगे है। सब जाने है के ब्रजभूमि मे सरसो की खेती बहुतायत ते होय है। बसत के महीना मे तो पीरे पीरे खेतन की सुषमा के सामै स्वग कोऊ लालित्य अरु वैभव फीको पड जाय। बसत के ब्रज की या सुन्दरता कूँ साकार कीनो है डा रामकृष्ण शर्मा ने अपनी इन पक्तीन मे मानवीकरण के सग ब्रज की या छटा कू देखो।

पीरी सरसों की सारी पैर आई धरा आज, पीरे परिधान मे सजोएँ नव नागरी।

गामन के खेतन की या छटा के सौन्दय कू और खुलासा करके बतामे हैं—

फूलो सरसो की सारी पैर के सजीऐ धरा चना की हरित चाली देख सुख पाओ रे ।
गहूँ जो बालि जस कान की तरयौना सा है मटर अरहैर की हुलासा लखि आओ रे ।

डा रामकृष्ण शर्मा के प्रकृति बनन की सबते बडी विसेसता है के याम त राष्ट्रीय जागरन अरु सामाजिक बुराइन कू त्यागबे को दमदार सन्देसऊ मिले हैं। ई सदेस न तो प्रतीकन के माध्यम सो व कहबे के हामी है और न ई टेढी मढी वचन बक्रता को आधार लै कै महृदय के मन म अपनी काव्य प्रतिभा की धौंस जमायके बे कहनो चाहे हैं । सीधी सादी ब्रजवानी मे सही सत्य को निचोड प्रस्तुत करनो डा रामकृष्ण के कवि की अपनी एक बेजोड विसेसता है—बाल-ब्याह, दहज मृत्युभोज जैसे सामाजिक अपराधन कू प्रकृति के वैभव के बीच तोडबे को दसो कैसो सदेश दे रये है डा रामकृष्ण शर्मा ।

फूल फूल बाग बनरा म कल कलीन से हिन्द बासी भैयान कू ई सदेसो देनो है ।
बाल ब्याह भयो अपराध तो कानून बैरो, मृत्यु भोज, कोऊ अपराध मारो पैनो है ।
फूलि रहे खेत तिन सान सी फसल सा है, लायो है बसन्त, मूल्यवान गहनो है ।
ज्वान छारा ज्वानि बहू घर खूब नाज भरयो, कहत बसन्त दहेज नही लेनो है ।

डा शर्मा ने वर्षा ग्रीष्म शीत आदि रितुन क एक त एक सुन्दरता के विसाल चित्र अपनी कविता मे खीचे हैं । ग्रामीन जीवन को चित्र हर जगै पै विसेस ध्यान राख्यो है । मुद्दे की बात जि है के ग्रामीन जन जीवन अरू ग्राम्य प्रकृति बनन म डा रामकृष्ण कू जितेक कमाल हासिल है, वितेक स्यातई दूसरे कू होय ।

सार म कहनो चाहू हू के डा रामकृष्ण शर्मा न अपनी ब्रज काव्य रचनान ते ई सिद्ध कर दीनो है के भक्ति शृ गार अरु वीर रस की श्रद्धा सौन्दर्य एव ओज कू प्रकट करिबे की ब्रज भाषा म जितक शक्ति है वितकई आधुनिक जन जीवन की समस्यान के यथाथ चित्रन अरु वाके समाधान प्रस्तुत करिबे की भारी ताकत या भासा म मौजूद है । डा शर्मा को काव्य अपनी धरती को काव्य है प्रतीक विधान अपने आजू-बाजू म बिखरे भये वैभव के हैं । जिनक काव्य म ब्रज को परम्परागत माधुय आधुनिक जन जीवन क यथाथ बाध क सग आत प्रात हैं के निश्छल सरलता के सग ऐसे बेजोड अनूठे रूप म जिनकी ब्रज की कविता म उतरा हैं के अपनी सस्कृति को सहज भोरोपन पूरी तरियो त साथक है गयो है । अपनी धरती को प्यार, अपने लोगन के हृदय की झकार अपने आस पास के वातावरण की सुगध की मजुल भावधारा की रमणीक अभिव्यक्ति के

सगई आजादी कै पश्चात नैतिक मूल्यन की गिरावट की समाज म छाई भई अमरवेल के बढते तन्तून कू तोडके नये सिरे ते जीवन मूल्यन की व्याख्या को साहसिक प्रयासऊ इनकैं काव्य म निरंतर मिले है।

डा शर्मा ने —भारत गाथा, भारत सतसई, विश्वास सतसई, ग्राम गाथा के नाम ते ब्रजभासा के काव्य ग्रथन को प्रनयन कीनो है। याई के सगई 'झगरौं काहे को, सोमक ते ब्रज भाषा म उपन्यास की रचना करी ही है। 'पाँच कहे सो साच' नाम ते ब्रज कहानी सग्रह एव ब्रज गद्य मेई लिखे गये सौलह रेखाचित्र इन्नै लिखे हैं। काव्य अरु ब्रज गद्य मे समान भाव ते नये सोच के सजन करिवे बारे डा रामकृष्ण शर्मा की इन कृतीन मे 'भारत गाथा' प्रकासित भई है—सेम अन्य अबई तानू अप्रकासित हैं। पद्य की तरियाई डा शर्मा के ब्रज गद्य म एक स्वाभाविक लय अरु ब्रज भासागत मिठास एव सास्कृतिक चेतना के दसन होय है ब्रज भाषा को पद्य ससार तो इतेक समरिद्ध अरु भावगत वैभव सम्पन्न है कै बाकी बराबरी काऊ भासा ते करी जाय सके है। पर गद्य के छेत्र ब्रज काव्य कौ माधुय अरु सरस बाकँपन के तेवर देखने है तो याके लये डा रामकृष्ण के गद्य की लाइन एक एक सब्द गौरव तलब है। इनकी गद्य रचनान के आधार प बडे गौरव के सग या सत्य कौ स्पस है रह्यौ है के ब्रज कविता की स्थापित विसेसतान कूँ ब्रज गद्य मऊ सहज भाव ते उतारौ जा सकै हैं। ब्रज गद्य के सहज परम्परित सास्कृतिक दुसार की झाँकी देखी— वैर के बाबा मनोहरदास की जब सुधि आबै तौ रोकते रुकई नाय। धौरी धौरी नरम नरम बच्चान की सी लटूरी कहू उरझी, कहू सुरझी अरु बिनपै धौरी धौरी जुआँन के दल बादर मडरामते, तिर्रामते दीख्यौ करते।" (रेखाचित्र बाबा मनोहर दास) "धौरो भक्क पायजामा धौरौ भक्क कुर्त्ता अरु बैसी ई कलीदार टोपी। पतरौ सी किय डाँगरौ बदन टाँग इतैक लम्बी कै बेई बे दीखती। धौरी नुकीली डाढी अरु धौरी तुर्रान गोछ।' (रेखाचित्र लोहागढ को मजनू) 'ई मासि भैमाता ने जान कोन सी माटी सो गढ्यौ है कै जाय देखौ वूइ याय जानै। सबई याके भीरी सबई याके यार। काऊ के घर ई रात कू रूकि जाय तौ वू मौत मलो मानैं।" (रेखाचित्र यारन के यार गापाल)। ब्रज गद्य मे जब प्रकृति की छटा को वनन करिवे डॉ शर्मा बैठे हैं तो बरबस ऐसो लगै है के कविता लिख रह्यें होय। गद्य म काव्य कौ सुठलौनो सौन्दय ई तौ सस्कृत की उक्ति कू साथक करे हैं। 'थोरी देर मे बदरा फटि परे। ऐसौ बेसुमार पानी परयौ के चहु ओर डबरा अरु पोखरा उफनिबे लगि गये। बरसौं ते पैले ऐसो कारी पीरी आँधी आई जान आधी सौ लोक उडाय दियौ।"

डा राम कृष्ण शर्मा ब्रज भासा के एसे प्रतिभासाली साहित्यकार हैं। जिन्नै गद्य अरु पद्य दोनू छन्नन में अपनी कलम के एक_ते एक सुन्दर अरु रमणीक जौहर दिखाये हैं। ब्रजभासा की कविता कौ छैत्र तौ निस्चितई इतेक सम्पन्न अरू वैभवशाली है कै बामे

कछु नयी मौलिक जोड़बे की इतेक गुजायश नाय। पर इतेक तो निसकोच कहनो ई पड़ेगो के ब्रज कविता कू इन्ने आधुनिक सदर्भन मे सग जोड़बे को उल्लेखनीय प्रयास तो कीनो ही है। डा शर्मा की सबते बड़ो देन ब्रजबानी कू गद्य के छेत्र मे एक सम्पन्न भाषा के रूप म स्थापित करबे की रही है। रेखाचित्र अरु उपन्यास जेसी विधान पै अपनी कलम चलायके ब्रजभाषा गद्य कू नई बननी अरु नयो सोच दियो है।

काव्य सौरभ

ब्रजभूमि

दुमिल

ब्रज की धरनी अनुरागमयी उर स्याम मनोहर सो भरि है।
पवि है जग प्रीत बिखेरन म अब बधन वाय यहा जरि है।
जल है जमुना अमिया रस सो चखिया रम जाय यहाँ तरि है।
वृषभान लली छवि नेहमयी गिरिराज लख्यो सुख सो गिरि है।

ब्रज-रस

ब्रज रेनु महासत चदन है जहँ पाप घुरे छवि स्याम सुहावै।
वृषभान लली छवि प्रेममयी ब्रज की रज मे महकै मुसकावै।
अभिराम महा गिरिराज इहाँ दुख दूर करै मन मे जय छावै।
पुन्य फलै विट्ठल हमरे जिहि सो ब्रज मे जनमै ब्रज भावै।

श्री रामशरण पीतलिया के व्यक्तित्व-कृतित्व कौ रेखाकन

श्री रामशरण पीतलिया ब्रजभाषा के ऐसे उत्साही मनीसी साहित्यकार है जिन्ने कविता अरु ब्रज गद्य के छेत्र मे अपनी लेखनी ते एक ते एक सरस चित्र प्रस्तुत करिबे के सग सग नये नये साहित्यकारन कूँ प्रोत्साहन कर बिनकी साहित्यिक विधा कूँ सजायबे-सवारवे एव निखारबे मे अपनो सिगरो जीवन लगाय दियो है। मौन भाव त यश अरु लौकिक चमक दमक ते दूर आदि वृ दावन कामवन की पावन ब्रजभूमि म निवास करते भये ब्रजभारती की जो समथ सेवा अपने जीवन म श्री पीतलिया जी कर रये है बाको सानी ब्रजभूमि मे ढूडे ते मिलबो दुलभ नाय तो कठिन अवस्य है। व्यवसाय सो छोगी सी दुकान ते अपने परिवार को पालन पोसन करिबे बारे पीतलिया जी को अधिकास समै ब्रज की सेवा मेई व्यतीत होय है। ग्राहक कू बरतनन के नमूना दिखाते जाय रहे हैं अरु सग म बैठे नवाकु र किसोर कवि की नई लिखी कविता मे गण-रस अरु अलकार की दष्टि सो सुधार करते जाय रहे है। ग्राहक एकटक दष्टि सों दखके अचभित है। पीतलिया के मौह ते निसरित है रह्यो है लाला मत्तगय द मे सात भगण होने चइये। तुम्हारे सवैया की पैली पक्ति म दोष है।' ग्राहक खिजाय के पूछ रह्यो है 'पीतलिया जी, ई का भगण कम्पनी का है ? ई कोन सी कम्पनी है जाम जि बर्तन वनै है।' ग्राहक कू बिचारे कू का पतो के पीतलिया जी भगण की बात बातें नाय कर रये। इतेक मेई जैपुर तें ब्रजभाषा अकादमी को तार पहौच गयौ के 'एकाकी अक सामग्री सम्पादन कू सीघ्र जैयपुर आओ'-पीतलिया जी ने तार पढौ अरु अपने पुत्र ते कही- लाला सूरज अबई सवेरे के नो बजे है - दस की जैपुर की सीधी मोटर मिल जायगी। सजा तानू जपुर पहोच जाऊगो। दुकान सम्हार लीजो। परसो तानू आ जाऊगो।' छोरा कछू कहे बाते पले उठकैं जूता पहर के रवाना है गये। दुकान ते चलके सीधे घर पहौचे। घर पहौच तेई अटैची समार लई अरु चल दिये जैपुर। घरवारी ने बेसेई पूछ लई 'कही जायबे को विचार है के।' धीरे ते पीतलिया जी कौ जवाब हो— हाँ जैपुर जानौ है।' आश्चय मे डूबती भई घरवारी बोली—'अजी चौं मजाक करो।' वोने 'नाय मजाक

नाय कर रयो । पाठक जीको तार आयो है जैपुर ते । पहौंचनो भौत जरूरी है।' घरवारी जानै के जिद् करके गोकुल चन्द्रमा जी ते साक्षात्कार है रहे है पर इन देवता कू रोकनो असभव है । बिचारी परास्त है के गिडगिडाय के बोली—'रोटी तैयार है। खाय जाओ।' सुनतेई पीतलिया जी ने कही — 'कौन का ? रोटी 'रोटी के चक्कर मे मोटर निकस जायगी।' घरवारी पीछे पड गई । बाने थोरो साहस कियो । 'नाय आपकी तबियत ठीक नाय । मैं नई जान दऊँगी' झट पीतलिया जी न बहानो बनायो – मौको मिलौ है । जैपुर ते दुकान की सामानऊ लानो है।' अरु पीतलिया जी चल दीने सब काम कू छोडके ब्रजबानी की सेवा कू । एसो घर फूंक के ब्रजभारती की सेवा करिबे वारो कौन मिलेगो । नीरस व्यवसाय म रात दिना रहबे वारे व्यक्ति के मनुआ ते साहित्य को सरस निरझर कैसे प्रवाहित है रह्यो है ई गुत्थी आज तानू नाय सुरझ पा रही हमते ।

कामा म कोई साहित्यिक समारोह होय चाए नोटकी को तमासो होय चाए पंचम पीठ या सप्तमपीठ की ओर सौ आख बनायबे को कम्प होय चाए भाजन धारी को मनो होय चाए कामा के साहित्य संस्कृति प काई बाहर क लेखक कू जानकारी लेनी होय, चाय काई साहित्यिक पत्रिका निकारनी होय, चाए कवि सम्मेलन आयोजन कू कविन कू आमन्त्रित करनो होय चाए कोई व्यवसायी नई प्रेस खोल रह्यो होय चाए कामवन के प्राचीन इतिहास के विसै म कोई जानकारी लेनी होय, चाय सप्तम या पंचम पीठ में विसेस भोग या दरसन के आयोजन की व्यवस्था करनी होय, श्री रामशरण पीत लिया जी के बिना असभव है। उपयुक्त विस पै चरचा करिबे चार आदमी इकठौर होमतेई सबन ते पले एक सुर ते गुहार करी जायगी—'पीतलिया जी कू बुलाओ । पीतलिया के ढिंग बुलाओ भेजो।' पीतलिया जी सोचालय म बठे है तो सुनतेई उठ जइग रोटी खाय रये होय तो रोटी को तोडो भयो गस्सा म्हाई छोड के अन्न भगवान कू हाथ जोड के उठ जाइगे दुकान पै ग्राहकन की भारी भीड कू छोरा के बधान पै डारके व्यवसाय कू त्याग के चल दिगें, साहित्यिक समारोह के आयोजन की बैठकन म । इनके मित्र जब एक जग इकठौर होय है तो बस जेई सोचते रह जाय है क कोनसी सक्ति है जान से जीवट के बे सूत्र है कोन सी घडी म ज पैदा भम हैं जाते साहित्य के प्रति इनक समर्पित भाव को तेज इनके मानस मे जगमगाय रयो है ।

मन जब निरछल भाव त एकाग्र होय है तो बर बेर एकई झकार सुनाई देय है बे-बे कौन सो सत्य है जाके कारन पीतलिया जी अरु कामवन एकाकार है गय हैं बे कौन सी अनुभूति है, बे कौन स भाव है, जो रामशरण पीतलिया जी के व्यक्तित्व मे छिप भय है । नेता अभिनेता, मित्र-सत्रु, सज्जन-दुजन, कुटिल-सूधे निर्धन-अमीर, सबई तो पीतलिया जी कू अपनो समझे हैं। ऐसो कौन सो चन्दन है इनके भीतर

जाकी सुगध पक्ष अरु विपश्न बारे सबन कू मोहित करे भये है। भोत सोच विचार के पस्चात सूत्र हाथ लगो के बालक को तरिया अबोध निश्छल हृदय पीतलिया जी के पास है अरु ऐसो निश्छल बाल हृदय इनके पास हे जो ना ता बूढो होय अरु नई बामे जवानी आवे। वू समरस अरु सदाबहार रहवे बारो है। समारोह म बोलवे ठाडे करदें तो इतेक भावुक है जाइगें के वाणी अवरुद्ध है जायगी अरु आखिन म नेह के असुआ बे रोक टोक बह निकरिंगे। कामवन मे राजस्थान साहित्य अकादमी ने उपनिसद समारोह करवायो। समारोह मे समवेत प्रयासन ते पीतलिया जी की साध पूरी भई अरु सब सम्मति ने ब्रजभाषा अकादमी बनायबे को प्रस्ताव पारित भयो। पीतलिया जी की साध पूरी हैती दीख रही। रोम रोम खिल रयौ हो इनको। समारोह समाप्त हैं रह्यौ बस आखिर मे पीतलिया जी कू धन्यवाद देनो हो। धन्यवाद देबे कू ठाडे भये। एक दो शब्द बोले हुगे। बानी अवरुद्ध है गई। मनुआ प्रेम ते भर गयो। प्रेम ने सयम की पारऊ तोर डारी। बस फिर का हो आखिन म ते अविरिल प्रेम के मोती ढरक्बे लगे। हिचकी आय गई। ब्रजभूमि के प्रेम सौं साक्षात्कार हो ई। पीतलिया के निश्छल हृदय ते अविरल अँसुआन की बहती धारा ने सूर की बानी सार्थक कर दई बा 'दिना। सूर की जि पद साकार है गयो हो ब्रजभूमि के सच्चे ब्रजबासी श्री रामशरण पीतलिया जी के ढुरके असुआन मे 'यह दिन काहू-काहू करि टेरत असुवन बहत पनारे/गोपी ग्वाल गाय गौ सुत ही सबही दीन दुखारे।' सूर के 'अँसुवन बहत पनारे को मम समझाय दीनो हो बा दिना पीतलिया जी के दोनू आँखिन ते होड मे ढरकते नेह के मोतिनै। ब्रज के प्रेम वियोग के तेज मे झाँकती भई करुना की विराट चेतना बा दिना समझ मे आई ही। 'निस दिन बरसत नैन हमारे पीतलिया जीनै साकार कर दीनै है बा समै। वियोग म कितेक बड़ी सक्ति है। पीतलिया जी हूँ दिना के सयोग के पस्चात साहित्यिक भया भैनन के वियोग कू सहन नाय कर पाय रहे। याई करान तो बिनकी बानी अवरुद्ध भई अरु मन के भाव आँखिन मे ते टपक रहे है। अब सोचो द्वै दिना मे पीतलिया जी साहित्यकारन के सग बिनके मन को कितेक तादात्म्य है गयो होगगा। बिचारी गोपी, राधा अरु यशोदा ने बारह तेरह बरस बिताये हे ब्रजराज के सग। बिनकी का दसा भई होयगी ब्रजराज के वियोग मे/ब्रज के वियोगी की मर्मान्तक पीडा समझाय दीनी, बा दिना पीतलिया जीनै। साँची बात जी है के श्री रामशरण पीतलिया जी के व्यक्तित्व मे पावन ब्रज पूरी तरिया सो मुखरित है। मन के भोरे भडारी पीतलिया जी ते कोऊ नेकऊ नाराज है जाये है तो बिन्नै तब तानू चैन नाय पडे जब तानू नाराज व्यक्ति बिनके सामै आय के कह नई दे के वाको मन स्वाफ है। पिछले दिना कामा के अकादमी को झूलना समारोह है रह्यौ। काऊ बात पै बिनके सिस्य छुट्टनखाँ साहिल ने गलतफहमी मे कह दीनी के 'अब मैं कवि सम्मेलन मे नई आऊगो।' बे तो कह के घर जाय के तान के सो गयौ। पर पीतलिया जी की रात खराब है गई। रातभर जागते रहे। बस जेई विचार ;बिनके मन मे हो के का गलती हैं गई बिनते। सबेरे जब हम जैपुर ते पहौचे तो देखो पीतलिया जी गमगीन से

स्टेज पै बैठे है अर बार बेर झपकी ले रये है। उदघाटन समारोह समाप्त भयो। मैंने अलग ले जायके बिनने पूछी—'भाई साहब का बात है।' 'नाय कछु बात-नाय।' रात दिना सग रहते-रहते इन महानुभाव को सुभाव इतेक तो मैं जानई गयो। बोले—'चलो भोजन तैयार है।' मैनऊ कही, 'भोजन जबई हुगे जब के सत्य पल्ले पड जायगो' बडी कठिनाई ते बात की मालुम पडी। छुट्टन ते जब मैन पूछी तो बान कही—मैंने कछु नाय कही।' छुट्टन कू यादई नाओ के बाने का कही। छुट्टन जब अपनी सिगरी बात पीतलिया जी कू बताई तब जायके बिनकी मानसिक स्थिति सुधरी। फिर पीतलिया जी पुन बालक की तरिया चहकबे लग।

जब पीतलिया जी के साहित्यिकार को विवचन करिवे बठो हू तो मोय एक सग तर तरे के भावन आयके घेर लीनो है। बडी मुसकिल है रही है के साहित्यकार के रूप मे बिनके कोन से व्यक्तित्व कू सुरूआत म लियो जाय। 'लाली देखन म गई म भी है गई लाल' जैसी मेरी स्थिति है गई है। पत्रकारिता सो सुरू करैं तो मोय अपन कालिज जीवन को समै याद आय रह्यो है। स्यात 1961 या 62 की बात है। बिन दिनन में पीतलिया जी मोहन भया कूँ सग लके डा रामानन्द तिवारी के पास नये अखबार निकारव की याजना पै विचार करिवे कू आओ करते है। तीन-तीन घण्टान तानू विचार विमस होता हो।। पाच छै नाम सोचे गये। आखिर म चौरासी खम्भा' नाम स्वीकार भयो। चौरासी खम्भा' बडे मजधज के साप्ताहिक पत्र क रूप म निकसो। कछु सप्ताह मेई 'चौरासी खम्भा ने नौजवानन के बीच म लोकप्रियता प्राप्त कर लई के कलिज के रीडिग रूप म याय पढिव की छीना झपटी हैव लगी। ब्रज साहित्य सस्कृति के या पाँच छै पैजी साप्ताहिक कू पढक अपनी धरती ते जुडवे को हम नौजवानन कू दैलो अनुभव हो। या यों कह के 'चौरसीखम्भा न हमकू पली दर्फ अपनी जमीन अपनी अस्मिता अरु अपने ब्रज ते हमकू जोडो हो। अचानक एक दिना अर्थ के दानव न निगल लियो 'चौरासी खम्भा' कू। ब्रज की जमीन के अखबार कू बच्चा की तरियाँ पारो हो पीतलिया जीन बाकी मौत पीतलिया के हृदय की आज तक टीम के रूप म बनी भई है धुन के धनी पीतलिया जीने हार नई मानी। फिर मही सकल्प निकारो बाकाऊ वूई हश्र भयो जो 'चौरासी खम्भा को भयो हो। धुन के धनी न आर्थिक दानव के सामई हार नई मानी। फुटकर रूप म बामबन अरु ब्रज के सास्कृतिक तीयन प लेख लिखके पत्रकारिता की अपनी पिपासा कू सान्त करते रहे। सन् 85 म राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी की स्थापना भई अरु राजस्थान सरकार ने बिनकू साधा व सभा को सदस्य बनायके कौन म पडे भये ब्रजकला अरु संस्कृति के अनौखे चितेरे पीतलियाजी की प्रतिभा कू सावजनिक रूप सो प्रदर्शित कियो। पीतलिया जी न अकादमी म आतेई अपनी पत्रकारिता क तेवर दिखानो सिरू कर दिये। अकादमी की मुखपत्रिका ब्रजशतदल' क एक ते एक सत्रधजे 17 विसेसाकन मे पीतलिया जी की प्रतिभा अरु भारी सूझ बूझ को

प्रमाण है। इन अकन मे 'लोक सस्कृति अक' की सर्वाधिक प्रसमा भई। या अक मे कामा के विद्वानन के दस बारह लेख हे। 'व्रजशतदल' पत्रिका की लोक सस्कृति अक सवथा नवीनता लिये भये है। पक्ति पक्ति मे पीतलिया जी को व्रजभूमि ते समर्पित अटूट प्रेम की भलक मिलै है या अक ते। गोपाल प्रसाद मुद्गल तो व्रजशतलदल' के 'लोक सस्कृति' अक कू कामा अक के नाम ते सबोधित करें है। व्रज के चौराहेन प छोटी छोटी धार्मिक पुस्तकन की दुकान पै घटा तानू किताबन कू देखवे की आदत त पीतलिया जी के सग जायवे वारौ परेसान है जाय। एक दफ तीन-तीन रुपया के अखबारी कागज प छपी किताब लाये। मेरे सामई रख दीनी अरु कही— पाठक जी व्रज साहित्य की अमूल्य निधि लायौ हू मैं', मैंने किताब खोल के देखी तो घाघ अरु ढहुरी को कृषि विसयक व्रज काव्य हो। सग मे एक लेख लाइबो नई भूले। वास्तव म व्रजभाषा म कृषि विसयक साहित्य की अबई तानू काऊ कू जानकारी नाय ही। पीतलिया जी ढूंढके कृषि विसयक सामग्री लाये। या विसै पै व्रजशतदल मे लेख प्रकासित भयौ अरु प्रससा भई।

व्रज सस्कृति अरु व्रजभाषा को तो पीतलिया जी कू चलतौ फिरतो कोष कह दे तो अतिश्योक्ति नई होयगी। कई दफै लिखते लिखते कोई सब्द कस्ट दे रह्यो होय या व्रजभाषा म काऊ भाव कू प्रकट करवे म शब्द योजना हलकी पड रही होयतो हम सबई एक सुरते समाधान की दष्टि ते पीतलिया जी माऊ देखे। पीतलिया जी तत्काल वाछित सब्द ई बतावे ई नाय, अपितु वाको प्रयोग बताके समस्या कू तत्काल हल कर द है।

सन् 1990 की होरी के औसर पै पेली दफ मालुम पडी क पीतलिया जीने वागवेदग्घता अरु भावना की सौधी सौधी अपनी वचनवक्रता की दुलार भरी मार ते व्रजभाषा के बडे-बडे कविन कू पीछे छोड दियौ। पीतलिया जी को 'ससुरार सतक' याको जीतौ जागतौ उदाहरन है। 6 माच कू, वे हमारे सग जोधपुर जा रहे। बैठे बैठे विन दो चार फागुन म ससुरार विसयक कछु दोहा लिख डारे। इन दोहान कू व्रजभाषा कवि सम्मेलन मे सुनायो गयौ। इनसो प्रभावित है कै दो दिना म अपनो ससुरार सतक पूरो करयो।

दो बरस पैले जयपुर म पीतलिया जी को अचानक एक्सीडेन्ट है गयो। एक दिना तो हालत गभीर है गई। याददास्त खतम है गई। एकई सब्द म्होते बोलो करते 'व्रजशतदल' सज धज के निकरनो चइये। एकई चिता विनकू खाये जारही। डा गोतम ने कौन मे लेजाके कही-- पाठक जी हम कोसिस तो भौत कर रहे है हालत ठीक नाय। छ पसली टूट गई है। फेफडा चोक है गयो है।' मैंने बडे सकल्प ते डा गोतम ते कही'— 'डा साहब पीतलिया जी कू अवई भौत वरसन तानू व्रजभाषा की सेवा करनो

है।' पतो नई कौनसो विस्वास मेरे मन ते फूट रह्यो। साँची मानीइयो एक महीना पीछे चमत्कार है गयो। पीतलिया जी मौत कू पछार के आ गये।

रामशरण पीतलिया जी ब्रज मैया के ऐसे साँचे सपूत हैं जिनके राम रोम म मे ब्रज भाव समाय रह्यो है। 'कदम्ब' सस्था के द्वार सो नई नई ब्रज साहित्यिक पौधन कू विराट वृक्ष बनायबे म आजकल ये रात-दिना एकरस है के लगे भय है। इनके प्रयासन तेई कामा म कदम्ब' सस्था वनी है। 'कदम्ब' के तत्वावधान मे मासिक काव्य-गोठ गत चार बरस ते नियमित है रही है। नये नये साहित्य अनुरागी किसोरन कू समस्या दई जाय। गोठन म विनकू तरासो जाय। रस अलकार छन्द, गुन दोस की दृष्टि पीतलिया के सग कामा के इतर बजुग साहित्यकार किसोर की रचनान म सुधार करें। कविता के नये नये गुर सिखाये जाय। गायन की लय पै रियाज होय।

चार चार पाँच पाँच घण्टान तानूँ गोठन म ब्रज रस की बरखा होती रहे है। इन गोठन मे ते पैदा भये छुट्टनखा साहिल भूपेन्द्र बिठ्ठल पारीक कृष्णवीर, सिगरे राजस्थान मे ब्रजवानी के मिठास कू फैलाय रयँ है।

आखिर म गोकुल चन्द्रमा जी ते एकई प्रार्थना करू कि ब्रजभाषा साहित्य के या विराट पुष्प कू कम ते कम सौ बरस हमारे बीच बनाय रखे। बाल सुभाव के ऐसे निश्च-छल ब्रजभासा के साहित्य सेवी जब तानूँ जिंदे है तब तानूँ ब्रजी कौ मिठास चारौ तरफ फैलतो रहेगो वाकी सुगध नेकऊ कम नई होयगी।



ब्रजभासा की अग्यात कवयित्री
रानी विद्यावती

रतलाम मध्य प्रदेस के भूतपूव नरेस अमरसिह की धम पत्नी गत चालीस
ते एका‌ंत मे ब्रजभाषा काव्य की रचना कर रही हैं। राजा अमरसिह की सातमी
के इनके पूवज रतलाम के नरेस हे। परि एक षडयन्त्र के कारन इनके पुरखान कू रत
स्टेट छोडनो परो। इनके दूसरे भैया ने मध्यप्रदेश सीतामऊ के रघुवीर सिह इनई परि
सो मवध राखे हे। परि जै एक जगै ते दूसरी जगै मारे मारे फिरे। जाई परिवा
राजा अमरसिह भये हैं। इन्नै पैंतीस बरस तो राजस्थान पुलिस सेवा में काम कर्यो
सन् 1978 मे डी आई जी के पद ते रिटायर भये। इनकी घरवारी रानी विद्या
को जनम उत्तर प्रदेस के मु गियार जिला हरदोई मे सन् 1917 कू भयो। विद्या
नो बरस की अवस्था ते कविता लिखवे लग गई ही। काव्य सृजन के विसै म इ
जीवन म बडी चमत्कारिक घटना भयी है। इनकू अपने जीवन मे स्कूली सिच्छा क
नाय मिली। बस घर पै अपने चाचा के सम्पक ते इन्नै हिन्दी पढिबो अरु लिखबो स
लियो हो। सहृदय एव अपने पंडित चाचा के आकस्मिक निधन ते विद्यावती के
मानस पै गहरी वेदना के बादर मडरायबे लगे। दिन रात चाचा के सुमरन तैं बालि
कू सुपने मऊ रोमते बिलखते चाचा दीखते। दूसरे दिना अबोध बालिका ने अ
चाचा के नाम तैं जल को तरपन करिकैं बिनके उद्धार अरु शान्ति कू गीता को पाठ
करि दीनो। तीन चार दिन के गीता के पाठ ते जा बालिका कू सुपने मे चा
ने आसीर्वाद दीनो। अरू दूसरे दिना तेई जि बालिका कविता लिखबे लग गई। दिन
बैठिकैं गीता के एक अध्याय को ब्रजभाषा मे अनुवाद करि डार्यो। कछु दिना पं
इनके घर म प्रताप नारायण मिश्र को गीता को अनुवाद इनके पिता खरीद लाये
गीता के पीछे बावरी भई जा रही जा बालिका ने जब प्रताप नारायण को गीता अनुव
बाच्यो तो जाकू लगो के बाने तो बुई पुस्तक लिख डारी है। भाव तो एकई हु
अग्यानतावस गीता को जि अनुवाद विद्यावती ने फार डार्यो।

परि वृद्धावस्था मे जर्जरित भये सरीर तै काव्य के नाम ते बिनने छोड़े प चा
मे दरसन होय है। हमारे देस म स्त्री सिच्छा अरु बिनके द्वारा करे गये काव्य कू आज

प्रतिभा की दृष्टि तें थवई वू सम्मान अरु आदर नाय प्राप्त भयो है, जितक पुरुषन कूं भयो है। राजपूत घरान म तो स्त्री सिच्छा की औरऊ ज्यादा हालत खराब है। याद करो आजादी क पूव के भारत की दसा को जब स्त्री सिच्छा के नाम पै हमारो देस कितक पिछरो हो अरु राजपूतन म तो स्त्री की दसा औरऊखराब ही। छन्द, अलंकार अरु कविता के गुनदोष के विसै म इन्ने न तो कोई के पास बैठिके सिच्छा ग्रहन करी, न काऊ ग्रंथन की छाया म कछु ग्रहन करो। आजऊ विनकूं छन्द अलकार को कछु ग्यान नाय। बर-बेर जब इनिते पूछो गयो तो बस एकई जवाब हो– 'हम छन्द बन्द कछु नाय जाने, नाई हमकूं अलकारन को ग्यान है। बस हमारे मन म कछु आय तो लिखब बैठ जाय है। लिखकें बडी सांति मिल है। जि कछु कापी है। मोत सारी तो नस्ट है गई। हमन कबी सोचीऊ नाय कैं जि कविता है। ई तो तुम हमारे पीछे परि गए। निहार जा प्रेम के कारन हम अपनी जि कापी तुमकूं दिखा रहे हैं।' कितेक सपाट बयानी है इनके जा कथन म। काव्य की छलछलातो भावनामय महासागर लह-राय रह्यो है विद्यारानी के काव्य म। भाषा अरु अलकारन के प्रयोग की अनेक कमी निकारी जा सकै है इनके काव्य म। परि काव्य कों भावना त सबध मानवे वारे मनी-सीन कूं इनकी ब्रजकविता म भावना को ज्वार उमडतो मिलेगो। बनावटीपन, प्रयास-जन्य माथापच्ची को सुमरन तौ इनकी कविता के ढिगऊ नाय आ सकी है।

श्रीमती विद्यारानी की रचना काऊ पत्र पत्रिकान म स्यात प्रकासित होयगी जाके अलावा भरतपुर म हैव वारे समस्यापूर्तिन के कवि सम्मेलन मे एक दो दफे इनकी रचना सुनबे को औसर मिल्यो। सम्मेलन मे इनने अपने म्हौ ते रचना पढी होय एसो नाय काऊ दूसरे ने इनकी रचना को पाठ कीनो है। उद्घोषक न बतायो कै जि डी एस पी श्री अमर सिंह जी की धमपत्नी विद्यारानी की रची भई रचना है। इन्ने हिन्दी अरु ब्रज म रचना करी। कविता मऊ हिन्दी अरु ब्रज को प्रयोग है। इनकी कविता म इनको मन ब्रजभाषा म जितक विस्तार क सग रयौ है वितेक हिंदी म नाय जमो। इनने सपथ करकें इनकी अपनी कविता की कथा अरु रचना प्रक्रिया क विसै म बतावे की कृपा करी है इन्नें कविता रेडियो रूपक ड्रामा अरु नाटकन की रचना करी है। इनकी ये सिगरी रचना बस्तान म बद परी है। छोटी मोटी मिलायके इनकी रचनान की सख्या 20 है जा जा तरिया है—

1 मर प्रभु और कमनीय कुसुम सग्रह–1950। 2 विभिन्न काव्य प्रकासित अप्रकासित 8/54–55। 3 गिरा मन्दिम स्त्रोत 1936 ई। 4 शिव मदन सनक सकर विनय विभूति 1/9/37 स 30/11/37 कौमार्यावस्था म। 5 मधुरकन 1948। 6 करुण कहानी अथवा किसानो की कसक 1937। 7 जीवन आग जीव है पानी 1954 8 हजा 27/9/56। 9 अगर मैं आलोचक होता/कल्पना का साकार रूप 15/10/50।

10 भारत-भाल नाटक 1938। 11 भक्त चन्द्रहास नाटक 1953। 12 आजकल-नाटक 1938। 13 शिवाजी एकांकी 1951 (बालड्रामा)। 14 बालभक्त चन्द्रहास (रेडियो रूपक) 1950। 15 हुक्लों का समूह 1956। 16 बुड्ढे का विवाह (एकाकी) 1959। 17 शिवाजी नाटक 1956। 18 भारतभूमि नाटक। 19 भक्त वधु नाटक 1938। 20 फुटकर रचनाएँ।

जाके अलावा इनके भौतेरे हाथन के लिखे भये कवितान के पन्ना मिले हैं। इन रचनान मेऊ उपयोगी रचनाऊ हैं। अरु जीवन के विभिन्न पक्षन नै लकै लिखे भये भौतेरे छन्द इनम मिले हैं। बातचीत ते मालूम परी कै विद्यारानी के पिताजी तम्बाकू भौत खावे ह। जा कारन विनको ब्लडप्रेशर रहतो। बडे बडे डाक्टर हकीम सगी साथिन ने इनकू तम्बाकू छोडवे की कही भौत समझाये पर तम्बाकू विनते म्हो ते नाय छूटी। अचानक विनकी बालिका विद्यारानी के म्हों ते तीन छन्द निकर परे। आपकू आश्चय होयगो के इन तीन छन्दन ते विन्ने तम्बाकू छोड दई। हम या घटना को उल्लेख करकै ये बतानो चाह रहे है कि कविता केवल हासी नाय कला है मनोरंजन को साधन ई नाय। याको प्रभाव अचूक होय जो असभव कू सभव कर दे। तम्बाकू के विसै म लिखे तीन छन्दन मे ते एक छन्द कू देखो—

खाँसी करै हद जोर हरै अपरा दम माँहि दया बिहरै।
खेद घृणा मन ह्वै तिन के पुनि सोच तिन्हे न बनै बिगरै।
सेवो तमाखू के चाहे कहे नित हुक्का के फुक्का फरै फहरे।
लाज पै गाज परै किम आज समाज को ताज बने बहरे।

सन् 1930 के आस पास हिन्दी भाषी प्रदेसन म ब्रजभाषा के समस्यापूर्ति के छदन की रचना करवे की भारी परपरा रही है। कविगन समस्यापन पै विविध विसयन कू लैवे कविता पाठ करते हे अरु रसिक जन जापै निहाल हैके कवि की प्रतिभा पै वाह वाह कर उठते। या तरिया की भौतेरी रचना विद्यारानी ने अपने बाल्य अरू किसोर अवस्था म कीनी हैं। इनको या तरिया को तो प्रमान नाय मिलै क कवि सम्मेलन मे बैठकैं कोऊ रचना को पाठ कर्यो होय। बिनते चर्चा करकै ई बात निस्चित भई की विन दिना हैवे वारे कवि सम्मेलन की समस्यापूर्ति घर पै करती ही। हमकू खोज बीन ते या तरिया के पन्ना मिलै है। या तरिया की 'मतवारे' समस्या की पूर्ति करते भये बिन्नै अपने चारो ओर के समाज की दुर्दशा को चित्रन करते भये हरि की भक्ति के आनद कू स्वीकार कीनो है। कहबे की आवस्यकता नाय कै वू ऐसो समे हो जब हम पराधीन हे। भारत के नवयुवक धीरे धीरे पथभ्रष्ट हैते जा रहे। विद्यारानी ने जा राज-

[आखर-आखर अनुराग

पूत समाज की समस्यान कू लैके बापै अपनी लेखनी चलाई। राजपूत राजा अंग्रेजन के सग रहकै मदिरा अरू विजया के नसा म मस्त है रहे। भारतीयता के महत्व कू भूल रहे। मदिरा सौं अपने पुरुषार्थ की महत्व समझते। इनई पै व्यग करते भये ई 'मतवारे हैं' कि समस्यान मू या तरिया प्रकट करी है–

मन रग तुरग मतग पग ते निहग कोऊ जन वारे ह।
कोऊ फैशन फूले फिरैं कितहू काउ प्रस्न बने सतवारे हैं।
मदिरा रत कोउ स्वभूति भ्रमै, ललते विया लन बारे ह।
धन्य हैं त वनि भृ ग हरी पद पकज पै मतवारे हैं।

याई तरिया नीकी समस्या कू पूरी करिबे मू जीवन के कछु मूल्यन कू उदघाटित करते भय बिन लिखो--

स्वभाषा रसै समता विरस दरसै निरुपम दरसावत नीकी।
जुध ते धुन ते सु लसे गुन ते सरसे सद बुद्धि सरसावत नीकी।
झुलसें मन के हुलसे तन के हरसै हर उर हरसावत नीकी।
तु वसै उर म न नसै फुर म परसै पग तुव परसावत नीकी।

याई तरिया मतवारे' की बिनै एक अन्य स्थान पै एक सावजनिक नहिल सज्जन की परिभाषा देते भये या तरिया लिखौ है–

सन्तन सुखद ते असन्तन दुखद यशवन्तन शिरोमणि अनन्त अन्त कारे हैं।
निगुण सगुण गुणधर गुण पार कथि 'विद्या' तन धारक अतन ते उचारे है।
खड-खड सौं अखड ब्रह्म बरबण्ड लघु व्याप्त श्रण्ड माहि खड-खड रोम धारे है।
विभुता विलोकि कवि कोविद चकित कथि हारि उर आनि नेह होत मतवारे हैं।

सन 1937 म इटावा मे बा समै की देश की नारी की का पुरूष समाज तक के हृदय पै एकछत्र भाव ते छायी भई भारत कोकिला सरोजनी नायडू को आगमन भयौ। सरोजनी के आगमन ते किशोरी विद्यारानी कौ मनऊ उद्वेलित है गयौ। बा समै कि किसोरवय की नारी सरोजनी के प्रति का तरिया भाव रखती ही या कवित्त ते जि सत्य प्रमानित है–

कज की कली सी भली ललना ललित आली, शांति शीलधारी है सुबाली मन मोजनी ।
उर तम नाशनी, प्रकाशनी, सुभाषनी है कोकिला कला निधान भव्य भाव खोजनी ।
विख्यात विश्वरुचि स्वावलम्बन विचार को प्रचार उपकार सत्य भर काव्य ओजनी ।
परतन्त्रता मिटारन सम्हारन को सारे काज आज भूमिलाल हित श्रीमती सरोजनी ।

सरोजनी ते अग्रेजन कू भारत स्वतन्त्रता के प्रति विनके मन की ललक अरु कोटि-कोटि जनन कू प्रेरित करवे की अनन्य शक्ति ते प्रभावित है कै भारत की परतन्त्रता के करुनामय दृश्य देखो विद्यारानी को किसोर मनुआ कराह उठौ । विन बडी भावुक हैकै सग म परतन्त्र देस की दुदशा को चिन्तन करते भये चक्रधारी मतवारे श्रीकृष्ण ते प्राथना करी ही कि हे चक्रधारी, अब तो जनम लै लै । विद्यारानी की कतिपय कविता की जि भावना निस्चित ई भविष्य मे जाके सिद्ध भई । हम बिनकौ 1937 को नीचे लिखौ छद ई देख लओ कै वू याको सबन ते बडो प्रमान है—

भारत की परतन्त्रता को पास टूटि जाय करुना निधान भगवान ऐसो वर दै ।
पूजनीयाजननी के प्रति प्रीति पारें अरु मन ते न टारे भक्तिभाव दृढ उर दै ।
भगवान ! भारत के भोरे भूमे लालन मे उच्च भावनाहि भूरि भूरि उर भर दै ।
कैतो चक्रधारी, चक्रपाणि, चक्रधर मतवारे चाल बाजिन म चकाचौंध कर दै ।

विद्यारानी की पुरानी कवितान के पन्नान कू पढवे ते एक बात अरु सामई आई है कै ये नियमित रूप सौ वा समै निकरवे वारी पत्र पत्रिकान कू पढती ही । पत्र पत्रिका के विसै मे इनै कविता अरू सवैया मे अलग-अलग पत्रन कू लिखें है । ये पत्र निस्चित रूप ते प्रकासित भये होगें पर भौत कोसिस करकै पत्रिका म छपे पत्र को प्रमान इकठोरे नाय कर सके । बिन दिनान मे इटावा ते 'हितैषी' नाम को पत्र निकरतो हो । या पाक्षिक पत्र मे नारी के विसै मे विसेस सामग्री छपो करती । या दृष्टि सौं विद्यारानी को कठाहार हुआ करतो । दस पन्द्रह कविता सवैया विद्यारानी ने हितैषी सम्पादक कू सन 32 33 के आसपास लिखी है । हितैषी के प्रति एक किसोर कवि को आलेख मे विभाजित अरू बाके प्रति का होय हो याकी एक बानगी देखो—

समाचार चारू लखि लेख उच्च भाव भरे भगित सुधारता न आन अवरेखी है ।
'विद्या' कवियों की कहे कविता कला मे कैसी ओज भव्य भाव शुचि सुखमा विशेषी है ।
विविध प्रकार बहु विभता बखानो कोलो लेखनी नहै म गति कीरति अलेषी है ।
विख्यात ताको विश्व बीच विपुल प्रमाण हर हाथन मे हेरो स्वच्छ सुदर हितैषी है ।

किसोर अवस्था कि इन कवितान म भीतेरी जगँ अनायास भक्ति अरु सक्ति कसे प्रकट है गई है । ग्यान के महत्व कू प्रतिष्ठित करते भये बिन्नैं लिखो है—

कोऊ जाय जगन्नाथ कोऊ जाय बद्रीनाथ कोऊ काशीराज कोऊ प्रागराज धाए हैं।
कोऊ करै जप तप कोऊ कर यज्ञ दान कोऊ नासिबे कू पाप गंगा ही नहाए हैं।
कोऊ माला फेरैं फेरि पाठ बहुविधि कर कठिन तपस्या करि देह कू सुखाए है।
ऐसे ही जंजालन म भ्रमत फिरत सब 'विद्या' कहे बिना ज्ञान कौन मुक्ति पाए हैं।

एक स्थान पै 'ते समस्या दीनी ही। महाभारत के द्रोपदी प्रसंग कू लक ते' की पूर्ति कवयित्री ने कसे सुन्दर ढंग सो करी है —

सुनो करूना निधान मेरी वानधरो कान, द्रोपदी की लाज राखी दीन हीन हुई पुकारे ते।
गहे सुग्रीव ते गरीब निज जानि जन, गज गीध गनिकादि प्रेम ते निहारे ते।
टेरो जाने एक बेर ठाढ़े तुम ताके द्वार अकथ अपार निज जानि जन तारे ते।
जाय कैं पुकारी तो अनेक बेर तुम्हें नाथ, 'विद्या' एक बेर कछु काम ना सुधारे ते।

याई तरिया माल है' की पूर्ति कू बिन्नैं राम के अपार वैभव ते सेतु बंध रामेश्वर कू बांधबे के प्रसंग कू माल है म पूर्ति करी—

सेतु बांधिबे के हेतु सटकि सटकि कपि कटक के कटक उखार पेड डाल है।
पनि पनि पाहन पयोनिधि पटकि चट पादप पकर पुनि नाचत निहाल है।
थपरि थपरि विद्या कूदि-कूदि चिक्करहिं चाव ही सों चलत चपलता की चाल है।
राम के अनुग्रह बनत अणु हैं अपार दखत न आज कपि करत कमाल है।।

याई तरिया नंद जू के छैया की मनोहर रूप अरु प्रेम सहज नेह भक्तन के मन म स्वाभाविक प्रेम उत्पन्न करबे की विराट शक्ति कू माल है के प्रतीकन म कैसी सुन्दरता के संग पिरोयो है।

नंद जू के नंदन निरखि नर नारी सब झूमि झूमि झुकि झुकि होवत निहाल है।
मुरली मनोहर मुकट सिर सोभित सलोनो स्यामरंग 'विद्या' बोलत रसाल है।
झीनी झीनी झगुली झनक पग घुंघरू की झकझोरि देत कबों घुंघराले बाल है।
मचलि मचलि चलि देत इत उत चित चोरन लगत गल भक्तन की माल है।

याई तरिया कवयित्री ने दुर्गेश नदिनी के प्रतिऊ अपने भाव सुमरन कू प्रकट कीनो है। उदाहरन कू हम तीन छदन कू प्रस्तुत कर रहे है–

जजयति जै दुख दरणि देवी।
चरण व दत सुर अन दत नेह युत सव करत सेवि।
सति, एक विभक्त लखियत भक्ति भावति भि न भूर।
मुदित मन जनकर तिनकी सकल वाछा पुरत पुर।
मयवनी अति मया ननीन विचित्र रूप सम्हारि चेति।
जगत बिचरत फिरत उर के हरत तम दुख कम न देति।
देवि बनो का सुजस तुव हों बनी कुमती कुमारि।
नमहू बारहि वार, राखहु सरन मे 'विद्या' निहारि॥



देवी तव मूरति नैनन माहि।
बसहि निरतर ध य जासु के को सम तास लखाहि।
वसहि निरतर ध य जासु के को सम तास लखाहि।
जा सरूप कह देव मुनीस्वर लखिबो चहि ललचाहि।
सुखमय सबहि सराहत नीको ऊपमा कवन लगाहि।
तो तुव रूप अछेह छवियुत नित्य निरखि हरसाहि।
मे कुबुद्धि पापिनी छमिय त्रुटि कहत तुमहि सकुचाहि।
एक यह बड चाह बसै उर अ तिम विनय सुनाहि।
विद्या बसौ नह युत मम हिय अ य न कछू चहाहि॥



मात [1] मोहि दासी अपनी बनाउ।
बरदायिनी दया उर धारे अघन तरनि सो सुभाउ।
मैं तो सब विधि हीन दीन हू परी तुम्हारे पाऊ।
देखो नैन उघारि दसा मम तपत तपनि मिटाऊ।
की ही किरपा सराहू कहा लों आनन्द उर न समाऊ।
अब लग दया विपुल दरसाई सोई नित दरसाउ।
वरद हस्त धरि सीस हमारे कबहू नाहि हटाउ।
विद्या हिये रहै निसि वासर दैवि तुम्हारो पाऊ॥

राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी नैं ई या बरस 22 दिसम्बर, 90 कू श्रीनाथ जी की नगरी नाथद्वारा मे इनको सावजनिक अभिनदन कीनो है। इनकी कविता मे महादेवी

वर्मा की सी स्वाभाविक लय सूर की सी भक्ति अरु तुलसी की सी तनमयता है । राज-पूतन के परंपरित घरान म अपनो सिगरो जीवन व्यतीत करते भये ऊ इन्ने अपन मन के भावन कू कविता म उतारबे मे नैकऊ सकोच नाय कीनो । इन्ने जो अच्छी लगी वापै खुल कै लिखो जो बुरो लगो वापे निसकोच भाय ते अपने कागज मे उतारबे म पीछै इनको ब्रजभाषा के अलावा भौत सारो साहित्य हिन्दी म रचो गयो है । इनको 'अमरसिंह राठौर' नामक नाटक ऐसो है जो आजादी कै पैले लिखो अरु खेलो गयो । वाकू खेलब के पीछे जनता कू आजादी के महत्व कु बतानो हो । अ ग्रेज सरकार ने वा नाटक कू जबरदस्ती रोक लगवाई ।

काव्य सौरभ

ब्रज-रस

बहि है रसधार यहा जमकै जिहि डूब सबै सुख सो रहि है ।
दुरि है दुख दीरघ जीवन के ब्रज रनु सरीर मलो जिहि है ।
तरि है भव सागर पार करें उर स्याम मनोहर को गहि है ।
चमि हैं ब्रज कु ज निकु जन मे जिहि बासुरिया मधुरी बजि है ।

बजि है मन प्रीत सुरग जबै मधुरे ब्रज बोल हिये सजि है ।
सजि है घनस्याम सुधारस से मद मोह मनोज दुरे तजि है ।
तजि है यमराज सन नम सों अनुराग धुरे ब्रज को भजि है ।
भजि है मन कु ज निकु जन म जिन कु जन मे बसुरी बजि है ।

वियोग वात्सल्य मे डूबी यशोदा शान्ति साधिका

जैंपुर की पुरानी बस्ती मे नाहरगढ की सरक पै एक छोटे से मकान माहि श्रीमती शाति साधिका नाम की कवयित्री गत तैंतालीस बरस लौं काव्य रचना कर ब्रजभासा के कोस की अपूरब वद्धि रही है। जा साधिका कू ना तौ प्रकासन की चिन्ता है नाहि यस को लोभ है। छोटी छोटी सी कापीन के पन्नान मे रात रात जग के इन्नें ब्रजभाषा के हजारों पदन की रचना कर डारी होयगी। ब्रज भासा के अलावा हिन्दी अरु राजस्थानी भासा के पदन की रचनाऊ इनके कवि हृदय ते भई है। ईनके काव्य मे श्रीकृस्न की आराधना बेटा के रूप मे करि गई हैं। रात के बारह बजे हो, दो बजे हों, जब सबत्तो ससार अपने पलक बन्द करके मीठी निंदिया मे सो जाय बा समै शान्ति साधिका रात रात जग कै अपने बेटा श्री कृस्न की अनुपम बाल छवि की एक ललक भरी झलक देखबे कू रोमती रामतो अपने भावन कू टूटे फूटे कापीन के पन्ना मे उतारती रहै है। आँखिन मे ते वियोग के असुवा मैया शान्ति साधिका के गालन पै ते ढुरकते कापी के पन्नान प परते रहे हैं अरु कविता के सब्द ढरते चले जाय हैं। वियोग के असुअान ते लिपटे भए जे सब्द निस्चेई ब्रजभासा केई नाय अपितु हिन्दी साहित्य के वात्सल्य वियोग के अनुपम रत्न हुतैं।

आस्चय को विसै तो ई हुतै क गत इकतालीस बरस ते शान्ति साधिका नियमित रूप ते काव्य रचना कर रही है। परि हिन्दी साहित्य के काऊ निठुर समीच्छक को ध्यान जा मैया की तरफ नाय गयो। गत बीस बरस ते तौ अपने बाल बच्चान के बीच मे रहते भएऊ मैया साधिका पूरी तरिया सन्यासनी बनी भई हैं। इनके रहबे को कमरा अलग हुतै साग सब्जी ते लैकै अन्य सबत्तो काम मैया अपने हाथ ते खुन्ई करै हैं। बस कमरा मे झालरापाटन के द्वारका नाथ जी के मदिर की प्रतिमा को फोटो इनको एक मात्र सहारो है। जाई कै सामै बैठ के हिचकी लेमती भई मैया साधिका अपने मन के भावन कू काव्य मे बिखेरे हैं। कमरा माँहि द्वारका नाथ की प्रतिमा के चारों तरफ चित्र लगे भए हैं, जामैं काऊ मे मैया साधिका ने अपने आराध्य कू ममता विभोर है कै भुजान म भरि रखो है, काऊ मे वू प्रतिमा कू फूलन ते रैस खिलाय रही हैं, जसे साच्छात अपने बेटा

कू मनाय रही होंय, काऊ म वू विनके चरनन म बैठे मैं झर झर असुआ बहामती भई वात्सल्य वियोग माहि आकंठ डूबी भयी हू।

छरहरे वदन की छ फुट मे आस पास लम्बी खरी खरी आसिन अरु तजस्वी ललाट बारी सात अरु सौम्य शान्ति साधिका को पूरो नाम श्रीमती शान्ति पाडे हतै। इनको जनम सवत 1971 के आषाढ़ कृष्ण प्रतिपदा क दिनां झालरापाटन माहि ब्रज हिन्दी अरु संस्कृत भासा के प्रसिद्ध कवि सिरी गिरधर शर्मा नवरत्न के घर भयौ हो। मूल नक्षत्र मे पैदा है वे के कारन इनको नाम शान्ति धरौ गयौ। पिता नवरत्न जी इनकू घर प सटटू के प्यार भरे नाम ते पुकारो करें हैं। अपन दाउजी ते मिले काव्य संस्कार अरु घर के मनोहर अरु रमनीक वाड्मय वातावरन क कारन इनमें बचपन तेई काव्य रचना की रुझान पैदा है गयो। आठ बरस की रहौरी सी अवस्था माहि नवरत्नजी की जा प्यारी सटटू न विनको दवा दवो अपनी पहली कविता बनाय डारी, यामे श्री कृस्न कू चार पातीन म उल्हानो दियो गयो हो। पिता नवरत्न जी ने जा कविता कू सुनिक अपनी सटटू कू कठ ते लगाय कें मौन-गीत आसीर्वाद दीनो। सन् 1929 माहि इनको 15 बरस की उमर मे जेपुर के सिरी राधागोपाल पाडे त ब्याह भयो। सन् 1949 त लैकैं सन् 1971 लौ रिटायर है वे तलक श्रीमती साधिका ने राजस्थान सरकार की छात्रा सिच्छा विभाग माहि अध्यापिका रह केऊ सेवा करी ही। इनके पतिऊ राजस्थान सिच्छा विभाग मे अध्यापक हे। सन 1971 के आस पास इनको देहान्त है गयो। इनक अनक पुत्र पुत्री भए पर विनम त एक पुत्र अरु चार पुत्री जीवित हैं।

झालरापाटन के द्वारिकानाथ जी साधिका जी को बाल्यावस्था त आराध्य रहे हैं। ससार के दुख दरद अरु पारिवारिक जीवन की ऊहा पोहन के कारन इनको मन धीरे-धीरे अपन आराध्य सिरी द्वारिकानाथ जी की तरफ खिचतौई चलयौ गयौ। ई कही जाय है कि पीरा अरु बेदना की रीम की धरती पेंई मनाभिराम माहक सुमन खिले हैं। ऐसी एक ददनाक घटना नें इनके काव्य मन कू इतेक टीस दीनी ही क इनको भावुक मन की काव्यमयी पीयूस धारा रोजीना एक दो पदन मैं निर तर भाव ते बाई दिना ते कागज पै उतर रही है। जि घटना सन् 1940 की झालरापाटन की हतै। इनको नौ बरस को सकि नाम को लल्लू कृस्न कृस्न करतो अपनी मैया अरु नवरत्न जी के सामने ईसुर को को प्यारो है गयो। बाई दिना तें इनके मन को वात्सल्य वियाग की ऐसो आनन्द भरौ ऐसौ दरद भरौ अरु ऐसो करुना ते भरो भयो काव्य फूटो जो आज लौ अनवरत गति से बह रह्यो है।

अपने बेटा की कृस्न कृस्न करती भई जा असामायिक मौत ने कवयित्री मैया शान्ति साधिका के मन म श्री कृस्न के नटखट बाल स्वरूप की ऐसौ ललक अर आतुरता मन

मे भर दीनी जा की अनुपम छटा इनकी कविता म भरी परी है। मीरा ने अपने काव्य माहि श्री कृस्न कू प्रेमी मानो है पर जा साधिका न सिरी कृस्न के बाल-भाव को मैया बनिकै आराधना करी है। ब्रज साहित्य माहि कबि नें सिरी कृस्न की अधिकासत प्रेमी अथवा पति मानकै उपासना करी है। सूरदास जैसे कछू कबिनें कृस्न के बिभिन लीला प्रसगन मे कृस्न के बालभाव कौऊ भावभरी चित्रन करो है। परि ऐसी कवयित्री अबई लौं शाति साधिका के सिवाय दूसरी दखिय म नाय आई जानै मैया बनिक अपने काव्य ससार मे रोमतें बिलखत कृस्न की आराधना करी होय। मैया को भाव जगत के सम्बन्ध माहि सबन ते पावन भाव है। मैया भारी कस्ट उठाय कै अपने लाल कौ पालन पोसन करै है। मैया की आखिन के सामै ते बाको बेटा एक छन कू ओझल हो जाय है तौ बाकौ मन कितेक बिह्वल है जाय है जाके बिसे माहि कछु कहबे की जरूरत नाय। बेटा को एक छन कौ छुपाव जब मैया कू इतैक हिलाय कैं धर दे है तो बा मैया की कल्पना करो जो 33 बरस ते अपने बेटा कृस्न की आयवे की बाट देख रही है। जा प्रिय बेटा की याद माहि खायबौ पीयबौ, उठबौ बठबौ चलबौ फिरबौ सबई तौ जाको वेहाल है गयौ होय। अपने छबीले बेटा कृस्न के दरस परस कू रोमती-रोमती जा मैया के हिरदै कौ एक भाव हम अपने कथन के समथन कू प्रस्तुत करि रहे है।

काहा रे! तोहे साधिका मैया बुलाये,
काहा मन भा ना लाडले, लाल रे
तोहि साधिका मैया बुलाय
आ जा मन भावने लाल रे! गोपाल रे!!
ब्रजचन्द रे! गोबिन्द आनन्द कद रे!!
तोहे साधिका मैया बुलाये।
अवीरल तरी रटन लगाये
पल भी ना बिसराय" हो हा
काहा मन मोहना लाडले! लाल र!!
गोपाल रे! श्याम रे!! घनश्याम लीला धाम रे!!!
तोहे साधिका मैया बुलाये
आजा रे! मेरे कुवर कन्हैया
कहि कहि टेर लगाये" हो हो।

अपने सलोने अरु माखन चोर बेटा कृस्न के बियोग माहि जा मैया को मन इनके काव्य के एक एक सब्द म बिलख रह्यो है। रात रात, जागत जागते बेटा गोपाल के वियोग माहि रोमते रोमते जा साधिका ने अपन मैया भाव को काव्य में ऐसी निगूढ

अभिव्यक्ति करी है, जाके गूथे भए भावन कू पढ़िकें सहिरदय को मनुआ भावन की करुना के आनन्द म डूब जाये है। मैया साधिका दिन रात अपने बाल गोपाल के गुनन कू गा रही है। बाके चरनन पै वलि जाती भई वू बरे एकटक भाव ते बा दिना की ललक मे जीवित बैठी है बैं बाट देख रही है जा दिना वाकू अपने बेटा के दरसन होइ गे।

तुमरे चरण कमल बलि जाऊँ।
मेरे बाल गोपाल गुसाईं, निसि दिन तुमरे ही गुण गाऊं।
तुम बिन पल हू चन न आवँ, नित दरसे को नेम निभाऊँ।
तुमरे चरण ।
अन्तर लगन लगी इक तुमते, अरस-परस अति आनन्द पाऊँ।
शांति प्रभु समदर्शी स्वामी, प्रतिदिन तुमरी टहल बजाऊँ।
तुमरे चरण ।

कृस्न के बाल गोपाल के रूप के दरसन कूँ साधिका जी के रोम रोम ते भावन की भागीरथी फूट परी ही। जाई भाव की एक मनोहर झाकी या पद माँहि देखिबे लायक है --

आराधना मैं करूँ तिहारी।
साँचे हिय सो करूँ अचना।
स्वास स्वास ते नाम उचारौ।
ओ ! मेर आराध्य जनम के।
तो पर तन मन जीवन वारौ।
आराधन मैं करूँ तिहारौ।

आरि मेरी एक निभाओ।
शरन गेह की लाज बचाओ।
शांति दयानिधि अरस परस हो।
भव संताप मिटाओ आओ।
आराधन मैं करूँ तिहारौ।

अपने बेटा कृस्न के वियोग माहि मैया साधिका को मनुआ इतेक खो जाय है इतेक डूब जाय है कै वाय ई नाय पतो रहे कै छली मनमोहन अहीर

को लाडलो बेटा बाके ढिग नाय। वाके भाव ससार के साम तो वाको प्रान पियारो, बसी बारो, गोविन्द बिहारो, माखन चोर बाके ढिगई मीठी मोठी तान भरी निंदिया मे सो रह्यो है। पौ फट गई पछिन को मीठो मीठो कलरव चारो तरफ गूंज रह्यो है। पूरब की ओर धीरे धीरे ललाई आयबे लग गई। सूरज की पावन किरनन के परस परतेई लाडले छैल छबीले के प्रिय सुमन कमल खिलबे लग गये अरु साधिका देखें हैं कै बाके नैनन को तारो बेटा द्वारिकानाथ अबई लौं सो रह्यो ह। मैया भौत चाह ह बाये उठाय कै अपने हिरदै ते लगाय लै। परि बाय कैसें उठाबे। वियागिनी मैया रोमती-रोमती अंसुवन के वियोगी आनन्द माहि डूबती भई गामती जाय रही है–

भोर भयो अब जागो यदुराई।
जागो रे ! यदुराई, द्वारिका नाथ परम सुखदाई, भोर भयो।
पो फटी पछी बन बोले, पूरब यही छाई अरुणाई।
लता बेल तरु पल्लव डोले, जड चेतन चेतनता आई।
जागो रे ! भोर भयो अब जागो।

वियोगिनी मैया के भाव ससार को सलोनो बेटा नन्दनन्दन इतेक पैऊ नाय उठै हैं का, करै बिचारी मैया अब वू अपने बेटा कूं तरै तर लोभ दे है–

ग्वाल बाल अगना माहि ठाडे, कन्दुक चकई भवरा लाई।
नयना खोलो हरखि विलोको, तुम कूं नई मुरली मगवाई।
जागो रे ! भोर भयो अब जागो।

मैया शान्ति साधिका जैसेंई अपने अलौकिक काव्य के भाव ससार ते जगत के भावन म प्रवेस करै है तो वाकी आख फटी की फटी रह जाय ,हैं। न तो बाके ढिग सलोनो बेटा है अरु नई वाकी वू अनुपम छवि हतै, जाये वू विभोर है कै तरै-तरै के लोभ दैय कै उठाय रही ही। अपने बटा कृस्न के वियोग वात्सल्य की बेदना के छन, मैया साधिका कूं असह्य है जाय है अरु वे कविता माहि जा तरियां फूट परै हैं–

अब मैं मरूं कै जीऊं रे, कन्हाई।
तैनें नेह लगा के बिराई।
हाय, मरूं कै जीऊं रे कन्हाई।
तैंने प्रीत लगा के विसराई।
पहलै तो तू आ जातो रे !
हाय, राम रे ! अब क्यूं अकड दिखाई ?

ब्रज साहित्यई का, हमारे भारतीय साहित्य माहि सायदई काई ऐसी कवयित्री मिलै जानें सिरी कृस्न की मैया बनिक रात रात भ आवे दरसन कूँ वेदना भरे काव्य की रचना करी होय। मीरा को सबसौ काव्य मधुर भाव के विरह को काव्य हतै। प्रिय के मिलन की काम प्रबल वेदना है परि शान्ति साधिका के काव्य माहि तौ अपने कन्हा कृस्न की एक सलौनी ललक कूँ रोमती बिलखती मैया को निरमल हिरदै है। या दृस्टि ते साधिका जी को काव्य ब्रजभासा के सग सग हमारे देस की निरुचै ई अमूल्य निधि है। रात-रात जागत जागत अरु रोमते रोमते कृस्न के वियोग म साधिका जीनें अपन मनुवा के मैया भाव की वेदना कूँ काव्य माहि बरी मोहकता के सग उतारौ है। वियाग वात्सल्य की करुना को विराट रूप देखनो होय तो शान्ति साधिका के काव्य ते उत्तम स्थल अरु का है सक। मैया रोमती जा रही है हाथिन म लिपटी भई कलम ते सब्द छलकत जा रह हैं अरु आखिन को नीर पन्नान पै टपक रह्यो है। मैया के अँसुवन की करुना ते लिपटे भये पन्नान म ते एक दखिव जोग है

प्यारे गोपाल लाल
झर झर म झरत नैन।
तुम बिन न आवत चैन।
बैरी लगें दिन रैन।
का सौं कहौ हिय बैन।
बोलो कछु लाला भा।
तोहे साधिका मया बुलाय।
ना कुछ खाये ना कुछ पीये।
प्रति पल गान हो हो।
कान्हा, मनमोहन लाल रे!
प्रति पल हृदय विशाल र!!
तोहे साधिका मैया बुलाये।
सारी सारी रात पथ निहारे।
पल झपक नहि पाये हो हो।
कान्हा मन भावना, लाडले लाल रे!
गोपाल रे! ब्रज चद र!! गोविन्द आनन्द कद र!!!
तोहे साधिका मैया बुलाय।
शान्ति प्रभु नव तो सुधि ले ल।
प्राण हलक म आये हो हो।

साधिका अनुनय बिनयकरि अपन प्रभु अति दयाल बाल गोपाल नदलाल ते बेर-बेर दरसन दैकें क्रिताथ करिवे कौ निवेदन करे है। ऐसे अनेक पदन म वू परम्परागत भाव ते आराधना करती सी दीख है। नीचे लिखे भये पद मे जाई तरिया कौ भाव पूरी प्रखरता के सग प्रकट भयौ हैं। जा पद कौ 'दवहु दरस भाई' अपने बेटा के दरसन कूँ बाट देखती देखती थक मी गई बिहाल मैया कौ भाव विसेस रूप ते दरसनीय है

द्वारिकानाथ ! करुणानिधि !! देवहु दरस भाई !!!
मेर प्रभु अति दयाल बाल गोपाल नन्दलाल।
भक्त-बच्छल-दीनानाथ सन्तन सुखदाई।
अति समथ साई आप-वारण दोख सोक दाप।
जापे आप सदय भये ताहि आँच न आई।
पाप ताप हरणनाथ मेरी लाज तुम्हारे हाथ।
शाति ऐही आस लिये तेरी शरन आई।
पतित पावन परमानन्द काटो भव जाल फन्द।
अरस परस होई नाथ पाटो विपद खाई।
त्राहि माम! त्राहि माम!! दोख मेरे ना ही गुना।
आन मिलो ललन, अबै छाँडि के निठुराई।
द्वारिकानाथ! करुनासिन्धु!! देवहु दरस भाई !!!

सलौने बेटा की याद के बियोग म मैया कौ सरीर दहक दहक रह्यौ है। आँखिन ते झर-झर अँसुआ गिर रहे हैं। कठ अबिरुद्ध है गयौ है रोमते रोमते। नाय एक छन कौऊ चैन नाय

दहक दहक दव दहकत काया।
झर झर झूरत नैन।
शाति सबद केहि भाँति उचारौ।
मुख तें कहत बने न।
बर ! किमि लहि हौ पूरन चैन।

पीरा के छनन मे छनन मे हरेक कूँ अपनी मैया याद आवै है। शान्ति साधिका की बाल गोपाल के दरसन की पीरा जब भौतई तीव्र है जाये है तौ बिनके काव्य माहि अपनी मैया के सुमरिन के सग जि पीरा एक सग बिनके भावना म फूट परे है। ऐसे

स्थल पै व गामती गामती अपन बाल गोपाल की बाकी छटा पै मुग्ध होंती भई अपन मन कू मांति द है–

माई री मेरो मन हर्यो द्वारिकानाथ अति दयाल बाल-गोपाल नंदलाल।
मोर मुकुट सीस कान कुण्डन जगमग विसाल।
दम दमात चिबुक व्रज कठुला कठ मुक्ता माल।
कमल नयन कजरारे गोरोचन तिलक भाल।
झुकि झुकि रस लेत मुख कमल पै चिकुर भृंग-जाल।

सुनत रहू तुतने बैन, अनहद ध्वनि मधुर ताल।
रंगी सुरंग स्याम रंग टूटे भव बंध जाल।

शान्ति साधिका अरु बिनकौ काव्य अबई लौं समीच्छा जगत ते परिचै प्राप्त नाय कर पायौ है। साधना मय जीवन व्यतीत करती भई शान्ति साधिका आजऊ मौन भाव तें अपने बेटा कृष्न की याद माहि अपने मनुवा के वियोग के भावन कूँ सब्दन म ढारिब लगी भई है। बिनकौ पूरौ जीवन साधना ते ओत-प्रोत है। बिनके मीठे मीठे सब्दन से भावना कौ सागर हिलोर लैतो भयौ सहिरदै के मन कूँ आनन्द में डुबाय दे है। ब्रजभासा के संग संग हिन्दी अरु राजस्थानी भासा मेऊ इन्नें काव्य रचना करी है। परि, इनकौ अधिकास काव्य ब्रजभासा मेई रच्यौ गयौ है। जामें इन्नें रसिया ऊ लिखे हैं। कविता की सुन्दरता ते प्राप्त यस आदि की शान्ति साधिका कूँ कतई चिन्ता नाय। साहित्य के ममग्य बिद्वानन कूँ इनके जा वेम्नामयी साहित्य की रच्छा करनी चइयै। छोटी छोटी कापी के पन्नान म लिखे भये हजारो पद एक ते दूसरी जगह बिखरे परे हैं। प्रकासन की चिन्ता ते मुक्त शान्ति साधिका ने जा कारन कापीन के पन्नान कूँ बिसेस सम्हार के नाय रखौ।



प्रसाद अरु माधुर्यगुण के अनुपम चितेरे श्री हीरालाल 'सरोज'

हीरा लाल जी शर्मा सरोज को जनम गोवर्द्धन के पास गाम गाठौली म 20 अगस्त, 1929 कू भयो। पिता श्री श्याम लाल जी अरु मैया गोमती देवी सरल सुभाव अरु धार्मिक भावनान सो ओत प्रोत ही। भरतपुर के गाम पीपरा म श्रीमती गुलकन्दी देवी सो इनको ब्याह भयो। य करीब 30 बरस तानू भरतपुर कें श्री सनातन धर्म हायर सैकण्ड्री स्कूल के अध्यापक अरु प्रिंसिपल जैसे पदन कू सुसोभित करते भये अबई द्वै बरस पैले ई रिटायर भये हैं। आपनै आगरा कॉलिज सों अगरेजी मे एम ए कीनो। अग्रेजी के अध्यापक के रूप म आपकी प्रसस्ति ब्रजमडल म चहु दिस फैली भई है। अनुसासन के प्रति समर्पित श्री हीरा लाल जी नें जीवन भर अपने विद्यार्थिन कू अनुसासन को पाठ पढ़ायौ हैं। याके अलावा श्री हिन्दी साहित्य समिति ते ऊ आप बरसन ते जुडे भये हैं। हिन्दी साहित्य समिति की प्रबन्ध समिति के माननीय सदस्य हैबे के कारन अनेक बरसन ते आप या सस्था की रचनात्मक गति विधिन मे अपनो अमूल्य योग दै रहे हैं। विद्यालय की नियमित अध्ययन अध्यापन अरु प्रसासन ते अवकास ग्रहन करें पाछैं गत दो बरस ते आपने सिगरो समै भरतपुर जिले की प्रसिद्ध आवासीय महिला शिक्षण सस्थान 'आर्य महिला विद्यापीठ, मुसावर' कू अर्पित कर राख्यो है।

श्री हीरा लाल सरोज नै गद्य अरु पद्य दोनू छैत्रन में अपनी कलम चलाई है। आप जैसे अपने जीवन म नियमबद्ध रहकें काम करबे के विस्वासी हैं, बैसीई अनुसासन प्रियता को सटीक आलोक इनकी रचनान में बिखरौ परौ है। ब्रजभाषा के प्रति इनके मन को एकनिष्ठ समर्पित भाव अनायासई मन कू उद्वेलित कर देय है। रस की खान ब्रजभासा म एक ते एक सरस कविन नें अपनें मन के माधुर्य कौ गगाजल उडेलौ है। परिनाम स्वरूप ब्रज काव्य की महक चारों तरफ ऐसी अद्वितीय अनुभूतिन ते भर गई है जाते मन प्रफुल्लित हैवे दिव्य रग मे डूब जाय हैं। याई भाव कू लैके बिन्नै ब्रजभाषा महिमा प अपनी कविता की कलम चलाई है। विचार कू गद्य म प्रकट करनो तो भौ

आसान है, परि पद्य म विस्तार की सीमा अरु समझायबे के लहजे के अभाव म बड़ो कठिन है जाय है। और अगर कविता छन्द की सीमान म बँधी भई होय तो वाकी कठिनाई भौत बढ़ जाय है। रससिद्ध कवि के सामई या तरियाकी कठिनाई नाय आवै। या दृष्टि सो श्री हीरा लाल सरोज को काव्य विचार अरु भाव के सग दूध अरु पानी की तरिया ऐसो तादात्म करक चलै है कै बाय अलग नाय कियो जाय सक। ब्रजभाषा की महिमा के छन्द हमारी या बात को सबस बड़ो प्रमान है। याई सन्दभ म रसखान क 'छछिया भर छाछ' जैस प्रसगन को कैसो अनूठो प्रयोग बिन्न कीनो है। नीचे लिखे या उदाहरन त स्वत स्पष्ट है –

ब्रज भाषा सुकुमारि अनि, है ई रस की खान।
बड़े बड़े सुकवीन क, जाम तने बितान॥
जामै तन वितान रसील रस अधिकाई।
सतरग सौरभ भरयो, न बरनी जाय निकाई॥
ब्रह्म रह्यो है नाचं एक छछिया की आखा।
सिब ब्रह्मा छवि छकें धन्य तोको ब्रजभाषा॥

याई तरिया हीरा लाल जी नैं अपने छोटे छोटे सरस छन्दन मे ब्रजभाषा के श्रेष्ठ कविन कैं काव्य सौदय अरु जिनकी कविता के कथ्य के आलोक कू छोटी छोटी कुण्डलीन म ऐसी कुसलता के सग पिरोयो है कै बाये पढकैं सम्बन्धित कविन के काव्य वैसिष्ठ की झाकी एक सग मिल जाय है। आज चाहे कविन के काव्य सौंदय कू लैंके लिखे गय छन्द आदरणीय नई होंय पर ध्यान दवे की बात है कै जब हमारे देस म गद्य की एसो विकास नाय भयो हो तब वाके माध्यम सौं विचार कू गति दई जा सकैं ई। वा समै ब्रजभाषा क छन्दन मेई कविन के काव्य कौसल कूं प्रकट करब की परम्परा ही। हिन्दी खड़ी बोली के विकास अरु गद्य छन्न म याक विपुल प्रवस के कारन कविता क मच सौं कवि कौसल के वसिष्ठ कू प्रकट करब की परम्परा धीरे धीरे लुप्त सी है गई। हीरा लाल जी नैं अपनी कवितान म निर्जीव पड़ी ब्रजभासा की या कला म नये प्रानन को सचार कीनो है। बिन्नैं सूरदास मतिराम, सूदन लाल कवि जैस भौतर कविन क काव्य कौसल कू कुण्डली छन्दन म या तरिया पिरोयो है कैं एक सग कवि के काव्य गौरव की झाकी मिल जाय है, जो गागर म सागर की उक्ति कू पूरी तरिया चरितार्थ कर है। सूर न श्री कृष्ण की लीलान म जो वात्सल्य रस की मजुल जमुना प्रवाहित कीनी है वाकी आलोक कौन एसो जिज्ञासु काव्य प्रेमी है, जाकै हृदय म वू नई पौंचो होय। सूर के प्रतीक आदि सबन को प्रयोग हीरा लाल जी नै करकैं एक कवि के काव्य सौरभ कू एक-एक स्थान प प्रगट करबै की चतुरता दिखाई

है। सूरदास के विसै मे बिनें लिखो है। देखो उन्हहरन अरु हमारी बात की परख करो—

सूरा तोको धन्य है, सरजन कियो अपार।
बाल कृस्न लीलान सो, भरि डार्यो भडार॥
भरि डार्यो भण्डार, कहू पै धेनु चरावै।
चन्दा मांगै मातु कहू नवनीत चुरावै॥
ग्वाल करै किलकारि, मोद मन है भरपूरा।
वात्सल्य बेछोर, धन्य तोको है सूरा॥

याई तरिया जब बे सूदन के काव्य व्यक्तित्व कू एक छन्द म पिरावै प्रयास करै हैं, तो बिनकी सैली, उक्ति वैचित्र की भगिमा दूसरी तरिया की है जाय है। सूदन ओज के कवि हैं, इन्नें युद्धन को आखो देखो चित्रन कविता मे कीनो है। सूदन के काव्य की सबसो बडी विसेसता है कै बिन्नें अपने छन्दन मे पात्रन की मनोभावना अरु बिनके वार्तालाप कू लिखो है। पात्रन के या कथनक की सबते बडी विसेसता है कै बिन्नें पात्र के अनुसार बाकी भासा मे अपनै कवित्त, सवैया अरु छन्द रचे हैं। सूदन के कविता की ई विसेसता ऐसी अनमोल काव्य सौंदय ते लिपटी भई है, जो रीतिकाल के दूसरे काऊ कवि मे ढूढ ते नाय मिलै। प्रमान कू उदारहन प्रस्तुत है—

सूदन पूसन से उगे, ब्रज मंडल के माहि।
सिरज्यो सूरज को चरित उपमा दूजी नाहि॥
उपमा दूजी नाहि, सप्त जुध्दन म चमक्यो।
भूषण-चन्द समान बीर रस भारी गमक्यो॥
अलकार बहु छन्द कवित्त कानन मे भूसन।
भासा पचामृती वाह रे! कविवर सूदन॥

हीरा लाल जी न रितु बरनन केऊ भीतरे छन्द लिखे हैं। ब्रज भूमि पै झूमते भये कारे-कजरारे मेघ कवि के सब्दन मे ऐसे लग हैं जैसे नील, पीत, स्याम रग के मेघन मैं जैसे रगोली मचा डारि, हैं, अथवा बादर ये आकास मैं ज्यों बादर नई है कै जे मदमस्त गजराज हैं, जो झूमते भये गरज रहे हैं। पावस के मेघन की उत्प्रेक्षान की लडी पै लडी अरू रूपक की बहार अरू उपमा मे भीने मीने सौंदय के संग कितैक रमणीक भावन के सग या नीचे लिखे कवित मे उतर हैं ये बादर देखो——

झूम-झूम लूम लूम, घिरि आए कजरारे,
नील पीत श्याम, रग रगीली मचाई है।
पवन के झकोरे पाय, डोलत हिंडोरे से,
मत्त गजराज करें, नभ ज्यों नचाई है।
रेलन पेलत है, दामिनी सग भेलत हैं,
खेलत हैं खेल, खूब करैं लरजाई है।
दौरि दौरि परस्पर, बारैं हैं पहारै नभ,
मेघमाल आय भूरि, भुड़क मचाई है।

बसन्त की बहार पावस मी तरिया ब्रज भूमि मे एक मीठी-मीठी गुदगुदाती आनन्द बरसाय दे है। हीरा लाल जीनैं अपने बग त चित्रन म ऐसी लगैं है क श्री महिला विद्यापीठ भुसावर कै आस पास कैं बस त ई बसन्त कै सौदय कू साकार कर दीनी हाय। महिला विद्यापीठ के दोनू तरफ आमन क बाग है। जापै सबेरे सञ्झा फागुन क मौसम म अपनी मीठी तान छेडे है। याके सगई दूर तानू फल भए पीरे पीरे फूलनते लदे सरसों के खेत देखतेई मन मे अनूठौ रस घोर देय है। भुसावर के बस त की या अनुपम छटा कू आन द के विभोर है के नीचे लिखे या कवित्त म कवि नैं तुमई देख ल्यौ कितनी सु दरता के सग लाय्यौ है—

आयौ लहरातौ इठलातौ, ऋतुराज मस्त,
जगल म मगल, सुराज सरसायौ है।
गामत रसालन मे कोकिला, रसीले गान
मलि दन मन आनँद अपार लहरायौ है।
म द बहै मलयन सुसीतल सुगध सनी,
राम-रोम बलिनि, नवेलिनि हरषायौ है।
ऐसी लसैं सरसौं, चुनिरया धारि केसरिया
सुबरन के भुराज ज्यों सुहागौ बिरारायौ है।

हीरा लाल सरोज जीनैं अपनैं काव्य म परम्परा के निर्वाह कै सग-सग आधुनिक जन-जीवन कू प्रभावित करबैं वारे प्रसगन कू बी कुण्डली छदन मे बडी खूबसूरती के सग उतारी है। राजनीति, मँहगाई देश प्रेम जैस जीवन के विभिन्न प्रसगन पै इनैं अपने काव्य मे खूब कलम चलाई है। ऐसी लगै है कोई बात बिनकू बुरी लगैं तौ बे तत्काल कुण्डलि छ द म अपने मन के भाव कू प्रकट कर देय है। अबई कछु दिनां

पैले हीरा लाल जी मेरे सग बैठकैं अखबार पढ रहे ह, वा दिना समाचार पत्र की प्रमुख खबर ई कै सक्ति के बल पै ईराक नैं छोटे से देस कुवैत पै कब्जो कर लीनौ। हीरा लाल जी या बात ते बडे उद्वेलित हे। तत्काल बिन्नैं लठिया जाकैं हाथ है सब बाई कै साथ' लैंके नीचे कौ छन्द लिखिकैं अपनी वेदना प्रकट कीनी। या नीचे लिखे छद ते आप स्वय निरनय कर लेओ कैं हमारौ कवि हीरालाल राष्ट्रीय समस्यान के प्रतिऊ सजग नाय अपितु अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पै प्रभावित करब वारी समस्यान के प्रति ऊ पूरी तरिया जागरूक है देखौ छद-

लठिया जाके हाथ हैं न्याय वाइके साथ।
उल्टी-सूधी सगमली, सग जग नावै माथ॥
सब जग नावै माथ सघ राष्ट्रन कौ डरपै।
सुरसा मुख कौं फार बिदेसन देसन हुरपै॥
सकती वारौ स्रेष्ठ और सबई हैं घटिया।
भैस वाइकी रहै, हाथ जाके होय लठिया॥

याई तरिया जब इन्दिरा गाधी न चिकमगलूर के चुनावन म ठाडी है कै तत्कालीन भौतेरे पुरुसार्थी राजनेतान कू चुनौती दीनी ही तौ हीरा लाल जी के कवि हृदय ते भौतेरे छद अनायासई निकर परे। बानगी के रूप मे साहस अरु धीरता की साक्षात साक्षात प्रतिमा बनी श्रीमती इन्दिरा गाधी के प्रति बा समै के कवि के सोच की एक बानगी देखौ-

घिरि घिरि चहुदिसि, आ रहे सकट के अम्बार।
जाय डटी रन छेत्र म, तदपि न मानी हार।
तदपि न मानी हार नारि किलकार रही है।
झासी वारी रानी सम, ललकार रही है।
धीरज साहस सम अटूट, जीतैं नाचौं फिरि।
इन्दिरा रही ललकार, ब्यूह चक्कर मे घिरि घिरि॥

हीरा लाल जी नैं मँहगाई जैसी दैनिक जीवन कू विसम बनायबे वारी समस्या पैऊ अपने भावन कू प्रकट कीनौ है। मँहगाई कू लैकैं बिन्नैं देस मे नेतान कू खूब फट्कार्यौ है। मँहगाई के कारन रसोई बुझ गई है अरु लोगन के मनन मे अगारे दहक रहे हैं। पर देस के करन धारन कू याकी नेक्ऊ चिता नाय। मँहगाई पै लिखी बिनकी भौतेरी कुण्डलीन म ते बानगी मे एक प्रस्तुत है-

बात जनहित की करें, काम बडे बमेल।
कीमत अकासी भई, चीनी कोला तेल ॥
चीनी कोला तल, बिलखते बासन सारे।
बुझी रसाई भभक उठी दहके अगार ॥
कब तक भूख सहे, तिहारी कोरी घातें।
माल खसम के साथ, यार सग हँसि हँसि बातें ॥

करून रस जैमे घोरे अरु उजरे पावन भाव हीरा लाल जी के मनते जा तल्लिनता के सग प्रकट भए हैं कँ मन स्वच्छ अरु निरमल हे कँ आनन्द के आकास कू स्पस करब लग जाय है। बिनैं करुन रस मे ज्यादातर मैया अरु बेटा के प्रसगन कू लियौ है। अपनी बात कू पुष्ट करबे के प्रमान में हम विनको एक जसुदा की बिथा कौ एक कवित प्रस्तुत कर रहे है। जामे बेटा ते बिछरी एक रोमती बिलखती मैया के हृदय की करूना कू साकार कियौ गयौ है—

जसुदा की बिथा की मिलत न थाह कहूँ
बज्जुर समान हीयौ, कोमल जिन कियौ है।
असुअन की धार है, रोके ते रुकत नाहि
लाज बस ढाँक मुख सारी निज लियौ है।
का ह का ह कहकह, हतबुद्धि भई मैया,
मानत नाहि का ह नकु, चन्द दै दीयौ हैं।
सखि सो कहत अरी, रूठयौ जा कारन भट्ठ,
लाला ने दूध बिनु चीनी आज पीयौ है।

पद्य की तरिया ब्रज गद्य के छत्र म ऊ श्री हीरा लाल जीनै अपनी साहित्यिक कुसलता को बडोई रमनीक परिचै दीनौ हैं। इनैं ब्रज गद्य म ब्रज के बिभिन्न सास्कृतिक परिवेस कू लैके निबध ता लिखई हैं। परि सग सग कविन की आलोचनात्मक समीक्षा बिभिन्न आलेखन म अमर कीनी है। इनके ब्रज गद्य मे प्रसाद अरु माधुरी गुण ऐसौ लिपट कँ चल है कँ पढ़बे वारे को हृदय ब्रज रस मे डूबकँ आन ठ रस मय है जाय है। अधेड उमर की बनी-ठनी एक राजस्थान की नारी को इनके द्वारा खैंचो गयौ चित्र देखो। याये पढ़तेई आपकू हमारी बात को प्रमान मिल जायगो—

'अधेड़ उमर की कछू पढ़ी लिखी सी सुघर बनी ठनी सी कछु अँधेरे वरन की वा भारो भरकम महिला नै पीर रग के चमकनी साटन के बसता की माऊ इसारौ करते भए, थूथरेऊ बिगार कै, आखन ने तरांय कै और नरांय नरांय कै एकई सास ऐसी भभक कै कही जैसे चिमनी म ते धुआ निकसै काए।'

ब्रज गद्य म जब वे समीक्षा लिखवे बैठें तौ कवि के भावन की एक एक परत कू उभारते चले जाय हैं। समीक्षा मे कवि की बानगी तौ हृदय म उतरेई है, सगई ब्रज गद्य में जो काव्य को रसामय है वू पढ़वे वारे के मन मे मूलधन के सग आयवे वारे ब्याज की सी आनन्द मयी अनुभूति देय है। बानगी देखौ—

साचो बात तो जी है कै सूर कौ उद्देश्य कृष्ण की दैनिक चर्यान को बरनन करनो हो, भागवत की तरिया अलौकिकता अरु आध्यात्मिकता को प्रदसरन नाय है। विनकी भक्ति में तो सख्य भाव अरू वात्सल्य भाव की ई प्रधानता है। गोपाल कृष्ण के रूप को बरनन अरु बिनके सखान के स्वाभाविक अरू निरमल प्रेम कौ दरसन सूर कौ प्रमुख विसै है। कृष्ण के सोयवे जागवे, खायवे, पीवे, रूठवे अरु गैया चरायवे के अनेक भावात्मक अरू मौलिक चित्तर सूर न खैंचे हैं।

इनकी लिखी भई समीक्षात्मक गद्य रचना 'श्री हरि राम व्यास, अरु बिनकी रस भक्ति' ब्रज काव्य मे समन्वयादी दृष्टिकोण याय की,' 'भरतपुर माहि वतमान ब्रज भाषा जानिन सजन', 'ब्रज कौ अल्प ज्ञात कवि रतन सूदन कवि, 'ब्रज के अल्प ज्ञात कविरत्न बलबीर,' के अलावा 'नजीर की नजर माहि श्री कृष्ण,' 'ब्रज काव्य अरू ब्रज पछी कोयल 'ब्रज कालीन कवि माहि मति राम,' 'ब्रज की गौ स वद्धन परम्परा,' "ब्रज काव्य मे बिखरी अलख,' 'ब्रजभाषा मे शृ गार बरनन' 'भक्त कवि मति राम की राधा' ब्रज साहित्य मे होरी जैसे भौतेरे विसैयन पै इन्नै खूब जमकै ब्रज गद्य मे लिखौ है। इन्नै ब्रज गद्य मे कई रेखाचित्रऊ लिखे हैं। 'प्रो धनेकर' इनकौ ख्याति प्राप्त रेखाचित्र है।

हीरालाल सरोज की भाषा मुहावरे दार अरु ब्रज के भौरे ब्रजवासी के आचालिकपुट की सोधी सोधी सुगन्ध लिये भये है। इन्नै अपनी कवितान में परम्परित बरनन के अलावा आधुनिक जन जीवन की समस्यान कू पूरी निष्ठा कै स ग उतारी है। हीरा लाल जी के भाव न काऊ की नकल है और न काहू ते उधार लिये भये है। विनके मन मे तो जो उठै है वाये सपाट भाषा मे लिखवे के ये हामी रहे हैं।

काव्य सौरभ

ब्रज-रस

तजि है मन मूरख स्वारथ कू गिरिराज तरे ब्रज सो सजि है ।
सजि है ब्रज भूषण मोहन सों सुभ गीतन प्रान हिय बजि है ।
बजि है मन प्रीत पुनीत जुरे नद नदन नीति हिये भजि है ।
भजि ह मन कु ज निकु जन म जिन कु जन मे बसुरी बजि है ।

नद नदन के उर की रसपूरित नेहमयी ब्रज की धरनी ।
सुखसारमयी तप प्रीतमयी मधुगीतमयी बरनी करनी ।
सुभ कजमयी छवि मजुल सी सन चदन केसर की भरनी ।
रस रगमयी अनुरागमयी भव बधन की जरनी टरनी ।

वर्तमान

नैनन मे भरके असुआ ब्रज की धरनी नित रोवत डोलै ।
बैनन मे सिसके हिचकी भर दारुन भीत भरे मुख बोलै ।
सैनन म करुना भरकै मन मीत भरी कपती हिय खोलै ।
मत देर करैं मन मोहन रे तुमरी ब्रज मात दुरी जग डोलै ।

लोचन नीर भरे सिसकें रसखान सने ब्रज म सुर सिगरे ।
सूर सने ममता मन के सुर रोय दुरें घिर के जग पजरे ।
मात पयोधर मौं बरसे उर नेह भरे बिलखें पथ सुघरे ।
आय सहाय करो ब्रज भूपण टूट गये तुमरे सुर सबरे ।

विवेचना



ब्रजभाषा अरु राजस्थान

ब्रजभासा प्रेम अरु करुना की भासा हुतै। सौरसेनी अपभ्रंस ते निखरि कैं मधुर-सलौनो रूप धारन करिवे वारी ई भासा हमारे देस माहि प्राचीन काल तेई प्रेम, दया अरु करुना लुटाय रही है। दच्छिन भारत के आचायन्नैं अपनी मातृभासा छाडि जाय अपनाय कैं जामे भगती ते हमारे नित्य के जीवन मे ऐसौ मकरन्द घोरि दीनौं हो कैं जानैं सदीन तलक जा देस कू बुरे दिनन म एकता की प्रेम की डोरी मे बाधि कैं रखो है। एक पै एक विदेसी आक्रमन के सामई हमारे देस के लोगन को मन टूट चुक्यो हो। चारों तरफ आक्रमन अरु असान्ति के कारन साहित्यकारन तलक ने अपने पापन को सुमरन कर ईसुर की प्रार्थना तलकई स्वयम् कू सीमित करि दीनौं हो। दच्छिन के इन भगतन्नैं समाज के पुरोधा साहित्यकारन कू ललकार कैं जा बिपत्ति काल माहि कृष्ण की लीलान के मनोहर चित्रन ते क्रन्दन करते भये हमारे देसवासीन कूँ मन की करुना को रस्ता बतायो। जाई को परिनाम हुतो कैं सूर नैं घिघयाबौ छाड़ि कैं कृष्ण की लीलान की खिरकी ते भारत के जन जन कूँ करुना को मंजुल स्पर्स प्रदान करौ। जा कारन ब्रजभासा नैं मानव जीवन के वे प्रसंग अरु भाव लिये हुतैं जाते करुना की जि पीयूसधारा घर घर माँहि पहुचाई जा सकैं। वात्सल्य अरु वियोग के भावन कू जाई कारन ब्रजभासा ने इतेक महत्व दीनौं है।

घर के रसमय जीवन की भासा—ब्रजभासा नैं हमारे आंगन की किलकारीन कू आदर दीनो है। सिरी कृष्ण कोरे ब्रजभासा के सलौने बच्चा नांय। आज कौन सो घर हुतै जाम जसोदा नाय, नन्द नाय, जामे ल्हौरे ल्हौरे सलौने कृष्ण नांय। जा भासा नैं बालक कृष्ण के नाम पै हमारे घर के तुतलाते बैनन कू आदर दैकैं देस की भावी पीढ़ी कू सुदृढ़ बनायौ हुतै। गैया जसोदा अरु गोपाल हमारे घर की पौरी के रसमय चिरन्तन सत्य हुते। जा तरियां ब्रजभासा नैं गोकुल के गोपाल कू देसवासीन के घर घर को गोपाल बनाय दीनो है।

छल-कपट कू खण्ड खण्ड करिवे वारी भासा—ब्रजभासा मन की भासा हुतै। जानैं

मन के मालन कू जा देस ते बन-बन माहि पहोंचायो है। मानुस की बुद्धी के बनाय भये पाखण्ड के छल कपट सिगरेई जाके सामई सात है गय। जा भाषा के पास जा आयो बूई जाको है गयो। इब्राहीम मियां दुनिया के प्रपचन ते झुरसते-झुरसते जा भाषा के ढिग आये तो वे प्रेम मे बावरे है गय। जागीरी, राज-पाट सबर्ई छाडि के ब्रज की करील कुजन माहि आय बसे अरु इब्राहीम मिया ते रसखान बनि गये। ऐसे सँकरान इब्राहीम मिया हत जि जा भाषा के प्रेम नेह अरु करना के मालन कू चखि कें निहाल है गये। जाति अरु मजहब के सबई बधन जाके ढिग आयकें ढील है गये। गोवर्द्धन की परिकम्मा के रस्ता जा सच कू पुकारि-पुकारि के कहि रहे है। ह्या पै सबई जाति के लोग ऊच नीच के भेद भाव की कारोंच त रहित है कें तिरो कृष्ण की लीलान के गीत गावत कधा ते कधा मिलावते भये गिर्राज जी की परिकम्मा देम है।

देस कू अखण्ड भाव धारा माहि बांधवे वारी भासा—जाई की परिनाम हुता के प्रेमकरुना वात्सल्य के कृष्ण न जा देस कू कन्याकुमारी ते कसमीर तलक ऐसी अटूट मानवता की भावधारा माहि बाध्यो के भासा, रीति रिवाज आदि की बँभिन्नता टूटि गई। जी कारन हतै के आज लो कोई महापुरुष ऐसो भयो होय जाके सग भासा की ऐसो तादात्म्य भयो हाय। ब्रज को मतलब हतै कृष्ण अरु कृष्ण को मतलब हत ब्रज। केरल के महाराजा राम वर्मा स्वाति तिरुनाल' नाम ते ब्रज कविता करते हतें। महाराष्ट्र के ज्ञानेस्वर, नामदेव जैसे अनक सतन ने ब्रजभासा मे काव्य रचना करी हतै। सिंधु प्रान्त के श्री लालजी जैसे ब्रज के भीतरे कवि ने जा भासा ते देस कू अखण्डता म बाध्यो हतो। पजाब के गुरुनानक अरु बिनके ब्रज के पदन कू कौन हतै जो नाँय जान। रनजीत सिंघ के दरबार माहि ब्रज कविन की पूरोई जमघट हतो। गुजरात के भालण, नरसी मेहता, दयाराम के सग सग सकरान ब्रज के कविन की रचना आजऊ गुजरात के आचर माहि गूज रही है। बच्छवारेन न तो ब्रज पाठसाला ई खोल दीनो ही जाम दूर दूर ते विद्यार्थी ब्रजभासा पढिबे जायो करे हे। बगाल की धरती न जा भासा कू जो सलौनों रूप दीनो वाकी महिमा सब बिदित हतै। बगाल में ब्रज क कवि यशोराजखान नें जाको नामई ब्रज बुली धरि दीनो हो। मिथिला के विद्यापति, आसाम के सकरदेव, माधवन्ध के ब्रजकाव्य की महिमा तें जि सिगरो प्रान्त आजऊ महक रहा है। राजस्थान की गौरव मीरा के गिरिधर नागर के दिव्य प्रेम की सुरभि ते देस को कौन सो एसो भाग हतै जो सुवासित नाय है रहा। मन की करुना माहि आकठ डुबायबे वारी जा भासा की गूज तें जा देस को कौन सा एसो कोनों हत जा आज लो नाय थिरक रहो?

राजस्थान के कोने-कोने माहि जा भासा के सुर—राजस्थान की कौन सो ऐसी जगे हतै जाम जा भासा की महिमा के सुर नाय सुनाई देवे। सामान्य जन की तो बातई का, ह्या के नरेसन तलक न जा भासा माहि रचना करि जाके गौरव कू बढ़ायो हतै।

जैपुर के ब्रजनिधि किसनगढ के नागरीदास, जोधपुर के जसवन सिंघ झालावाड के सुधाकर अरु भरतपुर के बल्देव सिंघ जैसे कछु नरेसन को उल्लेख करिबौ भौत होयगो।

फोट विलियम अरु पराधीनता माहि सुराज के घोस की भासा — कलकत्ता के फोट विलियम कालेज की खिरकी ते जब पच्छिम की सिच्छा अरु सम्यता हौले-हौले जा देस माहि पाम पसारिबे लगी बा समैं ऐस के कौने कौने ते आये सिच्छाधारीन कू ब्रज भासा पढिबो अनिवार्य हतो। चौंकि अंगरेज अपने अनुरूप भारतवासीन कू ढारवे के काजे ऐसी भासा चाहते हत जो जा दस के सिगरे लोगन माहि समझी जामती होय। जा कसौटी पैंऊ बिनकू ब्रज भासाई मिली। बा समै गुजरात भासा भासी लल्लूलालजीनें पढायबे कू ब्रजभासा गद्य माहि प्रेम सागर' ग्रन्थ लिखो हो। आजऊ जा ग्रन्थ की हमारे देस मे जितक बिक्री हतैं, सायद हिन्दी के अन्य काऊ ग्रन्थ की होय। अरु जीऊ सचाई हतै के 1857 की आजादी की लराई माहि पराजय पीछे भारतेन्दु एव बिनकी मंडली के कविन ने जा भासा ते परतंत्र देस की दुरदसा को चित्रन करिके देस बासीन के घर-घर मे आजादी की अलख जगायी हतौ। राजस्थान के गिरिधर शर्मा नवरत्न की 'मातृ-वंदना' रचना की आजादी की ललक के उभरते भये सुरन कू कौन भूल सकै है ?

राष्ट्र भासा हिन्दी अरु ब्रजभासा एव अकादमी—राष्ट्र भाषा हिन्दी अरु ब्रजभासा को का कोई दुन्द है सके ? सही तो जि हतै कै राजस्थान सरकार नें न्यारी न्यारी भासान की अकादमी बनाय के राष्ट्र भासा के बिसाल भवन कू मजबूत कोनौ है। छेत्रीय भासान की उन्नति राष्ट्र भासा की उन्नति कोई परिनाम हतैं। गत कछु समै ते राष्ट्र भासा माहि गमक मिठास अरु सलोनेपन के किंचित अभाव के कारन वाके प्रति कहू कहू थोरी ऊरुचि सी दीखे है। बाके पीछे सुधीजन गभीरता ते सोचें तो जि धुनि सबन ते जादा सुनाई परे है के राष्ट्र भासा के प्रेमी अरु प्रससकन ने वाकी नीम माहि जडे भए छेत्रीय भासान के मजबूत पत्थरन की ओर इतेक ध्यान नाय दियो, जितेक की जरूरत हती।

छेत्रीय भासान की प्रगति हिन्दी को प्रयाग—हिन्दी माहि परम्परा अरु संस्कृति की सुगध तो छेत्रीय भासान के सदीन के साहित्य प्रसूनन तेई आवेगी। छेत्रीय भासा के मिठास की मधुर जमुना, देदीप्यमान संस्कृति की सुरसति अरु साधना के तेज की गंगा को संगमई राष्ट्रभासा हिन्दी की सच्ची प्रगति को तीरथराज प्रयाग बन सकेंगो। छेत्रीय भासा के सूर, तुलसी सूयमल मिश्रन, बाकीदास विद्यापति आदि कू हिन्दी ते निकास दिंगे तो का बचेगो बाके ढिग ?

आजऊ धूरि भरे जीन सीन पुरान बस्तान माहि छेत्रीय भासा के सूर, तुलसी अरु सूयमल मिश्र जैसे सैकरान कवि बन्द परे हैं। ऐसे ब्रजभासा के हजारन साहित्यकार

साधना के तेज तें अनमोल साहित्य कू पैदा करिकें परलोक कू सिधार गये। होले होले बरस पै बरस निकरते चले गये अरु धीरे-धीरे जि अनमोल ग्रंथ नष्ट हेते चल जा रहे है। कछुवन के बसजन ने अजान माहि वा साहित्य-साधना की रूलियाऊ बनाय डारी। थोरे भौत बचे बिनकू दीमक चाट गई अथवा मूसन के दातन के मसालें बनि गये। ऐसे हमारे देस के अनमोल साहित्य की रच्छा, सवधन अरु प्रकासन के काजें छेत्रीय भासान की अकादमी ते ज्यादा उपयुक्त अरु का है सके ?

छेत्रीय भासान माहि लोक साहित्य को गंगाजल—छेत्रीय भासान के पास लोक परम्परा अरु लोक साहित्य को ऐसो पावन गंगाजल हतै जाम अवगाहन करिवे ते मन की सिगरीऊ करौंच पखरि कें मन माहि उल्लास की दूधिया चादनी परगट है जाये है। लोक साहित्य की सिरीवृद्धी को आसय हतै राष्ट्रभासा हिन्दी की समिरद्धी। जा बिधि सो राष्ट्रभासा की ब्रिद्धी करिवे कू ब्रजभासा के मच तें ई 'राजस्थान ब्रजभासा अकादमी' पूरी तरिया ते अर्पित हतै'।

ब्रजभासा के साहित्यकारन को आहुवान – राष्ट्रभासा की जा पताका कू पूरे वभव तें साहित्य – जगत के आकास माहि फहराव मे लगी भई जि राजस्थान ब्रजभासा अकादमी देस बिदेस के कौने कौने के रहबैया ब्रजभासा के साहित्यकार, विद्वान, प्रेमी अरु बिसेस रूप ते राजस्थान के निवासीन कू अकादमी की विभिन्न गतिविधीन मे भाग लेबे कू पूरी निष्ठा तें आमन्त्रित करे है। जीवन की जि ब्रजभासा नये युग की नय भावन के स्वर के संग स्वर मिलायकें नई नई उद्‌भावनान अरु प्रतीकन के संग ब्रज के मच ते हिन्दी के सलोने रूप कू सजावे कू देस के कौने कौने माहि ब्रज भासा के साहित्यकारन को आहुवान करे है।



व्रज कौ फाग रग

होरी प्रीति की देवी की रमनीक आराधना को त्योहार है। होरी के उच्छव पै प्रीति की देवी की आराधना के माध्यम ते जीवन के प्रति मीठी मीठी आसा अरु आस्था को विरोट भाव जगायौ है जा व्रजभाषा नें जीवन के हर दुख कू, हँसि हँसि क काटवे को रस्ता दिखायौ है जा व्रजभाषा नें निरासा के घुप्प अँधेरे माहि टटोरते टटोरते परि खिलखिलाते गन्तव्य की ओर वढिवे कौ सदेसौ दीनो है जा व्रजभाषा नें। जाई कारन मानव जीवन के जिन छनन मे उल्लास कू लुटायवे को, जहा कही मौको आयौ हतै, व्रजभाषा ने वाको भरपूर उपयोग करो है। होरी के ओसर पै ऐसोई तौ लुभावनौ मोहक बातावरन नियन्ता ने हमार देश की धरती कू दीनौ हतै। गुलाबी गुलाबी कछू अनूठोई मौसम होय है फागुन को। जा मौसम माहि प्रक्रितिऊ अपने पत्तान के मैले लत्तान कू फेंक दे है अरु नये अवगुण्ठनधारी ल्होरे ल्होरे पतरे पतरे, कछू तिरछे फिरते से चीकने-चीकने, हल्की हल्की गुलाबियत लई भई कोपलन कू धारन करिवे लग जाम हैं जा फाग के मीठे ओसर पै।

सजीधजी अल्हड अलबेली प्रक्रिति। मदमस्त व्रज की धरती। दूर-दूर तें आयवे वारे नीरस लोग होरी पै ह्या के बातावरन माहि ह्या की धरती की मोहक गमक त रसिक बनिकें नाचवे लगे हैं, थिरकवे लगे हैं। फूलन के पराग की मोहक सुगधन मे डूवी भई व्रज की गारी, मिसरी से मीठे उलाहने, मन-भावन मनुहार, पीरी पीरी बयार, टोका टाकी के वूरे मे सनी छीना झपटी मितवान की अनेक अथन वारी चुलवुलाहट। देवर भाभी के परस्पर नेह माहि आकठ डूबी भई रस क्रीडा, जीजा सरहज की मनोरम चचल किलोल गोप गोपीन के रग बिरगे पिचकारीन ते, निकरिवे वारे प्रेम रस के रग, उडत-घुमडते गुलालन के बादर जे व्रजभूमि के उल्लास के कछू नाम हतैं।

व्रज की होरी मन के सुवासित भावभीने मकरन्द कू चारों तरफ लुटाइवे को पव है। व्रजभाषा नें जा विसाल भारत कू एक सस्कृति दीनी है, जीवन काटिवे को मधुर रस्ता बतायौ है। जीवन कू अनुराग ते हँसते-हँसते जीवे कौ सलीका दीनो है। जीवन

तौ नादनाद है, रोग के काटौ, शोक में काटौ सह-सह के काटौ। ब्रज की धूरि न जा जीवन कू पल पल करते आनन्द ते पाटिव की संस्कृति दीनी है जा देस कू।

ब्रज को आँगन आँगन, कन-कन, राग रंग उल्लास के रनक झुनक रस रंग माहि डूबिकें थिरक उठै है जा अनूठी निगोडी होरी पै। गली-गली में छैल छबीले छनान को मन मचल उठै है। छैला छलिया बन जावै है होरी की या मीठी मीठी कछु अनोखी अल्हड बयार माँहि।

बसन्त पाँचें के आगमन तेई ब्रज की छलिया हौले-हौले रस तें भरिवे लगें है। होलास्टक आमते-आमते तौ जि रंग सिगरी सालभर की मर्यादान के बंदेजन कू तोरि के सिगरी ब्रज भूमि कू अनूठे भाव माहि डुबो देय है। यौवन की उमंग के सिवाय कछु नाय दीसे। बुढापोऊ ठुम ठुमाय उठै है या होरी पै ब्रज माहि। रननारें छलिया प नाय रयौ जाये। छलिया तें रसिया बने ब्रज के यौवन कौ जि अल्हड उल्लास गायन नृत्य आदि मे फूट परें है। झरोखे तें टुकर-टुकर मदमाती रसीली ध्यावती ललीऊ साल भर लौं रह सिगरे अवगुण्ठन उतार कें, उतर परें है, रस की जा बगिया माहि। मर्यादा रोग शोक के भगि जाये है। मृदंग झाझ के बीच बंसी की सलोनी मीठी मीठी धुन कछु अनूठो रस घोर देय है, जा प्रीत की देवी की आराधना माहि। होरी एक भाव है। मन के सिगरे मैल कू निकासबे को त्योहार है होरी। आज देस मे प्रीत की देवी की आराधना की विसेस आवस्यकता हतै। तो आओ हम सब मिलकें—जा अनुराग के वैभव मे डूब जायें।

हा-हा हो हो हो हो होरी,
खेलत अति सुख प्रीत प्रगट भई।

—सूरदास



ब्रजभाषा के मानक सरूप की समस्या

ब्रजभासा को मानक सुरूप का होय ? काऊ जमाने मे गद्य की समरिद्धि ब्रजभासा पै आज जि बिचार करिबे की आवस्यकता आ गई है कै जाकौ मानक सुरूप का हौनौं चइयै ? खरीबोली के प्रचार प्रसार ते पैलै ब्रजभासा हमारे देस माहि परस्पर विचारन के आदान प्रदान को प्रमुख माध्यम हो। परि ब्रज गद्य की उपेच्छा अरु हमारे (ब्रजवासी) दैनिक जीवन म खरीबोली के प्रबेस के कारन आज ब्रजभासा के मानक सुरूप पै बिचार अरु चिन्तन करिबे कौ सबते मुख्य प्रस्न आ गयौ है। ब्रज छेत्र की मैया-भैन धन्य हैं, जिनें अपने घर ते जा भासा कूँ नई निकरन दीनौं। ब्रज के साहित्यकारन कूँ तौ जि भासा परायी है गई। परि, इन मैया भैननें जा भासा कूँ आँचर ते चिपकाय राख्यौ है। हमारे 'शतदल' की ब्रजभासा कौ आदस ब्रज छेत्र की जेई आदरनीय मैया भैनन की भासा रही है। ब्रज ते ऊर्जा लैकै बाते म्हौं मोरि कै फैसन कूँ ब्रज लिखिबे बारे हिन्दी रचनाकारन की ब्रज आदस मानी जाये अथवा मरिबे ते बचाइबे बारी मैया-भैनन की जीवन्त भासा कूँ बनायौ जाये। जि बिचारनीय प्रस्न है।

हमारे ढिंग बिभिन्न भागन ते रचना आ रही है। इन रचनान मे ब्रजभासा के अलग अलग रूप प्रतिबिम्बित है रह्यै है। ब्रजेतर के लेखकन की रचनाऊ आय रई हैं। इन रचनान माँहि खरी बोली के सब्दन कौ प्रयोग है। कई पत्रन में सुझाव है कै तत्सम सब्दन कौ प्रयोग मान लैनौं चइयै जे हमारे दैनिक जीवन माँहि घुर गये हैं।

हम पाछैं मुरि कै देखैं हैं तौ ब्रजभासा गद्य की एक लम्बी परम्परा मिलै है। ब्रजभासा कूँ सौरसेनी की बेटी मानी जाये है। बारहमी-तेरहमी सताब्दी के 'सदेस रासक' अरु 'प्राकृत पैंगलम्' ग्रन्थन मे ब्रजभासा के दरसन हैवे लग गए हे। जा समै के जैन ग्रन्थन मे ठाऊ, अइसो, तइसो, कइसो रूप ब्रजभासा कूँ दरसामे हैं। 'प्राकृत पैंगलम्' के अज्जु, घरू, लेहू, हमारो जैसे भौतेरे सब्द ब्रजभासा गद्य के संसव कू दरसामे हैं। भक्ति-काल माँहि तौ ब्रजभासा गद्य अपने पूरै उभार पै आ गयौ हो।

बिठ्ठलनाथ जी के अपन सेवकन कूँ लिग भए पत्रन म व्याहुवहारिक अरु नित्य के दैनिक जीवन के काम म आयबे वारी ब्रजभासा के दरसन होय हैं। उदाहरन–'अपरंच तुमारे समाचार पत्र ते पाए। सदा भागवत सरन रति रहियो।' गुसाईं बिठ्ठलनाथ जी के पुत्र सिरी गोकुलनाथ जी के लिखाएँ हुँ वार्ता ग्रन्थ 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' अरु 'दो सौ वैष्णवन की वार्ता' ब्रजभासा गद्य के पुस्ट प्रमान हैं। रीतिकालीन ग्रन्थ ब्रजभासा गद्य ते अटे परे हैं।

रीतिकाल के पैल चरन मांहि ब्रजभासा गद्य को पतन सुरू है गयो हो। फोर्ट विलियम कालिज के अध्यापक जान गिल क्राइस्ट के आदेस पै ब्रजभासी लल्लूलाल जीने ब्रजभासा कूं खरी बोली की तरफ मोरिबे की सुरुआत करी। दूजी ओर ब्रजभासा गद्य मूल रूप मांहि धार्मिक छेत्र मई बिचरतो रह्यो। आधुनिक युग मेऊ साहित्य के नाम प समरिद्ध ब्रजभासा गद्य मांहि रचना लिखिबे मे बरे बरे साहित्यकार घबराय गए। दिल्ली आकासवानी ते ब्रज माधुरी' अरु मथुरा आकासवानी केन्द्र की स्थापना ते ब्रज-गद्य की तरफ ब्रज साहित्यकारन म थोरी भौत ललक जगी। रेडियो रूपक, प्रहसन, वार्ता, कहानी आदि के प्रयोग तें मरनासन्न ब्रज-गद्य के सरीर मांहि थोरी भौत हलचल पैदा भई। सिरी सरनबिहारी गोस्वामी को उपन्यास 'पूँछरी को लौठा' के प्रकासनेऊ ब्रज के साहित्यकारन कू ब्रज गद्य लिखिबे कू प्रेरित नईं कीनों। खरीबोली के जा कोलाहल म 'पूँछरी को लौठा' के सुरऊ दबि से गए। ब्रज गद्य कूँ गति दैबे वारी ब्रज साहित्य मण्डल की मुख पत्रिका ब्रज भारती कू ब्रज-गद्य की पहल करनी चइयँई परि म्हाऊ खरीबोली के विकास की बाधा क भय ते आधुनिक ब्रज गद्य कू विकसित नईं होन दीनों। अब प्रसन्नता की बात है क डा भगवान सहाय पचौरी जी के सहयोग ते 'ब्रज भारती' कूँ अगले अक ते अपन घर की सुधि आई है।

आखिरी म एक बात अरु – जमानों बरी तेजी त बदलि रह्यो है। पैल के जीवन अरु आज जीवन म भारी अन्तर आ गयो है। मान्यता बदलती जा रही है। सोचिबे को नजरिया बदलि रह्यो है। ऐस जा बदलते भए जमाने म ब्रज साहित्यकारन कूँऊ ब्रजभासा की व्याख्या अरु वाको ढंग बदलनों परैगो। छन्द-बंधन की लेज कूँ ढीलो तो करनोई परैगो।



ब्रजभाषा की प्रासगिकता कौ सवाल

ब्रजभाषा पाच सौं बरस तानू हमारे देश म पूरब ते पच्छिम अरु उत्तर ते दच्छिन तक काव्य भासा रही है। दुर्दिन म ब्रजभासा ने देसवासिन कू प्रेरना के सुर दीने अरु सघस की ऊर्जा दीनी ही। ब्रजभासा ने हमारे घर के थिरक्त मनोहर बाल भावन कूँ आदर दै कें हमारे जीवन को मार्मिक भावन ते साच्छात्कार करायौ है। अनुराग, उल्लास प्रेम, वात्सल्य अरु करुना की सस्कृति कू जनम देवे वारी ब्रजभासा ते ऐसी कौन सी चूक है गयी जो थोरी सी अवधि म वू साहित्य जगत ते लुप्त सी है गयी। हमारे देश की भावात्मक एकता अरु मानवीय भावन के उजागर करिबे म ब्रजभासा की भूमिका पै काऊ ने विचार करिबे कौ कस्ट कीनौ है ? सम्प्रति मे मानवीय सौदय कूँ प्राप्त करिबे की ललक के धीरे धीरे जजरित हैबे के कारन ब्रजभासा को आकसनऊ कम है तो चलो गयो। परि आज हमारे देस की वतमान परिस्थितीन माहि मानवीय सौदय कू हृदयगम करिबे की जितेक आज आवस्यकता है वितेक जाते पैंले कवऊ नाय रही।

ब्रजभासा नैं हमारे देस मे अनुराग, उल्लास, प्रेम, वात्सल्य अरु करूना की सस्कृति कूँ जनम दैके सच्चे मानवतावाद को भावना कू देस के कोटि कोटि लोगन के मनन मे साथक कीनौ हो। जाई कारन ब्रजभासा नै अपनी अनुभूति के अतिनिकट सिरी कृस्न कू अपने बिवेचन को आधार बनायौ। ऐतिहासिक दस्टि ते राधा-कृस्न, नन्द यशोदा, गोपी उद्धव आदि कौ चाहे कोई महत्व नई होय परि सास्कृतिक दृस्टि ते इन पात्रनको उल्लेखनीय स्थान रह्यौ है अरु रहेगो। ब्रजभासा नें इन पात्रन के सास्कृतिक सरूप के माध्यम तेई अधिकासत अपन भावन कू साथक कीनौ है। जीवन के मार्मिक प्रसगन मे ब्रजभासा ने भागवत के इन पात्रन कू अपनी बानी को प्रमुख आधार बनायौ। सिरी कृस्न की लीलान कू सस्कृत के पाडित्य के घेरे ते निकार के बाकू कोटि कोटि निरन्छर लोगन के हृदय तानू पहुचावें को काम सदीन तलक ब्रजभासा नें कीनौ है जेई कारन है क ब्रजभासा के कृस्न के सामै सस्कृत भासा क सिरी कृस्न पीछे रह गये। दच्छिन भारत के आचायनै तो ब्रजभासा म भक्ति को दिव्य मिठास अरु लालित्य घोर दीनौ। ब्रजभासा के कारन भक्ति पडितन के घेरे ते निकर कै जन सामान्य तक पहौंच गई।

दच्छिन भारत के भगत आचायन्नैं सिरी कुस्न की भगवत भक्ति के काव्य म सगीत कौ मिस्रन करकैं व्रजभासा के माध्यम ते भारतीय सगीत कू ऐसी उर्जा दीनी क जाकै कारन आज लौं भारतीय सगीत की जीवन्त धुजा फहराय रही है। व्रज काव्य कौ सगीत के सग ऐसौ मजुल तादात्म्य भयौ के हमारे देस कौ सगीत बिदेसी सासन काल मेऊ ईरानी सगीत के सामै समर्पित है के तिरोहित नई है सक्यौ। अक्बर जैसो महान सम्राट भारत के सगीत कू दच्छिन भारत के आचायन केई कारन ईरानी सगीत कू विजय नई दिवाय सक्यौ। आस्चय होय है कै राज्याश्रय ते कोसन दूर व्रजभासा के आचायन्नैं मदिरन कौ आस्रय लकै जनता के बीच मे मानवतावादी कोमल भावनान के आधार पै राज्यास्रय की अपार सक्ति म फलते फूलते ईरानी सगीत कू पराजितई नई कीनौ अपितु भारतीय सगीत कू इनैक कछु दीनौ कै जाकै कारन भारतीय सगीत आज लौं अपने पामन पै ठाडौ है। जेई कारन है कै व्रजभासा के अभाव में भारतीय सगीत की कल्पनाई नाय करी जा सकै है। जब जब क्रूर सासकन ने तलवार के बल पै मदिरन के सगीत कू नस्ट करिबे कौ अभियान सुरू कीनौ, बा समै सार्वजनिक मदिरन कू व्रजभासा प्रेमीन्नैं व्यक्तिगत सपत्ति के रूप मे निजी हवेली बनायकैं हमारे देस के महान सगीत की रच्छा कीनी। जाई कारन मदिरन के जा सगीत कू हवेली सगीत कहबे की परम्परा सुरू भई।

व्रजभासा न बाल जीवन कू अपने साहित्य म सर्वाधिक आदर दीनौ है। सत्य तौ जे है कै व्रजभासा ने सिरी कुस्न के माध्यम ते हमारे घर की किलकारी अर हमारे बाल जीवन के तुतलाते बैनना कू आदर देके हमारे जीवन म ऐसौ मीठौ मीठौ रस घोरा है जैसौ अयत्र मिलबौ दुलभ है।

व्रजभासा के प्रेम, वा मल्य, करुणा के भावन ने बिदेसी सासन काल म बिदेसीन कू इतक प्रभावित कीनौ कै एक समै ऐसौ माहौल बन गयौ हो, कै कन्याकुमारी त कस्मीर तलक अय भासा भासी अर ह्या तक कै बिदेसी तलकन्नैं व्रजभासा के बाल भाव के प्रति अपने मन कौ आदर प्रकट करिबे म गौरव कौ अनुभव कीनौ। इन आदर प्रकट करिबे वारन म बिदेसीन की सख्या अर विनके भावना भरे काव्य ते प्रभावित है कै भारतेन्दु बाबू हरिस्चन्द्र जान्नैं तो ह्या तक लिख दियौ।

अली खान पठान सुता सह व्रज रखवारे।
सेख नबी, रसखान, मीर, अहमद हरि प्यारे॥
निसमदास, कबीर ताजखा बगम यारी।
खान सेन कृस्न दास, बीजापुर, नृपति दुलारी॥

पिरजादी बीबी, रास्ती पदरज, नितसर झारिये ।
इन मुसलमान हरिजनन पैं कोटिन हिन्दू वारिये ।।

रसखान, रहीम, शेख मुबारकअली खा, नवी, मीर, अहमद, तानसेन, कृष्नदास, ताज जैसे बहुतरे कवि अरु कवियत्रीन ने ब्रजभासा के बाल भाव की सरल, मनोहर लीलान कू अपने काव्य मे श्रद्धावत स्थान दकें हमारे देस म सदीन तक कौमी एकता अरु साम्प्रदायिक सौहाद की अनुपम उदाहरन प्रस्तुत कीनो है । इन मुसलमान कविन के अलावा उर्दू के अनेक सायरन्ने ऊ ब्रजभासा के जा वालभाव के प्रति भौतई आदर प्रकट कीनो है । उर्दू के इन कविन म नजीर अकबराबादी कू उर्दू साहित्य को सूरदास कह दै तौ कोई अत्युक्ति नई होयगी । जा सदभ मे बिनकी अनेक कवितान मे ते एक लबी कविता के एक छद कू देनो प्रर्याप्त रहेगो —

सब मिलकैं यारो कृष्न मुरारी की बोलो जय ।
गोविंद छैल कुज बिहारी की बोलो जय ।
दधि चोर गोपीनाथ बिहारी की बोलो जय ।
तुम भी नजीर कृष्न मुरारी की बोलो जय ।
ऐसा था बासुरी के बजैया का बालपन ।
क्या क्या कहू मैं कृष्न कन्हैया का बालपन ।

चार सौ बरस पैले गुजरात के कच्छ मे पैदा हैवे वारे सत मोजुद्दीन तौ आजहु अपनी मौन अनुभूतीन के सग म वृदावन की कुज गलीन मे ब्रजी के बालभाव के दरस परस कू रोमते, बिलखते डकरामते मारे मारे फिर रहे है इन अनुभूतिन के सग–

फागुन आयो झाझ डफ बाजें भीर भई अति भारी ।
मोय तो आस तिहारे मिलन की भूल गई सुधि सारी ।
मोय गुलाल लाल बिन तोरे भई है रैन अधियारी ।
असुवन को अब रग बनो है नैन बने पिचकारी ।
बृदावन की कुज गलीन मे ढूढत ढूढत हारी ।

अपने समै के ख्याति प्राप्त जागीरदार अब्राहिम मिया तौ ब्रजभासा के जा बाल भाव की एक झलक मात्र देखवे कूँ ऐसे बावरे भये कै रसखान बनकैं हमारे देस मे बिन्नैं मिठास की ऐसी उज्जवल धारा बहायी जामे अवगाहन करवे ते मन पवित्र हैं कै आनद ते खिल उठै है । अपने एक छद म जीवन की आत्मकथा कू उतारते भये लिखो है बिन्नै —

देस विदेस के देते नरेसन रीझ कि कोऊ ना बूझ करेगी।
ताते तिन्हे तजि जानि गिर्यो गुन गुन औगुन गाठ परैगो ।।

बासुरी वारो बडो रिझवार है स्याम जु नैक सुढार ढरेगो।
लाडलो छैल वही तो अहीर को पीर हमारी हिये को हरेगो ।।

या तरियाँ ब्रजभासा ने करूना वात्सल्य के मिठास मे हमारे देस कूँ कन्याकुमारी ते कस्मीर तलक सदीन तानू ऐसी मानवता की भाव डोरी मे बाध्यो जाते भासा, रीति रिवाज अरु ह्या तक क प्रदेसवाद की सिगरी विभिन्नता टूट गई। हमारे देस को स्यात ई कोई ऐसो कोनो बचो होय जामे ब्रजभासा के प्रेम, करूना अरु वात्सल्य के मिठास के सुर नई गूजे होय।

ब्रजभासा के मिठास अरु करूना के जे सुर जा भाषा के लुप्त हैबे त धीरे धीरे नष्ट होते गये। सिगरे दस के लोगन के मनन मे करुना अरु प्रेम पैदा करब बारी कोई ऐसे सुर नई पैदा है सकै जसी ब्रजभासा रही। परिनाम सरूप मानवतावादी प्रेम भरे साहित्य के अभाव मे लोगन के मनन को सतुलन धीरे धीरे बिगडनो गयो। करूना अरु प्रेम की जगै पै निष्ठुरता जसे अवगुन हमारे देसवासिन के मनन में बढते चले गय। चौंके मानवतावादी पियूसधारा को जो प्रमुख आधार ब्रजभासा ने ग्रहन कर राख्यो हो वू बाकै सगई सुसुप्त है तो चलो गयो। जेई कारन है के आज एक व्यक्ति कू अनेक व्यक्तिन के प्राण लैबे म नेकऊ तो सकोच नाय होय। प्राण लेबैय के जा मन म भाव पैदा करिबे को माहोल उत्पन्न कीनो जाय कै मरिबे बारे के घर बारे एसे ई छटपटामिगें जैसे कै बाकै अभाव म बाकै घर बारे छटपटा सकै है। राष्ट्रीय स्तर पै ब्रजभासा के मानवतावादी भावन कू पुन उत्पन्न कियो जाय तो हमारे देस मे परस्पर बढ़ती भई मार काट कू रोक्यो जाय सकै है।

अत आज कै प्रसग मेऊ ब्रजभासा अरु वाके साहित्य को महत्व कम नाय भयो अपितु पैसे तो बढ़ोई है।



मिठास की सस्कृति और ब्रज

राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी नें 19 जनवरी 1986 कू अपने जनम के सग जि निश्चय कीनो के हमकू ब्रजभाषा के मच ते रास्ट्रभासा हिदी को वैभव वढानो है। अकादमी ने खूब मथन कीनो, परस्पर विचार विमस कीनो तो निस्कस सामै आयो के हिदी भासा मे मिठास, लालित्य अरू नेह एव भाईचारे के सुरन कु औरऊ पुख्ता करिबै कू अकादमी की पत्रिका ब्रज गद्य मेई निकरनी चइये। पत्रिका की चारो तरफ ते हैबे वारी सराहना अरु याके ग्राहकन की बढती भई सख्या कू देख कैं हमारो औरऊ उछाह बढयो है।

राजस्थान सुरू तेंई ब्रजभाषा अरू ब्रज सस्कृति को प्रबल आराधक रह्यो है। आजादी तें पैले तत्कालीन राजपूताने की रियासत के राजाग्नं अपने आस्रय माहि ब्रज-काव्य अरु सस्कृति कू पर्याप्त प्रौत्साहन दीनो है। जैपुर नगर निर्माता सवाई जयसिह अरु राम सिह तो आगरा मथुरा प्रान्त के सूबेदार रहे हे। कृष्ण भट्ट कलानिधि राय शिवदास खत्री जैसे सैकरान ब्रजभासा के कवि इनके दरबारन की सोभा बढामते हे। आमेर नरेश राजा मानसिंह नें वृदावन मथुरा माहि अनेक मदिरन को निरमान करबाय कैं ब्रज सस्कृति कू जीवित रखिबे को अथक प्रयास कीनो हो। इन राजाग्नं आमेर के निकट एक रम्य स्थल को नामई कनक वृदावन धरि दीनो हो। सवाई प्रताप सिह के दरबार मे तो ब्रज कविन को पूरोई जमघट हो। स्वय प्रताप सिह जी 'ब्रजनिधि' के उपनाम ते कविता करते हे। ब्रजनिधि के दरबार म सरदारन अरू सूरमान की तरियां ब्रज कवीन की बाईसीऊ विनके दरबार मे हती। महाकवि पदमाकर गनपति भारती, जगदीश भट्ट भोलानाथ, गिवराम, शिवदास,देव, रामनारायण एव रसरासि विनमे प्रमुख हे। समै समै पै इन सबन की सभा जुडती अरु ब्रजनिधिऊ वामैं भाग लते हे। कोई एक विसय लैके अपनी-अपनी प्रतिभा ते बामे ब्रजभासा मे कविता करते, तरै-तरै ते व्यजना को सौन्दय बिखेरते। इनके प्रमान आजऊ जैपुर के पोथी खानें म सुरच्छित हैं। जाई तरियां जोधपुर नरेस जसवन्त सिह, अजीत सिह, अभय सिह आदि नरेसन

के आसय म ब्रजभासा काव्य की खूब रचना होमती ही। इनके अतिरिक्त मारवाड़ छेत्र के चारण कवि नरहरिदास बारहट, करनीदास कविया, भारतमान, दुर्गादत्त बारहट स्वामी गणेन्द पुरी जैसे सैंकरान चारन कवि भये हे जिनको नाम अबई इतिहास के पन्नान पै नाय आयौ। जोधपुर नरेस विजय सिंह जीनें तो जा छेत्र कू ब्रजई बनाय दीनो हो जाई कारन आजऊ जोधपुर म कह्यो जाय है–

जोध बसायौ ज धपुर, ब्रज कीनौ ब्रजपाल।

झालावाड़ को पुरानौ नामई ब्रज नगर हो। ब्रज के श्रीनाथ जी कू आसय राज स्थान के मेवाड़ छेत्र म मिल्यौ। जहाँ आजऊ ब्रज स स्कृति जीव त है। भरतपुर करोली अरु किशनगढ तो आजऊ ब्रजभासा मैं रगे भय हे। किशनगढ के नागरीदास को जा स दभ मैं उल्लेख मात्र करिबौ पर्याप्त होयगौ। ब्रजभासा को प्रारम्भिक ग्र थ 'विजयपाल रासौ' को सरजन करोली मई भयौ हो। जाके अतिरिक्त देवीदास, जदुनाथ करौली के ब्रजभाषा के प्रसिद्ध कवि भय हे। ह्या के नरेस रतनपाल को ब्रजकाव्य प्रेम कौन कू याद नाय ? भरतपुर के सूदन सोमनाथ, अखराम, रसनायक, घासीराम जैसे ब्रजभासा के महाकविन तें हिन्दी भासा आजऊ जगमगा रही हे। बल्लभ सम्प्रदाय के सात पीठन म ते पाच राजस्थान की धरती पै हैवे ते प्रमानित होय है के जा प्रान्त को ब्रज स स्कृति अरु भासा तें अति निकट को सब ध रह्यौ है।

साची देखी जाय तो ब्रजभासा ने राजस्थान ई नई अपितु सिगरे देस कू उल्लास अनुराग अरु मिठास की स स्कृति दीनी हे जासों देस के जन जीवन म सदा कष्ट कू भूलि कें जीवन के स घष म हसते हसते आगे बढिवे को चाव रह्यौ है। रसिक सिरोमनि श्री कृस्न या स स्कृति के मूल स्रत्स रहे हैं। देस को कौन सो कोनो है ऐसी कौनसी भासा है, ऐसे कौन से लोग है जो या छबीले, मन मोहन श्री कृस्न के लोक रजक सरूप सों प्रभावित नाय भये। ह्या तानू कँ ब्रज स स्कृति के केंद्र बि दु श्रीकृस्न के सुरूप ने काऊ समै मैं जीवनते हिन्दू मुसलमान के भेद कू भुलाय दीनौ हो। अलीखान, रसखान, सेख नबी, मीर, अहमद ताज तानसेन वालो खा, अलीबख्श जैसे मुसलमान कविन्नें ब्रजभासा मे श्री कृस्न के प्रति अपने मन के भाव प्रकट कीने ह। अलवर के मुसलमान कवि अलीबख्श को एकई उदाहरन जा क्रम म देनौ पर्याप्त होयगौ।

दधि चोरत पकर्यौ गयौ दर्यौ माखन चोर।
अब आयौ है दाव प तेरो डारु गाल मरोर॥
तेरो डारु गाल मरोर चोर नित माखन खायौ।

तू रोजीना भग जाय सुसरे आज दाव पै आयो ॥
चल तेरी मैया पास ल चल, मरयो भुखमर्यो जायो।

ब्रज भाषा ने साहित्य के छेत्र म जा मिठास अरु ललित्य कू प्रकट कीनो है बाते कछू चढ़िके जा प्रदेश के लोगन ने अपन मन के भावन कू गीतन म बिखेरो है। ब्रज भूमि की का बैयर का मानुख का बच्चा सबन के रोम रोम मे ब्रजभासा के मिठास की उल्लास पूरे उभार के स ग आजऊ व्याप्त है। ब्रज स स्कृति को के द्र बि दु गिरिराज गोवरधन रहे हैं। स्यात गिरिराज गोवरधन भारत के ऐसे देवता है, जामे ऊ च-नीच के भाव नेकऊ तो पास नाय आय पाये हैं। ऊ च-नीच को भेदभाव भूल के सबई लोग समान भाव ते सग सग परिक्म्मा गोबरधन म दे हैं। ऐसे गिरिराज गोवरधन के प्रति लोक विसवास के मनोहर भाव जुरे भए है। ब्रज स स्कृति मूलत कृषि प्रधान स स्कृति रही है। कृषि पै ब्रज की लोक स स्कृति मे जितेक साहित्य की रचना करी गई है। बितेक स्यात अ य काऊ भासा ने कीनी होयगी। आज के वैग्यानिक माहोल मेऊ ब्रज के लोग पूरी तरिया जागरूक हैं। अपने अनुभव ते कृषि की भविष्यवानी ब्रज के कृषि के लोकगीतन की अपनी विसेसता रही है। अबई तानू ब्रज लोक सस्कृति को कृषि विसयक अध्याय अग्यातई रह्यो है। हमने लोक जीवन मे बिखर भये इन भावन कू समेटबे को प्रयत्न कीनो है। ब्रज के सामाजिक जीवन की एक एक रीति रिवाज गीत सगीत ते भरी परी है। जनम ते लके ब्याह सादी अरु जीवन के सस्कारन के अलग अलग गीत ब्रज लोक कला की अपनी बिसेसता रही है। ऐसे सामाजिक रीति रिवाजन के लोकगीतन कू एक स्थान पै समेट के समाप्त हैते इन गीनत कू सायक करिबे को प्रयत्न कीनो गयो है। वाग्वैदग्धता ब्रज लोक जीवन की अपनो विसेसता रही है। बात कू कहब को ढग ब्रज लोकजीवन के उल्लास अरू मस्ती को सबन ते बरो प्रमान है। एक-एक वाक्य मे मुहावरे अरू लोकोक्तीन को मीठो मीठो ब्रज सस्कृति की सरसता को ज्वलन्त साक्ष है। वाग्वैदग्धता के इन भावन कू सटीक प्रमान क सग समटबे को प्रयास कीनों गयो है। ब्रज लोककला न हमारे देस मे बालभाव कू पर्याप्त आदर दीनो है। बच्चान के इन गीतन मे बालसुलभ चपलता, सरलता के दरसन तो होय ई है सगई ब्रज सस्कृति के वाग्वैदग्ध रूप की मोहकता तेऊ जे गीत अछूते नाय। बच्चान के हर खेल के गीत है ब्रज लोक जीवन मे। गुरू के ढिंग जायकें पढ़िबे के गीत हैं ब्रज लोक-जीवन मे। इन सिगरे गीतन की सरस बाननो हमनें स जोई है।

ब्रज के लोकोत्सवन को उछाह भरो मिठास तो पढ़ें अरु अनुभव तेई मालुम पड सके है। ब्रज के ठेठ अचर के गीतन कू इकठौरे करिकें बिनकू क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत कीनो गयो हैं। इन गीतन के पढ़िबे ते प्रमानित होयगो के आजऊ ब्रज अचर के लोग सास्कृतिक द्रिस्टी ते कितेक समरिध्द हैं। अध्यात्म की एक ते एक कठिन उक्ति इनके मौंह सै सुभाविक लोक सस्कृति के प्रतीकन तें प्रकट होय है। जि इनकी सास्कृतिक सम-

रच्दि को सबन त बरो प्रमान है। ब्रज अचर के लोगन आज की दैनिक जीवन की समस्यान के कैसी उल्लासमयी भासा म अनुराग भरे समाधान निकासे है याकौ विवेचन कीनौ है। ब्रजबासी सुरू तेई सौन्दय प्रधान रहे हैं। हर वस्तु अरु भाव माहि सुन्दरता के दरसन करिबौ ब्रज स स्कृति की अपनी एक अलग चेतना रही है। साक्षीकला जा सुन्दरता की आराधक ब्रज स स्कृति को सबन तें बरो प्रमान है। मदिरन ते लकै लोक जीवन की गहराई तानू साक्षी के रूप म बिखरे भये ब्रज लोकजीवन के सुन्दरता के इन महनीय भावनान कू इकठौरो कीनो है। सौन्दर्य प्रधानता तें कई दफ जीवन की समस्यान की उपेच्छा है जायो करै है। परि ब्रज को लोक कलाकार सौन्दय को पुजारी हैबे के स ग स ग देश काल की समस्यान तें नाय कटो भयो। रास्ट्रीय आदोलन माहि ह्या के कला कारनै एक त एक खौलती भयी रचना करिकै लोगन कू देस की आजादी माहि प्रान विसर्जित करिबे की प्रेरना दीनी है। स गई आज के भारत की समस्यान पेऊ ब्रज कौ लोक कलाकार पूरी तरिया जागरूक है।

आज के स दमन मेऊ ब्रज स स्कृति ने हमेसा परम्पर भाईचारे के भाव पैदा कर हमारे देस के लोगन कू जोरबे को प्रयास कीनौ है। साम्प्रदायिक सौहाद पैदा करिब मे ब्रज स स्कृति को अपनो अनूठों इतिहास रह्यो है। ब्रज स स्कृति के देश के लोगन कू जोरबे के इनई सुरन की बानी मिली है।

काव्य सौरभ

ब्रज-रस

पीत परी मुरली धरनी ब्रज बीत गये कवि के सब खजन।
सीत भरे सिसके सुर सतन नाय रहे अलिके रस गु जन।
प्रीत परी भयभीत थकी करनामय है बिलखे ब्रज कु जन।
सूख गयी ब्रज की सुसमा रसहीन भये प्रिय के सुर रजन।

गाय फिरें वन म भटकी सुधियान सनेह गुपाल निहारे।
गोधन की महती लखि प्रीत न दीखत आज कहा अब धारे।
माखन दूध दही अब लागत ज्यो नभ फूल खिले सज न्यारे।
गोप गरीब भय दु खिया रस मूक गये सब छांड किनारे।

ब्रज सस्कृति मे रचौ बसौ नाथद्वारा

ब्रज सस्कृति मूल रूप सों देवालय प्रधान है । राधा अरु कृस्न के अभाव मे ब्रज सस्कृति की कल्पनाऊ अस भव सी प्रतीत होय है । मध्यकालीन वैस्नव आदोलन कौ केन्द्र बिन्दु ब्रज सस्कृति रही है याते पैले ऊ गुप्तकाल मे भावगत धम ब्रज सस्कृति कोई मूल स्रोत हो । मध्यकाल में वैस्नव भक्ति आदालन ज्यादातर राधा अरु कृस्न पै केन्द्रित हैबे के कारण ब्रज मे ऐसी छायौ कै ना केवल वैस्नव अपितु राधा कृस्न ते सम्बधित भौतेरी सास्कृतिक परम्परा अरु मान्यता राधा कृस्न के रूप मे ई स्वीकृत भई । कहबे की आवस्यकता नाय कै वैस्नव भक्ति आदोलन ते पैले स्यात ब्रज कला अरु सस्कृति कोई रूप नाय हो । मध्यकाल मे जा वस्नव भक्ति आदोलन की सुरूआत दच्छिन भारत ते भयी । रामानुजचाय, निम्बाकाचाय अरु माधवाचाय के माध्यम ते राधा अरु कृस्न की सस्कृति उत्तर भारत मे उत्कष की तरफ बढी । 15 वी-16 वी सताब्दी तानू वल्लभ अरु चैतय महाप्रभु ने वैस्नव भक्ति के राधा कृस्नमय रूप कू सिगरे भारत मे फलाय दीनो । परिनाम सरूप राधा कृस्न की लीला भूमि ब्रज प्रदेस भक्ति आदालन कौ मूल केन्द्र बिन्दु बन गयौ । ब्रजभूमि भक्त अरु सतन की भूमि बन गयी । वा समै देस के कौने कौने ते भक्ति के प्रति अपने जीवन कू अर्पित करबे कू राधा अरु कृस्न के दसनन कू आतुर कोटि कोटि लोग ब्रजभूमि की तरफ उमडबे लगे ।

ब्रज, वस्नवजन अरु वल्लभ सम्प्रदाय —

ब्रज की धरती दच्छिन के भक्त अरु सन्तन के आगमन ते पावनता के सौंदय ते महक उठी । परिनाम सरूप ब्रज धारा तत्कालीन सिगरे वैस्नव भक्ति सम्प्रदाय की प्रेरना स्रोत बनी । वैस्नव सम्प्रदायन कौ तीथ स्थान हैबे के कारन ब्रज सिगरे देस कौ मुख्य आकसन कौ केद्र बन गयौ । जा समै भारत पै विदेसीन के एक प एक क्रूर आक्र-मण हैबे लगे हे । अकबर कौ समै जरूर कछु सान्तिमय हो । परि बाकी समै मे निष्ठुर

बिदसी आक्रमन्न देस कू हिलाय क रत दीनो। कला संस्कृति की बात जब हाय जब प्रानन की रच्छा है जाय। एस संकट काल म ब्रजभूमि म आय क तपस्वी बैस्नव संतनें अपनी साधना क तज ते सिगर भारत कू अलोकित करकें भारतीय जीवनचर्या की आत्मा कू नई मरन दीनो। बस्नव पुंगवनें भारतीय जीवनचर्या क सालित्य कू जीवित रखब क संग संग हमार देस की कला अरु संस्कृति की महत्व की रच्छा के संग संग बाय यमय कू द्विगुनित करिब म नेंकऊ कसर नाय छोड़ी। ब्रज के अन्य बैस्नव सम्प्रदायन के संग संग बल्लभ सम्प्रदायनें भारतीय कला अरु संस्कृति कू जीवित रखब मे जो योग दियो है वाय कभी भूलो जाय सक है ? जाई को परिनाम है कि हमार देस की कला अरु संस्कृति ब्रज भूमि के बैस्नव संतन के उपकार अरु अवदानन ते भरी पड़ी है। काव्य, संगीत, चित्र मूर्ति अरु स्थापत्य कला के प्रानन की रच्छा के संग-संग उत्कर्ष की माधुर्य धारव म ब्रजभूमि के बैस्नव संतन की जितेक प्रसंसा करी जाय बिनको जितेक अहसान मानो जाय बितेंई थोरो है। इनकी तपस्या के आलोक ते सिगरा देस जगमगा उठयो हो। हमार देस को स्यातई कोई एसो सहर होय जो ब्रज भूमि के बैस्नव संतन की साधना के प्रसाद ते वंचित रह्यो होय।

पुष्टि सम्प्रदाय के आचार्य बल्लभ अरु श्रीनाथ जी को प्राकट्य—

पुष्टि सम्प्रदाय के आदि आचार्य बल्लभाचार्य जी विष्णु सम्प्रदाय की परम्परा म एक स्वतंत्र भक्तिपन्थ के निर्माता शुद्धाद्वैत दर्सन सिद्धांत के मानवे बारें अरु अनुग्रह प्रधान भक्ति सेवा समर्पित पुष्टिमार्ग कू चलायब बार हे। कह्यो जाय है कै बल्लभाचार्य जी के पुरखा आन्ध्र राज्य म गोदावरी नदी के पास कारवाड नाम के स्थान के निवासी हे। वे भारद्वाज गोत्रीय तैलंग बामन हे। बल्लभाचार्य को जनम सम्वत 1529 मे मानो जाय है। कछु विद्वान बिनको जनम 1535 को माने है। बल्लभाचार्य जी को प्रारम्भिक जीवन काशी म व्यतीत भयो। बिनकी सिच्छा म्हांई भई। आपने पढ़ाई पूरी करे पाछे भागवत साहित्य के प्रचार प्रसार कू सिगरे देस की यात्रा कीनी। वार्ता साहित्य के आधार पै बिनें प्रमुख रूप ते तीन यात्रा कीनी ही। सं 1549 की फागुन शुक्ला ग्यारस गुरुवार कू बिनके मनमे ब्रज की यात्रा को विचार बनो अरु सं 1550 की गर्मीन मे वे ब्रज मे आय। गोकुल मे बिन चातुर्मास करते भये भागवत की कथा करी। कह्यो जाय है कै बल्लभाचार्य जी अपने तीसरी यात्रा के समै सं 1556 मे दूसरी दफै ब्रज म आय हे। वार्ता साहित्य ते ग्यात होय है कै बल्लभाचार्य जी मथुरा ते गोवर्द्धन आये म्हां बिनें सद्दू पाडे के चौतरा पे निवास कीनो। आन्योर गाम के निवासी अरु ग्वारियान ते बिनकू मालूम परी कै गिर्राज पहाड़ी की गुफा म भगवत सरूप को प्राकट्य भयो है। माधवेन्द्रपुरी ने बिनको नाम गोपाल रखके पूजा को आयोजन कीनो हो। पर विपरीत धर्म प्रवत्ति के कारन वे वाकी व्यवस्था नाय कर

सके। आचाय जी नें म्हा पौच कें उक्त सरूप क दरसन कीने अर विनको नाम गोव-द्ध न नाथ अथवा श्रीनाथ जी धर दीना। म्हाके आसपास के निवासीन कूं उत्साहित करके गोरधननाथ (श्रीनाथ जी) की सवा पूजा करबे की व्यस्था कीनी। बिनकी प्रेरना ते श्रीनाथ जी के रूप म भगवान श्री कृस्न की बाल किसोर भावनात्मक सेवा पूजा सुरू भई। बा समै आचाय बल्लभ ने गिर्राज पहाडी पै छोटा सौ मदिर बनाय दीनौ। ब्रजवासी श्रद्धा पूवक बिनकी सेवा करबे लगे। बल्लभाचाय जीन्नें अनक ब्रजवासीन कू अपनो सिस्य अरू सेवक बनाक श्रीनाथ जी की सवा पूजा कूं अपित कीनौ। जामे कुम्भनदास को प्रमुख नाम हो।

ब्रज मे श्रीनाथ-देवालय निर्मान अरु अस्टछाप—

बल्लभाचाय जी स 1558 मे फेर ब्रज आये अरू बिन्नें हरिभक्त पूरणमल खत्री के सहयोग ते श्रीनाथ जी के मदिर के निर्माण के काम की सिरूआत करी। वार्ता साहित्य म लिखौ है के स 1556 के बैसाख सुक्ल तीज कू श्रीनाथ जी के मन्दिर को निर्मान प्रारम्भ भयो। मन्दिर के निर्मान म अनेक तरिया की बाधा आती रही पर म 1776 मे या मदिर के निर्मान को काम पूरो है गयो। श्री गोवरधन नाथ जी के प्राकट्य की दृष्टि सो बल्लभाचाय जी बा समै अडेल सो गोवरधन आय अरू स 1776 की वैसाख सुक्ल तीज कूं बिन्नें बडो समारोह करके श्रीनाथ जी को पाटोच्छव कीनो। धीरे धीरे श्रीनाथ जी को वैभव दिन दूनो रात चौगुनो बढतो गयो। दूध घर की सेवा कूं संकरन गैया ब्रजवासीन्नें भेंट करी। कुम्भनदास सूरदास अरु कृस्नदास बल्लभाचाय जी के सेवक बनके श्रीनाथ जी की सेवा पूजा कूं अपित है गये। सूरदास जी कूं श्रीनाथ जी को प्रमुख कीतनकार नियुक्त कियौ। कुम्भनदास कूं बिनको सहयोगी अरु कृस्नदास कु मदिर को प्रमुख सहयोगी बनायो गयो। बल्लभाचाय जीन्न अपनी यात्रा मे जिन जिन स्थानन पै श्रीमदभागवत को प्रवचन कीनो म्हा बिनकी बैठक बन गयी। बल्लभ सम्प्रदाय म इन बैठकन कूं मदिर दवालय की तरिया पवित्र दस नीय मानो जाय है। इनकी सख्या 85 है जाम 24 ब्रजभूमि म है। कह्यो जाय है के बिन्नें 52 बरस की आयु में सम्वत 1587 म गगा मे प्रवेस करके जल समाधि लै लई ही।

विटठलनाथ जी को तेज अरू अकबर बादशाह—

बल्लभ सम्प्रदाय में बिठ्ठलनाथ जी को नाम विसेस रूप ते लियौ जाय है। ये बल्लभाचाय के दूसरे पुत्र है। इनको जनम 1552 की कृस्न पोष दोज की शुक्रवार कूं कासी के पास चुनार मे भयो हो। स 1607 मे विटठलनाथ जी ने विधि पूवक बल्लभाच य को आचायत्व ग्रहन कीनो। वार्ता साहित्य मे लिखो है के श्रीनाथ जी स 1623 कूं मथुरा पधारे अरू ह्या पै सतघरा मे दो महीना 22 दिन रहे। बा पाछै

वें पुन गिर्राज के मन्दिर म आय गये। स 1620 मे अक्बर मथुरा आयो। वू विठ्ठलनाथ जी के आकर्सक व्यक्तित्व पांडित्य अरू भक्ति स समय धार्मिक जीवन ते भौत प्रभावित भयो। परिनाम सरूप अकबर ने विठ्ठलनाथ जी ते प्रभावित है वे जा सम्प्रदाय कूँ भौतेरी सहूलियत प्रदान कीनी। विठ्ठलनाथ जी ने अपनो निवास बना लियो। स 1628 म गोकुल म भौतेरे मन्दिर (नवनीत प्रिया आदि के मन्दिर) बन गये। अक्बर न विठ्ठलनाथ जी कू भौतेरी सुविधा प्रदान कीनी। पट्टे फरमान आदि जारी कीने। जि अकबर को मूल फरमान आजऊ श्रीनाथद्वारा के गुसाई गोविदलाल जी के पास सुरच्छित है। इन फरमानन म विठ्ठलनाथ जी कू निर्भय है के गोकुल म निवास करवे की सुविधा प्रदान कीनो। विठ्ठल जी की गैयान कू चरवे की सुविधा प्रदान कीनी। गुसाई जी की गैया चरवे की भूमि कू कर ते मुक्त कर दीनो। गुसाई विठ्ठलनाथ जी अर विनके वसजन कूँ जतीपुरा अरु गोकुल गाम माफी म दे दीन।

राग भोग अरू सगीत को सगम पुस्टि माग अरू अस्टछाप--

विठ्ठलनाथ जी नें पुष्टिमाग सेवा के विस्तार मे क्रांतिकारी परिवतन कीने। विन ठाकुरजी को जन्मोत्सव अरु पाटोत्सव कू भव्य अरू कलात्मक रूप ते प्रचलित कीनो। बिनके बनाय भये नियम आज तानू पुष्टिमाग के मन्दिरन म मिले है। विनें राग भोग अरु सगीत क आधार पै भक्ति भाव की स्थापना कीनी। विठ्ठलनाथ जीनें श्रीनाथ जी के आठ झाकी अरु रितु कूँ ध्यान रखते भये कीतन करवे की सुरूआत कीनी। विनें चार सिस्य अपने, चार अपने पिता के लैके श्रीनाथ जी के मन्दिर मे कीतन की व्यवस्था कीनी। ये आठो अपने समै के श्रेष्ठ सगीतकार हे। वल्लभाचाय के कुम्भनदास, सूरदास परमानन्ददास, कृस्नदास अरु अपने सिस्य गोविंद स्वामी, छीत स्वामी चतुर्भुज दास नन्ददास इन आठन तें मिलके अष्टछाप की स्थापना कीनी। पुष्टि सम्प्रदाय मे इनकू अष्टसखा के नाम म सम्बोधित कियो जाय है। आज हमारे देस मे भारतीय सगीत का जो सरूप मिले है, भक्ति अरु काव्य कला को जो पावन प्रकास दष्टिगोचर होय है वामे अष्टछाप के इन कविन को योगदान क सेऊ नाय भूलायो जा सकै। इन कविनें अपनी व्रजभाषा की सगीत की लहरीन ते सिगरे देस कू डुबाय दीनो। हमारे देस कें श्रेष्ठ काव्य की जब चर्चा होय तो वल्लभ सम्प्रदाय के इन अष्टछापन को योगदान सबन ते पैल स्मरण कियो जाय है। इन कविन म सबन ते पैलो नाम अन्ध कवि सूरदास को आवै है। अष्टछाप के आठों कवि अलग अलग स्थान पै निवास करते हे। वे रोजीना श्रीनाथजी की झाकीन म अपने नियत समै प कीतन करते हे। इन आठ कीतनकारन के सहकारी हे। इन कू मौका मिलते ही व इनके पदन कू लिख लेते हे। ये सिगरे कवि आसु कवि हे अरु अपन समै के महान सगीतकार हे। 1639 म ये आठ कवि विद्यमान हे। कृष्णदास, सूरदास, परमानन्ददास को स्वगवास विठ्ठलनाथ जी के

स्वगवास ते पले ही है गयो हो। गोविंद स्वामी छीत स्वामी कू जैसे बिठ्ठलनाथ के स्वगवास को समाचार मिलो बिन ऊ अपने प्राण त्याग दिये। सूरदास को निवास परासौली चन्द्र सरोवर, कुम्भनदास जी को निवास चन्द्र सरोवर के पास जमुनामतो, कृस्नदास को जतीपुरा के पास परमानददास ऊ जतीपुरा के निकट सुरभी, गोविंद स्वामी जतीपुरा के पास ई, छीत स्वामी मथुरा म अरु कुम्भनदास के पुत्र चतुभुजदास को निवास अपने पिता के पास हो। नन्ददास गोवरधन मन्दिर के नीचे ही रहते ह।

श्रीनाथ जी को ब्रज ते पलायन

श्री गोबरधनाथ जी के प्राकट्य की वार्ता की दष्टि सौ श्रीनाथ जी न स 1726 की आस्वीन पूनो शुक्रवार कू गोरधन छोडो। गोबरधन ते चलके श्रीनाथ जी रातो रात आगरा पोंचे। आगरा म ई श्रीनाथ जी को अन्नकूटोच्छव भयो। कातिक के महिना म बे आगरा ते चलके ग्वालियर कोटा पुष्कर हेते भये किशनगढ ते चलके जोधपुर चौपासनी पोंचे जहा 4–5 महिना विराजते रहे। म्हाई बिनको अन्नकूट उच्छव मनायो गयो। मेवाड के राणा राजसिंह के सहयोग अरु बिनके छत्रधाम मे स 1728 मे कातिक माह मे श्रीनाथ जी सिहाड नाम के स्थान पै पोंचे। म्हा मन्दिर बन जायबे प फागुन म कृस्न सप्तमी कू पाटोच्छव मनायो गयो। जा तरिया गिर्राज गोरधन के मन्दिर ते वतमान नाथद्वारा तक की घनघोर विकट यात्रा में दो बरस चार महिना अरु चार दिना लगे। अदाज लगायो जा सके कि श्रीनाथ जी के गुसाई अरु बिनके सेवकन ब्रजवासीन कू इन दो बरसन में कितेक कष्ट उठाने पडे हुगे।

गोवरधन ते मेवाड पहोचबे की कष्टमयी यात्रा में श्री जी कू जा रथ में यात्रा करबाई गई ही बू आजऊ नाथद्वारे के रथखाने में बिराजो भयो है। यात्रा के माग म श्रीजी की अष्टयाम सेवा मे कोई अतर नाय आयो। श्री ठाकुर जी की साथ शयन होयबे पै रथ जोरिके यात्रा शुरू करते। प्रात काल मगला के समै यापै पडाव डार दियो जातो। दिन भर सेवा होती रहती। एक रथ मे श्रीजी विराजते एक मे दोऊ गुसाई बालक विराजते एक के माहि अजब बाई। सग म गाडे लदे भये हे जिनमे जलघडा को गाडा काचो पाको सामग्रीन के गाडा, दूधघर, फूल पानघर सिंगार घर आदि हे। श्रीजी की गैया सग चलती। गूजर जाट बामन नाई लोधे राजपूत जातन के सेवक अपने घर बार सबन कू त्याग के श्रीजी के सग अपन अबोध बच्चा अरु मैया भैन भोटियान कू लके यात्रा में दिन रात गर्मी वरसात अरु सर्दी में चलते रहते।

पुष्टि सम्प्रदाय सात घर मे ते पांच राजस्थान मांहि

नवनीतप्रिया जी श्रीनाथ जी के सग नाथद्वारा माहि बिराजे। श्रीनाथ जी ते पले श्री द्वारकानाथ जी के सरूप गुजरात के राजनगर अरू फेर मेवाड के आसारिया

नाम के स्थान पैं गये । म्हाते फिर काकरोली मे आये जहा आजऊ विराजमान है । दूसरे घर के तिलकायत श्री हरीराय जीम्रं अपने सेव्य सुरूप श्री विठठलनाथ जी कू लके श्रीनाथ जी के सगई व्रज छाडौ हो । विम्रं मैवाड के खिमनौर नाम के स्थान पै आश्रय लीनौ । जा तरिया पुष्टि सम्प्रदाय मे सवा सरूप श्रीनाथ जी श्री नवनीत प्रिया जी, दूसरे अरु तीसरे घर के उपास्य सरूप श्री विठठलनाथ जी अरू श्री द्वारिकानाथ जी मेवाड की धरती पैं विराजे । अपन राज्य म अ सय देके तत्कालीन मवाड नरेश राजसिंह ने बडी ई हिम्मत अरु साहस कौ परिचै दानो हो । पहिल घर क उपास्य मथुरेश जी कोटा माहि बिराजे । कछु समै पहले वे जतीपुरा पौच गये हे । पर अब पुन कोटा ई आय गये है । पचम अरु सप्तम घर क्रमश गोकुल चन्द्रमा जी अरु मदनमोहन जी कामा राजस्थान मे ई बिराजे भय है । जे अस्थाई रूप ते कछु दिना कू हटाये गये है । चतुथ घर के गोकुलनाथ जी ऊ कछु समै जयपुर रहे । परि वे पुन व्रज के गोकुल म चले गये । तृतीय ग्रह कू तत्कालीन गुसाई व्रजराज जी सकटकाल म व्रज ते हटाय के सूरत ले गये । वे म्हाई बिराजमान है । जा तरिया पुष्टि सम्प्रदाय क मात पीठन म ते पाच राजस्थान की धरती पैं बिराजे भये हैं । चोथो अरु तीसरो घर गोकुलनाथ जी अरु ठाकुर श्रीबालकृस्न स्वरूप सूरत माहि बिराजे भये हैं ।

श्रीनाथ जी के सग ब्रज सस्कृति कौ मेवाड़ माहि आगमन

कहबे की आवश्यकता नाय की तीन सताब्दी पैले मेवाड की धरती पैं व्रज चन्द्र श्रीनाथ जी कौ पदापण भयौ । श्रीनाथ जी के सग व्रज ते ब्रजभाषा के सग सग व्रज की कला अरु सस्कृतिऊ च्या आई । श्रीनाथ जी के कारन जिनकी रोजी रोटी जुडी भई ही ऐसे कवि अरु कलावन्तऊ दो बरस की कठिन यात्रा करके एव जगत के नाना तरिया के बिकट कस्टन कू झेलते भये वे नाथद्वारा माहि आयके बस गये । सगीत, कला काव्य कला, पाक कला, फूल कला, साझी कला चित्रकला आदि कलान के सरूप श्रीनाथ जी के सगई नाथद्वारा माहि आये । गु साई बिठठलनाथ जीम्र विभिन्न कलान कूं इष्ट कू समर्पित करके वामे राग अरु भोग क सग अध्यात्म कौ अनूठो साम्य कीनो हो । जाई कारन बिम्रं शुद्धाद्वैत देवालयन म नित्य उत्सवन कौ प्रावधान कीनो ।

पुष्टि सम्प्रदाय के देवालय श्ररू परम्परा

निवेदन करो गयौ के श्रीनाथ जी के सग अपनो जीवन यापन करवे बारे कवि कलावन्त अरु साहित्यकारऊ दो बरस की कठिन यात्रा करके मवाड पौचे हे । वा सभै की व्रज सस्कृति अरु आज की नाथद्वारा की व्रजकला सस्कृति कौ जब मिलान करे है तो आस्चय होय है के मथुरा गोवद्ध न अरु वन्दावन म जहा परम्परित व्रज कला अरु सस्कृति मे आधुनिकता के भावन क कारन भोतेरे देवालयन की परम्परा मिटती जारही

है या परिवर्तित है रही है, म्हाई नाथद्वारे मे आजऊ हमकू देवालय म वा कला अरु सस्कृति के दरसन होय है जा तीन सताब्दी पैले गोरधन ते चलते समै ही। पुष्टिमार्गी सम्प्रदाय के रूढ सब्दन को प्रयोग आजऊ नाथद्वारे मे पूरी तरिया ते मिले है। आस्चय होय है कै मेवाडी भाषा कै चारो तरफ फिरे हैबे कै पस्चातऊ परम्परागत रीति रिवाज अरु सब्दावली आजऊ नाथद्वारे मे ब्रज कला ते लिपिटी भई है। उदाहरन कू हम कछु रूढ सब्दन को ह्या उल्लेख कर रहे हैं जिनको नाथद्वारा म आजऊ प्रयोग बाई अथ मे होय है -अधिकारी (ठाकुरजी के मन्दिर को प्रमुख व्यवस्थापक) अनसखडी — (जाय पक्को भोजन ऊ कह है) अनोसर — (ठाकुर सेवामे मध्य विस्राम) अपरस (ठाकुर सेवा मे अरु भजन पूजन म सुद्धि) अनुग्रह — (कृपा अभ्यग—आवला चदन आदि सो ठाकुर स्नान) अष्ठयामी— (आठ पहर की) अलकावलि— (ठाकुरजी के सग को एक आभूषन) आपश्री (आचायन के लिये आदरणीय सम्बोधन) उपरना — (दुपट्टा) कतरा— (ठाकुरजी के माथे पै मोरपख को साज) कुलह (ठाकुरजी के माथे प पगडी जसो साज) खण्डपाट — (ठाकुरजी के आगे भोग रक्खे की एक लकडिया की मेग जसी वस्तु) चरणामृत — (चरण को धावन) जाड—ठाकुरजी के माथे पै मोरपखी साज) जलघडिया—(पानी भरबे वारो सेवक। टेरा—(पर्दा) डबरा—ठाकुर सेवा को एक बरतन) डोल—(एक त्यौहार बडो करनो—(जब ठाकुर जी को कोई साज अरू वस्त्र उतारो जाय है तो बाय 'बडो करनो' कह्यो जाय है) बटा (ठाकुर सेवा को एक डिब्बा जामे मिस्रि भोग जैसो पदाथ रखो जाय है।) बाबा—(गोस्वामी आचायन के लरिका) बेटीजी—(गोस्वामी आचायन की बालिका जिनकू आजीवन बेटीजी कह्यो जाय है) बैठक — (आचायन के स्मारक) मल्लकाछ—ठाकुरजी को एक अधोवस्त्र) भीतरिया — (जो ठाकुर सेवा म भीतर काय करे है अरू जो खाद्य सामग्री तयार करे है) मुखिया— (ठाकुर जो को प्रमुख सेवा सिंगार करबे वारो) भगवदीय — (वैस्नव भगत) निजमदिर (ठाकुरजी को मुख्य स्थान जा जगे देव विग्रह प्रतिष्ठित हो) लिखिया—(बहीखाता लिखबे वारो) स्वरूप—(देवविग्रह) श्रीजी—(ठाकुर जी) सखडी—(दाल चामर सहित खाद्य जाय कच्चो भोजन कहे है सधानो-अचार, मुरब्बा) सैया मदिर—(जहा ठाकुरजी कै शयन की व्यवस्था होय) सीधों—(भोजन को कच्चो सामान)।

देवालय के उच्छव अरू सांझी कला

गोस्वामी बिठ्ठलनाथजी ने पुष्टिसम्प्रदाय के दो तरिया के उच्छव निश्चित कीने 1 नित्य प्रति 2 वार्सिक। बरस मे हैवे बारे इन उच्छवन की लम्बी सूची है। जनम आठे, रामनवमी अन्नकूट आदि के सग साझी को आयोजन हू श्रीनाथ के मन्दिर मे होय है। ब्रज मे जहा मूल कलान को ह्रास है रह्यो है। साची पूछी जाय तो नाथद्वारा मे आजऊ बाई रूप मे ब्रज की मूल कला प्रतिष्ठित है जैसी तीन सौ बरस पले ही। श्रीनाथ जी के मन्दिर मे श्राद्ध के सुरू कें 15 दिना तानू साझी निर्मान को

सिगरो काम कदली वृच्छ के पत्तान ते पूर्ण होय है आकृति बनायब मे मुसल कलाकारन द्वारा कागज की कटिंग बनायके बाते अनेक तरिया की आकृति तैयार करी जाय है। इन आकृतिन कू साचो कहे है। इन साचेन मे नाथद्वारा क्षेत्र अरु ब्रज प्रदेस के मानवकार छटायुक्त पशुपक्षी आदि की आकृति बनाई जाय है। शुरू के 15 दिना तानू कदली वृच्छ के पत्तान ते कटिंग काटके तरे तरे की आकृति बनाई जाय है। दमन के पाछे जब हाथी पाल को दरवज्जो बन्द है जाय तो इन आकृति को प्रदसन कियो जाय। विभिन्न बाग-बगीचा ते जिनम लाल बाग वृन्दावन बाग कछवाई रातडिया, आइन बाग, बडा बाग आदि प्रमुख है। इन बागन म तो कदली वच्छ के पूरे पत्तान कू फूलघर म लायो जाय है। फूलघर के प्रमुख फूलघरिया जी अरु बिनके नीचे काम करबे वारे सेवक अरु भगत लाग डठलन कू अलग करे है। इन पत्तान ते कागज के साचेन ता छोटी कैंची ते तरै-तरै की आकृति बनाई जाय है। इन आकृति कू बनायबे मे फूलघरिया जी बिनके नीचे काम करबे वारे सेवक बडे चतुर होय है। ये सिगरी आकृति नाथद्वारा ब्रज क्षेत्र ते सम्बंधित होय है। नाथद्वारे ते सम्बंधित आकृतिन म फूलघर, पानघर भडार तिबारी कमल चौक रतन चौक आदि होय है। घर प्रासाद हाथी घोडा बाग बगीचा सेर चीता हरिण खरगोश, कोयल मोर तोता कुड सरोवर नदी झरना गिरी जगल, नदी को किनारो, घाट पशु पक्षी गणगौर की सवारी की आकृति कदली वृच्छ के पत्तान ते बनाई जाय है। ब्रज प्रदेस ते सम्बंधित कई जगै पशु-पच्छी की आकृतिऊ इन पत्तान म बनाई जाय है। विश्राम घाट गिरिराज गोवर्द्धन, क्रीडा रत गोधन, गोवर्धनधारी श्री कृस्न, सुरभिकुड, दान घाटी माखन चोरत श्री कृस्न, श्री कृस्न अरु ग्वाल बाल, गोप-गोपी, यमुनाजी कुसुम सरोवर फूल फूलवारी लाल मौंह क बन्दर, तोता मोर, मानसी गगा आदि प्रमुख है। जाके अलावा नाथद्वार म श्राद्ध पच्छ के औसर पै कुवारी कन्या गोबर ते सांझी बनामे हैं। वामे फून पत्ती लगाके आकृतिन की वस्त्र अर अन्य प्रकार ते सज्जा करी जाय। भिंडी के बीजन को उपयोग आख बनायबे मे करो जाय है। 'आखिरी दिना कोट बनायो जाय है। वा दिना कदली पत्तान को काम ई होय। वामे पशु पक्षी, सूरज चाद सितारे, मीराबाई खापडिया चोर, राजा रानी आदि बनाये जाय हैं। पन्द्रह दिना तानू ह्या साझी घरन की दीवारन प बनायी जाय है।

नाथद्वारा मन्दिर की ब्रज पाक कला

महिमामयी वैभवशाली श्रीनाथ जी कू अर्पित कर जायबे वारे प्रसाद भक्तन म भौतई लोकप्रिय है। जा प्रसाद के निर्मान की विधि मदिर के मुखिया अरु बालभोगिया के अलावा काऊ कू पतो नाय। कौनमे पदार्थ की मात्रा म मिलायो जायगो जि बात गोपनीय राखी जाय है। श्रीनाथ जी के प्रसाद पै 30 ते 40 लाख रुपैया वार्षिक व्यय होय है। हर महीना पाच सौ पीपा घी, एक सौ पच्चीस बोरी शक्कर, बादाम, पिस्ता दाख आदि प्रत्येक 50 किलो के आसपास खर्च होय है। प्रत्यक बरस 10 किलो केसर,

ढाई सो ग्राम कस्तूरी अरु 10 हजार रुपैया को अम्बर काम मे लयो जाय है। श्रीनाथ जी के प्रसाद म सबन मे प्रसिद्ध है ठौर जो 12 घटा तानू घी मे तैयार होय है। श्रीनाथजी कू भोग लगबे के पश्चात ये प्रसाद प्रसादी भण्डार अरु रसोई घर मे पौंच जाय है। म्हाते जि परसाद मन्दिर के सेवकन म बट जाय है। प्रत्येक दिना बनबे वारो परसाद दो तरिया को होय है सक्डी अरु अनसकडी। सबेरे राजभोग अरु सेन के पश्चात सक्डी परसाद निबरे है जामे चामर, रोटी, बाटी, जीरा, पूरी, खरखरी, भुजैना, सूरन (जाडे मे थपडी खीर, सकरपारे, कूजे कचोरी, श्री खड, दही अमरस बासुन्दी, छछ, पणा, सीरा, चूरमा, सेवबिलसारू, रायता, अचार, मुरब्बा, पापड कढी होय है। जाई तरिया अनसक्डी परसाद है—दूध माखन मिश्री मैदा, बादाम को हलुवा, बरफी, दूध घर की गोल पूरी, बरफी, बूदी मनोहर सत्तू, चूरमा के लड्डू, पजीरी, मेवाभात तिल के लड्डू, ठौर, मठरी साजा, पूरी, चन्द्रबट्टा, घेवर, जलेबी मोहनथाल, मेसू मेवे, मावे कें गूजे, बादाम पाक, मेवा बाटी खोआ, खीर रबडी मलाई पेठा पाक आदि है।

इन प्रसाद म जाडे के दिनान मे श्रीनाथ जी कू सौभाग्य सौठ को भोग लगायो जाय है। जि एक तरिया की बरफी है। जाको बजन किलो सवा किलो होय है। जाके बनामे म केसर, कस्तूरी, इलायची बादाम पिश्ता आदि बहुमूल्य प्रदाथ काम मे ले है। याकी कीमत 1000/ रु तक होय है। जाके अलावा बरस मे दो दफे कुनवारो होय है जामे सीरा, हलुवा अरु खीर बने है। पानघर मे कई सेवक पान की सामग्री तयार करै है।

पुष्पकला को सौंदर्य

ब्रज निकदन भगवान श्रीनाथजी के विग्रह कू अनेक प्रकार के वस्त्र अरु आभूषनन ते सजायो जाय है म्हाई फूलन ते सजायबे को विसेस प्रावधान है। (श्रीनाथ जी के मदिर मे एक अलग सो विभाग है जाय फूलघर कहे है। फूलघर के प्रसासनिक अधिकारी कू फूलघरिया कहे है। फूलघरिया की सेवा कू पाच व्यक्ति नियुक्त है। फूलघर मे रोजीना सिगार के समै एक माला राजभोग के समै दो माला सैन के समै हार सिद्ध तैयार कर्यो जाय है। हार को निर्मान अलग अलग मोसमी फूलन त करो जाय है। 12 महिना मे अलग-अलग तरिया के फूल प्रयोग मे लये जाय है। गरमी मे मोगरा मोरसी, चमेली, जूही, रायबेल, पीत निबारा जाडेन मे कुन्द की कली चमेली, लाल गुलाब, बसत चम्पा, गुलाबास आदि।

ब्रज सस्कृति के मूल सुर गयान की पूजा—

ब्रज सस्कृति देवालय की सस्कृति है। देवालय की जा सस्कृति मे गैया को महत्व सबन ते ज्यादा होय है। श्री कृस्न को सरूप तबई साथक मानो जाय है जब वे गैया को

सेवा कर ले है। नाथद्वारे मे व्रज की धेनु प्रधान संस्कृति के साक्षात दसन होय है। अन्नकूट उच्छव मूल रूप मो ग्वाल बाल पे अभिनन्दन अरु गैयान की पूजा को दिना है। मन्दिर की गौसाला म अगहन पूनी ते गो धन सजाये की काम सुरु है जाय है। बिनकै सींगन कू रगा जाय है तरै तरै के उपादान बनाये जाय है। ग्वाल बालऊ आभूषन पहर के सजे है। ये उच्छव धनतेरस ते सुरु हैं जाय है। दीवारी के दिना श्रीनाथ जी के नाथूवास स्थान की गौसाला ते सजे ग्वाल बाल गोधन कू सजाय के नाथद्वारा म आमे है। सजा पू चार बजे के आसपास श्रीनाथ जी की प्रमुख गैया कू आग रख के वे गैयान ते क्रीडा करते मन्दिर की तरफ जाय है। पूज्यपाद गास्वामी महाराज प्रमुख गया की पूजा करै है। अरु वाके कानन मे अन्नकूट समारोह म सिगर गोधन सहित सामिल हैबे को नौतो दे हैं। जाय 'कान्ह जगाई' कह्यो जाय है। ग्वाल बाल अपनी गयान के सग नाना प्रकार की क्रीडा करते भये चौपाटी की तरफ ते मन्दिर म पौचे हैं। गैयान के मन्दिर पै पौचबे पे पूज्यपाद गुसाई जी चौक म वन भय विसाल गोरधन की पूजन करैं है। परकम्पा करे पाछे प्रधान गैया ते गोरधन कू गुदवायो जाय है। फेर गैयान कू विदा करयो जाय है। ग्वालबाल वाई रस्ता ते गौसाला म चले जाय है। जा रस्ता ते आमे है। हजारो लोगन की जि इच्छा रहे है नाथद्वार के जा दस्य कू देखेक वे सरस अनुभूति के कल्पनालोक म डूब जाय। गैयान के सग उछरते कूदते भये ग्वाल बालन कू देखके दसन वा कल्पना लाक म खो जाय है जब श्री कृस्न अपने सखान के सग मे गैयान कू हाकते जाई तरिया आमते हुगे।

चामर की लूट को अदभुत दस्य अरु अन्नकूट को सामग्री

दिवारी के दिना 9 बजे ते लाल दरवज्जे की तरफ भीड हेबे लग जाय है। भीलन की घरवारी बडे-बडे टोकरा लके तैयार रहै है। दसन खुलबे के कछु समै पाछ लूट सुरु करिवे कू सूरजपोल को दरवज्जा खोल दियो जाय। हजारन की सख्या मे भील नगार खाने के चौक त भाजने अरु किलकारी करते सूरजपोल म प्रवेस करै है अरु रतन चौक सौ डौल तिवारी म चामरन के गरम गरम ढेर पै चढ जाय है। इनके सरीर पै लगोटी के अलावा अन्य वाऊ तरिया को वस्त्र नाय होय। बस चामर भरिबे कू गरे मे एक थैला लटको रहै है। व अपन थैला मे ज्यादा सौं ज्यादा चामर भरिवे घरवारी के पास पौचा दे है। सकडन की तादाद म भील या लूट म सम्मिलित होय है। हजारन व्यक्ति गोरधन चौक म ठाडे है वे नाथद्वारा के जा अनुपम दृस्य कू देखे है। व्रजभूमि की तरिया नाथद्वारा मऊ श्रीनाथ जी के अन्नकूटोच्छव म भौतर तरिया की सामग्री बनाई जाय है। थूली सब भात की अनेकन बडी बडी नाद भर के भोग लगायो जाय है। इन नादन म सामग्री के सग मनन घी हाय है। जाक अलावा दही भात, राईभात बडी भात घेवर सुरमा, खाजा मगद, गूजा, मठडी बून्दी रवडी दही फलन के पना, मीठे पुआ, मेसू अनक तरिया के रायत बडे पापड, तरी भई मरची रतालू आदि बनाये जाय।

नाथद्वारा की चित्रकला

श्रीनाथ जी के सग भीतेर चित्रकारऊ व्रज ते मवाड मे पधारे हे । इन चित्रकारन को वतमान मे काऊ तरिया को इतिहास उपलब्ध नाय हाय है । जयपुर अरु मेवाड के चित्रकारन के नाथद्वारा आगमन को जरूर इतिहास मिल है । श्रीनाथ जी के मदिर के आगन अरु देहरी पै प्रत्येक उच्छव पै माडन माडे जाय है । श्रीनाथ जी को सरूप स्वय म चित्रकला क सिगर विधान कू समटेवे वारो अर कलाकार कूँ दिव्य प्रेरना दव बारो है । पुस्टिमाग म हाथ की कलम ते बन चित्रन की सवा पूजा जरूरी मानी गई है । सग मे सेवा अरु सिगरे सम्बन्ध नियमित बने रहे या दृष्टि सौ तिलकायत जी अरु गुसाई बालकन द्वारा चित्रा थ चित्र की पूजा को नियम बनायो गयो । जेई कारन है के चित्र-कला अरु चित्रकर्मी पुष्टिमार्ग के सरच्छन मे उन्नति करते रहे है । नाथद्वारा की चित्र-कला मे श्री कृस्न की सिगरी लीलान के अकन के अलावा श्रीनाथ जी के सग पुष्टिमार्गी सेव्य सरुप अरु भक्ति रूप श्री यमुना जी को चित्रन सबन ते ज्यादा मिले है । भावना की दृष्टि सौ सबई कू एक सग दर्शाव कू यमुना जी, बल्लभाचाय सत्यरूप अरु नवनीत प्रिया जी को एकई चित्र मे चित्राकन करवे को क्रम ह्या बहुतायत म मिले है । नाथ द्वारे मे धार्मिक ऐतिहासिक, सामाजिक, राजनैतिक अरु अनक धर्माचायन के व्यक्तिगत चित्रऊ भारी सख्या मे बने है । ह्यां के चित्रकारनें बडी खूबी के सग 'जय श्री कृस्न' अरु 'कृस्न शरण मम जसे आदस वाक्यन कू मोटे अक्षरन मे भागवत के दशम स्कन्ध मे वर्नित सिगरी लीलान के सग अकित कीन है । कागज के अतिरिक्त कपडा तैयार किये जायब वारे छोटे अरु बडे आकार के चित्र कू फड या पिछवाई के नाम ते पुकारो जाय है । पिछवाई बनायवे की कलाऊ ह्या भौत प्रचलित है । दान अन्नकूट महारास गोपाष्टमी, महादान, पनघट, शरदचम्पारण्य अरु व्रज चौरासी कोस की यात्रा आदि की पिछवाई प्रमुख उच्छवन पै देवालय म टागी जाय है । ठकुरानी तीज पै श्रीनाथ जी के मदिर मे स्व घासीराम शर्मा की पिछवायी लगाई जाय है । जामे सामन की घटान अरु बीजरी की चकाचौंध सौं चमक वे भगवान श्रीनाथ जी नहाचर मे दुबक्ती भई राधा को चित्रन है । रेशमी डोरान ते श्री कृस्न लीला स्थल जैसे नन्दगाम बरसानो जमुना पुलिन गोरधन, नन्द जसोदा, व्रज के पसु पच्छी इत्यादि के चित्रन की पिछवाई लगाई जाय है । पिछवाई के अतिरिक्त भित्ति चित्र बनायवे की विराट परम्परा नाथद्वारा माही है । जि चित्राकन व्रजकला के सुरते प्रमुख उपकरन रह्यो है । वतमान मदिर को निर्माण श्रीनाथ जी के मेवाड आगमन के पाछ भयो । वाई समै ते श्रीनाथ जी के देवालय मे सूखे रगन ते विविध तरिया के भित्ति चित्र बनायवे की परम्परा सुरु भई । श्रीनाथ जी के मदिर मे हर बरस दसहूरा अरु दिवारी के दिना भित्ति चित्रन को नवीनीकरण कियो जाय है । जनम आठे के औसर पै श्याम पृष्ठभूमि मे धोरे पीरे रगन सौ श्रीकृस्न लीला युक्त छठी मान्वे को प्रचलन भौत लोकप्रिय है । व्रजभूमि की तरिया है याऊ लोक भावना सो प्रेरित लोक चित्राकन विधि ते दरबज्जे पै श्रवण कुमार अरु कावड मे अधे

मैया बाप कौ अ कन कियौ जाय है। मागलिक औसर पै चित्रकार गृहस्थन के घरन की दीवार पै बेल पूतरी अरु हाथी घोडा बनामे है। घर के कोठ मे रिद्धि सिद्ध देव गणेश जी कौ अ कन मूसे सहित करौ जाय है। ब्याह के औसर पै ह्याऊ ब्रजभूमि की तरियौं समधी-समधन की व्यगभरी अरु कौतुहल पूर्ण आकृति बनाई जाय हैं।

राजस्थान के मेवाड के लघु ब्रज नाथद्वारा मे आजऊ बाई ब्रज कला अरु सस्कृति के साच्छात दरसन होय है जो तीन सौ बरस पले गोरधन ते चलते समै ही। सन् 1971 की जनगणना के आकडेन की माषा म 15 7 प्रतिशत ऐसे लोग नाथद्वारे माहि बताये गये हैं जो बोलचाल म केवल ब्रजभाषा का प्रयोग करे हैं। नगर म ब्रजबासीन ते इतर मेवाडी भाषा भाषीऊ भारी सख्या म निवास करे है। नाथद्वारा के मेवाडीऊ स्वय कू ब्रजबासी माने है। प्रवासी ब्रजवासी अरु मेवाडीन मे अपनी परम्परान ते बेहद लगाव है। वे देवालय की प्राचीन मूल परम्परान कू जीवित राखवे मे गौरव कौ अनुभव करे हैं। मन्दिर म कीर्तन या हवेली सगीत के रूप माहि गाये जायवे वारे अस्टछाप के पद बाई सैली राग अरु हाव-भावन मे गाय जाय हैं जाम वे अस्टसखान के समै गाये जाते है। होरी वसत व ढोल पै चग की धमक व सग धमार रसिया अरु अबीर गुलाल के ढेर बरबस ब्रज की होरी की याद दिवाम है। नाथ द्वारा म ब्रज सस्कृति का प्रभाव का सीमा तक है जाकौ आभास ह्या के गाम मोहल्लान के नामन सौं होय हैं। नगर कौ सबसौ बडौ मोहल्ला कौ नाम ब्रजपुरा है। अन्य मोहल्लान के नाम है—द्वारकाधीश की खिडक, मोदिन की खिडक बडौ बाखर, नोमवारी आदि।

जा तरिया मध्यकालीन वैसनव सतन दच्छिन भारत की कठोर माया पूरी करके ब्रज म आयके राग अरु भाग के सग कलान को अध्यात्म ते अद्भुत साम्य करके सामान्य जनन कू ईसुर प्राप्ति कौ भौतई सुलभ रस्ता बताया। तीन सौ बरस पुरानी राग अरु भोग की जा सस्कृति म बाई रूप म दरसन करन है तो नाथद्वारे से उपयुक्त स्थान अन्य नाय है सके। हमारे देस के प्राचीन सास्कृतिक धरोहर की रच्छा मे नाथद्वारे के गोस्वामी बालक प्रवासी ब्रज बासीन का योगऊ सदा याद कियो जायगो।



ब्रज कला सस्कृति अरु राजस्थान

आज हमारे देस मे ऐसे साहित्य की प्रबल आवस्यकता है लो देसवासिन के मनन म प्रेम करूणा अरू वात्सल्य जैसे मानवीय भावन कू उजागर कर सके हैं। ब्रजभाषा ने जि काम सदीन तलक हमारे देस मे कीनो है। हिंदी भाषा धीरे-धीरे अपन सौंदय के मूल स्रोत छेत्रीय भाषान ते कटती चली जा रही हैं। पाठय पुस्तकन मे त धीरे धीर छेत्रीय भाषान की कविता कू कम कर्यो जा रह्यो है। जाई कारन हिंदी भाषा लय अरू मानवीय भावन की पावन सवेदनान कू प्रकट करबे म बितेक सफल नाय है पा रही हैं, जितेक की आज आवस्यकता हैं। जा कारन आज जरूरत जा तथ्य की है के पाठय पुस्तकन मे ब्रजभाषा जैसी छेत्रीय भाषान कू पुन स्थान दियौ जाय। जाके सुखद परिनाम सामई आमिगे।

ब्रजभाषा हमारे देस की हृदयस्थल प्रदेश की भाषा रही है। जैसे आज हिंदी भाषा अंग्रेजी भाषा ते टक्कर ले रही है वैसे ई काऊ जमाने मे ब्रजभासा ने अरबी, फारसी ते टक्कर लीनी ही। बा जमाने म आज की तरिया राजनीति के दुराव छुपाव के माध्यम ते भाषा कौ युद्ध नाय लडो जातो हो। ब्रजभाषा के साहित्यकारन ने अपने बूते पै भाषा कौ युद्ध लडो हो अरु विजय प्राप्त कीनी ही। जाई कौ परिनाम हो के तलवार के बल पै चलाई गई बादशाही की भाषा के पाम भारतवष मे जम नाय पाये। ह्या तानू के अरबी फारसी के दिग्गज साहित्यकार तो ब्रजभाषा के भक्ति के मिठास मे डूबके हमेसा के या भाषा के गौरव है गये। जाई कारन भारतेंदु बाबू हरिस्चंद्र ने कह्यो, 'इन मुसलमान हरिजनन पै कोटिन हिंदुन बारिये।'

राजस्थान को ब्रजकला अरू सस्कृति ते भौतई पुरानो सम्बंध है। भारत मे कृस्न अरु बलराम की पूजा की परम्परा भौतई पुरानी है। जाकी पुस्टि विदेसी यात्रिन के विवरण अरु इत वित बिखरे साहित्य के अन्य भौतेरे ग्रन्थन ते होय है। आस्चय है क कृष्ण लीला ते सम्बंधित पुरानी ते पुरानी कलाकृति मथुरा छेत्र ते प्राप्त नई है के राजस्थान की मरू भूमि तें प्राप्त भई है। गगानगर जिले के घग्घर के तट प अवस्थित रग महल थेडी सौ मिली भई अरु बीकानेर के राजकीय सग्राहलय मे प्रदर्सित द्वै विसाल

मट्टी की मूर्ति याकी मवन तें बडो उदाहरण है—श्याम गोवरधन धारन अर दान लीला को सुन्दर चित्रन कियो है। एक फुट ते ऊंची जि मूर्ति उत्तर कुषाण अथवा गुप्तकाल की सुरुआत की रचना ह। घग्घा के दानू तरफ मीलन तान फैल भये थेडीन ते मिली जाई आकार की श्री कृष्ण विषयक मट्टी की मूर्ति अ जऊ राजस्थान के बीकानेर संग्राहलय म देखी जाय सके है। राजस्थान के बीकानर क अलावा जोधपुर के मडार मऊ श्री कृस्न की प्राचीन मूर्ति मिल है। मथुरा विसाम घाट ते छटी सातमी सदी क गोरधन का मूर्तिन की राजस्थान की मूर्तिन ते मिलान करें हैं तो प्रमानित होय है के इनके अवन म ब्रज को विवरन उत्पन्न किनो गयो है। मथुरा मूर्ति म ग्वाल वाल अंकित है। जबके मडोर के कलाकारन ग्वाल बाल के अतिरिक्त पहाड पै हिंसक पशु अर यक्ष तक दिखाय डारे है। या मूर्ति म इन्द्र के कोप ते डरप ग्वाल बाल गोप गोपी इकठोरे है गये है। तब भगवान न गोरधन कू अपनी उंगरी अगरिया पै उठाके बाय अपनी भुजा पै धारण करके ब्रज की रच्छा कीनी। जा पाछ जयपुर के इतिहास अरु ह्या के पुरान ग्रन्थन कू दखव तेऊ प्रमानित होय है कै या प्रदेस के गुप्तकाल क पाछैऊ आज तानू ब्रज भूमि ते सीधो सम्बन्ध रह्यो है। राजस्थान की राजधानी जयपुर क भूतपुर्व नरेसन के पुरखा मानसिंह अरु बाके पैले के बिनके पुरखा श्री कृस्न भक्ति अरु बिनकी लीला भूमि ब्रज की तरफ आकर्सित रहे। तबई तो मानसिंह के मन्त्री राय मुरारीदास न अपने ग्रन्थ 'मान प्रकास म कछवाह वंश कू 'राधा स्वरा घपूत पाणि' कह्यो है। अकबर कू शासन अधिकार मिल पाछ बिनके दरबार के प्रतिष्ठित राजा मानसिंह ने व दावन म देवपूज्य गोविन्द देव को विसाल मन्दिर बनवायवे को सकल्प लीनो हो। जा तथ्य को उल्लख मानसिंह के स्याल कोटि म श्री मुरारी दास खत्री की संस्कृत रचना 'मान प्रकाश' ते होय है। 'मान प्रकाश म लिखो है के राजा मानसिंह ने 1590 ई म तरह लाख रुपया की लागत ते वृन्दावन म श्री गोविन्द मन्दिर बनवायो। अब तो जाको मौतसो भाग आहत अरु भग्न है गयो। जा मन्दिर की स्थापत्य कला सम्बन्धित विवरण एस ग्राउस ने अपन मथुरा ग्रन्थ म सन 1882 म कीनो है। कह्यो जाय है के जा मन्दिर के निर्माण म छै वरस लगे हे। मानसिंह के पीछे पाचमी पीढी मे विष्णु सिंह भय। वे आगरा अरु मथुरा के प्रशासनिक अधिकारी हे। बिर्ने व दावन क पासई विसनपुरा गाम बसायो अरु वृन्दावन मे कुंज बनवाये।

विष्णुसिंह के पाछ सवाई जयसिंह तो परम विख्यात भये। बेऊ आगरा, मथुरा क प्रशासनिक (गवनर) रहे। बिनऊ ब्रज भूमि म अनक भवन अर बगीचा बनवाये। विसान्ति घाट प बिन 988 मीटर को बडो भूखड खरीदो। जाई तरिया मथुरा के कनेक माहल्ला म बिन जायदाद बनाई। वृदावन मे बिन्ने कनक कुटी अर दीवान खानो बनवायो जो सवाई जयसिंह घेरे क नाम सौं प्रसिद्ध है। जयपुर के सवाई जयसिंह की प्रेरणा सौं राजस्थान के राजाम ब्रज भूमि मे अनेक भवन बनवाय यथा गोपालसिंह

करौली बारे की कु ज, बदन सिंह की कु ज, भीमा राठोड की बगला राणावत जी की कु ज आदि । जाई तरिया सलेमाबाद बारेन की घाट नागरीदास की कु ज, राजा बदन सिंह न रूप नगर बसायो । सवाई माधोसिंह द्वितीय नेऊ भारी धनराशि व्यय करके वृंदा-वन अर बरसाने मं राधा गोपाल जी के मंदिर बनवाये जो आजऊ जयपुर वारे मन्दिरन के नाम सों प्रसिद्ध है । भरतपुर के राजा सूरजमल अरू जवाहर सिंह द्वारा बनवाये गये अनेक मंदिर आजऊ गोवरधन की सोभा बढा रहे हैं । सूरजमल न गोवरधन मे कुसुम सरोबर पै विसाल भवन बनवायो । जवाहर सिंह ने वाम विस्तार कीना अरु सूरजमल की छत्री को निर्माण करवायो जामे आवसन स्थापत्य अरु भित्ति चित्र भौतई मलूक लगे है । सूरजमल के प्रसिद्ध सेनापति रूपराम कटारा नेऊ गोरधन म भौतेरे भवनन को निर्मान करयो ।

जयपुर नरेस रामसिंह क पश्चात सवाई जयसिंह के मन म तो अपनी राजधानी कू वृन्दावन ई बनाय देवे को विचार आयो । जा कारन बिन्नै वृन्दावन के प्रमुख देव विग्रहन कू अपने नव नगर मे प्रतिष्ठित कीनो । श्री गोविन्द देवजी तो पैल ई ह्या आ गय हे । बिन्नै बिनकी प्रतिष्ठा राजधानी के दच्छिन अरु नव नगर राजधानी के उत्तर म बने भये कनक वृन्दावन मे कीनी । भौत समै तक आगरा मथुरा छेत्र के प्रसासक रहवे के कारन सवाई जयसिंह ने ब्रज में लम्बे समै तानू निवास कियो हो । जा कारन ब्रज सस्कृति अरू कृस्न भक्ति म पूरी तरिया रच बस गये हे । अत बिन्नै अपनी राजधानी अरु राज्य मे ब्रज के वृन्दावन को सों वातावरन उत्पन्न कर दीनो । सवाई जयसिंह के दरबारी चित्रकारन के हाथ के द्वै चित्र आजऊ जयपुर के पोथीखाने मे सुरच्छित है । दोनू चित्र हमारे देस की पुरानी चित्रकला की अमूल्यनिधि हैं । एक चित्र मे ग्वाल बालन के राधा अरू बिनकी सखीन के सग होरी खेलबे को चित्रन है तो दूसरे म महाराज को भौतई बारीक चित्राकन कीनो गयो है । जि दोनू चित्र राजस्थान की राजधानी जयपुर म वा समै के बने भये है जब ब्रज सस्कृति पूरे उठान पै हो । राज्य के भौतेरे गाम अरू कस्बा मे गोविन्द मंदिर के निर्मान भय । जयपुर के राजा सुरू तेई ब्रज के गौडीय वस्नव सम्प्रदाय के भगत रहे । परिनाम स्वरूप सबेरे सजा गोविन्द देवजी, गोपीनाथ जी अरू राधा दामोदर जी के देवालयन म जानो जयपुर क ग्रहस्थन को नियम बन गयो । महाराज ने जयपुर मे बन्द दें दरवज्जे ते राज परिसर म बने उद्यान मे कनक वृन्दावन की रचना कीनी । जाको बनन सवाई जयसिंह के ब्रज के दरबारी कवि आत्माराम ने अपनी सवाई जयसिंह चरित' रचना म कीनो है । आत्मारामऊ ब्रजमण्डल केई रहवैया हे । जाते जेऊ ग्यात होय है के सवाई जयसिंह ने अपने ह्या ब्रज वातावरन बनायवे म ब्रज को प्रतिभान कू आमन्त्रित करके अपनो राज बसायो हो ।

जा तरिया श्री गोविन्द देव कू वृन्दावन सहित सवाई जयसिंह जयपुर ले आये अरू अपनी राजधानी के वातावरन कू वृन्दावनमय बनाय दीयो । सवाई जयसिंह की

सरिया राजस्थान के अन्य राजानैऊ अपने अपने राज मे ब्रज के ठाकुर के मूल विग्रह या बिनके प्रतिरूपन कू प्रतिस्ठित करके कृस्न भगति के सग ब्रज सस्कृति कू अपनायौ अरू पनपायौ। मदनमोहनजीनैं करौली कौ मान बढ़ायौ। बूदी कौ नाम सुरू म वृन्दावन धरयौ गयौ। औरगजेब दुर्रानी, अब्दाली आदि आक्रमनकारी के देवालय विरोधी स्वरूप के कारन जि रच्छा कू राजस्थान के राजान की छत्र छाया म आयक स्वय कू सुरच्छित प्रतीत करिबे लगे। जाई समै वल्लभ सम्प्रदाय के द्वारिकाधीश जी काकरोली पधारे। कोटा म मथुरेस जी आये अरू सिहाड मवाड म श्रीनाथ जी बिराजे जो आग चलक नाथद्वारा नामते प्रसिद्ध भयो। कछू दिना पचम पीठऊ कामा ते बीकानर गये हे परि बे पुन कामा पहौच गये। राजस्थान के कामा मेई पुस्टि सम्प्रदाय को सप्तम पीठ अवस्थित है। पुस्टि सम्प्रदाय के प्रमुख पीठ के सग सग ब्रज के अन्य चार सम्प्रदाय मे ते निम्बाक सम्प्रदाय कँऊ प्रमुख पीठ राजस्थान की धरती सलेमाबाद माहि स्थित हैं। जा तरिया ब्रज के प्रमुख सम्प्रदाय निम्बाक गोडीय, वल्लभ, सखी अरू राधा वल्लभ सम्प्रदाय मे ते निम्बाक अरू वल्लभ कें प्रमुख पीठ राजस्थान की धरती पै अवस्थित हैं।

काव्य सौरभ

सुबरो

नेह जो करै तो नद नन्दन के चरनन त
मोह जो करै तो मन मोहन मुरारी ते।
उर म बसावै तो बसाव बासुदेव प्रिय,
रमन करे तो नित रसिक बिहारी ते।
गावै गुनगाथा तो सदव गाकुलेस जी की,
याचना करै तो यदुवीर असुरारी ते।
बन्दन कर तो बर वृन्दावन चद ही सो,
ध्यान जो लगावै तो लगाय गिरधारी ते।

ब्रजभाषा कौ सार्वदेशिक स्वरूप

वीरन की तरवारन की छत्रछाया म परवे वारी डिंगल अरू गारीन मे रस घोरबे वारी एव स्यामा स्यामा के गुप्तातिगुप्त रहस्यन कू भूतल पै प्रकट करिबे वारी पिंगल भाषा ने हमारे देस मे वीर अरू सिंगार के सरस गीत गाये हैं। हमारे देश के साहित्य को इतिहास या सत्य की साखी है कै जन भाषा के रूप मे डिंगल अरू पिंगल के नाम ते कहे जायवे वारी राजस्थानी अरु ब्रजभाषा नें हमारे देश के कोटि कोटि उपेक्षित लोगन मे ज्ञान अरू सघर्ष की चेतना भरी हैं। एक नें जग की खनखनाती तलवारन के माध्यम ते राष्ट्रीयता के भाव बुलद कीनें हैं तो दूसरी ने प्रेम करूना अरू वात्सल्य के मानवीय भावन की मजुल भक्ति की भाव धारा हमारे देसवासीन के मनन मे उतारी है।

देवालय सस्कृति की भाषा ब्रज कौ रक्षक राजस्थान—

देवालय सस्कृति की छत्रछाया मे फलवे फूलवे वारी पिंगल भाषा की सेवा अरू रक्षा वडी मैंन डिंगल ने बडे नेह अरू दुलार के सग कीनी है। ब्रजभूमि पै जब जब मुसीबत आई है वा समैं राजस्थान क जुझारू वीरन्नै अपने अदम्य साहस अरू दिलेर वीरता ते ब्रजकला अरू सस्कृति की रक्षा कीही है। विपत्ति काल मे ब्रजभूमि के सिगरे देवालय राजस्थान की धरती पैई आस्रय पाय सके हैं। पुष्टि सप्रदाय को प्रधान पीठ अरू सूरदास कुम्भनदास छीतस्वामी आदि ब्रज काय के अष्टछाप कविन के परम आराध्य गोवर्द्धन धरण श्रीनाथ जीनै आज ते ठीक तीन सौ बीस बरस पैले सन् 1669 की आश्विन मास पूनो शुक्रवार कू दो सो ब्रजवासीन के सग गोवर्द्धन छोड़ो हो। दो बरस चार महीना चार दिना तानूं श्रीनाथ जी के सग दो सो ब्रजबासी अपने भूखे प्यासे अबोध स्त्री बच्चान के सग भयकर जगलन मे हिंसक पशुन के बीच प्रचण्ड भीषण गर्मी ठिठुरती कपकपा देबे वारे शीत अरू मूसलाधार बरसा म आस्रय कू देस के एक भाग ते दूसरे भाग तक मारे-मारे फिरे हे। देस के काऊ साहसी युद्धवीर ने इन दुखी पीड़ित असहाय ब्रज बासीन कू अपने यहा आस्रय नाय दीनौ। ऐसे सक्टकाल मे राजस्थान के वीरन्नै भूखे प्यासे दर-दर, मारे-मारे फिरते रोमते बिलखते ब्रजबासीन कू अपने ह्यां सिहाड नाम के गाम मे आस्रय दीनौ हो। जि सिहाडई आज नाथद्वारा के नाम ते

जानौ जाये है। नाथद्वारा आयवे ते पहलें श्रीनाथ जी चार महीना जोधपुर के चौपासनी मेऊ रहे हैं। चौपासनी अरु सिंहाड़ में राजस्थान वासीन्नें अपने पलक पावड़े बिछाय के श्रीनाथ जी अरु ब्रजवासीन को एसौ अभूतपूर्व सुआगत कीनौ हो जैसौ आज तक या धरती पै काऊ कौ नाय भयौ। वल्लभ सम्प्रदाय के प्रमुख सात पीठन में ते पांच राजस्थान की धरती पई बिराजे भये हैं। श्री कृष्ण की चौथी पीढ़ी में जनम लेवे वारे वज्रनाभ ने कृष्ण की भौतेरी प्रतिमान कौ निर्मान करवाय के ब्रज में एक ते एक सुन्दर देवालय स्थापित की है हैं। आगे चल के बौद्ध, जैन धर्म के प्रभाव अरु आततांईन के कारन जब ब्रज में मूर्ति भजन अरु मंदिरन कूं नस्ट करिवे कौ सिलसिलौ सुरूभयौ तौ ब्रज वासीन्नें वज्रनाभ द्वारा निर्मित श्री कृस्न के विग्रहन कूं धरती के गर्भ में छिपाय दीनौ हो। कालान्तर में जब चैतन्य महाप्रभु ब्रज आये तो बिन्नें अपने शिष्यन कूं इन प्रतिमान कौ धरती ते निकार के उद्धार करिवे कौ निश्चय कीनौ। चैतन्य प्रभु के सात शिष्यन्नें इन प्रतिमान कूं ढूंढ़ के ब्रज में सात देवालय स्थापित कीनें। इन सातन में ते पांच देवालयन के मूल विग्रह राजस्थान की धरती कूं आजऊ पवित्र करें भये हैं। इनमें ते एक श्री गोविन्द देवजी के नाम ते तौ जयपुर रियासत कौ सिगरौ सासन प्रबन्ध चल्यौ है। निम्बार्क सम्प्रदाय कौ प्रधानपीठऊ राजस्थान की धरती पैई अजमेर अरु किशनगढ़ के पास सलेमाबाद नामक स्थान पै प्रतिष्ठित है। राजस्थान के ब्रजकला अरु संस्कृति के संग कर गये उपकारन की कथा कौ कहा तानूं विवेचन कीनौ जाय। ब्रजवासीन के पास तौ जो कछु वैभव है लालित्य है वू सब कछु राजस्थान कौई दियौ भयौ है। राजस्थान के ब्रजभाषा के संग कर गये उपकारन अरु अवदानन में याते बड़ौ और का उदाहरण है सके है के जब ब्रजवासीन अपनी मैया ब्रजभाषा कूं घर ते निकार दीनौ ही, बिचारी भूखी प्यासी दर दर मारी मारी फिर रही ही, वा समै राजस्थान सरकार ने ब्रजभाषा अकादमी बनाय के वा भाषा के प्रानन की रक्षा कीनी है। उत्तर प्रदेस ब्रजभाषा कौ गढ़ कह्यौ जाय पर म्हांऊ ब्रजभाषा अकादमी नाय। उत्तर प्रदेसई का राजस्थान सिगरे भारत में इकलौ प्रान्त है जाने कन्याकुमारी ते कस्मीर तलक एक छत्र राहब वारी काव्य भाषा ब्रज की अकादमी बनाई है। राजस्थान ने ब्रजवासीन के संग जो उपकार कीनौ है वा रिण कूं कैसे चुका सकिगें ब्रजवासी। ब्रजवासीन के पास तौ राजस्थान के या रिण कूं चुकायवे कूं धन नाय, सम्पत्ति नाय वैभव नाय। हम ब्रजवासीन के ढिंग तौ राजस्थान के या अविस्मरणीय ऋण कूं चुकायवे कूं स्याम सुन्दर के वियोग के अजस्त्रिभर असुआन के सिवाय कछु नाय। स्याम सुन्दर के वियोग की करुणा के दारुण दुख में डूबे भये ब्रजवासी की हृदय विदारक दसा कूं सब्दन में उतारयौ है एक स्थान पै महाकवि सूरदास ने—

ब्रज के बिरही लोग बिचारे।
बिन गोपाल ठगे से ठाड़े अति दुबल तन कारे।

नन्द जसोदा मारग जोवति निसदिन साझ सकारे ।
चहु दिस कान्ह कान्ह कहि टेरत अँसुअन वहत पनारे ।
गोपी ग्वाल गाय गो सुत सब अति ही दीन दुखारे ।
सूरदास प्रभु बिन यो देखियत चन्द बिना ज्यो तारे ।

ब्रजभाषा को सार्वभौमिक लालित्य—

ब्रजभाषा न जसोदा कू लोरी गायबो सिखाया है ब्रजभाषा ने ग्वाल बालन कू ठिठोलबो सिखायौ है, ब्रजभाषा ने राधा कू मान मनुहार करिबो सिखायौ है, ब्रजभाषा ने बासुरी कू मीठो रस घोरबो सिखायौ है, ब्रजभाषा ने हमारे देस के साहित्य कला संस्कृति मे प्रेम करना वात्सल्य की भक्ति के लालित्य को वैभव घोरबो सिखायौ है । कहातानू कहो जाय ब्रजभाषा कौ हमारे देश कू करे गय अवदानन की कथा कूँ— ब्रजभाषा ने तो बानी के विधाता तक कू बोलबो सिखायौ है । जाई कारन ब्रजभाषा के अनन्य सेवक गोपाल प्रसाद व्यास न कह्यौ है—

जसुदा क लोरी गाय पालनो सिखायौ तैंने
गोपी ग्वाल बाल कू ठिठोलबौ सिखायौ है ।
राधा कू मान मनुहार अभिसार अरू,
बासुरी कू मीठोरस घोरबौ सिखायौ है ।
साहित्य कू रस रीति छन्द अथ अलकार,
ललित कलान द्वार खोलबौ सिखायौ है ।
धन्य ब्रजबानी तेरी अकथ कहानी तनैं
बानी क विधाता कू बोलबौ सिखायौ है ।

अनुराग क रग म रगी भयी, सूर की गोपी ग्वाल बालन के अधरान प बिराजवे वारी मीठी मीठी सहज सरल ब्रजभाषा देव बिहारी सोमनाथ सूदन केशव, पद्माकर जैसे सैंकडन कविन के गरे की मोतिन की लर सौ ब्रजभाषा नान भक्ति अरू प्रेम कू निचोरती भयी गोविन्द के गुनन कू गुनगुनायवे वारी ब्रजभाषा, भावना अरू अनुभूतीन के उमडते घुमडते आकास मे घनआनन्द है क बरसबे वारी ब्रजभाषा जीवन की कडवाहट अरू क्रन्दन करती पीडा कू अपनी उमगती रसीली गारीन के फूलन की फुलवारी बनायबे वारी ब्रजभाषा ने कन्याकुमारी ते कस्मीर तलक हमारे देस कू अपने नेह के मकरद मे डूबायक निहाल कीनो है । जाई कारन श्री गोपाल प्रसाद जी ने कह्यौ है—

ये अनुराग के रग रगी रसखान खरी रसखान की भाषा ।
यामे घुरी मिसरी मधुरी यह गोपिन के अधरान की भाषा ।

का सरि याकी करे कवि ब्यास यह भाव भरे अमरान की भाषा।
बोरत भक्ति निचोरत ग्यान म गोविन्द के गुनगान की भाषा।

ग्यान व भक्ति की विषय ब्रजभाषा —

ब्रजभाषा अरू ब्रजभूमि हमारे देश की हृदय स्थली अरू प्राण स्थली रही है। यहा ते हमारी भावना अरु लीला जीवन रम ल कैं सिगरे देश कू जिजीविषा भावन ते आप्लावित करती रही है। ब्रजभाषा न भक्ति अरू ग्यान कू नये मीठे आयाम दीने हैं अरू पग पग पै ससार की भौतिकता अरू मायावाद ते उत्पन्न ग्यान के अहकार कू मीठे उपहास ते दूर हटाय दीनो है। ग्यान के अहकार म डूब भय ऊधो जैस पडितऊ ब्रज के वियोग के सामै भूल गये अपनी पडिताऊ कू। ब्रजवासीन के श्याम सुन्दर के वियोग के आतप के कारन ग्यान के अहकार को हिमखड जब ऊधो के मानस ते विगलित भयो तो अनुभूतीन की सरसता के आनन्द क कारन वू बावरो है गयो। जेई सत्य कवि श्री गिरीश चतुर्वेदी के कवि मानस त शब्दन म साकार भयो है जा तरियां-

बावरो सो भयो ऊधो सखा तब नेह के नीर बहायो भयो,
सिसकातौ भयो कछू कापतौ सौ सुधि भूल गयौ ब्रज आयौ भयो।
ध्यान रह्यो न गात हू को मन काप गयौ घबरायौ भयौ,
बठ गयौ निजमाथ पै हाथ दे राधिका के गुन गातौ भयौ।

श्री कृष्ण के बिना ब्रजभाषा मे कछू नांय—

ब्रजभाषा अरू ब्रज सस्कृति कू जाननौ है तौ श्री कृस्न कू ता जाननोई परगो। ब्रज भूमि के लोकनायक कृषि के उन्नायक अरू उद्धारक, गौ वश के पालक ललित लीलाधर, आतताईन के सहारक सत्य के सहायक अरू असत्य के घनघोर विरोधी उपेक्षित अरू शापित समाज के उद्धारक, समरिद्ध द्वारावती के सस्थापक, केंद्र म धमराज को शासन कारबे बारी शक्ति मोह के अधकार मे डूबे अर्जुन जैसे व्यक्ति म ग्यान को दीप प्रज्जवलित कर ओजस्वी बनायबे वारे महापुरुष परम आसक्ति अरू परम निरासक्ति कू धारन करबे बारे परम भोगी अरू परमयोगी, साम्राज्यवाद के विरुद्ध लोकतत्र अरू समाजवाद कू प्रतिष्ठित करिबे बारे महापुरुष कछु रूप म मानें। ब्रज साहित्य की आत्मा कू जाननौ है तौ श्री कृस्न कू तो जाननोई परैगो। श्री कृस्न की शरण मे जाये बिना ब्रज साहित्य की आत्मा कू जानब को दूसरो रस्ताई नाय। चाहे वाये नदजू क छैया के रूप म जानो, चाहे मैया जसोदा के कन्हैया के रूप म जानौ, चाहे बलदाउजी के भैया के रूप म जानौ चाहे राधा अरू गोपीन की मन अरू ब्रजवासीन की हृदय प्रान एव गोकुलवासीन के माखन के चुरया के रूप मे जानौ चाहे इन्द्र की मानभन्ग

अरु ब्रजवासीन की रक्षा करिवे वारे गोवर्द्धन के उठैया के रूप में जानौ, चाहे कंस जैसे भौतेरे घमंडी आततांईन के गिरैया के रूप में जानौ, श्री कृस्न कूं जाने विना ब्रजभाष कूं समझनौ अरु जानवे कौ कोई रस्ता नाय।

ब्रजभाषा ने संस्कृति को युद्ध लड़ौ है—

ब्रजभाषा ने राज्याश्रय पायकेऊ राजधर्म अरु राजसंस्कृति के सामें स्वयं कूं नीलाम नाय कीनौ। आज जंसं हिंदी भाषाअंग्रेजी भाषा ते जूझ रही है वैसेंई काऊसमैं ब्रजभाषा ने अरबी फारसी ते टक्कर लीनी ही। ब्रजभाषा ने साहित्य कला संस्कृति के स्तर पैं अपन बूते पैं भाषा को युद्ध लड़ौ हौ अरु विजय प्राप्त कीन्ही ही। हम यहाँ बड़े गर्व के संग उल्लेख करनौ चाहैं कैं संसार के इतिहास में स्यातई दूसरौ उदाहरन होय जब गुलाम पराजित कौम ने साहित्यकला संस्कृति के स्तर पैं शक्तिसाली बादसाही कूं पराजित कर दीनौ होय जैसो ब्रजभाषा ने कीनौ है। राग रागनीन में निबद्ध श्री कृस्न की ललित लीलान ते सराबोर पद रस सक्ति छंद अरू भाषा की कुशल कारीगरी ते सजे संवेरे सवैया अरू टकसाली कवितन्नें हमारे देस में ऐसौ समां बांध्यौ कैं तलवार के जोर पैं चलाई गई बादसाही की जुबान अरू तहजीव के पाँव हमारे देस में टिक नईं पाये। श्री कृस्न की ललित लीलान के सामें ब्रजभाषा के भक्त संत कविन्नें अकबर जैसे सक्तिसाली सम्राट कूं संतन कूं कहा सीकरी सौं काम आवत जात पन्हैया टूटी बिसर गयौ हरिनाम' कह कैं निरौ बौना बनाय के हमारे देस की संस्कृति के गौरव के मस्तक कूं बुलन्दीन पैं चढ़ाय दीनौ। अस्टछाप के कविन्नें ईरानी संगीत कूं धूर चटाय के भारतीय संगीत की पताका दिग दिगन्त फैलाय दीनी। ब्रजभाषा ने हमारे देस की साहित्य कला संस्कृति में प्रेम करूना अरू वात्सल्य की पावन अनुभूतीन को ऐसौ पुस्कल मीठौ रस घोरौ कैं अरबी फारसी के दिग्गज साहित्यकार राजसत्त के सुख अरू वैभवसाली जीवन कूं त्याग कैं श्री कृस्न की ललित लीलान के उल्लास में डूब कें निहाल है गये। जाई कारन परम वैष्णव अरु कट्टर राष्ट्रवादी कवि भारतेन्दुबाबू हरिश्चन्द ने बड़ेई पावन सब्दन में इन मुसलमान कविन कौ स्मरन करते भये लिखौ है—

अलीखान पठान सुता सह ब्रज रखवारे।
सेखनबी रसखान मीर अहमद हरि प्यारे।
निरमलदास कबीर ताजखां बेगमबारी।
तानसेन कृष्णदास विजापुर नृपति दुलारी।
पिरजादी बीबी रास्ती पदजर नितसर धारियें।
इन मुसलान हरिजनन पैं कोटिन हिन्दुन वारियें।

ब्रज को विचित्र हिसाब–

ब्रजभाषा अरु ब्रजभूमि को बडोई विचित्र हिसाब है। यहा की रेत रस की सरिता है अरु सीतल बयार विरह के उद्वेग ते खोलती भयी लहर है। यहां गिरिराज के रूप म पूजित पत्थर कू छप्पन भोग लग हैं अरु धरती प नील सुनहल प्रकाश की किरनन म कदम्ब की नीचे योवन को अभिनन्दन होय है। यहां श्री कृष्ण के बाल भाव के उपद्रवन ते प्रेम है जाय है अरु जे प्रमई जीवन को सघन त बडो उपद्रव बन जाय हैं। कवि कलाकान्त अरु साहित्यकार सदीन त ब्रज के या बालभाव के उपद्रवन ते परेसान है कैं एक सुर म कवि रसखान की भाषा म कह रये हैं।

काहू को माखन खाय गयो अरु काहू को दूध दही ढरकायो।
काहू क चीर ल रूख चढयो अरु काहू के गज धरा छहरायो।
मानें नहा लरज रसखान सुजानोई राज इहें घर आयो।
आजरी वृक्ष जसामति सों यह छोहरा जायो के भव उपजायो।

जि ब्रजभूमि को एसा उपद्रव है जो न तो सह्यो जाय हैं अरू नई जाके बिना रह्यो जाय है कवि कलावन्त, साहित्यकार सदीन ते ब्रजभूमि के बालभाव के उपद्रवन की एक सरस झाकी देखबे कू सदीन ते वियोग के मिठास म डूबे भये एक सुर मे कह रहे हैं–

चोर की चटक औ लटक नव कुंडल की
भौंह की मटक नेह आखिन दिखाऊ रे।
मोहन सुजान गुन रूप के निधान फेरि,
बासुरी बजाय तन तपन सिराऊ रे।
ऐसो बनवारी बलहारी जाऊं आजतेरी,
मेरी कुंज आय नेह मीठी तान गाऊ रे।
नंद के किसोर चितचोर मोर पाख बारे,
बंसीवारे सावरे पियारे इत आऊ रे।

सिगरे भारत मे ब्रजभाषा–

जाई को परिनाम हो कैं ऐसे ब्रजकाव्य ने हमारे देस कू ऐसी अटूट भाव डोरी मे बाध्यो कैं भाषा रीति रिवाज सबकी विभिन्नता टूट गई। हमारे देस मे जहा जहा श्री कृष्न भक्ति की पीयूषधारा पहोंची म्हा म्हा ब्रजभाषा के मिठास के सुर गूंज उठे केरल के महाराजा राम वर्मा 'स्वाति तिरूनाल' नाम ते ब्रजभाषा मे कविता करते हे।

महाराष्ट्र के ग्यानस्वर अरु नामदेव जैसे भौतेरे सतन ब्रजभाषा म कविता कीही है। गुरू नानक अरू गुरु गोविन्दसिंह के ब्रजभाषा के काव्य कू कौन है जो नाय जान। पजाब के गुरु गोविन्दसिंह क दरबार म तो ब्रजभाषा के कविन की जमघटई लग्यो रहतौ हो। हिमाचल प्रदेस में रिषभदेव डोगरा अरूणसिंह वेदी जैसे सैकडन कवि गुरुमुखी लिपि के कारन आजऊ पाडुलिपिन म बद पडे भये हैं। गुजरात के भालण नरसी महता दयाराम गिल्लाभाई जैसे सैकडन कविन के पदन कू आजऊ गुजरातवासी सबेरे उठतेई सबन ते पैलें गावै हैं। कच्छवारेन ने तो ब्रज पाठसालाई खोल दीनी ही। जाम दूर-दूर ते ब्रजभाषा के विद्यार्थी ब्रजभाषा पढ़वे आयो करते हे। बगाल के यशोजराजखान न याकों नामई ब्रजबुली धर दीनो हो। मिथिला के विद्यापति आसाम के सकरदेव माधव देव ने ब्रजकाव्य तई प्रदेस आजऊ महक रह्यौ है। राजस्थान की गौरव मीरा के ब्रजकाव्य की दिव्य सुरभि ते हमारे देस को कानसो भाग है जो सुरभित नाय भयौ। राजस्थान म कौनसी ऐसी जगै है जहा ब्रजभाषा क सुर नाय गूजे। सामान्य जनन की तो वातई काए ह्या के तो राजान तलक न ब्रजभाषा मे कविता करक जाके गौरव कू बढ़ायौ है। जैपुर के ब्रजनिधि किशनगढ के नागरीदास अरु जोधपुर के जसवन्तसिंह, मानसिंह अरु राजेन्द्र सिंह सुधाकर भरतपुर के बल्देव सिंह करौली के भया रतनपाल जसे कछू नरेसन को ह्या उल्लेख करिवो पर्याप्त है। राजस्थान म तो एक समै ऐसोऊ आयौ हो जब ह्या के राजान अरू जनता मे अपन नगर कू ब्रज बनायवे की होड सी लग गई ही। जाई समै जैपुर नगर निर्माता सवाई जयसिंह ने अपने ह्या कनक बृदावन की स्थापना कीन्ही अरू जोधपुर म मानसिंह के काल मे जिउक्ति साकार भई जोघ बसायो जोधपुर ब्रज कीनो ब्रजपाल।'

आज ब्रजभाषा की आवश्यक्ता—

ऐसी सस्कृत पाछै सिगरे देश की वदनीय ब्रजभाषा धीरे धीर भाषा त एक छेत्र की बोली मात्रा बन कै रह गई। नवीनता के नाम पै ब्रजभाषा पै मनगढत आरोप लगाये गये। दै दीनौ फतवा कै ब्रजभाषा म गरी सडी उपमा उत्प्रेक्षा अरू सिंगार के मासल चित्रन के अलावा कछु नाय। ब्रजभाषा कू मात्र कृस्न भक्ति की भाषा अरु नवीनता विरोधी कहकैं बाकौ उपहास करो गयौ। काऊने ब्रजभाषा की सास्कृतिक विरासत की तरफ ध्यान दव की प्रयास नाय कीनौ। सिगरे देस कू अपने नेह के सौरभ ते सुरभित करिवे बारी भाषा क सै प्रगति विरोधी बन गई ? जनता के दुख दद के सग रच पच कै चलवे बारी ब्रजभाषा कैस एकदम सामती है गई ? ब्रजभाषा ने एक ते एक काव्य मनीषा के सहयोग ते सरस भाव व्यजना मोहक वचनवक्रता अरु मधुर वाग्वैदग्धता त लिपटी जो काव्यकला विकसित कीन्ही बाय अपमानित अरू तिरस्कृत करकै हमनैं अच्छौ नाय कीनौ। हिन्दी कू सहष सघष करके स्यापित करिव बारी ब्रजभासा कू हिन्दी के साहित्यकार तिरस्कृत करते समै भूल गये क वे अपनी रचना धर्मिता की स्वय आलो-

घना कर रयौ है। हिन्दी त ब्रजभाषा कूं निकार दिगे तो का बचैगो हिन्दी के ढिग ? पंत के काव्य संकलन 'पल्लव' की भूमिका ब्रजभाषा कूं हिन्दी के एक समय साहित्यकार द्वारा मनगढ़त बेबुनियाद ब्रजभाषा की ददभरी आरोपन की कहानी है। मानवीय भावनं कूं जन जन तक पौंचायवे वारी भाषा के अभाव मे हमारे देस मे मारकाट अरु निष्ठुरता की बढ़ती भई प्रवृत्ति के कारन आज ऐसी भाषा की जरूरत है जो हमारे देसवासीन के मनन मे प्रेम करुना वात्सल्य जैसे मानवीय भाव पैदा कर सकें। ब्रजभाषा ने अपन वैभवशाली सास्कृतिक परिवेश अरु भाईचारे के भावन ते सदैव संकुचित दायरेन कौ विरोध कीन्हौ है। अगर ब्रजभाषा के साहित्यकारन कूं राष्ट्रीय स्तर पै प्रोत्साहित कियो जाये तो वे पुन हमारे देस के साहित्य कला संस्कृति म प्रेम करुना अरु वात्सल्य कौ संगम साकार कर सकें हैं।

काव्य सौरभ

सुन्दरी

पाम जो परिकम्मा करैं तो पद्म लोचन की
सेवा जो करैं तो कर कलिमल हारी की।
कान जो सुनं तो शुभ कीर्ति श्याम सुन्दर की।
गुनें जो गुनावलि तो गिरवर धारी की।
रसना रटै तो रटै रसिक बिहारी सदाँ,
चाह जो करैं तो चोर चोर बनवारी की।
मन मे बसाव तो बसावैं मन मोहन को
रोम रोम रमै मूर्ति राधिका बिहारी की।

ब्रजभाषा गद्य कौ विकास

हमारे देस म प्राचीन काल तेई ब्रजभासा म पद्य की तरिया गद्य कौऊ पर्याप्त प्रयोग भयौ है। चौके मध्यकाल म ब्रजभासा राष्ट्रभाषा ही। का दच्छिन का पूरब अरु का पच्छिम सिगरे देस मे ई साहित्य भाषा के रूप म गहीत ही। ई कहबौ नितान्त भ्रामक अरु त्रुटिपून है के ब्रजभाषा मात्र कृष्णोपासना तानूँ सीमित रही है। ब्रजभासा माँहि विविध रूपन म विशाल साहित्य कौ निर्मान भयौ है। ब्रजभाषा के मनीसीनै कठोर परिस्रम ते हिन्दी ससार के सामै प्रमानित कर दियौ है के ब्रजभाषा गद्य कौ प्राचीनकाल तेई प्रचुर भडार प्राप्त होय है। साहित्य के विविध रूपन मेई ब्रजभाषा गद्य कौ चलन नाओ अपितु राजकाज, बादसाह नवावन के फरमान अरु दनिक सरकारी काम काज मेऊ ब्रजभासा गद्य कौ भारी मात्रा मे प्रयोग भयौ है अकबर के काल के अधिकाँश फरमान अरु राजाज्ञा ब्रजभासा मेई निकरी है। राजान की सधि अरु पत्र व्यवहारऊ ब्रजभाषा गद्य मेई भयौ है। हिन्दी साहित्य के इतिहासकार ज्यादातर ब्रजेतर प्रदेस के भय हैं। जा कारन ये ब्रजभूमि ते सम्बन्धित प्रान्त की प्रचुर साहित्यिक अरु ऐतिहासिक दस्तावेज विसयक सामग्री की ओर ध्यान नाय दे सके। परिनामसुरूप आधुनिक हिन्दी गद्य के निरमान मे बिनकूँ अग्रेजी अरु बगला साहित्य कौ प्रभाव दृष्टि-गोचर भयौ है।

अस्तु गद्य साहित्य के क्षेत्र में ब्रजभासा कौ प्रयोग अति प्राचीन है पर याकी पुष्ट अरु प्राचीन रचना बाद में उपलब्ध होय है। कहवे की आवश्यकता नई के गद्य के साहित्यिक रूप में स्थान प्राप्त करिबे बारी भाषा व भौतइ पैले परस्पर साहित्यिक कम में बाकौ प्रयोग सुरू है जाये है। जेऊ स्पष्ट है क रख रखाव अरु रक्षा के अभाव में भौतेरी ब्रज गद्य की प्राचीन रचना नष्ट है गई। प्राचीनकाल में जब अपभ्रश भाषा धीरे धीरे साहित्य जगत ते विश्रान्त रहो तो बाकौ स्थान भरिबे कूँ धीरे धीरे ब्रजी कौ पदापन सुरू है गयो हो। ब्रजभाषा गद्य के पदापन के दरसन ग्यारहमी अरु बारहमी सती के 'सदेसरासक', 'प्राकृत पैगलम' आदि रचनान में हैबे लगे हैं। ऐतिहासिक दृष्टि

सौं राजस्थान मेंई ब्रजभासा गद्य वौ प्राचीन प्रयास दृष्टिगोचर होय है।[1] ब्रजभाषा गद्य के सम्भ मे गोरखपंथी गद्य को सबन तें पेंल उल्लेख कियो है। वे याय 14 मी विक्रम मे रचित ब्रजभाषा गद्य को प्रारम्भिक रूप स्वीकार करे हैं। साहित्यिक दृष्टि सों 'पृथ्वीराज रासो' ब्रज काव्य की पैली कृति हैव वे सग मग ब्रज गद्य कोऊ ऐसी पली रचना है जाम सबन ते पेंले ब्रज गद्य के प्रयोग के दरसन होय हैं। रासों म ब्रज गद्य को प्रयोग के दरसन होय है। रासों मे ब्रज गद्य को प्रयोग 'वारता' सीषक मे भयो है। 'वारता' ते तात्पय 'प्रसग वारता' ते हैं। छद रचान ते पेंल विसय निर्देस कू ब्रज गद्य मिले हैं—जैसे—'वार्ता-हिव चन्द वरदायी कहे। वार्ता तब चांद बोल्यऊ। वार्ता हिव राजा प्रिथीराज चांद सूं कहतु हुई।' आचाय रामचन्द्र शुक्ल ने गद्य साहित्य को अध्ययन करते भये प्रारम्भिक ब्रजभाषा गद्य को उदाहरन देते भये गोरखपंथी गद्य की कछू पक्तीन को उल्लख कीनौ है। शुक्ल जी जाकू 1400 वि के आस पास स्वीकारे हैं। डा पीताम्बर दत्त बडथ्वाल न गोरख की ग्यारह रचनान को उल्लेख कीनौं है। इनम कछू पुस्तकन म ब्रजभाषा गद्य को प्रयाग भयो है।

प्रारम्भिक ब्रजभासा गद्य को उदगम, राजस्थान—

खोज अरु अन्वेषण ते प्रमाणित होय है के ब्रजभाषा गद्य की प्रारम्भिक रचना ब्रजेतर प्रदेस म भई है। इनको उदगम स्थल विसस रूप ते राजस्थान रह्यौ है। इनकी अधिकाश हस्तलिखित पोथी राजस्थान के विभिन्न स्थानन म मिले हैं। राजस्थान के इन प्रारम्भिक ब्रजभाषा क ग्रथन को भाषा थोडी ब्रजभूमि की भाषा ते भिन्न है। यामे राजस्थानी गुजराती अरबी फ रसी की सब्दावली कोऊ प्रयोग मिले है। विदेसी आक्रमण अरु नवीन शोध के अभाव म राजस्थान म प्रणीत ब्रजभाषा गद्य की रचना अबई तानूं इतेक प्रकाश म नाय आई है जितक आनी चइये। प्रभुदयाल मीतल ने ठीक लिख्यौ है—'जब राजस्थान स लकर पूव तक के निवासियों मे ब्रजभाषा गद्य लिखने की पद्धति प्रचलित थी, तब निश्चय पूवक उस समय ब्रजभासा गद्य का प्रचार होगा। खेद है कि विधर्मी आक्रमणकारियों की ध्वसकारिणी करतूतो से उस समय के अधिकाश ग्रथ नष्ट हो गये हैं। अत उस काल का अधिक गद्य साहित्य उपलब्ध नहीं होता।'

'पृथ्वीराज रासो' म जहा एक तरफ उत्कृष्ट काव्य को सजन भयो है म्हांई या रचना कूं ब्रजभाषा गद्य की प्रारम्भिक रचना हैवे को श्रेयऊ दियो जानो पूरी तरियाँ तक सगत है। याको गद्य पद्यमयी शली बहुत कछू अशन म यजुर्वेद जैसी हैं। जा तरियाँ यजुर्वेद म मिलबे वारो गद्य काव्य सस्कृत भाषा के प्राचीनतम लिखित गद्य के उदाहरन हैं वाई तरिया पृथ्वीराज राज रासो के जि गद्याश

---

1 ब्रजभाषा गद्य साहित्य का विकास—प 21

ब्रजभाषा गद्य साहित्य के प्राचीनतम रूप है। यद्यपि रासो के सिगरे रूपान्तरनें में ब्रज-भासा के कछू न कछू गद्यांश उपलब्ध होय है तथापि कालक्रम अर भाषा की दृष्टि सों लघुतम संस्करन के गद्यांश ई प्राचीनतम प्रतीत होय है। श्री अगरचन्द नाहटा ने रासो के तीन लघु संस्करण खोजे है जिनमें सम्वत 1667 की लिखित प्रति सबते प्राचीन है अरु जामे मिलबे वारे गद्यऊ दूसरे संस्करण की अपेक्षा ज्यादा है। यामें गद्य 'वारता' शीर्षक माँहि लिखो भयो है। उदाहरन कूँ 'वारता' को एक अंश उल्लेखनीय है— 'वार्ता-हिव चंद बरदायी कहै। वार्ता-तब चाँद बोल्यउ। वार्ता-हिव राजा प्रिथी-राज चाँद सूँ कहतु हुई। जा तरिया एक वाक्य माँहि प्रसंग निर्देस करे पाछे चन्द रूप मे महाकाव्य के कथानक कूँ आगे बढ़ायो गयो है। जा तरिया विसय बोध की दृष्टि सों इन गद्य वाक्यन को महत्व सांचई हैं। जा तरिया पृथ्वीराज रासो की सिगरी प्रतीन मे मिलबे वारे गद्य रूप के पारायण ते जि प्रमाणित होय है के चौदहमी सदी के आस पास ब्रजभाषा गद्य साहित्य के परम स्वतन्त्र प्रतिष्ठा मुरू है गई है।

राजस्थानी गद्य अरु ब्रजभाषा गद्य -

राजस्थानी गद्य साहित्य की परम्परा प्राचीनकाल ते आज तानूँ मिले है। राज-स्थानी गद्य को सम्यक विकास भयो है। राजस्थानी गद्य विविध रूपन मे बात' या वचनिका रूप मे पायो जाय है। संस्कृत साहित्य अरु अपभ्रंश साहित्य सों जो चरित्रा-त्मक कथान की प्रथा राजस्थानी साहित्य मे बात अरु ख्यात' रूप म प्राप्त भई है, ब्रजभाषा की वार्ताऊँ वाई की परम्परा सों विकसित भई, हैं। बातन' मे धम, नीति, वीरता प्रेम हास्य, करुणा राजा-प्रजा, देव-देवी भूत-प्रेत, ठग-चोर, डाकू, आदश यथाथ आदि विसयन को स्पश होय है। चारण भाटन के हृदय सों निकरी भई कथा मौखिक साहित्य की परम्परा सों निकसकैं लिखित साहित्य मे आई है। जाई तरिया ब्रज मे धार्मिक अरु भक्तन के जीवन वार्ता साहित्य' को निर्मान भयो। बल्लभाचाय की परम्परा म निर्मित वार्ताऊ मौखिक साहित्य की परम्परा मे लिखित मे आई। जा समै राजस्थानी मे गद्य को निर्माण है रह्यो हो वाई समै ब्रजभाषा म विपुल साहित्य को निर्माण भयो। ब्रज भाषा गद्य सों वू अपनी मूल प्रेरना सों भिन्न है। जा तरिया सोल-हवी सदी तानूँ राजस्थानी गद्य कैं निर्मान म जन धम को विसेस योग रह्यो है, वाई तरिया अठराहवी सती तानूँ ब्रज भाषा साहित्य मे कृस्न भक्त वैस्णवन को महत्वपून योग रह्यो है। मूल प्रेरणा के अलग हेबे के कारण ब्रज भाषा को गद्य रूपऊ राज-स्थानी के गद्य रूप ते विकसित होते भयेऊ अपनो अलग मौलिक अस्तित्व राखे है। उन्नी-समी सती मे आय समाज नैं खडी बोली को प्रचार कीनो। अरु राजनैतिक कारण सों राजभाषा की मान्यता मिलबे के कारण राजस्थानी अरु ब्रज भाषा के साहित्यकारनें खडी बोली कूँ अपनायो। या समै की खडी बोली राजस्थानी अरु ब्रज भाषा सों प्रभा-वित भयी है।

आधुनिक ब्रज भासा गद्य आधुनिक युग म खड़ी बोली के प्रचार-प्रसार के कारण ब्रज भाषा गद्य को विकास मौतई धीमी गति सौ भयौ है। मथुरा म आजादी सौ पहलें ब्रज साहित्य मण्डल की स्थापना करी गई। ब्रज भाषा के मनीषीन ने ब्रज साहित्य मण्डल ते ब्रज भारती' नाम की ब्रज भाषा की साहित्य पत्रिका प्रकासित कीनी। या पत्रिका की भाषा खड़ी बोली रखी गई। यत्र तत्र काऊ अङ्क मे छोटी-मोटी कहानी या रेखाचित्र के रूप मे ब्रज भाषा की रचना 'ब्रज भारती' के अङ्क मे दीख जाती। सन 1961 पाछ मथुरा आकासवानी केन्द्र की स्थापना भई। मथुरा आकासवानी केन्द्र के कारन अवरुद्ध ब्रजभाषा गद्य की परम्परा पुन चालू भई। अरु वाको आधुनिक युग मे प्रवेस भयौ। जाई तरिया डा शरण बिहारी गोस्वामी द्वारा पूछरी कौ लोठा' अरु स्याम सु दर स्याम द्वारा मनसुखौ' नाम त द्वै लघु उपन्यास प्रकासित भय है।

राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी के मच ते ब्रजभाषा गद्य–

जनवरी 1986 कू राजस्थान सरकार ने प्रदेस म ब्रज भाषा के सवद्धन अरु प्रोत्साहन कू राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी की स्थापना करी। राजस्थान ब्रज भाषा अकादमी ने अपनी स्थापना तेई ब्रजभाषा गद्य कूँ आधुनिक गद्य की स्पर्धा मे ठाडी करबे की विनम्र प्रयास कीनौ। अकादमी ने अपनी त्रैमासिक 'ब्रज शतदल' पत्रिका के मच सौ अब तानूँ प्रकासित 16 अको के द्वारा गद्य की विविध विधान पै विसराक प्रकासित करके आधुनिक ब्रजभाषा गद्य कू नवीन गति देबे कौ प्रयत्न कीनौ। अकादमी ने आलोचना के छेत्र मे ब्रजभाषा गद्य कू पैली दफँ अपनायौ है। 'राजस्थान मे ब्रजकला सस्कृति' सीसक ते प्रकासित चार सौ पचास के ग्रथ ते सिद्ध करिबे कौ प्रयत्न कीनौ है के ब्रजभासा गद्य म साहित्य अरु आलोचना की अभिव्यक्ति करिबे की पर्याप्त क्षमता के अलावा बामे जीवन के सास्कृतिक पच्छ कू भाषा के मच ते प्रकट करिबे की पूरी सक्ति अरु सामथ है। आधुनिक ब्रजभाषा गद्य सीसक ते प्रकासित या ग्रथ म एकाकी, कहानी अरु रेखाचित्र विधान की त्रिवेणी को सगम प्रस्तुत कीनौ गयौ है। एकाकी, कहानी अरु रेखाचित्र को ये सगम आधुनिक जीवन की विभिन्न समस्यान कू उजागर करबे कौ अकादमी की या ग्रथ मे विनम्र प्रयास है। आधुनिक जीवन की विषमता सघष अरु पग पग पै आयबे वारी कठिनाइन को सूक्ष्म विश्लेषण अरु बाको समाधान आधुनिक ब्रजभाषा गद्य के मच ते विविध विधान मे ह्या आपकूँ देखबे कू मिलैगो।



'राजस्थान माहि ब्रज लोक कला अरू सस्कृति'

राजस्थान की व्रजकला अरु सस्कृति ते भौतई पुरानो सम्ब ध है । भारत म कृस्न अरु बलराम की पूजा की परम्परा भौतई पुरानी है । जाकी पुस्टि विदेसी यात्रिन के विवरण अरु इत बित बिखरे साहित्य के अ य भौतेरे ग्र थन ते होय है । आस्चय है के कृस्न लीला ते सम्बधित पुरानी ते पुरानी कलाकृति मथुरा छैत्र ते प्राप्त नई है के राजस्था की मरूभूमि ते प्राप्त भई है । गगानगर जिले के घग्घर के तट पै अवस्थित रग महल थेडी सो मिली भई अरु बीकानेर के राजकीय सग्राहलय म प्रर्दसित द्वै बिसाल मट्टी की मूर्ति याको सबन ते बडो उदाहरण है यामे गोबरधन धारन अरु दान लीला को सु दर चित्रन कियो गयो है । एक फुट ते ऊँची जि मूर्ति उत्तर कुषाण अथवा गुप्तकाल की सुरूआत की रचना है । घग्घर के दोनू तरफ मीलन फैले भये थेडीन ते मिली जाई आकार की श्री कृस्न विसयक मट्टी की मूर्ति आजऊ राजस्थान के बीकानेर सग्राहलय म देखी जाय सके है । राजस्थान के बीकानेर के अलावा जोधपुर के मडोर मेऊ श्री कृस्न की प्राचीन मूर्ति मिलै है । मथुरा विस्राम घाट ते मिली छठी सातमी सदी के गोरधन की मूर्तिन कौ राजस्थान की मूर्तिन ते मिलान कर है तो प्रमानित होय है कै इनके अकन म ब्रज को विवरण उत्पन्न किनो गयो है । मथुरा मूर्ति म ग्वाल बाल अकित है । जबके मंडोर के कलाकारन्नै ग्वाल बाल के अतिरिक्त पहाड पै हिंसक पसु अरू यक्ष तक दिखाय डारे हैं । या मूर्ति म इन्द्र के कोप ते डरपै ग्वाल बाल, गोप गोपी इक-ठोर है गये हैं । तब भगवान ने गोरधन कू अपनी अगरिया पै उठाके बाय अपनी भुजा पै धारण करके ब्रज की रच्छा कीनी । जा पाछै जयपुर के इतिहास अरु ह्या के पुराने ग्र थन कू देखबे तऊ प्रमानित होय है कै या प्रदेस के गुप्तकाल के पाछैऊ आज तानू ब्रजभूमि ते सीधो सम्बन्ध रह्यौ है । राजस्थान की राजधानी जयपुर के भूतपूर्व नर-सन के पुरखा मानसिंह अरु बाके पैले के बिनके पुरखा श्री कृस्न भक्ति अरु बिनकी लीला भूमि ब्रज की तरफ आर्कसित रहे । तबई तो मानसिंह के म त्री राय मुरारी दास ने अपने ग्र थ मान प्रकास' मे कछवाह वश कू 'राधा ध्वरा धपूत पाणि' कह्यौ है । अब-

वर मू शासन अधिकार मिले पाछ तिनो दरबार के प्रतिष्ठित राजा मानसिंह न वन्दावन म देवपूज्य गोविन्द देव को विसाल मन्दिर बनवायवे को गमन लीनो हो। जा तथ्य को उल्लेख मानसिंह के स्याल शादि म श्री मुरारी दास नथी की सृस्त रचना 'मान प्रकाश' ते होय है। मान प्रकाश म लिखा है के राजा मानसिंह ने 1590 ई म तरह लाख रुपैया की लागत ते वृन्दावन म श्री गोविन्द मन्दिर बनवायो। अब तो जाको भीतरी भाग आहत अन्य भग्न है गयो। जा मन्दिर की स्थापत्य कला सम्बन्धि विवरण एम ग्राउस न अपने मथुरा ग्रथ म सन 1882 म कीनो है। कह्यो जाय है के जा मन्दिर क निमाण म दे बरस लग ह। मानसिंह क पीछे पाचमी पीढी म विष्णु सिंह भये। व आगरा अरु मथुरा के प्रशासनिक अधिकारी हे। बिन्ने वृन्दावन क पासई बिसनपुरा गाम बसायो अरु वृन्दावन म कुज बनवाये।

सवाई जयसिंह को ब्रजकला संस्कृति सों प्रेम—

विष्णु सिंह क पाछे सवाई जयसिंह तो परम विख्यात भये। वेऊ आगरा, मथुरा के प्रशासनिक (गवनर) रहे। बिन्नेऊ व्रज भूमि म अनेक भवन अरु बगीचा बनवाये। विश्रान्ति घाट पै बिन्ने 988 मीटर को बडो भूखड खरीदो। जाई तरिया मथुरा के कनक मोहल्ला म बिन्ने जायदाद बनाई। वृन्दावन म बिन्ने कनक कुटी अरु दीवान खानो बनवायो जो सवाई जयसिंह घेरे के नाम सों प्रसिद्ध है। जयपुर के सवाई जयसिंह की प्रेरना सों राजस्थान के राजान्ने व्रज भूमि मे अनेक भवन बनवाये यथा गोपालसिंह करौली वारे कुज बदनसिंह की कुज, भीमा राठाड को बगला, राणावत जी की कुज आदि। जाई तरिया सलेमाबाद बारेन की घाट, नागरी दास की कुज, राजा बदन सिंह ने रूप नगर बसायो सवाई माधोसिंह द्वितीय नेऊ भारी धनराशि व्यय करके वृन्दावन अरु बरसाने म राधा गोपाल जी के मन्दिर बनवाये जो आजऊ जयपुर बारे मन्दिरन के नाम सों प्रसिद्ध है। भरतपुर के राजा सूरजमल अरु जवाहर सिंह द्वारा बनवाये गये अनेक मन्दिर आजऊ गोवरधन की सोभा बढा रहे हैं। सूरजमल ने गोवरधन म कुसुम सरोबर पै विसाल भवन बनवायो। जवाहर सिंह ने वामे विस्तार कीनो अरु सूरजमल की छत्री को निमाण करवायो जामे आकर्षक स्थापत्य अरु भित्ति चित्र भौतई मलूक लगे है। सूरजमल के प्रसिद्ध सनापति रूपराम कटारा नऊ गोरधन म भौतेरे भवनन को निर्मान कर्यो।

जयपुर नरेस रामसिंह के पश्चात सवाई जयसिंह के मन म तो अपनी राजधानी कू वृन्दावन ई बनाय देवे को विचार आयो। जा कारन बिन्ने वृन्दावन के प्रमुख देव विग्रहन कू अपने नव नगर म प्रतिष्ठित कीनो। गोविंद देवजी तो पले ई ह्या आ गये हे। बिन्ने बिनकी प्रतिष्ठा, राजधानी के दच्छिन अरु नव नगर राजधानी के उत्तर में

चने भये कनक वृदावन मे कीनी। भौत समै तक आगरा मथुरा छैत्र के प्रसासक रहवे के कारन सवाई जयसिंह ने ब्रज मे लम्बे समै तानूँ निवास कियौ हो। जा कारन ब्रज सस्कृति अरू कृस्न भक्ति में पूरी तरिया रच बस गय हे। अत बिनैं अपनी राजधानी अरु राज्य म ब्रज के व दावन को सौं वातावरन उत्पन्न कर दीनो। सवाई जयसिंह के दरबारी चित्रकारन के हाथ के द्वै चित्र आजऊ जयपुर के पोथीखाने म सुरच्छित है। दोनू चित्र हमारे देस की पुरानी चित्रकला की अमूल्यनिधि है। एक चित्र म ग्वाल वालन के राधा अरु बिनकी सखीन के सग होरी खेलवे को चित्रन है तो दूसरे मे महारास को भौतइ बारीक चित्रांकन कीनो गयो है। जि दोनू चित्र राजस्थान की राजधानी जयपुर में वा समै के बने भये है जब ब्रज सस्कृति पूरे उठान पै ही। राज्य के भौतेरे गाम अरु कस्बान मे गोविंद मदिर के निर्मान भय। जयपुर के राजा सुरू तेई ब्रज के गौडीय वस्नव सम्प्रदाय के भगत रहे। परिनाम स्वरूप सवेर मजा गोविंद देवजी, गोपीनाथ जी अरु राधा दामोदर जी के देवालयन मे जानो जयपुर के ग्रहस्थन को नियम बन गयो। महाराज ने जयपुर मे ब द के दरवज्जे ते राज परिसर म बन उद्यान के कनक व दावन की रचना कीनी। जाको वनन सवाई जयसिंह के ब्रज के दरबारी कवि आत्माराम न अपनी सवाई जयसिंह चरित' रचना म कीनो है। आत्मारामऊ ब्रजमडल केई रहवैया हे। जात जेऊ ग्यात होय है के सवाई जयसिंह ने अपने ह्या ब्रज वातावरन बनायबे में ब्रज की प्रतिभान कू आमंत्रित करके अपनो राज बसायो हो।

जा तरिया श्री गोविन्द देव कू व दावन सहित सवाई जयसिंह जयपुर ल आये अरु अपनी राजधानी के वातावरन कू व दावनमय बनाय दीयो। सवाई जयसिंह की तरिया राजस्थान के अ य राजान्नेंऊ अपने अपने राज में ब्रज के ठाकुर के मूल विग्रह या बिनके प्रतिरूपन कू प्रतिस्ठित करके कृस्न भगति के सग सग ब्रज सस्कृति कू अपनायो अरु पनपायो। मदनमोहन जीनै करौली को नाम बढायो। बू दी को नाम सुरू में वृदावन धर्यो गयो। औरगजेब, दुर्रानी, अब्दाली आदि आक्रमनकारीन के देवालय विरोधी स्वरूप के कारन जि रच्छा कू राजस्थान के राजान की छत्र छाया में आयके स्वय कू सुरच्छित प्रतीत करिवे लगे। जाई समै वल्लभ सम्प्रदाय के द्वारिकाधीश जी काकरोली पधारे। कोटा म मथुरेश जी आये अरू मिहाड मवाड म श्रीनाथ जी बिराजे जो आगे चलके नाथद्वारा नामते प्रसिद्ध भयो। कछू दिना पचम पीठऊ कामा ते बीकानेर गये हे, परि वे पुन कामा पहोंच गये। राजस्थान के कामा मेई पुष्टि सम्प्रदाय की सप्तम पीठ अवस्थित है। पुस्टि सम्प्रदाय के प्रमुख पीठ के सग सग ब्रज के अय चार सम्प्रदाय मे ते निम्बार्क सम्प्रदाय केऊ प्रमुख पीठ राजस्थान की धरती सलमाबाद माँहि स्थित हैं जा तरिया ब्रज के पाच प्रमुख सम्प्रदाय निम्बार्क, गोडीय, वल्लभ, सखी अरू राधा वल्लभ सम्प्रदाय मे ते निम्बार्क अरू वल्लभ के प्रमुख पीठ राजस्थान की धरती पै अवस्थित हैं।

देवालय अरू ब्रज संस्कृति —

ब्रज की संस्कृति कूँ मंदिर या देवालयन की अथवा संतन की संस्कृति कह दें तौ उपयुक्त होयगौ। ब्रज म जगह-जगह देवालय अरू मंदिर अनेक संतन की तपस्या के प्रमान हैं। इन देवालयन मे भौतेरे संतन नैं कठोर साधना अरु तपस्या करकैं समाज कूँ प्रेम अरू भक्ति कौ ऐसो दिव्य संदेस दीनो, जानैं सिगरे भारत कू बुरे समै म आनन्द ते अपनी संस्कृति की रच्छा करत भये जीवन कू जीबैं कौ सहारौ दीनौ है। मंदिर सही मायने म जा तरिया के पावन स्थल है, जहा पैं जायकैं हर संसारी कू मन म सांति अरू अनुराग कौ भाव स्वतः ई पैदा है जाय है। ब्रज कैं वैस्नवन्नैं देवालयन की संस्कृति कू इस्ट के काजैं राग अरू भोग कू समर्पित करकैं कलान कू परमात्मा की तरफ मोडकैं बामें निस्वार्थ भाव की एसी साधना जोड दीनी, जानैं हमारे देस की कलान कूँ नयौ जीवन अर अनुपम प्रोत्साहन दीनौ है। प्रभु के दसन के संग संग म्हा की कला-कारीगरी, साज सिंगार, अ यमार्गी, अष्टयामी, अपरस, सकडी अनसकडी, कुनवाडौ, छापी, तबकडी, दूधघर पडौ अरू माला फेरते कमर झुकाये, परकम्मा देते बूढे बढियान कूँ देखकैं मन सहसई प्रमुदित है उटै है। ब्रज के मंदिर कोरे साधना अरु तपस्या या भक्ति क स्थानई नई है कैं सैंकडन परिवारन के लालन पालन के केन्द्र हैबे के संग-संग म्हाके उद्योगऊ हैं। हमारे देस की परम्परित कला अरू संस्कृति ब्रज के इन मन्दिरन की कृपा ते आज तानू टिकी भई है। ब्रज क वैस्नव मंदिर सुरू ते परम्परा के हामी रहे हैं। उदाहरन कू वल्लभ सम्प्रदाय के मंदिरन मे सरूपकी पूजा, निष्ठा की आज तानू वेई परम्परा चली आ रही है, जो वल्लभाचार्य अरु बिनके विद्वान पुत्र बिठ्ठल-नाथ जी नैं निर्धारित कीनी ही। इन देवालयन के पूजा अर्चा म प्रयुक्त हैबे वारे राग भोग सामग्री, संगीत चित्रकला पुष्पकला आदि आजऊ बा तरिया है जा तरिया गुसाईं विठ्ठलनाथ जी के समै म ही। आजऊ मंदिर के सेवकन कू मुखिया भीतरिया रसोईया, जल घडिया, फूल घडिया लिखिया छापटिया, रोकडिया (लेखाकार), परेडिया, नाकी नगारची, झाम, मृदंग सारंगी पखावज आदि बजायबे वारे रासलीला करबे वारे, कीतनीया, चित्रकार, शिल्पी, कथावाचक आदि परम्परागत रूप मे बिना काऊ तरिया के प्रभाव अरु परिवर्तन के आजऊ चल रहे हैं।

हजारन परिवारन के पालक श्रीनाथ जी—

राजस्थान के नाथद्वारा क देवालय के कारन मेवाड की तीस चालीस हजार की जनसंख्या की नाथद्वारा सहर पूरी तरिया मन्दिर के आधार पई अपने परिवार कौ पालन पोसन कर रह्यौ है। जा मंदिर के दरसन कूँ हर सप्ताह तीस से चालीस हजार यात्री नियम ते आमैं है अरू उच्छवन पैं ता इनकी संख्या लाखन पै पौंच जाय है। श्रीनाथजी के देवालय म हजारन की संख्या मे कार्यरत कमचारिन के परिवार की रोजी रोटी की

एक मात्र आधार देवालय ई हैतें। नाथद्वारा के श्रीनाथ जी के कमचारी ने तरिया के है पैले राज्य सरकार के या टेम्पिल बोड के कमचारी कहे जाय है। दूसरे मंदिर म सेवा पूजा करवे बारे हजारन की संख्या मे कमचारी है। पैले तरिया के कमचारिन कू राज्य सरकार ते वेतन मिलै है परि दूसरे देवालय की नित्य सेवा म लगे भये कमचारीन कूँ वेतन के रूप मे केवल परसाद मिलै हैं। वे या परसाद कूँ भगत लोगन मे बेच के अपन परिवार को पालन पोसन करै है। श्रीनाथ जी के भोग म लगबे वारी विराट सामग्री मूल्यवान हैबे के संग संग सुद्धता की दृष्टि ते आज के युग म निस्चितई आस्चय को विसै है। ब्रज देवालयनें हमारे देस की चित्रकला संगीतकला स्थापत्यकला आदि कलान म अपनो महतो योग दीनो है। नाथद्वारा के भित्ति चित्र, पिछवाई चित्रकला अरू श्री कृस्न लीलान के विभिन्न चित्र आजऊ ब्रज संस्कृति के गौरवशाली वैभव कूँ चारों तरफ फैलाय रहे ह। राजस्थान की श्रीनाथ जी की नगरी नाथद्वारा के प्रसिद्ध चित्रकार घासीराम अरू बिनके संगी ख्याति प्राप्त चित्रकार श्री हीरालाल जी की देखरेख म मथुरा के द्वारिकाधीश को मंदिर नन्दगाव के मंदिर अरू कुसुम सरोवर पै बनी छत्रीन के चित्रन को नवीनीकरण भयो है।

गोरधन गौ सवधन अरु खेती बाडी—

बजभूमि, बजकला अरु ब्रज संस्कृति को केन्द्र बिन्दु गिरिराज गोबरधन हत। गोरधन के रूप मे ब्रज संस्कृति ने एक ऐसो देवता हमारे देसवासीन कू प्रदान कीनो है ऊँच नीच के मानुख निर्मित भेद-भाव नाय रहे। जात पात के भिगरें बन्धन गारधन की ब्रजरज मे आयके तिरोहित है जाय हैं। सगई बन वन के लोग एक सुर मिलाय के गोरधन की जय बोलते भये परिकम्मा दे हैं। जि जाको सबन ते बडो प्रमान है। गिर्राज गोरधन की आराधक ब्रज संस्कृति को मूल आधार गौसंवधन अरू कृषि प्रधान सुरूप की सच्ची सेवा माहि निहित है। इन्द्र की पूजा को निसेधकर गोरधन की पूजा की सुरूआत श्री कृस्न ने कराई ही। जाकेई उपलच्छ मे सिगरी ब्रजभूमि अरू राजस्थान के मेवाड के लघुब्रज नाथद्वारा म दिवारी के दूसरे दिना कातिक सुक्ला प्रतिपदा कूँ अन्नकूटोच्छव मनायो जाय है। नाथद्वारा मे जाकी तैयारी दसहरा ते दिवारी तानू चलती रहे हैं। इन सामग्रीन कूँ तैयार करिबे मे मन्दिर के नियमित सेवकन के अलावा ब्रह्म सम्बन्ध अरू पुस्टिमार्गीय परम्परान मे दीच्छित भीतेरे श्रद्धालु दत्त चित्त है के सामग्री निर्मान म लग जाय है। नाथद्वारे के देवालय की गौसाला की गैयान की पूजा अरू बिनको सिगार एव ग्वाल बालन को सम्मानऊ याई दिना होय है। मंदिर की गौसाला मे अगहन पूनो सौं गोधन सिगार को काम सुरू है जाय है। बिनके सींग रंगे जाय हैं। अरू मोरपाखन के तरै-तरै के उपादान बनाय के बिनकूँ सजायो जाय है। गौसाला के ग्वाल बालऊ अपने पहिरबे के कपरा अरू आभूपन कू सजामे है। सजा

कूँ चार बजे के आसपास श्रीनाथ जी की प्रमुख गैया कूँ आगे रख के ग्वाल बाल क्रीड़ा करत भए श्रीनाथ जी के मंदिर मांहि जाय है। वहां गुसाई जी गोरधन चौक में प्रमुख गैया की पूजा करें हैं। प्रधान गवाल तें गोरधन कूँ गुदाया जाय है। ता पाछें गवाल कूँ विदा करयो जाय है। व्रज संस्कृति की गो सम्वर्धन के अभाव में तो कल्पनाई नाय करी जाय सके।

नाथद्वारा तें कोस भर दूरी पै नाथूवास मांहि श्रीनाथ जी की गौशाला स्थित है। मंदिर के दूधघर में या गौशाला तें आठों पहर दूध आमतो रहे है। व्रजबासी दूधिया अगरखो पहरें भए अधरा लगाय दूध के कलसान कूँ कंधा पै धरिकें गौशाला तें निरंतर आमत रहे हैं। परनी तानूँ लटा द्वारे पनारे में तें सौर तभी दूध काढ़ो जाय है। व्रज संस्कृति को मूल आधार गो संवर्धन के साक्षात दरसन करने है तो नाथद्वारा की गोसाला तें उपयुक्त स्थान अन्य का है सके है। गैया की सेवा अरु खेत क्यार में जाय दिनभर परिस्रम करनो व्रज के लोगन की भक्ती को प्रान बिंदु है। जाई कारन व्रज लोक जीवन में कृषि विषयक प्रचुर साहित्य मिलें है। व्रज लोक भाषा में कृषकन नें अपने जीवन के लम्बे अनुभवन कूँ लोकगीतन में बखूबी ते उतारयो है। व्रज के कृसकन को जि निचोड़ वैग्यानिक कसौटी पै तो उतारयो नांय गयो पर पीढ़ी दर पीढ़ी अनुभव की तराजू पै जाय जरूर तोलो गयो है। अब तो विग्यान के कारण खेती बाड़ी के नित नये नये उपकरन आ रये है जातें मानव परिस्रम जा खेत्र में कम है तो चल्यो जा रह्यो है। आधुनिक विग्यान के खेती बाड़ी कूँ प्रदत्त उपकरन के प्रतिऊ राजस्थान की व्रजभूमि को लोकमानस पूरी तरिया जागरूक है। व्रज लोक जीवन में खेती बाड़ी की पुरानी चर्चान के संग संग आधुनिक उपकरन के प्रतिलाऊ कलाकारन के कोकिल कंठ आजऊ पूरी तरिया ते जागरूक है व लोक कला के वैभव कूँ बढ़ाय रहे है।

व्रज लोक कला मे संस्कार अरू वाग्विदग्धता

व्रज में काऊ खास औसर पे वाई के अनुकूल लोकगीत गायवे की परंपरा हतै। संस्कार, व्रत उच्छव आदि के अलग अलग विराट लोकगीतन की परम्परा व्रज लोक जीवन में मिले है। व्रज में तो गीतन के अभाव में तो कोऊ संस्कार पूरोई नाय मान्यो जाय है। बच्चा के जनम तें लकें वाके संसार तें सिधारवे के पाछें तानूं व्रज में लोक गीतन की परंपरा चलें हैं। गाम को कोऊ बडो बूढो मर जाय है तो दूसरे गाम बारे समधी समधन रोबे आमे है। रोबे में मरबे बारे के गुनन कूँ अपनी बनाई भई कविता अरु लय में बोल बोल के रोमते भये गामे है। जनम के बधाये जच्चा छटी पूजबो, कुआ पूजबो, सातिए, तामधराई मूंडनो, कनछेदन, जनेऊ के लोकगीतन को विशाल भंडार आजऊ व्रज लोक कला के आधार बने भये है। जाई तरियां व्रज में ब्याह के लोकगीतन कोऊ एक विराट परंपरा मिलें हैं। ब्याह के गीतन मे लगन, सगाई पीरी

चिट्ठी, देहरी पूजन, चौक पुगाई, लगुन भात नौतिबौ हरद रतजगे तेल, बना बनी घूरी पूजन, बूढ़ौ बाबू पूजन, माढयौ गाढिबौ, मगोरी तोरिबौ, भात पहिराबे, चाक बालस पूजिब घुड़चढ़ौ खोरिया, बारौठी, भामर, पलवाचार, कुवर कलेऊ, दूधाभाती बढ़ार, गारी बन्दनवार, म्हौ मढ़ई, बिदा, दई, देवता पूजन जाई तरिया बत, पव अरू त्यौहारन केऊ न्यारे-न्यारे गीत गाय जाय है यथा-नौरता, गनगौर रामनौमी आखातीज रथजात्रा, गगोज देव मौमती ग्यारस, मुड़ियापूनौ, कूआ बार की जात, तीज-सलूने, नागपांचे, जनमआठै ड डाचौथ बलदेव छठ दसैरा सरद पूनौ, करवा चौथ अहोई आठै धनतरस और दीवारी गाधनपूजा, भैयादोज, अर्खनौमी, देवठान सकटचौथ, सकरात, सिव चौदस बसन्त फगुआ, होरी, सेढपूजन आदि सबन के लोकगीत बहौतई सरस होय है।

ब्रजवासीन की बात बात म काव्य सौन्दय की छटा छलकै है। बिनकी बात बहुव मेई अनूठौपन आ जाय है। मुहावर अरू लाकोक्तीन के प्रयाग त ब्रजवासी की बातन म वाग्वैदग्धता कौ अनूठौपन बिनकी भाषा की मधुरता म लाघवता एव पैनेपन कौ समावेस कर दे है। ब्रजवासीन की लोकोक्तीन में परम्परागत बिसबास की झलक होय है तौ बहू सामाजिक आस्थान क दरसन होय है। सगुन असगुन बिचारबे मेऊ लोकाक्ति परम्परा ते ब्रजवासीन कौ सदीन ते सग दे रयी है। ब्रज के लाग स्वास्थ कू भौतई महत्व दे है। कमजोर सरीर पै कौऊ तरिया को तौ काम नाय सद सके है। गाम के लोगनै अपने अनुभव ते स्वस्थ्य रहवे के सूत्र लोकोक्तिन मे ढूढ़ के जनमानस कू रोगन पै विजय प्राप्त करवे को सूधो सच्चो रस्ता बताय दीनो है। सास बहू के नोंक झोक पऊ ब्रज लोकाचार म अनेक तरिया की लोकोक्ती जनमानस की मानसिक स्थिति कू खोल कै रख दे है। लोकाक्तीन के अतिरिक्त ब्रज सस्कृति ने अपने भावन म बाल भाव कू जितेक आदर अरु लाड प्यार दीनो है। स्यात बितेक काऊ अन्य भाषा अरु सस्कृति न नई दीनो होयगो।

ब्रज लोक सस्कृति मे बालभाव की महिमा

ब्रजभूमि के बालभाव ने तो हमारे देस कू कन्याकुमारी ते कसमीर तलक ऐसी भावडोरी म बाध्यो है के भाषा रीति रिवाज आदि की सिगरी बभिन्नता टूट गई। परिनाम सुरूप ब्रज कौ बालभाव देसवासीन के घर घर कौ बालभाव बन गयौ। मजहब के सवई बधन गाकुल के बालभाव के सामै गर गये। ल्हौरे ल्हौरे बच्चान के अनोखे आनन्द भरे नटखटपने कू आदर अरु वैभव के सग अपनी भासा अरु सस्कृति म उदत करिव म ब्रज भूमि ने सबन ते ज्यादा महत्व दीनौ है। श्री कृस्न कौ ब्रज कौ बालभावई तौ जा भाषा के लालित्य कौ सबन ते बडो आदस रह्यौ है। वल्लभ सम्प्रदाय तौ पूरी तरिया

ब्रज पे सूरन के बालभाव मूर्ई मों पल्यो है। तरै-तरै के गीतन स रित स्याग के नेह ते सौरभ माहि भिगोय भिगाये के गपटन तरियो के बाल गीतन त बच्चान कू रिझायवे की परम्परा ब्रज लोक संस्कृति म मुख त रही है। दूध पीनो बच्चा धार धीरे बड़े हैतेई विनकी पट्टी पुजै है। दर्जा एक मा म इन बाल छात्रन को एक त्यौहार आव है भादो सुकल पच्छ की चौथ कू जब सिगर बच्चा अपने ल्हौर ल्हौर हाथन म रग बिरंग डंडा बजामत भय घर घर जाय क गीत गाय है। सबरे जबई बच्चा पाला पहोंचे है तो पंडित जी बड़े नेह त बालकन अरू विनके अभिभावकन त मंत्रन के उच्चारण के सग गनेश जी अरू बच्चान द्वारा लाये गये डंडान की पूजन कराये है। गुरुजा सबन के माथे प रोरी को तिलक कर अरू दाय हाथ म कलावो बाधे है। बच्चा बड़े श्रद्धाभाव ते बुद्धिदाता गनेश अरू अपने गुरूजी के रूप म पंडित जी कू साष्टाग प्रनाम करे है ता पाछे 'सीधे' क धार कू भेंट कर है। प्रसाद रूप म पंडित जी क द्वारा मट्टा के ल्हौरे भौंतुआ म बालकन कू दही, दूध अरू घी मांड़मिलो भयो पचामृत दियो जाय है। बालक छात्र खुसी ते नाचते कूदते अपने डंडान कू दोनों हाथन म लके जोर जोर ते बजाते भये वापिस लौटे है। बस जाई ते बच्चान की ब्रज मे कई दिना तानू चलिबे वारो 'डंडा चौथ' को उच्छव सुरु है जाय है। ब्रजभूमि के बालकन कू दो तीन दिना कू पढ़न त मुक्ति मिल जाय है। विनके या उच्छव के दिनान म कार्यक्रम रहे है के व अपने पंडितजी के सग बालकन के परिवारजन के घर जाय जाय क डंडा बजाते भये गीत गामे है। हर परिवारजन इन ल्हौरे ल्हौरे बच्चान कू मिठाई फल, गुड़धानी दे है। अरू पंडितजी कू नकद दच्छिना दई जाय है। 'बंधा की कथा', डरपोक शेर की कथा, 'फूहड़ बयर को चिमन' आदि गीत छोटे छोटे बच्चान के मौंह ते हास्य अरू व्यंग के ब्रज के लोकगीत भौतई फबे है अरू मोहक लगे है। जिन घर पै बच्चा इन गीतन कू गावें है विनके स्वाभाविक अरू तुतलाते बचन ते गीतन कू सुनके ब्रजभूमि के लोग हसते हसत लोटपोट है जाय है अरू बालभाव के आनन्द मे तिहराहित है के निहाल है उठै है। बालभाव के जि लोकगीत निश्चिई ब्रजभूमि की ऐसी अनुपम धरोहर है जो स्यात अन्यत्र नाय मिल है। सरकारी स्कूल खुल जायवे पै डंडाचौथ के बाल भाव के जा उच्छव की प्रथा धीरे धीरे समाप्त सी हैंती चल जा रही है। पुराने समै म मोहल्ला मे गुरुजी छोटी छोटी पाठशाला खोल के बच्चान कू पढाते हे। वस्तुत ये त्योहार ब्रजभूमि के विन बालकन को त्योहार हो जो इन पाठशालान मे पढते हे। धीरे धीरे आधुनिकता के भाव के कारन जि परपरा ब्रजभूमि तेऊ तिरोहित हैती चली जा रही है। कहू कहू डंडा चौथ के जा सरूप के दर्शन है जाय है। ब्रजभूमि के बच्चान के पढवे लिखबे की रोचकता के सग खेलवे के प्रति अभिरूचि ब्रज लोक अचर म मुख ते रही है। बच्चान के, छरी छापरिन के युवकन के प्रौढन के अलग-अलग खेल ब्रज लोक मच प अपनो एक अलग स्वरूप राखे है। गेंद टप्पो, गिल्ली डडा गुल्लन गुल्ल काई डडा, कछुआ की नद मे डुबक डुब्बा, राजा मंत्री, कोरामार आख मिचौनी, किल किल काटे, रूमाल झपट्टा पान ठीकरी, लडीक बडीक,

चूहा बिल्ली, झझन कटोरा, चमक चादनी, चुन चुन मुगा, मक्का आदि ब्रज आचर के ल्हौरे-ल्हौरे बच्चान ते लेके किशोरवय तक के बालकन के प्रसिद्ध खेल है तौ गुटका, मक्को गिट्टा समदर ब्रज की छरई छापरीन के लोक प्रिय खेल रहे हैं। अरु पैंया आदि युवान के गामन के लोकप्रिय खेल रह है। बैंठे ठाले काऊ उमर के ग्रामीन अठारह गोटी, नौ गोटी छे गोटी, चगा पो आदि जसे खेल ते अपनो मनोरजन कर सके है।

हिंडोरे, रास लीला, सांझी कला अरु देवालय

ब्रज धरा के लोकोच्छव राधा अरु कृस्न के माधुय भाव ते भरे भये है। सिगरे ब्रजधाम माहि लोकोच्छव प जो उछाह, उमग, उल्लास देखबे कू मिले हैं बू भौतई दुलभ होय है। सूरज क प्रचड आतप ते तपती विसाल ब्रज वसुधरा कू जसेई बादरन को नेहिल स्पस मिले है त्योई अपने तपन कू भूलके हिये मे नभ के बादरन म कारे व ट्या को अनुपम छवि कू निहारबे लगे है ब्रजधरा को उल्लास अरु उमग पै उछाह है के लोकोच्छव की सुरुआत एक सग है जाय है। ब्रज लोक कला हरियाली मावस, हरियाली तीज पै सलूनेन मे हिंडोरे पै पाम बढाती भई मलाहरन मे झूम झूम उठे है। जगै जगै पै हिंडारे डरबो सुरु है जाय है। ब्रज ललना मोहल्ला मोहल्ला मे समवेत सुरन म मल्हार आदि गाती भई हिडोरेन पै झूलबे लग जाय है म्हाई ब्रज के देवालयन मे हिंडोरे के उच्छव सुरु है जाय है। सलूने आते ई ब्रज सस्कृति मे भैया भैन के पावन मिलन के सग मग जमाई लाला केऊ भाव बढ जाय है। सलूने अरु हरियाली तीजन पै ससुरार जायके बूरो खायब की प्रथा ब्रज मे विसेस महत्व राखे है। व्यग हास परिहास के सग सारी अरु साराहेरीन कू मीठो मीठो व्यग ब्रज लोकगीतन की मीठी मीठी गमक भरी अनुपम धरोहर हते। सामन मे सिगरे ब्रज मडल मे देवालयन म नित्य नये उच्छव होय है। राजस्थान के कामवन अरु जयपुर, नाथद्वारा कोटा आदि स्थानन के देवालयन म हिंडोरेन को आनन्द फूलबे लगे है। जाई समै रास के माध्यम सो श्री कृस्न लीलान को आनन्द रसिक जन ले है व दावन म श्री रामसुख जी, हरगोविन्द यु वरपान देवकीनन्दन अरु तेजपाल को रास मण्डल भौतई प्रभावित करै है। बडे बडे विसाल मडप बनाये जाय जिनम 10-10 हजार दर्सक रास लीला के आनन्द अरु ब्रज के मिठास को पान करते रहे हैं। ब्रज की सस्कृति कू मन्दिर या देवालयन की अथवा सतन की सस्कृति कह दे तो काई अतिसयोक्ति नई होयगी। रास लीला ब्रज सस्कृति की मनोहर अभिव्यक्ति हतै। ब्रज को रास रगमच मूल रूपते श्री कृस्न की बाललीला अरु विनकी अन्य ब्रज लीलान को मच है। गोडीय सप्रदाय के नारायण भट्ट ने रासलीला म श्री कृस्न को जीवन कू नाटय रूपमाहि प्रस्तुत करिबे की परम्परा सुरु करी हो। रास विलास श्री कृस्न के एसी अतरग लीला है जाये बूई भगत देखवे को अधिकारी है जाने सखीभाव कू सिद्ध कर लियो होय। जि काम साधारन जन ते परे हैबे के कारन रासलीलान कू जन जन तक

पहोंचायवे कू श्री नारायण भट्ट जीअै रासलीलान कू कृष्णलीला के अनुकरन त जोरन को महतीय काम कीनो। जा तरियां रासलीला के प्रचार प्रसार ने ब्रज संस्कृति कू दूर दूर तानू पहोंचाय दीनो। राम वास्तव में ऐसी रासलीला को मंच है जामे प्रेम, अनुराग के दिव्य भाव भगत हृदय अरु रसिकन कू विभोर कर देय है। कृस्न की अवतार लीलान मे श्रीकृस्न जनम पूतना वध, यमलार्जुन उद्धार, माखनचोरी, कालियदमन, गोवर्धनधारन अरु रासलीला को वध, ब्रह्मा व्यामोह कुब्जा उद्धार, कंस वध आदि की गणना करी जाय सके है। जाके अलावा निकुंज में राधा कृस्न की प्रेम लीला, तीन रूप धारी छद्म लीला सुदामा लीला कुरुक्षेत्र में स्यामा स्याम मिलन लीलान के रूप में आजऊ रासधारी कृस्न की लीलान कू जन-जन तक पहोंचायके ब्रज संस्कृति के अनुराग अरु वात्सल्य की संस्कृति कू घर-घर पहोंचाय रहे है।

सामन के जाते ई लोक संस्कृति, लोक उत्सव ब्रजभूमि अरु ब्रज मे बसे देवालयन कू सौंदर्य की अनुपम छटा में डुबाय दे है। शरदकाल मे आस्विन कृस्न ग्यारस सो मावस तानू देवालयन मे अरु ब्रज के लोगन के घर मे सांझी अरु पूजन के रूप में ब्रज लोक संस्कृति के सौंदर्य की अभिव्यक्ति होय है। इन दिनान मे राजस्थान माहि स्थित पुष्टि सम्प्रदाय के प्रधान पीठ नाथद्वारा में श्रीनाथ जी के मंदिर में आरती दर्शन के पीछे जब हाथीपोल को दरवज्जो बन्द है जाय तो बाके बाहर कमलचौक में सांझी की कलाकृतिन को प्रदर्शन कियो जाय है। मन्दिर के विभिन्न बागन ते कदली वृक्ष के पूरे पत्तान कू फूलघर मे लायो जाय है। फूलघर के फूलघरिया जी अरु बिनके नीचे काम करबे वारे सेवकगन अरु भगत लोक डंठल कूं काट काट के केला के पत्तान कू अलग करैं हैं। पत्तान ते कागज के साचेन ते चुगे (छोटी कैंची) सों काट के तरह तरह की आकृति बनाय लई जाय है। जि आकृति ब्रज क्षेत्र ते संबंधित होय हैं। इनमें विश्राम घाट गिरिराज, श्री कृस्न सुरभि दानघाटी, माखन चोरते कृस्न बाल सखा, गोपी यमुना जी के बाग, जग, मानसी गंगा आदि श्री कृस्न लीला के संग तोता, मोर, कुंड सरोवर नदी झरना गिरि जंगल, नदी को किनारो, झाड़ झंखाड़ गनगौर की सवारी आदि आकृति इन पत्तान ते बनायी जाय है।

जा तरियां श्रीनाथ जी के मन्दिर में श्राद्ध के सुरू के पन्द्रह दिना तानूं सांझी निर्मान को सिगरो काम कदली वृच्छ के पत्तान तई सम्पूरन होय है। राजस्थान के नाथद्वारा करौली भरतपुर धौलपुर अरु देवालयन सों प्रभावित जयपुर कोटा के वल्लभ जन अरु ब्रजवासीन के घर श्राद्ध पच्छ के औसर पै क्वारी कन्या गोबर ते सांझी सजावैं हैं। भरतपुर अरु करौली मे 15 16 दिना तक ब्रज कुमारी दीवार पै श्रमन बीरन बेटी पाच थापला डाली मे बैठी सांझी, दो तीन निकारी, चौपड़, पान सुपारी मिठाई भरी डलिया, स्वस्तिक, अठखलिया, फूलनाव सिंघाड़े, लहगा फरिया नसैनी पै चढ़ती

साझी, लगडो बामन कानो कउआ, आदि बनामे हैं। नाथद्वारा की क्वारी क दीवारन की पुताई करवे बापे गोबर ते अनेक तरिया के पशु पक्षी चाद सितारे मी बाई, एक बडो खापडिया चोर राजा रानी आदि बनामे है। ब्रजभूमि को लगडो बाम नाथद्वारा मे खापडिया चोर बन गयो है। साझी के आखिरी दिना नाथद्वारा अरू रा स्थान की ब्रजभूमि म गोबर को कोट बनायो जाय है। नाथद्वारा म जा कोट मे मी को चित्रन होय है अरू भिडी के बीजन ते आख बनायी जाय है। राजस्थान मे कुम्ह के बन मट्टी क राजा रानी बनाये जाय है। राजस्थान के वस्नव देवालयन मऊ मा को सौंदय पूर निखार के सग खिल उठे है। पुस्टि सम्प्रदाय के कोटा के मथुरेश ज काकरोली के द्वारकाधीश जी, कामवन के गोकुल चन्द्रमा जी मदन मोहन जी, जय के चैतन्य सम्प्रदाय के गोविंद दवजी, करौली के मदन मोहन जी अरू जयपुर के अ मन्दिरन मे राधा गोविंद राधा गोपालजी, गोपीनाथ जी मे साझी को उपक्रम हर सा पूरे उल्लास के सग मनायो जाय है। जाई तरिया पै टसू अरू साझी के गीत ब्रज लो कलान वैभव कू औरऊ बढाय दे है।

देवालय को सगीत अरू ब्रजनारी के विविध गीत

पुस्टि सम्प्रदाय के देवालयन म सगीत कू आराधना को प्रमुख माध्यम मा गयो हे। जाई कारन बिठठल नाथ जी ने चार शिस्य अपने पिताजी के अरू चार सिर अपने लैके अस्टछाप की स्थापना कीनी। अपने समै के इन आठ महान सगीतकार श्रीनाथ जी की विभिन्न झाकीन के समै बिनकी बाल लीला के मधुर ब्रज के गीतन क गायन कीनो। लिखवैयान्न तत्काल गीतनकू लिख लीनो। विदेसीन की जब देवाल विरोधी नीति सुरू है गयी तब ब्रज के इन मन्दिरन कू हवेली के रूप म प्रकट कर दि गयो। जब हवेली मे जा कीतन सगीत कू गायो गयो तो बू हवेली सगीत के नाम स विख्यात है गयो।

गगा दसहरा एकादसी, सोमवती मावस सकरात, चन्द्र सूय ग्रहन, जनमआ शिव चौदस, हारी, सलूने दसहरा दिवारी आदि प्रमुख उच्छवन प ब्रज नारीऊ अप मन के भावन कू तरै तरै ते प्रकट करै है। अब तो ब्रज नारीन ने 26 जनवरी 1 अगस्त जैसे रास्ट्रीय पवन पऊ लोकगीत रच डारे है। जि कहनो कि ब्रज लोक सस्कृ के लोकगीत अरु बिनको वैभव पुरानी परम्परा का है जि सत्य नाय। आज वग्यानिक उपकरन अरू अन्य अनक आस्चयन पै ब्रजभूमि की बयर एक ते एक अनू लोकगीत गाम है।

ब्रज की नारीन के मोहते करूणारस के गीत बडी अनूठी भरी वदन के सग व्यक्त होय है। करुणा रस के जि प्रब धात्मक लिखे भये अलग अल

भावना प्रधान गीत निश्चित ई जा भाव अन्न जमीन के अनुपम वैभव कू प्रमानित करे है।

करुन रस गीत रसीली गारी अरु लोक मच

लोक कला प्रधान करुन रस के गीतन म ढोला, चदना बनजारा पनिहारीन, चन्द्रावली आदि जैसे गीतन की गणना है सके है। छोटे गीतन में बनजारा, पनिहारीन विजैरानी, चन्द्रावली आदि लोकगीत ब्रज ललनान के लोकगीत है जो सामूहिक रूप में सामन के महिना म गाये जाय हैं। इन गीतन मे कोऊ न कोऊ नारीमन की व्यथा वर्नित करी जाय है। उदाहरण कू विजैरानी गीत मे ऐसे पुरुष की कथा है जो अपनी नव परिनीता पत्नी कू दूसरे पुरुष त हँसके बात करवे पै सन्देह करके सताव है। निर्दोष पत्नी पति के अत्याचार ते डरपे नाय धीरे धीरे अपनी सच्चाई ते सदेह कू मिटा दे है। जाई तरिया ब्रज के करुण रस मोरा नाम के गीत म बडो रमनीयता के सग चित्रण कियो गयो है। सही है कि ब्रज के जीवन के सबसो मीठो सबसो रसीलो रूप ह्या के लोकगीतन मे मिलै है। इन लोकगीतन म ब्रज युवति के कोकिल कठ ते निकरे भये गीतन कू सुनके तो कौन ऐसो पत्थर दिल को होयगो जो सुध बुध नाय भूलेगो। इन गीतन म सबसो रसीलो स्वाद गारीन को है। ब्रज की गारीन को मिठास कह्यो जाय है देवतान कू दुलभ है। जब काऊ भागवान के द्वार पै बरात जै रही हाय, बाजे बज रहे होय, घोरी नाच रही होय छोरा छारी उल्लास मे कूद रहे होय छई छापरी नये नय परिधानन ते सजी होय। वा समै अनेक आभूषणन त सजी धजी ब्रज बनिता लजायब वारो गीत गायबो सुरू करै है अरू जब बरात जैम कू बैठ जाय है तो बे कोकिल कठी ऊ जैसे के छत या चोतरा पै अपनो मोर्चा सम्भार ले है। झीन घुघटन पै फरकने बोल बैनन सौं अपने गीत सुरू कर द है। अरू अपने मोहते रसीली गारीन को अमृत बिखरवे लग जाय है। व्याह सादी के औसर पै पत्तर बाधवो, पडित कू पत्तर खायवे कू प्रोत्साहन देवे के रूप मे बैयर कू गारी गायवे अरू अनेक तरिया की हासमयी, व्यग बाण छोरवो ब्रज सस्कृति को अनूठा अलौकिक सौंदय है। ब्रज नारीन के लाकगीतन कू अबई तानू क्रमबद्ध रूप म लेखन को काऊ तरिया को प्रयास नाय कियो हो। ब्रज लोक स स्कृति के सरूप मे ब्रजनारीन को सरूप देखवे कू मिलै है। राजस्थान के भरतपुर की ब्रज लोक मच की कला एक अपनो विशिष्ट स्थान राखे है। भरतपुर जिले के कलाकार अपने अपने स्थानन प बिना काई तरिया के सरकारी प्रोत्साहन मिले बिना अपने मन के भावन कू अभिव्यक्त करवे कू विभिन्न लोक मच के माध्यम सौं भोतेरे कलाकार अपने सुर दे रहे हैं। कामा मे जाम व्यौसायिक अरू अव्यौसायिक रूप म मच जरूर बन गये। कामा डीग, भरतपुर रूपवास म लोक मचीय कला के दोनू रूप देखे जा सकै हैं। स्वांग भगत ख्याल झूलना गीत ढोला व्याह जिकरी रामलीला, रासलीला जैसे नानारूप भरतपुर क अनेक लोक मचीय कला व सरूप है।

प्राचीन ब्रज सस्कृति नोह (भरतपुर) उत्खनन

राजस्थान पुरातत्व विभाग ने भरतपुर आगरा रोड पै स्थित नोह गाम म ब्रज सस्कृति के प्राचीन प्रमान ढू ढ निकारे हैं। उत्खनन कू पाच सास्कृतिक कालन मे बाटो गयो है। ताम्रकाल ते लेके सु ग अरु कुषाण काल तानू इन पाच सास्कृतिक कालन कू बाटो गयो है। यक्ष की विराट प्रतिमा ह्या आजऊ ठाडी है। ल्हौयौ चामर को उत्तर भारत म पैलो प्रयोग ह्याई मिलै है। 'जखया' को मैलो ह्या के गामन मे आजऊ लगे है जो यक्ष पूजा को ही बिगडो रूप है।

राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी ने जा ग्रन्थ मे जा तरिया प्रदेस माहि फैलो ब्रज कला अरु सस्कृति विसयक सामग्री कू इकठौरी करिबे को प्रयास कीनो है। अबई जा विसै पै भौत कछु लिखे जायबे की आवस्यकता है। राजस्थान के मरुस्थल माहि ब्रज सस्कृति की पीयूसधारा आजऊ म्हा के निवासीन कू उल्लास माहि डुबोये भये है। खडी बोली के प्रचार प्रसार के कारन आज ब्रजभाषा कू मात्र छेत्रीय बोली के रूप मे मानो जाय है। ब्रजभासा तो सदीन तानू सिगरे भारत की काव्य भाषा रही है। स्यात सस्कृत भाषा पाछे ब्रज भाषाई ऐसी भाषा रही है जाने हमारे सिगरे देस कू अपनो नेह दीनो है। सत अरु देवालय एव श्री कृस्न के प्रदेस की भाषा हैवै के कारन ब्रजभाषा-काव्य के माध्यम ते ब्रज कला अरु सस्कृति देस के कोन कोने म गई है। वैस्नव सम्प्रदाय कीऊ भाषा ब्रजई तो रही है। जाई कारन विदेसन मेऊ ब्रज की छटा दीखवे मे आवे है। सच तो जि है कै ब्रज के सौंदर्य, लालित्य अरु भगति की पावन धारा ते हमारे देस को कौनसा ऐसा भाग हतै जो अछूतो है।



कचन करत खरौ कौ औपन्यासिक शिल्प

राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी अपनी स्थापना के चौथे वरस मे आपके हाथन म निमग ब्रजभाषा मे 'कचन करत खरौ' उपन्यास भेंट कर रही है। ब्रजभाषा म गद्य मेऊ वू ई सौरभ भरी सुगंध अरु वचन वक्रता भरी वाग्वैदग्धता की भीनी भीनी रमणीक शक्ति भरी पडी है जो पद्य मे है। याके प्रमान आपकू भैया गोपाल प्रसाद मुद्गल के उपन्यास 'कंचन करत खरौ' मे मिलिगें।

'कचन करत खरौ ब्रजभाषा मे राजस्थान की धरती पै प्रकासित पैलो उपन्यास है। या उपन्यास में राजस्थान के ब्रजभाषा भाषी भूमाग की कथा कूं मूल आधार बनायौ गयौ है। नारी प्रधान 'कचन करत खरौ' उपन्यास मे लेखक ने तीन पीढीन की कथा कू समेटवे का प्रससनीय प्रयास कीनो है। समाज के सृजन मे नारी कौ महत्व अरु वाके सघससील जीवन ते निकरे भये चेतना के सुर कैसें टूटे भये परिवार के निर्मान की शृखलान कूं एक एक करके जोडे हैं याकौ साचौ खातौ या उपन्यास कौ मूल केंद्र बिंदु रह्यौ है। संघर्ष के आलोक मई सच्चौ कर्म कौ पथ दीखे है। मानव जीवन म अनेक उतार चढाव आमैं है। भीतरे कष्ट हौंय, अंध विस्वास अरु रुढिवादिता के कारन भीतेरी पीडा झेलनी पडे समाज के नये विचार, प्रगति की नवीन धारा कौ घनघोर विरोध करे है। परम्परा अरु नवीनता में टकराव होय है। ई आज की नाय हर युग की कथा है। पर समाज में एसे लगनशील अरु कर्मठ व्यक्तिऊ हौंय हैं जो परम्परा कौ आदर करते भये नय विचारन की उवरा भूमि कूं अपने कर्मठ कर्म की सक्ति ते जोतकें वाय नवीन चेतना के अनुकूल बना देंय हैं। 'कचन करत खरौ' के नायक चकौर अरु चन्दा याई तरिया के पात्र हैं। कर्म की निस्ठा, इन दानू पात्रन की चेतना कौ मूलबिंदु है। एक समै तो एसौऊ आव है जब चन्दा अकेली रह जाये है। जीवन के स्थान स्थान पै वाय एक ते एक असहनीय दुख झेलने पडे। लगै है कै वू अब सदा सवदा कू टूट जायगी, पर निरासक्त भाव ते कर्म के प्रति निष्ठा चन्दा कूं जीवन निर्मान कौ एक नयौ रास्ता आलोकित कर है। आखिर में जीत कर्म निष्ठा की होय है। नायिका प्रधान

'कचन करत खरो' उपयास में नारी के महत्व कूँ समाज अरु परिवार की प्रगति के सग उपयासकार ने बखूबी ते दिखायबे को प्रयास कीनो है।

कम की निष्ठा की आराधना के सग सग 'कचन करत खरो' उपयास मे व्रजभूमि के जीवन को अनूठो प्रस्तुतिकरण करिवे को लेखक ने उल्लेखनीय प्रयास कीनो है। व्रजभूमि कें गाम की रीति रिवाज, उत्सव, पारिवारिक जीवन क उतार चढाव कैं स ग स ग भोरे व्रजवासीन की सिगरी जीवन शैली लेखक ने बखूबी या उपयास की घटना अरु पात्रन के परस्पर वार्तालाप म उतारी है। व्रजभूमि के पारिवारिक अरु सामाजिक जीवन मे बालक क जम ते लकैं वाकी मृत्यु पय त तक की परिस्थितीन मे कहा कहा उतार चढाव आमैं, ब्याह सादी कैं औसर प बिचौलिया कैसें ढूँ मिलते भये परिवारन कू ईस विस खण्ड खण्ड करिवे को प्रयत्न करैं हैं। ये सिगरी व्रजभूमि की जीवन सैली अरु बिनकी मर्यादान के उतार चढ़ाव के स घष को कचन करत खरो' उपयास मे लेखक की कलम ते सटीक वनन भयो है। स तोसी मस्त मोला अरु स्वाभि मानो व्रजवासी के जीवन की सिगरी विसेसतान को निचोड 'कचन करत खरो उपयास को एक एक घटना मे प्रतिबिम्बित भयो हैं।

'क चन करत खरो' उपयास मे विद्वान उपयासकार ने औपयासिक शिल्प को आद्योपात निर्वाह कियो है। उपयास सिल्प को रक्षा करते भये लेखक नें बडी सादगी अरु सरसता के स ग करनीय कू यामे प्रस्तुत कीनो है। तीन पीढी की कथा मे एक नारी के स घष कू उजागर कर उपयासकार ने सामाजिक अरु परिवारिक जीवन के सच्चे रचनात्मक विकास म निरासक्त कम के महत्व कू मनोहर ढग ते प्रति पादित कीनो है।

औपयासिक शिल्प के निकष पै 'कचन करत खरो' की विवेचना प्रस्तुत करनो चाहू है।

कथानक व्रज अचर की है। सिगरी कथा भरतपुर, डीग, अऊ गामन के आस पास की है। उपयास को वथ्य स क्षेप म यों है—

भरतपुर को चोखेलाल कम ब्याज पै बोहरगत करतो। भलो आदमी हो। गरीब गुरबान के ताई भलाई की सोचतो। बाकें भई इकलौती बेटी 'चदा'। बोहरे की छोरी ठाट बाट सौं रहैई। समै ने पलटा खायो। कई साल अकाल रह्यो याने बाकी कमर तोर दई। यू हर साल अपन आसामीन की झोरी भरतो रह्यो। बाए अपने घर चलावे के लाले पर गए। इतै, वाकी छोरी सोलह बरस की है गई। बाकी

मैया अबी अरू बाकी बहू बाए सोदि सादि मैं गाई जा रही कै छोरी के पीरे हाथ करे जाएँ। चोरे जहा बहू जानी म्हाई नैन दैन, मालमाव काम ए बिगार दैती। च दा रूपवती पढी लिगी हा। सब काम म हुस्यिार पर मालो हालत बिगर जावे ते कोऊ ब्याह की हा नाय करनी। चन्दा को कई बेर दिखारी भयौ पर मार्ग मह नई चढ़ी।

अलीर म चन्दा नई हल निरासो। याको एक परिचित कालेज को साथी हो—चकार। वाद विवाद म हमेसा पहली कै दूसरो नम्बर पातो। च दा ऊ वाद विवाद में भाग लैती। दोनोंन की जान पहचान है गई। एक पात दहेज के विराध म चकार न याजो जीत लई। बडी वाहीवाही मिली। चन्दा न वाते पूछी, दहेज के विराध म जो बात होठन माँ कही है यू होठन तक्इ रहैगी कै जीवन म उतारी जाइगी? ता मभै चकोर नैं कही, या बात को उत्तर तौ समैई देगो पर हाँ मान यू अपनी बात को धनी होनो चइए।' इन बातन की याद दिवाबे ते ताई च दा नें चकोर की न ज टटारी। चकोर चन्दा माँ प्रभावित तो हुनई हो। चन्दा के घर की गिरी हालत नें चकोर के मन में और सहानुभूति जगा दई। चन्दा ने ईऊ बता दई कैं वू जाति ते बाढई बामन है। चकोर तो गुन को गाहक हो। वानें प्रस्ताव स्वीकार कर लियो।

चन्दा नें अपनी बात चिठठी के माध्यम सों पिताजी सो कहनी चाही। पाती लिखिकैं बिनकी डायरी मे धर दई। रात वू पाती पढ़ी और राधा कूँ सुनाई। सवेरे राधा नें सिगरी बात पूछी तो चन्दा नें मैया कूँ सतोस दिवा दियो। इतक चकार चन्दा ते तो हाँ करगो पर गाम म पहुचते ई नथिया ए अतरजातीय ब्याह की बात पसन्द नई आई। बानें चकोर कूँ समझायो पर चकोर नें तो कलमाई नई भरयो। वाके अच्छे अच्छे ढोक लगा रहे पर चकोर ता बात को धनी हो। चकोर के अ तरजातीय ब्याह की बात गाम वारेन कूँ नागवार गुजरी। चकोर अपनी बात पै जमो रह्यो। गाम नाराज हों तो गयो। तबई एम ए को रिजल्ट आयो। चकोर नें एम ए टोप कियो। बितकूँ चन्दा नैऊ बी ए पास कर लियो। चकोर अतर जातीय ब्याह कर रह्यो है या बात कूँ लैकें गाम मे पचायत भई। किसोर सरपच मूला पच परमाल लम्बरदार नें नथिया ऊ समझाई पर बात बैंड गई। नथिया को सग देबे वारो बाको धरम भैया बहोरी हो। नथिया अरू बहोरी के घर छेक दिय। बात ह्यां तक्ई नाय रही। चकोर की मढैया पै पत्थर बरसवे लगे। एक रात तौ छप्पर म आग लगा दई। मैया बेटा बच तो गए पर गाँम बारे नें हमदर्दी के बोलऊ नई बोले। जब वे अऊ छोडिकैं चलबे लगे तो चकोर की लैक्चरारी को कागज भरतपुर त आयो। मैया बेटा दुखी-दुखी भरतपुर पौंचे। भरतपुर मे चकार के यार राजेन्द्र नें बाकू बसायबे म पूरी मदद करी। भरतपुर पौंचते ही

च न्दा अरु चकोर को ब्याह आर्य समाज मन्दिर म सादगी सौं भयो । चोखे, राधा अरु अची नै चन्दा के पीरे हाथ करवँ चैन की सास लई ।

ब्याह पाछैं, चकोर के भाग्य न जोर मारो । वू आर ए एस भयो अरु बी डी ओ है कँ डीग मे ई आयो । थोरे दिनान मई वू चारो और पुजगो । एक दिना अऊ गांम बारे मकोच के सग माफी मागबे आए अरु बाए अपने गाम बुलाबे कौं नौतो दै गए । चकोर नै अपना पुरानो भाव उठायकैं ताक मे रख दियो । सब गाम बारेन सौं वू प्यार स मिल्यो अरु दूसरे दिना अऊ पौंच गयो । म्हा खूब जलसा भयो । जब वू डीग वू लौट रह्यो । तबई एक्सीडेंट है गयो अस्पताल म बानै दम दम तोर दियो । बाई समै चन्दा कैं छोरा भयो । नथिया ने अपने बेटा के मरबे की सुनी तौ बाकौ हार्ट-फेल है गयो । वूऊ चल बसी । रह गई चन्दा अरु बाकी गोद म एक दिना कौ छोरा । राजेन्द्र, राधा अरु चोखे चन्दा प छाती दैकैं परे रहे। चन्दा कू सोसल एजूकेशन आफीसर की नौकरी दिबाय कैं राजेन्द्र नैं दम लई । राधा चन्दा कूँ डीग मे सम्हारती रही । चोखे अपनी मैया कूँ भरतपुर म सम्हारतो रह्यौ । चन्दा न अपने बेटा दिवाकर कूँ पढायौ लिखायौ । पिलानी मे बी ई करवायो । पिलानी मे दिवाकर चुनावन मे अध्यच्छ चुनो गयो । बापै कातिलाना हमला भयो पर जान बच गई । चन्दा नैं म्हा जाइकैं अपने ब्यौहार सौं सबको मन जीत लियो । एक अच्छी मैया को उत्तम ब्यौहार देखकैं सब चदा के भक्त है गए । सबकूँ प्रेम को पाठ पढायो ।

दिवाकर भरतपुर आयकैं फेक्ट्री म इजीनियर बन गयो । बाको ब्याह सादगी सौं रजनी के सग भयो । रजनी धार्मिक बिचारन की महिला ई । एक बरस पीछैं रजनी कैं छोरा भयो । नाम रखो गयो प्रभात । घर में खुसी छा गई । थोरे दिना पाछ जनम आठैं आई । घर मे व्रत राखो । रात कूँ प्रसाद लब दिवाकर अरु रजनी मन्दिर कूँ गए । अचानक रनजीत नगर कैं चौराहे पै ऐक्सीडेंट है गयो । दुरभाग्य सौ दोनूँ मारे गए । चन्दा पै और व्रजपात भयो । का करती सहनो परो । हाँ चदा ने हिम्मत नई हारी । प्रभात कूँ लैकैं अऊ गाम पौंची । अपनी पेंशन ग्रेचुटी को धन एक फारम बनायब म लगा दियो । एक खोलो छोरीन को स्कूल । आवासीय स्कूल बाकी पढाई सेवा भाव देखिकैं सब दग रह गए । दूर दूर तक नाम है गयो । प्रभात हू होनहार निकस्यो । बानैं स्कूल म प्रथम आयकैं खूब नाम कमायो । एक पोत बानैं एक लुटेरेन के गिरोह कूँ पकडवायब म कमाल कर दिखायो । बाकूँ राष्ट्रपति पुरस्कार मिल्यो । चदा सतुष्ट है गई क प्रभात कचन है गयो है । या तरियां सबकी सेवा करती रही । चन्दा कूँ एक रात लकुआ को अटैक भयो । चन्दा नैंऊ जान लियो पँछी उडनो चाहे । बाने सब इकटठे किए ट्रस्टीन कूँ प्रभात सौंप कैं कही, 'याकों सादगी सौं ब्याह कर दीजो प्रभात

ते कही जब तुम आए जगत मे जग हासो तुम रोइ । ऐसी करनी कर चलहु तुम हासो जग रोइ । 'इतनो कहकै चन्दा सदा कूँ मौन है गई ।

या कथानक म यों तौ अनौखे किशोर, मूला, परमाल, रग्गो, बहोरी, राजेन्द्र, दिवाकर, बनुआ, प्रभात, भरत आदि पुरुष पात्र हैं, पर चकोरई प्रमुख है । चकार की मृत्यु पाछैं दिवाकर अरु प्रभात उभर कै आए हैं । बीच बीच म, राजेन्द्र, बहोरी भरत जैसे पात्रन के माध्यम सौं कथानक आगे बढो है महिला पात्रन मे चदाई प्रधान है, राधा, अची नथिया सहयोगी पात्र हैं । पात्र घरनो क अपने बीच क है । बिनके क्रिया कलाप अपने जैसई क्रियाकलाप हैं । जैसो समाज मे देखो है वैसोई पात्रन के माध्यम सो ज्यो की ज्यो उतार दियो है ।

दूसरे की बहबूदी कूँ देखिक जरबे, अरू कुढब बारे रग्गो जैसे पात्र हैं। बनै तो भजनानदी है पर मुख म राम बगल म छुरी बिनकी धरम करम है । घडी छान उतारबे मई बिन्नैं मजा आवै बिनते कोऊ छोरान के नाते गोत पूछब को सहयोग मागे तो सुधे म्हो बात नाय कर । सो सो एहसान दिखाव । अनौखे जसे पात्र हू हैं जो यसेष्णा के मारे भए है । अपने मित्र चोखे की मदद तो कर पर यसष्ण के भूखे हैं। कबऊ कबऊ द्वन्द्व के झूलान मेऊ झूलैं । बदनामी की सुनिकैं हिल जाए । छोरा छोरी को ब्याह अच्छो है जाय तो चेहरा पै चमक आ जाय । किशोर, मूला, परमाल जैसे सरपच अरू पच है, जो लकीर के फकीर है कैं नई बातन नै अपने गरै नाय उतारै । जब चकोर बी डी ओ है जाए तो भय कैं मारे बिनकी आख खुल । राजेन्द्र जैसे यार आजऊ मोजूद है जो शहर में नवयुवक मडल बनाय कैं म्हेज के विरोध में भुजा ऊँची करैं । बदलाव के ताँई नई मा यतान कूँ स्वीकारै । अपनो कतव्य निभाइवे में जीवन को सार समझै । चकोर के मर जावे के पीछ अपनी भाभी चन्दा कू नौकरी दिवाय कैंई दम लै ।

दिवाकर को चरित्र बडो सतुलित अरू आदसमय है । वू पिलानी में अपने मानवीय गुनन सौं सबन को है जाए । सब बाके है जाय । अपने बुद्धि कौसल सौं अपनो अरू अपने कालेज को नाम करै । याही तरिया प्रभात दिवाकर सौं हू आगे निकस जाए । वू मेधावी, दयालु सेवाभावी निर्भीक बालक है । अपनी जान जोखिम में डार कँऊ सवा कर अरू नाम कमावै याही सौं राष्ट्रपति पुरस्कार पावै ।

चोखे या कथानक में प्रारभ सौं ई दिखाई परै । भलमानसहृत बाकी रग रग में बसो है । तबई तो घर को घरूआ करकै किसानन की मदद करै । रुपिया डूब जाए पर वू काऊ प जोर न जनावै । वाऊ के खिलाफ नालिस डिगरी नाय करावै । दुखन नैं देखे अरु झेले । समाज म 'बिन पइसा सब सून जब देखे तो अक्ल दुरुस्त है जाय । घर

मे दिन रात मैया अरू बहू के कुचरके सुनै । सौ सौ ताने सुनै । हिम्मत नाय हारै । परिस्थितीन सौं जूझै । बू दकियानूसी नाएँ– नएपन ए स्वीकारै । नई पीढी सौं मेल करकैं चलै । चकोर या उपन्यास को प्रमुख पात्र है जो कम के पथ पै स कटन कू धेलि कै आगे बढै । बू कुसाग्र बुद्धि, तार्किक, कुसल वक्ता, कमठ, सहनसील, समाज सेवी, उदार हृदय, मितभाषी, मधुरभासी हैं तबई तौ सबके हृदय को हार बन जाए । गाम के थवेडेन कू सहतौ भयौ आयात अधकार म निकस परै अपने हाथ पामन के बल पै । एक दिए अरु तूफान की सी कहानी दिखाई परै । बानें हिम्मत हारकै बैठनौ तौ सीखौ ई नाएँ । नए बिचारन कौ युवक अकस्मात चल बसै ई न जानै कौनसी विडम्बना है । ई समय सौं परे है । जो सबके हित मे रत है बाकौ जीवन यो ही चलौ जाई ई रहस्य बनौ रह्यौ है ।

नारी पात्रन मे चन्दा प्रमुख है । उपन्यास की नायिका वूई है । कथानक के सिगरे तान बाने बाए के औरै ढौरै बुने भए हैं । जेसी बहै बयार पीठ तब तैसी दीजै के अनुसार ठाट बाट सौ रहबे बारी चन्दा औखा आते ही सादगी सौ रहे । स कट के ममै स्वय हल निकासबे बारी सकट मे सोना तान कै ठाडी हैबे बारी गुनन की खान है । लज्जा सौं विभूसित, समाज सेविका सहयागिनी कमसील, सवेदनसील आदि स्त्रीयोचित गुनन सौ रची पची है समाज मे महिलामडल बनायक बाल विवाह मौसर दहेज, बहु विवाह आदि को विरोध करै समूह विवाह अरू सादगी सौं विवाह करायक आदश उपस्थित करै । युगानुरूप नए नए कामन मे रूचि ले । छोरीन कूँ आवासीय पाठसाला, फाम, घरेलू ग्रामीण उद्योग खोलिकै मसीन के युग मे आत्मनिभना कौ पाठ पढावै । जो कोऊ बाके सपक मे आवै बाइ कू कचन बनाय दे । सही मायने मे चन्दा पारस है । राधा अर अची सामा य नारी हैं । बेसुख मे सुखी अरु दुख म दुखी दिखाइ परै । अची अपनी परम्परागत बिचारधारा सौं प्रसिन है । कबऊ कबऊ धुरपटटीन सुनायकै बायबेलो खडौ कर दे । राधा हू पीछै रहबे बारी नाए । बू चोखे की चोखी खबर ले । नथिया नारी पात्रन मे दया की पात्र है जो जीवन भर गरीबी म रही है । मेहनत मजूरी करक छौरा लायक बनायौ है । गाम बारेन ने बू दुत्कारी तऊ गाम कौ मोह नाय छोडौ । गांम बारे जिन्न घर पजारो जब बाके पास आए तो बू खिल उठी रोम रोम नाच उठौ । बाय देवी की सज्ञा द तौ कौई अतिस्योक्ति नाय । या तरिया सौं गितेकऊ पात्र है बे समाज के लोगन कौ प्रतिनिधित्व करवे बारे हैं । नई पीढी अपने आप सोचगी कै किन पात्रन को अनुसरन कर । किनकू छोडै ।

कथानक कूँ आगे बढावे बारे सवाद याकी जान हैं । लोकभाषा म कहैं कै इनकू लोक बोली मे कहैं । जैसौ पात्र बैसेई सवाद । थोरे मे घनी बात कहबे बारे । गागर मे सागर की नाई । कहावत मुहावरेन सौं भरे पूरो एक उदाहरन देखौ चोखे नैं रग्गो ते पूछी —

'अजी कोऊ ओर छोरा बनाओ'

'चौ, नई जचो ?'

अजी जचो तो खूब पर तेते पाम पसारिये जेती लाबी सौर।'

'अरे लाला यो कहू ज्यों ज्या गोहू मोटी होय त्यो-त्यो बिल सकरो होय।'

ठेठ ब्रज भाषा के ठाठ सम्वादन म बिखरे परे हैं। चकोर जब अ तरजातीय ब्याह के ताई नेक मोह खोल दे तो लोगन के तरियों-नरियों के कथन देखो—

'हमारी बिल्ली हमसों म्याऊ' कर। कल परसों को छोरा हमारो सामनो करे।'

'अजी राड को साड ह्वै रह्यौ है।'

'लाला ऊपर कू मत थूकें।'

'बेटा गाम म रहवो भूल जाइगो।

'अगर हमे मालूम होनो तो ऐसी कौधई नई होन देते जावे आज मक्खी भिनभिना रही है।

'बेटा ज्वानी म अधों मत बनै। ज्वानी हम पैऊ आई। आगो पीछो सोचलै।'

इन कथनन मे स्वाभाविकता अपन आप आ गई है।

देस काल अरु वातावरन की परिधि मे ई उपन्यास आजादी क पीछ पल्लव कू समेटे भए है। ब्रज अचर माहि सन् 1948 के पाछे समाज मे का परिवतन आयो है। गाँमन म पुरानी लकीर पीटवे मे अबई तक लोग चून बाधकै पीछे पर जाँय। पचायत बैठे ओर कहर ढहावे म अबऊ पीछे नाय रहैं। नए युग की लहर सो अबई दूर अनेकन रूढ़िन म बधे भए हैं। खास तौर सौं दहेज क भूत सौं सबई सताए भए हैं। तौऊ आसा की किरन नई पीढ़ी को बुलन्द हौसलो दिखायो है। आजादी के पाछे पचायत समिति, महिला मण्डल नवयुवक मडल नई रोसनी लाइव कू है।

उपन्यास जैसो वातावरन बनो झाँकी अनेकन ठौरन पै बिखरी है। अऊ गाम म पचायत को रूप देखो—

गाँम के मन्दिर में पचायत जुरबे लगी। गाम के लोग अपने अपने फैटान नैं बाध कैं इकठौरे है गए। सब अपनी अपनी मौंछन पै हाथ फेरिबे लगे। गाँम की इज्जत के ताई म्यान म त निकसवे लगे। या समै ऐसौ लगौ कैं राम के धनुस तोरबे पै विरोधी राजा बौखना क कह उठे होंय का धनुस टूटब तेई ब्याह थोरई है जान दिंगे।'

याही तरिया होरी कौ त्योहार मनाते समै कौ वातावरन चित्रित कियौ है, सबन नैं मिलकैं पहलैं धुरैंडी कौ उत्सव मनायौ। धूल धक्कड सौं हटिकैं, रग गुलाल की खूब होरी खेली। ब्रज के खूब रसिया गाए। ढप, ढोल चग लकैं नवयुवक मडल भरतपुर की गलीन म निकस परौ। 'आज बिरज म होरी रे रसिया-होरी गामते गामते होरी के रस मे डब गए। सबन के चेहरा रग अरु गुलाल म ऐसे रग गए कैं पहचानबे मऊ नाय आय रहे। सब एक दूसरे क गरे लग रहे। होरी कौ मिलन सबन के मन के मैल कू दूर कर रह्यौ। दुवैर तक थक कैं मन चूर-चूर है गए।'

याही तरिया आय समाज मे ब्याह कैं समै कौ चित्रन देखौ —'पण्डित लक्खीराम नैं सुन्दर वेदी की रचना करी। चारो ओर हरदी, गुलाल म्हेंदी आटो अरु कई रगन की अल्पना माढी गई। वेदी के चारों ओर मु दर मडप बनायो। केरा के पात चारो कोनेन पै लहरा रहे। वेदी के चारो ओर पत्तरन पै सामग्री सजा दई गई। एक ओर घ्यो को पात्र रखौ गयौ जामे स्रुवा परयौ। ब्याह के ताई सिगरी तैयारी है गई।'

बानगी के रूप मे तीनों उदारहन मुक्तेरे हैं।

या उपन्यास की भाषा ठेठ ब्रजभासा है। सरल अरू सरस। सैली अपनी अनूठी है गई है कहावत मुहावरेन के प्रयोग ते। कहावत मुहावरेन न याके मिठास म और रस घोर दियौ है। कोई ऐसौ पन्ना नई होयगो जाम कहावत मुहावरे नई आए हुय। कहू कहू ब्रजभाषा के सग उर्दू के शब्द आ गए है। बिन्नैं भाषा को माधुर्य बढायौ है घटायौ नाय। देखौ चार लाईन — चोखे नैं जब चकोर की बडाई सुनी तौ बाछ खिल गई। सोचिबे लगौ-अधे के हाथ बटर लग रही है। वाए ईऊ परसोकला याद आयौ, मेव मरौ तब जानिए जब चालीसा होय। बडे बूढ़े कह गए हैं, हरी खेती ग्यावन गाय जब जानौ जब म्होतर आय। काऊ नैं आधरी ते कही, तेरौ भया आयौ है। बानैं कही भैंना कह तौ भौत रही हैं पर जब भुजा भरकैं भेट लुउगी तब मानुगी। सोई चौखे नैं कही, माटी मेड लग जाए तब है। मसखरान पै त भैंस चोंख लई जाय तब है।' और देखो दो लाइन महावरेन भरी–'अपनी करनी पै बे अपने आप गढे जा रहे। पर अब पछताए होत का जब चिड़िया चुग गई खेत।सब कानाफूसी करते यार

हमनं अपन पांमन आप कुल्हाडी मारी है । अब तो जैसी करनी वैसी भरनी है ।' याही तरिया चित्रावन उपन्यास म ठौर-ठौर पै दिखाई परै । रेखाचित्र की झलक देखो- चन्दा के रूप बरनन म –'वाकी आँखिन मे डल झील की गहराई, गालन पै सेवन की ललाई गातन म सालीमार, अरू निशात बाग की गंध अरु वाकी देह माहि केसर की झलक बाए कस्मीरन समझिबे कू भौतई ।'

या उपन्यास को उद्देश्य कर्म अरु भाग म कर्म प्रधान है यही सिद्ध करबे दिखायो है । हम मानैं ध्यान सर्वोत्तम है पर ध्यान की चरम सीमा कर्म सन्यास है जो गीता को मंत्र है । कर्मयोगी को तो हर कर्म लोक कल्यान के तांई होय । चकोर अरु चन्दा क माध्यम सों तथ्य कू उजागर कियो है ।

काव्य सौरभ

ब्रजवानी

गुजरी

[illegible] मधुमास गयी मधुरी मुसकानी ।
[illegible] बादर की बरसानी ।
[illegible] रसानी ।
[illegible] ।

[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ।

रचना माधुरी



कहानी

जाडे को बुखार

विरज को ठेठ गाम अधापुर। सबेरे को टम। गैय्या भैंस चरबे कू जगल की आर जा रही ही ग्वारिया कधा पै लठिया धरे भग भग कै एक जगै ते दूसरी आर भग रह ह। हिय हिय अडरई के सब्दन ते आकाश गू ज रह्यो हो। विन ग्वारियान म त एक को नाम हतो सरमन। फागन को महीना। दोनो तरफ खेत हतै। बीच म ते रस्ता जातो जाप गाडे की लीक बन रही ही। खेत मे जौ चना पक से गये। पकै खेतन क बीच म हरी हरी घास दूर ते देखबे त ऐसे लगती जैसे काऊ चित्रकार नें भूरे कागद के बीच बीच म हरे हरे–धब्बा लगा दीने होय। जिन ढारन कूँ सरमन चराई कू लैजा रह्यो विन मे तीस गैययान के सग चार पाच भैंस अरु पन्द्रह लबारे हते। सरमन कू आज चराई कू गैययान के सग भैंस अरु लबार ऊ लैंन पर गये। सग मे इतेक—पसु हत अरु बिनको लेजाबे वारो ग्वारिया एक हो। का मजाल कि कोऊ गैय्या भैंस खेतन की तरफ मोहडो तो करले। पर आज सरमन कूँ भैंमन के सग लबारेऊ चराबे कूँ सग लेवे पर। भैंस अरु लवारे को काम बाके बडे भइया चिरजी को हतो। चिरजी भैंसन कूँ रात कूँ पसर प ले जातो अरु लबारेन कूँ चरावे कूँ दिन म पोखर की तरफ ल जातो यू। म्हाई लबारे पानी पत्ता पी लेत अरु पोखर की घास ते व मोहडे को स्वादऊ बदल लेते। लवारे चरबे क कानून कूँ नाय जानते। गैयया-भैंस को तो लठिया खाय-खायकँ सीख गई कै खेत चरिवे के नाय होय। पर लवारे जो सग हते। बे नैंक-नैंक वेर मे खेतन की तरफ चरबे कूँ घुस जाते। या वजै ते सरमन कूँ बडी भाग दौर करनी पर रही ही। बूको अच्छो भयो के वाकी भाभी चम्पी ने बैलन कूँ ले जाव की मना कर दई।

जब वू वलन कू वी सग ले जावे लगो ता वाकी भाभी ने कही—'लाला जी बैलन कूँ मति ले जाओ। तुम्हारे भैय्या बीमार हैं तो का भयो मैं तो हतूँ। बैलन की सेवा चाकरी करि देऊगी, अरु लाला जी सों का छिपो है, रोजऊ वे कौनसी चाकरी करे। सब मैं ई तो कर हू।

मुसकराय के सरमन ने कही–'भाभी मोय पतो है भैयया कूँ बुखार तेनेई बुलायौ है। तू रोज कहो करैई कि भैयया दिनभर घर ते बाहर रहमे। मेरे पास एक मिनट नाय बैठें। अब तू आराम ते बाके पास बैठी भैया के माथे कू दाबती रहियो। बलन कौ झ झट काय कूँ राखे।'

आखन ने मटकाय कैं भाभी ने कही— लाला जी दौरानी कूँ आमन दया तुमारी जातऊ दीख जावेगी। चौबीस घण्टा वाते चिपक कं रहोगे। तब देखिंग तुम्हारी मर्दानगी।'

सरमन ने कही –भाभी तौरस की होरी कौ भूल गई का। पदरै दिना की बात और हतै जब दिखाऊगो मर्दानगी तोकूँ।

भाभी ने मुसकराय के बायौं हाथ हवा म नचाय के कहा – 'लालाजी देख लई तुमारी मर्दानगी। बू तौ भरोसी की भौटिया बीच म आय गई नई तो तुम्हारी रगत औरऊ चोखी है जाती।'

'अबकै सबत्ती कसर निकारनी है मौय। सरमन की इन बातन कूँ सुनिकैं खाट पे परे भैयया चिर जी वडौ रस लै रह्यौ। परे परे बिन नै कही – तू सरमन कूँ कमजोर समझ रही है का ? तौरस पै धोखे ते तुमन नें पकर क या की गति बना दई।' इतेक कहकैं चिर जी ने सरमन ते कही—'सरमन अबकैं होरी पै जाकी चोखी दुरगति करकैं घर दीजो जाते ई दो चार बरस तौ याय ध्यान रहवैगो।'

भाभी ने हाथ मटकाय कैं कही–'अजी तुमऊ जोर लगा लीजो, दोनोन को मलीदा नई बनाय दऊँ तो मेरो नाम नई।'

इतेक म चिर जी के दाजी पौरी म आय गये। वे हमेसा पौरी म घुसव त पहले खासो करे ह। पर आज बिनके दिमाक मे कछु चिन्ता ज्यादाई हती। या कारन वे खासबो भूल गये। सामई ते दाजी कूँ देखतेई चम्पी बहराय के कोठे म चली गयी।

सरमन ते रह्यौ नाय गयौ। आखिरी वाने पूछई लियो–'दाजी का बात हत ? तुम घबराय काय कूँ रहे हौ।

दाजी कौ एक दम धियान भग मयौ व बोले–'बेटा बैद के पास गयौ हौ।' सरमन ने पूछी—'का बैद मांय मिल्यो ?

'बैंद तो मिल गयो बू कहे रहो जारे को बुखार सूई तेई उतरेगो।' जाम कौनसी खास बात हतै, जाय के सूई लगवाय लो। दो रुपया बाके हाथ मे धरियों घर बैठेई सुई लगा देगो।'

दाजी ने सास खीच कँ कही—'नाय बेटा मोय तो सुई ते डर लगे। तोरस भरोसी को छोरा मरतो मरतो बच्यों। सुई लगतेई बाने आख नटेर दई। दाती भिचगई। बू तो भगवान की दसा कछु सूदी हती जाते बाकी सास बापिस आ गई। वैसे मरबे मे कछु कसर नाई।'

बिरज मे जाडे के बुखार ते न जाने कितेक बच्चा, कितक जबान अरू जाने कितेक लोग मौत के म्हौं मे समा जामे। बिरज में तीनई तो सबसों भयानक रोग है। जार को बुखार, मोतीझरा अरू माता। जारे के बुखार अरु माता ने हजारन बच्चान कू मौत की गोद म भेजो है। छोटे छोटे दूध पीते अबोध बच्चा म्हौंते कहऊ तो नाय सकैं कि बिनकू जारो लग रहो है। मौत से गामन मे बिचारे गरीब लोग ई ऊ नाय समझैं कि ई बुखार बीमारी है कई दफे य समझें कि कोई भूत प्रेत देवी देवता को प्रकोप है गयो है। आजादी तें पहले तो गाम गाम मे बैरागी बने भोपान दैवी प्रकोप के नाम पै न जाने कितेकन पै प्रान हर लिए।

बिरज के गामगाम मे जेठ ते लैकैं चैत तक साइकिल पै बैद डाक्दर बनेलोग सुई लगावे के नाम पै लोगन को ईलाज करबे घूमते फिरें। बिरज भूमि थोरी नीची हैबे ते चौमास को सबरो पानी इखटठा है जाय म्हाँ। कई गाम तो छाती छाती पानी म डूब जाय। ई पानी चैत तलक भरो रहे। बामे मच्छर पैदा होंय। जे मच्छर चार पाच महीना तलक बैद डाक्दर बने फिरे लोगन की जेबन कू पइसान ते ऊपर तक भर देम। जे बद डाक्दर बस दो चार अगरेजी दबाई अरु इन्जैक्शन को उपयोग करें बीमारन कू ठीक करवे कू। पाच पइसा की अंगरेजी गोली कूं पीस के पुरिया बनाय लैं। सब जाने एस-प्रीन बुखार उतार। बाकी पुरिया द देम। बाते बुखार तो उतरेगोई। गाम बारेन कू इनकी दबाइन पे विस्वास है जाये। जा तरह पाच पइसा की गोली के जे लोग पाच-पाच रुपया एठ लेमे। पिछले दस बरस ते जारे को बुखार कूं यानि मलेरिया बुखार डी डी टी पौडर के छिडकाबेते खतम सो है गयो। पर अब तीन चार बरस ते मलरिया बुखार फिर धीरे धीरे फलबे लगो है। अब जाके मच्छर डी डी टी ते ऊ नाय मरें। माता जरूर कम है गई हतै। सरमन ने दाजी ते कही 'सुई तुम लगवाओ नाय फिर कछु दबाई-बवाई लाये कैं नाय।

दाजी बोले— "जी तीन पुरिया दीनी हतें वान। सवेर, दुपर अरु सजा कूँ संत से चाटबे की है। अरु वैद न कही कि जाते बुखार नई उतरे तो सूई लगवानी परगी।"

सरमन बोल्यौ —'दाजी तुम तो चक्री है गए हो। मेरी कही मानौ तो भैयया कूँ सुई ठुकवा देऔ सुमरौ बुखार-फुकार सब भाग जायगौ। खोज कें दाजी नें कही— मनें कहदीनी नाय लगवाऊ सूई। भौत होवेगी तो कन चार बाग ले जाऊँगौ छारा कूँ। दो चार सौ रूपया खरच हैं जामिगे। छारा क प्रान तो बच जामिगे। बटा तू का समझगौ। दाजी ने हाथ पसार कें कही – वेटा इन हातन ते दस दस गन्डा खोद कें तेरे भैयया गाडे हते मरेठान म। तोय का याद होयगी। चार बरस कौ हो तू। तेरी भैयया इन वदन नें ई मार डारी। डागदर न बुखार म बाक पट म सावन कौ पानी चढाय दीनौ। बू पट के दरद ते डकराय डकराय कें मरी हो।'

वजर आय गयौ। बिरज के गामन म पसून कू चरवे कूँ बजर के नाम पैं थारी भौत जमीन छोर न्ई जाय। अब सरमन कूँ चिन्ता नाय रही। आस पास खेत हते नाय। बू बबूँर क पेड के नीचे सुस्ताव कू बैठ गयौ। अकेले म बठतेई बाय धियान आयौ कि आज कलेऊ नाय कर्यौ। एक बेर तो बाय भाभी प गुस्सा आयौ। बूई तो रोज कलेऊ देमती। मैयया नो बरसन पहलइ मर गई। कंधा पैं धरी स्वापी उतारी। कोन मे पोटरी मे रोटी बधी देखी। स्वापी की पाटरी खोल कें देखी कि भाभी ने रोटी बाटी दई है कि नाय। गाठ खोल कें देखी। देखतेई वाल उठयौ— अरे भाभी नें तो आज पूआऊ घर दीने हतें।'

दो पूआ है। पूआ को छोटो सौ टूक म्हौं म धरतेई बाय अपन भैयया की बीमारी कौ धियान है आयौ। म्होडे कौ पूआ म्होडे म ई रह गयौ। पूआ खावे की सारी खुसी रफूचक्कर है गई पूआ कौ गस्सा थूक दीनौ। दूसरौ पूआ लुटक के गिर गयौ।

वेर वेर एकई बात वाके दिमाग म आ रहो। बाने दाजी त सूई लगवावे की चौं मह दई ? तोरस की घटना वा के दिमाग म घूमबे लग गई। भरोसी का छारा रोमन कू सूई लगतई घर म रोआ-पीटी हैवे लग गई। सकारे की बान हती। चैत काई महीना हतौ। बू निमट के आ रह्यौ। गाम बारे भरोसी के घर की तरफ भग रह्ये। पूछौ कि का भयौ है। ? सरमनऊ भैराय कें भरोसी क घर म घुस गयौ।

मामे ते सिमक्तो सिसक्तो भरोसी पोरीते ते निकर रह्यो। सरमन नें बिन ते पूछी- भरोसी भैइया का बात है।

भरोसी कछू नाय बाल्यो- बस ऊपर कूँ दानो हाथ उठाय दीन। सरमन सीदो कोठे म पोहुँचो। सात आठ बरस को छोरा डकराय रह्यो- कबकू मास नाय आय रई कबकू गरो भीच नीनो कबकू सास नाय आय रई।

मैय्या रो रही। वू कह रही- गिराज बाबा मेरो छोरा चल्यो। तुम आय कें बचाल्यो। डण्डोती दव आमुगी।'

सरमन ने पूछी-'का है गयो जाय भाभी? रामने रामते बात कही-लाला जी बद्यामदी को वैद बुखार उतारबे कू सुई लगाय के गयो है। बस वू ता घर ते निकरो अरु छोरा की ई दसा हे गई। लाला जी मैने तुमारे भईयान ते भौत मना करी सुई मत लगवाओ। पर तुम्हारे भैइया माने ई नाय निपूते वद नैं ऐसी सुई लगाई हती जाते छोरा की जि दसा है गई है?

तोरस की जा घटना की याद कर कर सरमन की आखन ते नीर की झरी लग गई। राटी की पोटरी हाथ ते खिसक गई। गइया न रोटी पै म्हौडो दै दीनो बाने गइया नाय हटाई।

सरमन उठयो अरु सीधो गाम की तरफ भाग्यो। आज बाके पामन म बीजरी की सी चाल है गई। लठियाऊ नाय लीनी। रस्ता म ई साईकिल ते वैद जातो दीख्यो। वू जोर ते पुकारबे लग्यो ओ बैद जी ओ बद जी।' बद साईकिल मैं उतरो। बाते पहलें तो सरमन भग कें बाके पास पहोच गयो। भगबेते बाकी सास धोंकनी तेऊ तेज चल रही बाने बैद ते पूछी-'बद जी भइया कूँ सुई लगाई का तुमने।'

बैद बाल्यो- तेरो डाकरा नाय लगबाबे। लगबाबे बिना बुखार तो उतरे नाय। बद के म्हौं तें ई बात सुनक कि सुई नाय लगी सरमन को म्हौडो खुसी तें खिल उठयो। बू एक छनऊ म्हा नाय रुक्यो। मूनी भग दीनो घर कूँ। बैदऊ ठाडो कछू समझ नाय भयो कि का बात हती?

भागतो भागतो मूघो पर पहोच्यो। घूरे पै पास भाभी ऊपरा थाप रही। दूरते जोरते बोल्यो 'भाभी आ भाभी भैंईया कैसे हते ?' भाभी ने कही—'लाला जी अबई तम ढोरन कूं लेय नाय गय।'

सरमन ने कही—'भाभी भैइया कैस हते ?

भाभी बोली—ठीक हते। पुराने बास त सरकारी डॉक्टर दवा दे गये हैं।'

बस इतेक सुनिकैं सरमन ने ठंडी सांस लई अरु ढोरन के पास चल दीनों।

काव्य सौरभ

ब्रजबानी

सु दरी

हीरक सी कहना लिपटी प्रिय मोहक मोहन की मतवारी।
गोपिन स ग उमगन सी ब्रज कु जन रास सुधारस बारी।
पावन आनन्द म घुरकैं प्रिय कोमल भावन की उजियारी।
फूलन क रस सी बिसरी प्रिय मगल जीवन म सुख कारी।

प्रिय गोपिन के असुआन घुरी ब्रज बासिन क मन की पटरानी।
नद नदन सो बिछुरी जग रोवत ज्यों कुररी ससि देख उलानी।
गिरिराज गिरो हिय म डरपो नत गोप लिये कपतो दु ख खानी।
मुरली धर रे बलराम लिये ब्रज की सुधि ले सब रोवत प्रानी।

मधु की महिमा सरिता रस की छवि मजु लिए उमगी चहकानी।
अमिया रस मोहन के हिय को ब्रज मे घुर के बिखरी जगजानी।
सदभाव सनेह सुधार र म सरसी बरसी जग मगल छानी।
सत चदन स तन क मन को जग चदन आय कियो ब्रजबानी।

एकाकी—

हड़ताल

पात्र-परिचै

रामजीलाल— कालिज मे हिन्दी अध्यापक

नेतराम पालीवाल—राजनीति शास्त्र के अध्यापक

मुरली मनोहर—दशन शास्त्र अध्यापक

छात्र—भूपेन्द्र कालिका प्रसाद (छात्रा चमेली) द्वै छात्र द्वै अध्यापक

(निकट एकात कालेज की ढिग जगल कौ सौ दृश्य हिन्दी के अध्यापक श्री रामजीलाल अपने शिष्य भूपेन्द्र कू समझाते भये। दोनू ठाडे हैं)

रामजीलाल—बेटा ! भूपेन्द्र आज जब तुम कक्षा मे जाओ तब एक नयो कुहड खडो करनो है।

भूपेन्द्र—गुरूजी आप आग्या देऔ बेसोई करयौ जायगौ।

रामजीलाल—सबेरे 10 बजे पैले तुम अकेले चुपचाप जायकै 10 नम्बर के कमरा मे आगे कि छोरिन की सीट पै चौक ते बडे बडे आखरन मे लिखोगे 'अरी मैया मर गयी री !'

भूपेन्द्र - गुरूजी काम है तौ जायगौ पर याते होयगो का ?

रामजीलाल — बेटा तुम अबई भौत बच्चा हो। तेरी समझ मे कछु नाय आवै ?

भूपेन्द्र—अब गुरूजी अपनी तो अकल थोडी भौंटी है। समझ मे आव तो हृतै पर देर ते आवै।

रामजीलाल—बेटा जब तू याय लिख चुकै तो बाहर आ जाइयो। पैलो पीरियड पोलटिकल साइस के प्रोफेसर नेतराम पालीवाल को होयगो। बाय की तो नाक काटनी है। कल वे मतलब उरझ गयो मोते। आज मालूम परेगी कि उरझवे को का मतलब होय ?

भूपेन्द्र—आपकी बात तो सही है पर छोरी की टेबल पै लिखवे सो का होयगो ?

रामजीलाल—अरे ! लाला तू तो निपट मूरख है। जसै ई छोरी आवेगी वू हाजिरी लेगो। व भडक जामिगी। वा समै तुमे जमके छोरिन को पक्ष लेनो है अर हडताल करनी है।

भूपेन्द्र—हडताल कैसै होयगी या बात स ?

रामजीलाल—तू याकू छोटी सी बात समझ रह्यो है। अरे ! याके पीछे तो या पूरे कालेज की हडताल करवायी जा सके। तुमकू हडताल करवानी है या बात कू लैके कै हमारी बहनन को बइज्जती भई। जब तानू दोषी कू पकरो नहीं जायगो हम क्लास म नहीं जायेग।

भूपेन्द्र—वाह ! गुरुजी का दिमाग पायो है आपने ?

(भूपेन्द्र अर रामगोपालजी जाये है)

दूजो दृस्य

(कक्षा म अध्यापक जोर जोर ते हाजिरी ले रह है। अध्यापक को नाम नेतराम पालीवाल है। सागै तीन टेबिल पै छात्रा अर पीछे चार प छात्र बैठे भय है)

अध्यापक—प्रमोद विहारी !

एक छात्र—(ठाडो हैकै म्हा पिचकाय के) यस सर !

अध्यापक—रामप्रसाद !

रामप्रसाद—(छात्रान की आवाज बालतो भयो) हाजिर साब !

(पूरी क्लास म हसी की आवाज)

(अध्यापक घबरायौ सो ! छोरा छोरिन की माऊ देखे है। छोरा छोरी बा अध्या-
पक के देखते ई चुप है जाय। फिर हाजिरी लबो सुरू)

अध्यापक—महेंद्र गुप्ता !

महेंद्र गुप्ता—(अचानक खांसते भये बैठे भय गरे की नकली आवाज बोलतौं भयं
यस मैडम !

(फिर क्लास म एकदम हसी, अध्यापक फिर सामई देखैं अरु बिनक देखतेई हु
ऊ बद है जाय। जैसें बिरेक लगा दिये होय)

अध्यापक—कालिका प्रसाद !

कालिका प्रसाद—(जोर ते घुसते भये) जै गिर्राज महाराज की ! (पुन जोर
हसी)

(अध्यापक क्रोध सो कालिकाप्रसाद की माऊ देखे है, बोऊ अध्यापक ए देखत
टेढी गरदन करकै छोरीन की टेबिल माऊ देखकै मुसकाव है। याय देखिकै अध्याप
कौ क्रोध दूनो बढ़ जाय) अध्यापक व्हाई आर यू टर्निंग योअर गरदन।

कालिका प्रसाद—गुरुजी मैं का करूं कल सबेरे ते मेरी निपूती जो गरदन बेर है
टेढी है रही है।

(दोऊ हाथन ते लकडिया की तरियां गरदन उठी सीधी करे है, क्लास मे फि
हसी याते गुरुजी को क्रोध औरऊ बढ़ जाय)

अध्यापक—(क्रोध म) कालिका प्रसाद ज गिर्राज जी कहकें तुम हाजिरी बोलो हो
ई हाजिरी बोलबे को तुमारो अशिष्ट व्यौहार मोय नैकऊ पसद नांय। अपनी का
किताब उठाओ अरु कक्षा ते बाहर चले जाओ।

कालिका प्रसाद—(खांसते भये, पुन छोरिन की टेबिल माऊँ नार करते भये। च
विनम्र भाव ते) गुरुजी हम तो व्रजवासी हैं। हम पैदा ते लैके मरबे तानूं गोवधन
भक्ति करें हैं। गिर्राज जी अरु कृस्न बलदेव हमारे देवता हैं। बाकी सब झूठो है। मैं
तो गिर्राज जी कौई तो नाम लियो है। गिर्राज जी को नाम लये ते बताओ आपको कै
अपमान है गयो।

अध्यापक—चुप रह ! डोंट स्पीक !

कालिका प्रसाद—गुरूजी अवतो फैसलो होयगो के गिर्राज जी यहवा अशिष्टता है कै भक्ति है।

(इतेक मेई अपने थला म ते एक चीज निकाय लेंय है। वाय बडे प्रेम ते सूंघे है। कक्षा मे सब विद्यार्थी वाय देखक हसवे लगे है)

अध्यापक— ई का है तुमारे हाथ मे। ई क्लास है कै सब्जी की दुकान है।

कालिका प्रसाद—गुरुजी। ई तो अपनी अपनी पसद है। कोई कू गुलाव कौ फूल पसन्द है कोई कू कमल कौ फूल पसन्द है। (छात्रान की माऊ देखते भये) कोई कू चमेली कौ फूल पसद है।

(चमेली नाम की एक छोरी कू दूसरी कू नोचती भई अपन कू तो गोभी कोई फूल पसद है।)

कालिका प्रसाद—गुरूजी हमारे घर मे तो सात पीढीन ते गोभी के फूल कौ चलन है।

चमेली—(इतेक म चमेली नाम की छात्रा ठाडी है क जोर ते कहे) सर हम लोगन कीऊ कछु इज्जत होय। हम या अपमान कू सहन नाय करिगो।

अध्यापक—का का का का बात हैं।

चमेली—बात का है टेबिल ए देखो अपनी आखन ते।

(इतेक मेई भूपेन्द्र छात्र भगके आवे है। अरू टबिल प झुक के पढतौ भयौ जोर जार ते बोले है।)

भूपेन्द्र – गुरूजी अब सहन नाय कियो जायगो। हमारी भनन की इज्जतऊ है। काऊ दूसरी क्लास के गुण्डा उटपटाँग या टबिल पे लिख गयो हैं। अरू हम चुप रहें ?

अध्यापक—(टेबिल के ढिग जाते भये) ठहर !

भूपेन्द्र—का ठहर गुरुजी ? हमारी भैनन की बेइज्जती है आय अरू आप हमकू

ठहरबे कू कह रहे हो। जाकी। जाच होनी चइये। हमकू सम ते डूब मरबे की बात है। चलो सब ठाड़े है जाओ।

कालिका प्रसाद—छात्र एकता!

भूपेन्द्र—जिंदाबाद!!

कालिका प्रसाद छात्र एकता!

समवेत सुर—जिंदा बाद!!

(कक्षा खतम है जाय है अध्यापक चल दे है)

(कक्षा मे त निकर के छोरा छोरी संग-संग जाय रहे है। आगे की बैंच पै तीन लड़की बैठी है। पीछे 5–7 लडका है। भूपेन्द्र आगे जा रह्यौ है अरू उत्तेजित छात्र छात्रा नारे लगाते भये)

भूपेन्द्र—छात्र एकता!

समवेत सुर—जिंदाबाद!!

भूपेन्द्र—प्रोफेसर पालीवाल!

छात्र—मुर्दाबाद! मुर्दाबाद!!

(इतेक मैंई अध्यापक रामजीलाल बगल मे हाजरी को रजिस्टर लये भये म्हाते निकरे हैं)

रामजीलाल—भूपेन्द्र चौ हल्ला कर रये हो? अनुशासन ऊ तो कोई चीज है?

भूपेन्द्र—गुरूजी अनुशासन कू का पुड़िया मे धरकै चाटें? आप अनुशासन! अनुशासन!! कर रहे हो ह्यां हमारी भैनन की बेइज्जती है रही हैं।

रामजीलाल—का भयौ?

एक छात्र—गुरूजी हमारी क्लास की छात्रान की टबिलन पै जाने का उल जलूल लिख दियौ दूसरी क्लास के छोरान्नै।

रामजीलाल—ये तो बुरी बात है।

भूपेन्द्र - जाई मारन हमने हड़ताल कर दीनी हैं।

छात्र—प्रोफेसर पालीवाल

समवेत सुर—मुर्दाबाद !

रामजीलाल—(दोनू हाथन ते चुप रहवे को इसारो करते भए) आप लोग जो कछ़ कह रयें हो वू सही है। जो कछ़ भयो है वाकी मैं कड़े ते कड़े सब्दन मे भत्सना करूँ हूँ।

एक विद्यार्थी—हाँ गुरूजी मौत सुन लीनी भत्सना।

आपस म फिर बात चीत सुरू है जाये है। छात्र भूपेन्द्र सबन कू चुप करवे को इसारो करतो भयो)

भूपेन्द्र—चुप है जाओ लाला। हाँ तो गुरूजी का कहै रहयें हो आप ?

रामजीलाल—मेरे पास कहवे कू का है हम तो तुम्हारे गुरू है। हमारे पास कोई सकती नाय ताकत नाय। बस एक नैतिकता की ताकत हमारे ढिग है। आप लोग छात्र हो। छात्रन कू अपनो कर्तव्य ध्यान रखनो चइये।

छात्र—आप कर्त्तव्य की बात कर रयें है। पर क्लास म जायकें तो देखो। हमारी बचन पै देखो है आपने ?

रामजीलाल—ओह ! तुम लोग बात समझ चौना रहे। तुम्हारी बात कोई तो मैं समथन कर रयो हू। आप लोगन क सग जो कछ़ भयो है वाते बुरी बात दूसरी कोई नाय है सके। कोई बात त असतोष हाय तो अपने अध्यापक ते कहनी चइय। अगर अध्यापक तुम्हारी वाजिब माँग पूरी नई कर सके तो तुम्हे सीधे प्रिंसीपल के पास जानो चइये। अगर प्रिंसीपल तुम्हारी माँग पूरी नई करे तो फिर हड़ताल करनो चइये। पर पैंलई हड़ताल को निनय करनो ठीक नाय।

भूपेन्द्र—गुरूजी हमारी सुनवाई कोई नाय करैं। अब तुमई बताओ पिछले सप्ताह हमने प्रिंसीपल साहब ते कही ही क कालिज म एक कैण्टीन हानी चाइये। का हमारी माँग पूरी भई ?

रामजीलाल—कैण्टीन खुलेगी । जरूर खुलेगी । पर जी नौ सोचो । अगर आप लोग हड़ताल करोगे तो जाते पढाई को कितेक नुकसान होयगो ।

एक छात्र—(क्रोध मे) गुरुजी आपकू पढाई की लग रयी है । ह्या तो हमारी इज्जत पेई हाथ साफ करयो जाय रह्यो है ।

भूपन्द्र चलो रे ! प्रिंसीपल के पास चलो ।

तीजो दृस्य

(मंच पै स्टाफ रूम को दृस्य । एक कोने म पानी को घडा धरो है । पाच छे कुर्सी बिछी भई है । दीवार पै नेहरूजी अरु महात्मा गाँधी के चित्र लगे भये है । कुर्सीन प दशन शास्त्र के अध्यापक श्री मुरली मनोहर, हिंदी के प्रोफेसर श्री रामजीलाल, राजनीति शास्त्र के श्री पालीवाल अरु द्वै अध्यापक और बैठे हैं)

रामजीलाल—(पालीवाल की तरफ देखते भये) पालीवाल जी अबई मैं क्लास स कै आय रह्यो हा । कछू छुई छापरे आपकू मुर्दाबाद कहते जाय रये है ।

पालीवाल—(कंधा उचकाते भये) बूई गुण्डा है भूपन्द्र ।

रामजीलाल—मैने कई दफे प्रिंसीपल ते कही । पर बा बुढऊ न मेरी एक बात नाय सुनी । एक बन्मास गुण्डा सिगरे कालिज के बातावरन कू गदराय दे है । बाको एडमीशन ई नई होनो चइये ओ । प्रिंसीपल ने बाइस प्रिंसीपल पै डार दीनी । बाइस प्रिंसीपल ने कमेटी पै डार दीनी । एडमीशन कमेटी ने झट एडमीशन कर दीनो । या कालिज को का बनगो ? ह्यां तो जाकी पूछ उठाय के देखा सुसरी मादाई दीखे है । माय तो पूरे कालेज मे एकऊ तो मद को बच्चा नाय दीख्यो । जित देखो बितकू बधियाई बधिया भरी परी है या शिक्षा जगत म । बधिया बनाय कै नाक म नकेल डार दीनी है । अरु सरकार ने नकेल को छोर प्रिंसीपल के हाथ म थमाय दीनो है । कह दीनो है बेटा बैठो बठो खीचे जा बधियान कू । प्रिंसीपलऊ का करे बिचारो ? वाकी नकेल डाईरेक्टर के हाथ म है । डाईरेक्टर की नकेल मिनीस्टर के हाथ म है ।

पालीवाल—(समर्थते भये) का करयो जाय रामजीलाल जी ! जित देखो बितकू नागनाथई नागनाथ घूमते फिरे हैं । जमानो भौतई खराब आय गयो है प्रोफेसर साहब । हमारे आपके जमाने मे काऊ छात्र की हिम्मत ही वोऊ अध्यापक ते एक सब्द तो कह

जाय । और अब अनुशासन कालजन मे कुतिया की तरियाँ फिफयातो फिरे है। जाको मन परै है वुई लतिया देय है याकू ।

रामजीलाल—जेई बात तो मैं प्रिंसीपल ते कहनो चाहू हू। आज जो कछू आपके संग है रह्यौ है कल हमारे संग होयगो। आपकी इज्जत पूरे स्टाफ की इज्जत है। मेरी राय मैं तो तत्काल स्टाफ कौंसिल की मीटिंग होनी चइये। बडौ गम्भीर मसला है।

मुरली मनोहर—(धोती कुर्ता परिधान आवाज भौत पतरी। घोर कलियुग। ऊपर ते नीचे तानू सिगरो देश रसातल कू जाय रह्यो है। अब तो हालात इतेक खराब है गय है के स्वय लीलाधर अवतार लेके धरती पै आ जाये तो बेऊ घबराय के ह्या ते दोर परिगें स्वगलोक कू। खुल परगी सबत्ती बिनकी डिरेस।

रामजीलाल—आपकी बात सौलह आना सही है।

मुरलीमनोहर—(माथो खुजारते भये) चारो तरफ गुण्डान को राज है। अब तो जाके घर मे दो चार गुण्डा है समाज कटक है बस म्हाई सुख चैन की बरखा है।

रामजीलाल—प्रोफेसर साहब आप तो कछू ज्यादाई निरास है गये। ऐसी बात नाँय जि धरती अच्छे लोगन के कारनई टिकी भई है।

मुरलीमनोहर—आप अच्छाई की बात करे हैं।

रामजीलाल—अब हमारो कालिजई देखो। यामे कितेक प्रोफेसर आपकू गुण्डा लगे हैं।

मुरलीमनोहर—भैया मेरे मोहृ कायकू खुलवाओ हो। तुम्हारो बातई ल्यो। सब जग जानें हैं क भूपेन्द्र तुम्हारो चेला है।

रामजीलाल—देखो प्रोफेसर साहब आप व्यक्तिगत आक्षेप कर रये हो।

मुरलीमनोहर—साच बडो कडवो होय है। घुसकें पेट पू छील दे है।

रामजीलाल—प्रोफेसर साहब एडमीशन कमेटी मे मैं अकेलो सदस्य हो जान भूपेन्द्र के प्रवेश को विरोध कीनो हो।

मुरलीमनोहर—हाँ हम सब जान है तुमार विरोध के दस्तूर कू।

रामजीलाल—का जानो हो ?

पालीवाल—(रामजीलाल कूं सम्बोधित करते भये) बन्धु छोडो।

राजीलाल—का छोडो । बदतमीजी कीऊ हद होय है ।

पालीवाल—अरे ! यार अब चुपऊ करौ ।

रामजीलाल—(खखार कै उठ कै पानी की घण्टी हाथ म धरते भये) भई ! मेरी मुरली मनोहर जी त कोई दुसमनी थोरी है । पर सिद्धान्त सिद्धान्त, होय है ।

मुरली मनोहर—देखो गुरू हम ठहरे मन के साफ । जो कछू मन मे आवे है बाय कह डारे है । कपट अपने पास नाय बधु । जेई तो अपने जीवन को दरद है । जे अपने सग नाय है सबे के मोंह ते कछू कहे अरू मन त कछू सोचे ।

रामजीलाल—जि बात तो मैं जानूं हूं । आप जैसे लोग तो समाज की क्रीम है । (वापिस कुर्सी प आय के बठ जाये हैं)

मुरली मनोहर—(नक्ली हसी हसते भये) वू तो है ।

11422

चौथो दृस्य

(प्रिसीपल को कमरा । बडी टबिल वाके सामे चार कुर्सी धरी हैं । टबिल पे टेलीफोन धरो है । कुर्सी पे द्वै अध्यापक बैठे भये है । फाइल पढ़ते भये । अचानक घण्टी बजे है ।)

प्रिसीपल—प्रोफेसर साहब नैक उठइयो फून ।

प्रोफेसर (फोन उठाय कै बात करे है) यस सर । हा हैं प्रिसीपल साहब ।

प्रिसीपल—(धीरे तें) कोन है ?

प्रोफेसर—सर मिनीस्टर को पी ए बोल रह्यौ है ।

प्रिसीपल—(मोह बिचकाते भये) यार काऊ कू कह दीनो । सुसरो एडमीशन की बात कर रह्यौ ह्येयगो (फोन लेते भये) हलो ! हलो !! हां मैं प्रिसीपल बोल रह्यौ हू । हां । पी ए साहब एडमीशन 48 परसैंट ते कम पै नाय होय खैर कल दुपरी में भेज दीजो । क्रोध (क्रोध म फोन धरते भये) जित देखो सिफारिश ।

प्रोफेसर—का है गयो सर ?

प्रिंसीपल—का गयो ? मिनीस्टर को पी ए का बायो खुदा है गयो । यों कहू है के चालीस परसेंट पै साइन्स म एडमीशन कर दयौ ।

प्रोफेसर—(खुसामद करते भये) सर आपको जवाब नई । जि ता आपकी हिम्मत है जो आपन उलटो फटकार दीनो । मैं सर बीस बरस ते जा कालिज म पढाय रह्यौ हू । जा बीच कोई दस प्रिंसीपल निकार दीन हुगें । पर आप जैसो ईमानदार अरु बोल्ड प्रिंसीपल मैंने आज तानूँ नाय देख्यौ ।

प्रिंसीपल—(फाइल देखते भये) पर प्रोफेसर साहब ईमानदारी कू कोन देख है । जेई तो हमारे करीयर की सबन ते बडी कमी है ।

प्रोफेसर—नाय सर । जब कालिज को इतिहास लिखौ जायगो तो बा समै आपको नाम सबन ते ज्यादा जगमगाय उठेगो ।

(इतेक मे नारे बाजो की समवत आवाज सुनाई परे है)

काव्य सौरभ

सु दरी

ममता करुना मकरद घुरी पग पजनि क कन सी सरसाई ।
ब्रज बीथिन केलि कदब तरे रसधार बनी मधुरी हरसाई ।
बासुरि सी ब्रज कु जन मे अभिराम लिए सुर म तरसाई ।
नद नदन की अनुरागमयी वषभान लली हिय मे बरसाई ।

हीरक सी करना दमकी बिजुरी नव फूलन सी महकानी ।
प्रेमपगी पुखराजमयी शुभ भावन म उमगी चहकानी ।
माखन नह सनी ममता उर म सुर सूरमयी मुसकानी ।
मोर पखा सुचि कोमल पावन य तुलसी दल सी ब्रजवानी ।

खेलत फाग कुवर गिरधारी

ब्रज की पोर-पोर म होरी के पावन, सलौन मीठे मीठे औसर पै रमनीक अरु मन कू आनन्द ते तर करिबे बारी मधुर बियार, के जा उल्लास के सामई स्वग कौ आनन्दऊ फीकौ है जाये है गारी म आनन्द कौ मधुर वैभव जा ब्रज भूमि की ई अपनी महिमा है जो अयत्र सायदई देखिबे कू मिलै। होरी के अभिनन्दन कू नियताऊ तौ अपनी तरफ ते पूरी पूरी तैयारी करै है। सुख सदन मदन भूम उठ है या फागुन माहि। सुहावन मन भावन काकिल के मीठे मीठे बन, गामते भय मोर चातक,[1] वृन्दावन के तरु लता बौराय बौराय फूल पत्ता, सुहावनौ जमुना पुलिन, वेला, चमेली, माधवी, मृदु मजुल तमाल मुदित मधुवन की भीर सिगरेई तो जा फागुन माहि आयकें बिभोर हैकें भूम उठ है।[2] ऐस मोहक अरू अनूठे वातावरन माहि होरी को सुभागमन होय है। होरी कहा आवै मदमस्त है जायै ब्रज की धरती। मैया बाप, सास-ससुर ठाडे ठाडे सकुचाये से बिचारे टिकुर टिकुर देखते रहे, जा होरी के अल्हड औसर प पूरी तरिया राग-रग म भागती दौडती लज्जा अरू सकोच कू एक झटका मे उतार फेंकती भई अपनी बिटिया एवं घर की गोरी कू जो साल भर सो लज्जा अरू सकोच म बिन के सामई लिपटी रही हती। देवर, नन्दोई, जीजाते बू ठुमक ठुमक कैं होरी खेल ह एक तें एक सरसता भरे उपक्रम बनाइबे मे बाकौ सिगरौ रूप रग जाय हैं। ईसुर न साल भर म एकई तौ मौकौ दीनो है जा निगूढी लाज तें बचिबे कौ, मन पसन्द फगुआ लबे कौ अरु उमग भरे अल्हड जौबन के अनूठे आह्लाद कू लूटिबे कौ। अनगऊ लज्जित हैयकें झूमे उठै है। जूथनि जूथनि रमनी झूम उठै है जा ब्रज माहि।[3]

---

1 सुख सदन मदन कौ जोर मिलि झूमक हो,
कोकिल बचन सुहावनौ मिलि झूमक हो— सूरसागर

2 सूरसागर—2903

3 जूथनि जूथनि सुन्दरी मिलि झूमक हो, जिनि जोवन लजत अनग मिलि झूमक हो।

होरी खेलती एक गोरी उ मादीन के झुड ते निकसि कै झूम उठी है बिनकी देखा देखी सखीन की सिगरी झुड झूम उठो है ।[1] इक गोरी गिरधारी के पीताम्बर पकरि कै झूम उठी है । इक स्याम के हाथ ते मुरली लैकै झूम उठै हैं । इक प्यारी लली गारी देती झूम रही है । इक ललना अगुरिया की पोरन म जग काजर कू पिय की आखिन म हसि-हसि कै अजित करि झूम उठै है ।[2] रसिक सिरोमनि रसिया ब्रजराज कू चारो ओर ते रग बिरगी ब्रजवाला घेर कै मधु माखीन की तरिया झूम उठी हैं ।[3] ललन गिरधारी त चीर हरण को बदलो लैमती भई वे झूम उठै हैं । बीच-बीच म नवल अहीर के छोरा कू मार मार नोच नोंच के झूम उठै हैं जि रस ते लवालब भरी भई ब्रज वनिता । नेउ एक सखी में आगो देख्यो ना पीछो देख्यो वु झुड म ते निकरि कै हरि हाथ पकरि कै झूम उठी है । फिर काएं सिगरी सखी वाके जा हौंसला कू देख कै बाई की तरिया झूम जायं है । कछु औसी मदभरी मुसकान के सग ब्रजराज झूम उठैं हैं । झूमती झूमती रस ते बावरी भई एक ललना गारी देती भई मस्त है गई है ।[4]

इतेक मेई सूर की रस भरी गोपिन्नं अपने प्रिय छैना गिरिधारी के सग सगीत की थाप छेड दीनो । बिनके मौंहते अनायासई उल्लास को उमगतो जि महारस बिनके मन माहि नाय समायो तो सगीत की थिरकतो लहरिन के द्वारा वु बहवे लग गयो । अरू सचई तो है कै ब्रज हारी जूई तो ऐसो त्यौहार हैं जाम मर्यादान को बधन खुलई गर जायं है जा चमकते भये उल्लास के सामै । जाई कारन जा विलासमय मनोरम फागु के त्यौहार माहि जितेक खा-पी सको जितेक आनन्द लै सको लै लनों उत्तम हर्त चौंके जीवन को तो का भरोसो ।[5] परि का करै वु नवेली । जबई वु ललचाय कै रगीले पै रग डारिवे की कोसिस करै हैं तो सामै घर के बडे-बूढे परि जाम हैं । उमडतो

1 इक सखि निकसी झुड तै, मिलि झूमक हो तिनि पकरि लिए हरि हाथ मिलि झूमक हो ।

2 प्यारी कर काजर लियो मिलि झूमक हो — सूर

3 ज्यो घेरि रही मधुमक्खि, मिलि झूमक हो-सूर

4 इक गारी पै उठी गाई मिलि झूमक हो-सूर

5 घरी घरी आनन्द करि, जीवन जानि असार
खाई खेलि हसि लीजिए फाग बडो त्योहार—सूर

अनुराग ठिक जाव है । रोष उठ है आधरे सूर की ललाइ त भरी लली । थोरी भोत तौ बडे बूढेन की लाज करनी परैई है । का करै बिचारी खीझ उठ है–ये गुरजन जा होरी की गुलाबी रगीनी माहि वैरी है गय हूनैं । का करयौ जाय जाते जि सही होय [1]।

गोपीग्वालन के टोल के टोल आपस मे मीठी गारी दते भय एक दूसरे कू हटाइवे मे गौरब लूट रह है । इतेक मई होरी की रँगीनी माहि बाबरी भई एक रसभरी ललना ने हलधर कू पकरि लीनो अरु वाकी चोखी गत बनाय डारी । जा अनायास भय मीठे आक्रमन के सामई हलधर घबराय गए। रा करै। भगिबे अरु बचिवे के सिगर रस्ता बन्द देख एक असहाय अबला की तरिया वे मृगनयनीन तें अनुनय बिनय करिबे लगे । करूना की प्यासी थोरेई वे लली । थारी देर मे बिनकौ मनुआ पसीज गयौ । गोपी बोली– 'हमार पाम पकरौ ।' हलधर तौ तैयार हते । कछू कराइ लेउ बस काऊ तरिया इनतें प्रान बचि जाय । गोपिन ने जब पाम पकरिई लिए हलधर ने तौ छोडि दीनो बिनैं हलधर कू ।[2] चलौ भैया हलधर की अकलि तौ ठीक है गई । अब बिन्नैं मोहन कू पकरवाय दीना। बाके नाक मौंह सिगरे काजर तें पोत डारे ब्रज बालान्न । हलधरऊ नाय छोडा इनैं । हरद की सिगरी कलसाई बिनके माथे उडेल दीनो । बिचारे का करैं । एक तौ भलौ काम करौ । माहन पकडवाय दीनो ।[3] बाकौ ई मीठौ फल दीनो है ब्रज बालानैं भैया हलधर कू ।

गोपगन के सग ब्रजराज गारी देमतें फिर रहे है, ब्रज खोरिन माहि । फैंट पाग पूरी तरिया कसिकै, बगल मे पिचकारी दाबे एक जगै तें दूसरी जग गामतें कूदतें बीच बीच मे कछू मधुर सी तान भरे सलोनी गारी देमते जा रहे है। बरे बीर बाकुरे बने । इतेक मैंई छज्जेन मे ललीन की पिचकारी की मूसलाधार बौछार आय परी बिनके माथै पै । सिगरी बाखरि महल अटारी पिचकारी के जा अचानक भये ललीन के रग के आक्रमन तें तर है गई । ब्रजराज अपने भैया के सग मौंह फुलाये गारी देमतें छाती तान कैं मॅंड-राय रहे है जा आक्रमन के सामई अपनी सिगरी चौकरी भूल गये । भगदड मचि गई बिनमे । जा रसीले ललीन के आक्रमन ते बचिक तौ ब्रजराज भजि गयै अपने भैया क

---

1 ये गुरुजन बेरी भए, कीजै कौन उपाय –सूर

2 सब गोपिन हलधर पकरि छाडे पाइ लगाई–सूर

3 तब मोहन हलधर पकराए, करहु तरुनि अपने मन भाए ।
नाक नयन मुख काजर लायौ, हरद्र कलश हलधर सिर नायौ ।।–सूरदास

होरी खेलती एक गोरी उ मादीन के झु ड तें निकसि कें झूम उठी है वि देखा देखी सखीन को सिगरो झु ड झूम उठो है।[1] इत गोरी गिरधारी के पीताम्बर कें झूम उठी है। इत स्याम वे हाथ तें मुरली लैके झूम उठ हैं। इत प्यारी गारी देमती झूम रही है। इत ललना अगुरिया की पोरन मे जगे काजर कू लि आखिन म हसि-हसि कें अजित कर झूम उठें है।[2] रसिक सिरोमनि रसिया व्रजरा चारों ओर ते रग विरगी व्रजबाला घेर कें मधु माखीन की तरिया झूम उठी हैं।[3] गिरधारी तें चीर हरण को बदलो लमतो भई वे झूम उठें हैं। बीच बीच म अहीर के छोरा कू मार मार, नोच नोंच के झूम उठें ह जि रस ते लवालव भरी व्रज वनिता। नेउ एक सखी में आगो देख्यो ना पीछो देख्यो वु झू ड म ते निक हरि हाथ पकरि कें झूम उठी है। फिर काएं सिगरी सखी वाके जा हौंसल देख कें वाई की तरिया झूम जायें हैं। कछु अनोखी मदभरी मुसकान के व्रजराज झूम उठें हैं। झूमती झूमती रस ते बावरी भई एक ललना गारी देती भई है गई है।[4]

इतेक मेई सूर की रस भरी गोपिन्नें अपने प्रिय छैला गिरिधारी के सग सगीत थाप छेड दीनो। बिनके मोंहुते अनायासई उल्लास को उमगतो जि महारस बिनके माँहि नाय समायो तो सगीत की थिरकती लहरिन के द्वारा वू बहवे लग गयो। सचई तो है कें व्रज होरी जूई तो ऐसो त्योहार हैं जाम मर्यादान को बन्धन ह गर जायें है जा चमकते भये उल्लास के सामे। जाई कारन जा विलासमय मनो फागु के त्यौहार माहि जितेक खा पी सको, जितेक आनन्द लैं सको ल लनों उत्तम चौंकें जीवन की तो का भरोसो।[5] परि का करै बु नवेली। जबई बु ललचाय रगीले पै रग डारिबे की कोसिस करै हैं तो सामै घर के बडे-बूढे परि जाम हैं। उम

1 इक सखि निकसी झु ड तें, मिलि झूमक हो तिनि पकरि लिए हरि हाथ मि झूमक हो।

2 प्यारी कर काजर लियो मिलि झूमक हो—सूर

3 ज्यो घेरि रही मधुमखि, मिलि झूमक हो-सूर

4 इक गारी पै उठी गाई मिलि झूमक हो-सूर

5 घरी घरी आन द करि, जीवन जानि असार
खाई खेलि हमि लीजिए फाग बडो त्योहार—सूर

अनुराग ठिठक जाव है । रोष उठै है आधरे सूर की ललाई त भरी लली । थोरी भोत तौ वडे वूढ़ेन की लाज करनी परई है । का कर बिचारी खीझ उठ है—ये गुरजन जा होरी की गुलाबो रगीनी माहि वरी है गये हतै । का करयौ जाय जाते जि सही होय [1]।

गोपीग्वालन के टोल के टोल आपस म मीठी गारी देते भये एक दूसरे कू हटाइवे मे गौरव लूट रह है । इतेक मई होरी की रँगीनी माहि बावरी भई एक रसभरी ललना ने हलधर कू पकरि लीनौ अरू बाकी चोखी गत बनाय डारी । जा अनायास भय मीठे आक्रमन के सामई हलधर घबराय गए । का करें । भगिबे अरु बचिव के सिगरे रस्ता बन्द देख एक असहाय अबला की तरिया व मृगनयनीन ते अनुनय बिनय करिबे लगे । करुना की प्यासी थोरेई वे लली । थोरी देर मे बिनकौ मनुआ पसीज गयौ । गोपी बोली— 'हमारे पाम पकरौ ।' हलधर तौ तैयार हते । कछू कराइ लेउ बस काऊ तरिया इनते प्रान बचि जाय । गोपिन के जब पाम पकरिई लिए हलधर न तौ छाडि दीनो बिन्नें हलधर कू [2] चलौ भैया हलधर की अकलि तौ ठीक है गई । अब बिन्नें मोहन कू पकरवाय दीनो । बाके नाक मौह सिगरे काजर तें पोत डारे ब्रज बालाऐं । हलधरऊ नाय छोडा इन । हरद कौ सिगरौ कलसाई विनके माथे उडेल दीनो । बिचारे का करें । एक तौ भलौ काम करौ । मोहन पकडवाय दीनो ।[3] बाकौ ई मीठौ फल दीना है ब्रज बालान भैया हलधर कू ।

गोपगन के सग ब्रजराज गारी देमते फिर रहे हैं, ब्रज खोरिन माहि । फैंट पाग पूरी तरिया कसिकैं, बगल मे पिचकारी दाबे एक जगै ते दूसरी जगै गामते कूदते बीच बीच म कछू मधुर सी तान भरी सलौनी गारी देमतें जा रहे है । बरे बीर बाकुरे बन । इतेक मैई छज्जेन तें ललीन की पिचकारी की मूसलाधार बौछार आय परी बिनके माथे पे । सिगरी बाखरि महल अटारी पिचकारी के जा अचानक भये ललीन के रग के आक्रमन तें तर है गई । ब्रजराज अपने भैया के सग मौंह फुलाये, गारी देमते छाती तान कें मँड-राय रहे हैं जा आक्रमन के सामई अपनी सिगरी चौकरी भूल गय । भगदड मचि गई बिनम । जा रसीले ललीन के आक्रमन ते बचिकैं तौ ब्रजराज भजि गयै अपने भैया क

1 ये गुरुजन बैरी भए, कीजै कौन उपाय —सूर

2 सब गोपिन हलधर पकरि, छाडे पाइ लगाई—सूर

3 तब मोहन हलधर पकराए, करहु तरूनि अपने मन भाए ।
नाक नयन मुख काजर लायौ, हरद कलस हलधर सिर नायो ।।—सूरदास

सग ।[1] ललीन ने भौतई कोसिस करी विनकू पकरिवे की पर हाथ नहीं आय वे। परि साकरी खौरि माहि आखिर वे फसई गये। गारी देमते हसते हसत ग्वाल बालन के मग व्रज खोरी म मडराय रहे है वे। धीरे त जायक चन्द्रावलि नें हसि कें पकरि लीन व्रज राज। जैसेई चन्द्रावलि न हसि कें पकरि लीन व्रजराज। जसेई चन्द्रावलि नें विनकू पकरियौ तौ सग के सखा भजि कें दूरि ठारे है गये। इतेक मेंई सिगरी सखी म्हाँ आ पहौंची। व्रजराज की जा समै की म्होडो देखिब लायक हो। जैसे साच्छात भोरो भडारी, बिचारो अति सूधो, एसौ छोरा ठारौ हाय जाको लेनो देनौं होरी के जा हुडदग ते। चन्द्रावलि नें कही—लाल बडे भोरे वनि रहे हो।[2]

एक सखी नें कही— जेई है व्रजराज बडे गाल फूलाय फुलाय कें इनें हमक होगे खेलिवे की चुनौती दीनी हतें। बडे ललकार ललकार कें बात करी है इनें।' झट एक नें आब देखी न ताव हलको सौ गलुआ नोंच डारौ व्रजराज कौ। कोऊ काजर लगायबे लगी कोऊ रँगन ले बिनकौ सरीर मलिवे लगी। कोऊ नें बिनकी मुरली ले लीनी अरु कृस्न चनिकें बजायबे लगि गई। इक बिनते कछू पूछे है। दूरि ठारे सखा अपने सखा कृस्न की दुरगति देख रहे ह। थोरी सी देर पैले तौ व्रजराज कसी डींग मारि रह है। रगवे कौ सखान के सामई। पै अब तौ बिनकी खुद की मट्टी पलीत जो है रही है। जा कारन बिचारे बडे सरमाय रह है भौतइ लजाय रह है।[3]

होरी व्रज कौ गोरो गोरो, मीठो मीठो ऐसौ अनिवचनीय भाव है जाय मन मेंई प्रतीत कियौ जा सके है। कुवर गिरधारी अपने भया मुबाहु सुनामा आदि सखान के सग होरी खेलते फिर रहे है ब्रज की कुज गलीन म, बाखर बाखर म। गोपन की होरी जाकी सैना के सैनापति व्रजराज है। जा ललकार कू सुनि क व्रजबाला का पाछ रह सकैं है। वितते वृषभानु दुलारी अपनी सिगरी सखीन के सग होरी खेलव कू निकसि परी। दोनो तरफ मोर्चा जम गये। दुदभी, ढाल, पखावज डफ झाम बिनके बीच म पतरी 2 सुरीली मुरली की मीठी स्वर लहरी कौ आनन्द फैलाय रही है व्रजभूमि म। का बनन कर वाकौ। नाय बसकी इन सब्दन की नाय बसकी इन भावन की। बस अनुभव करि-

---

1 पज्जनि तें छूटति पिचकारी, रग गई बाखरि महल अटारी।
नाना रग गए रग बाग, बलदाऊ इत उत ह्वैं भागे॥—सूर सागर

2 घेरि लई सब खोरि साकरी पकर मदन गुपाल।
गह्यौ धाइ चन्द्रावली हसि कैं, कह्यौ भले हा लाल॥—सूरदास

3 देखत सखा दूरि भए ठाढे, निरखत स्याम लजाई।—सूरदास

त्यौ जा गारी के निंद्य आनन्द कू । बरसाने की ललीन के बासन की मार के सामई भजि गये सिगरे गोप। एक एक गोपीनें एक एक गोप कू सम्हार लीनौं। लाज-बाज बिचारी न जाने कब की भजि गई । व्रजराज नदन दन नै अपनी बाहु उठाय उठाय कै नाम लै लै के गारी देबो सुरू करि दीनौं ।[1] बस अब का ओ ! सिगरी सु दरी सिमट आई जा अनोखी गारी दिवैया के ढिंग अरू पकरि कै वाकौ सबरौ म्होडो कुमकुम ते पीत डारौं अरू माथे पै वेनी गू थ डारी । अपने बेटा की बरसाने की ललीन के हाथन जा दुरगति कू दखिकै नांय रह्यौ गयौ जसोदा मैया प । मेवा आदि मगाय कै अरू भूषन देय के ललीन के हाथ दुरगति हामते बचाय अपमे बेटा देवकीनन्दन गिरधारी कू मैया नें ।[2]

चलौ ! मैया ने बचाय लीने । गोपीनें सोचो गोकुलनाथ कू फिर पकरनौ चइये । दूसरे दिना वे गामती गामती झूमती घूमती नन्द की पौरी की तरफ चल दीनी । कुम-कुम उबटन की भीनी-भीनी महक बिनके गोरे गोरे कनक तनपै कछू ज्यादाई खिल रही है ।[3] अनियारी आखिन म पतरी पतरी काजर की रेखा, चीर तिपाई कौ भौतई म हगो लहगा । बिनके दसन अनार अधर बिबाफल कुच चकवा की तरिया सुसोभित हतै बिनके मुखन की अपार सु दरता अरू भीनी भीनी चमक देखिकै चन्दाऊ लजाय गयौ है । बस ऐसी लजीली ते सजीली भई ब्रज बनिता कछू रगीनी माहि उमडती घुमडती पहौंच गई गामती गामती नन्द की पौरी प गिरधारी की गत बनाइवे कू ।[4] जा अचानक भय हल्ला ते ब्रजराज अपनी सिगरी चौकडी भूल गए। आय गई बिनकी अक्लि ठिकाने । झटई बिनें ग्वाल बाल अरू हलधर बुलाये जा होरी के भये अनूठें आक्रमन ते बचिवे कू[5] नर नारी, नारी नर से बन गये जा होरी क मनोरम ऊधम माहि । दोनौं ओर ते

---

1 बाहु उचाई कहत हो होरी, लै ल नाम देत प्रभु गारी ।–सूर सागर

2 बहुरि मिमिट ब्रज सुन्दरी पकरे गोकुलनाथ ।
नव कुमकुम मुख माडि के, बेनी गूथी माथ ।
नव नन्दरानी बीच कियौ, मेवा दिये मगाई ।
पट भूषन दियौ सबनि कौ निरखि सूर बलि जाए ।–सूरदास

3 सूरसागर–2901–सूरदास

4 भूषन अग सजे सतनौरी गावति फाग नन्द की पौरी–सूर

5 सुनि सुन्दर बर बाहर आये हलधर ग्वाल गुपाल बुलाए–सूर

होरी को रसीलो जुद्ध शुरु है गयौ। कैसें अनूठे एकाकार है गय है।[1] गुलाल की मूठन ते सिगरो आसमान गुलाल मई है गयौ, धरती पै कुम कुम की कीच मच गई।[2] दोना तरफ हाथन म पिचकारी लैय लय कें लला लली भगिवे लगे। इतेक मेई राधा नें भीत बिचार करिकें हलधर कू अपनी ललीन की सैना मे कछू उत्कोच दैय कें मिलाय लीनो।[3] इतेक मई औसर पाय कें चन्द्रप्रभा स्याम की मुरली लैय कें भजि गई। चकि वे चन्द्रावल के हाथ तें आखिन माहि चुपचाप काजर लगवाय रहे हैं।[4]

होरी के जा अनूठे अरू निगूढ एव अनिवचनीय आनन्द माहि व्रज बनिता इतक बावरी है गइ कें बिनकू जा मस्ती मे पतोई नाय चलौ कें रसिक सिरामनि देवकीन दन व्रजराज नें कब विनकू अपनी रसीली भुजान मे भरि लीनो।[5] घर के बड बूढे टुकर-टुकर देख रये है। बिाकी दुखदायी लाज नें वरस भर लो सकुचाय कें धर दीनो ललीन कू। डर क मारे म्होडे पै ते घूघट सरकायवे तक की हिम्मत नाय हुनी बिनमे। परि आज तौ होरी के जा अल्हड अनुराग ने बिनकू इतेक साहसी अरू निर्भीक बनाय दीनो है कें वे सिगरे बडे बूढे तिनका के समान है गये।[6] इतेक मई एक सखी हरद घोर लाई अरू व्रजराज के सिगरे म्होडे कू पोत डारौ बाते। एक ने हुद्दई कर डारी। वू पिय कौ मुख मले चली जा रही है। वू बिचारौ का कर। कैसें बचे जा रस के ऊधमते जब बानें फगुआ दैई डारौ तबई बाक जा रस की रगीनी ते प्रान बचे। इतेक मइ हलधर न बडी चतुरता ते बचि बचि कें भजि रये मोहन कू आखिर पकरि लीनौई। हलधर तें कसैं बचते। बीच बीच मे घर के जे वडे बूढे मजा देखिवे कू आय कें रग मे भग करि द है। ये बडे बुढ होरी के जा रग मे वरी है गए है। इनते बचिवे कौ उपाय नाय सूझ रह्यौ व्रज जुबतीन कू।[7] का करे कौन सौ रस्ता अपनामे इनते वचिव कौ। राग रग

---

1 इक तन नर एक तन भई नारी खेल मच्यौ व्रज के विच भारी–सूर

2 उडत गुलाल अरुन भए अवर कुम कुम कीच मची धरती पर–सूर

3 राधा मिलि इक मन्त्र उपायो, हलधर अपनो भीर बुलायो–सूर

4 सूर सागर–2901

5 सूर सागर–901

6 गुरजन घर सबै मिलि दखें तिनको तरुनी तृन सम लेखें–सूर

7 य गुरुजन बेरी भए कीजै कौन उपाउ–सूर

म रगे भये युवक युवतीन को दरबार नन्दराइ के घर माहि लस रयो हते। फागु ब्रज को मनोरम त्यौहार है। जाको जितेक आनन्द लूट सको लूट लेउ। चौकि जा निस्सार जीवन को का भरोसो कब आखि बन्द है जाय।[1]

ब्रज माहि उमडते होरी के जा रस कू, जीवन के अनुराग की जा रसधारा कू सुरसुनीऊ चित्रन नाय कर सके है जाको।[2] किसोर बालक, बूढे, नारी सबई तो ब्रज माहि होरी क जा उल्लास मे डूब गये है।[3]

आधरे कवि सूर के पदन के कछू असन के आधार पै ब्रज की होरी की रगीनी को जि प्रयास करो गयो हतै। ब्रज के गाम गाम मे आजऊ जि रगीनी साच्छात दखी जा सके है। महाकवि सूरदास कू आधरो बतायो जाये है। कोऊ बाय जन्मा ध कहुवै है। परि अब तुमई देख लेउ होरी को का कोई आधरो ऐसो चित्रन कर सकै है। सूर के तो पचास की उमर के आस पास कारो मोतिया बिन्द भयो होइगो।

---

1 घरी घरी आनन्द करि, जीवन जानि असार
खाई खेलि हस लीजिये, फाग बडो त्यौहार—सूर

2 जो रस बाढयो खेलत होरी, सारद का बरनै अति भोरी—सूर

3 खेलत फागु रह्यो रस भारी,
वृद्ध किसोर बाल अरु नारी।-सूर

काव्य सौरभ

सुंदरी

नेह सरसानी महकानी फूलन सी मेह,
कुंजन मे प्यारी अलि गुंजन सी मानी है।
मंजुल प्रसगन चादनी संग चदन ज्यों
अगन अनग छाई कामिनी सयानी है।
प्रीतरस जानो रस रग पहचानो प्यारी
आऐ छवि कंज पुंजन सी दहकानी है।
मयंकमुखी चारु चटकारी सुगधन सी,
मद-मद नूपुर धुनि सी मुसकानी है।



पूरित प्रेम पराग पगी हरसी उमगी महकी ब्रजबानी।
पीर विहाल भरे दुख म सुख कंज बनी दहकी ब्रजरानी।
घोर दयी अमिया रस की उर प्यार भरी चहकी ब्रजबानी।
गीतन के घन सों बरसी उर दामिनी सी दमकी ब्रजबानी।



कोयल सी कुहकी ब्रज कुंजन भावन म महकी मनभाई।
नूपुर सी झनकी चुनरी रस फूलन कू भर के जग आई।
कंज कली बनके उर म ब्रजवीथिन मे मधुरी मुसकाई।
नैनन म प्रिय सैनन म ब्रज बैनन म मिसरी भर लाई।

मिसरी लिपटे मधु माखन सी ब्रज तोतरि बैनन स सरसाई ।
घन सामन नह सुधारस सी ममता बन नैनन म हरसाई ।
मधुमासमयी छवि की फागुन सी नव यौवन सनन म मुसकाई ।
घन घूघट नेह दुलार दुरी उरदामिनी सी दमकी लरजाई ।



मदिर पालर सी यह पावन भावन मे सरसै मन भाई ।
मारन के घुन सी अति कोमल सावनसी बरसै प्रिय आई ।
फागुन की छवि सी जग में यह नेह सनो परसै सहनाई ।
गापिन के अनुआन घुरी ब्रज कु जन म हरसै मधुराई ।



भाव भरे अगरान सनी ब्रज गोपिन के अधरान की बानी ।
मोहन के नव नह भरी अनुरागमयी मधुरी जगरानी ।
रस पूरित सागर म गिरके जग मगल जीवन म महकानी ।
धीरत भक्ति निचारत ज्ञान य गोविन्द के गुन गान की खानी ।



कचनार कली अति कोमल ज्यो द्युति पूनम हीरक सी चमकानी ।
सुभ लाल प्रवाल घुरी अनुराग गुलाव ललाम सनी महकानी ।
सरसात रही जग सोम मनोज प्रमोद विनोद सुधा बरसानी ।
प्रिय चदमुखी छवि नीलम ह्वँ मदमात चली मधुरी रसखानी ।



नीरव से भयभीत भरे भव म सुभ भावन सी ब्रजबानी ।
साधक नेहिल सौरभ सी रसिया हिय सावन सी ब्रजबानी ।
कोमल बालक के जग म निदिया सुख पावन सी ब्रजबानी ।
कचन से बिरहा सुर मे नव कु दन गायन सी ब्रजबानी ।



नैनन नीर भरे असुआ घर बाहर रोम परी ब्रजमया ।
बैनन सीत भरी भय सो ब्रज बीथिन रोय दुरी ब्रजमैया ।

हाल हवाल व्यथा भरकै दुख म गिरती पजरी ब्रजमैया ।
नेह दुलार भरी ममता उर सूल रही हमरी ब्रजमैया ।



नैनन म भरकै अंसुआ ब्रज की जननी निन रोवत डोल ।
बैनन मे सिसक हिचकी भर दारुन भीत भरे मुख बोल ।
सैनन म करुना भरकै मन सीत भरी कपती हिय ग्वोल ।
मन देर करै मुरची धर रे! तुमरी ब्रज मात दुरी जग डोलै ।



रोवत रोवत डोलत है दुख दारुन मै जकरी ब्रजमैया ।
पूत सपूत गये उर भूल भरी ममता निखरी ब्रजमैया ।
रूठ गई सब नेह सनी करुना रस म बिखरी ब्रजमैया ।
आय सहाय करो ब्रजभूषण राय दुरी तुमरी ब्रजमैया ।

ओज मे ब्रज—

जगन म भुजदडन के जग जौहर काप भरे सबहारे ।
स्यदन पै चढ हाथिन के दल बद्दर बाँध दिये मतवारो ।
रोर मची घनघोर तची जब बीरन न भजते ललकारे ।
भूषन-सूदन के उर सो ब्रज ओज बनी भभक फुफकारे ।



गरजी बरसी जग बद्दर सी पव्वय तोड भप्रजन सी ।
हुकार उठी बनकै मतवारी जग म चक्र सुम्मन सी ।
भव भीषण भाव भरे जग डार उर प्रबल प्रताप गयदन सी ।
सागर सी उमडी जग-जीवन परसुराम हिय सतन सी ।



भर भूत सुभावन कू भरि कै अरि जोत प्रचड भवानी बनी ।
जग क दुखिया जीवन म भव भीषण यान कमान तनी ।

दुख दारिद कारा धरनी पै प्रलयकर सकर गान सनी।
अरि मडन काट गरे गजि बाघ फुफकार उठी सुभ चण्डी बनी।

बासुरी वादन—

व्रज कु जन के रस की सरिता नद नदन के उर की उजियारी।
पद पादप के मन की लहरी व्रजबासिन के मन की किलकारी।
बनितान सु प्रानन तानन सो दिन रैन ससेन सतावन बारी।
मुरली धर के अधरान धरी रस पीवत है छक बासुरि प्यारी।

LI

वेनु बजी व्रज कानन म सुधि भूल गये रस म भरमाये।
कूक उठे मुरवा मद पूरित प्रानन म मधु से हरसाय।
कोयल के सुर पचम से व्रज वाग तडाग हिये हरसाये।
मद सुग ध समीर सन सुर पावन बोल लिये जग आये।

□

सावन सी सरसी धरनी उर दामिन सी दमकी सुखकारी।
पावन सी बरसी रस बारिस कु जन प्रीत भई मतवारी।
भावन म थिरकै व्रज रेनु सनेहमयी बनकै रतनारी।
मोदमयी अधरान धरी मुरलीधर ने जब बासुरी प्यारी।

□

नेहिल फूलन सौरभ सी रसधार बही व्रज मे कछु न्यारी।
कानन कु ज वछारन मे अलि गु जन पात भई रतनारी।
नूपुर की धुनि सी सरसी व्रज की धरनी मधु सी मतवारी।
प्रिय ओठन सों खनकी सरसी उमगी व्रज म जब बाँसुरी प्यारी।

□

रस के मधुरे सुख सोत बहे हिय कोयल पचम सो सुर गमक्यो।
धरनी व्रज की सुधि भूल गई नव नूतन भाव भर्यो जग ढुरक्यो।

घन सावन मोरन की धुनि सी ब्रज वीथिन म रस पावन थिरक्यो।
मन मोहन की मुरली सुरसो बिरहा मन टीस भरयो जग लहक्यो।

नैना–

घन सावन प्रान उसासन से बरसे परसे नव चदन से।
सरसे बिहसे रव बासुरि से रस कु जन म अलि न दन से।
मधुरे सुर सग उमगन से बिकसे रसिया उर कु दन से।
सु ख स्याम सनह सु धारस से उन प्रान सने नद न दन से।

ब्रज के सत—

रस मेघ भरे ब्रज मे बरसे चहु ओर मनोहर भाव ढुरे।
ढुर की मिठिया मधु गागरिया सब डूब गये उर नेह पुरे।
रस पीत पराग सन उर मे प्रिय भाव भरे जग म सु घरे।
जब वदित म तन व हिय सो निकसे ब्रज के जग भाव जुरे।



सत के तप बचन सों नित कु दन सी चमके ब्रजबानी।
रास लिये रस कु जन म अलि गु जन सी महके रसखानी।
भौतिक जीवन के दु ख मे सुख सार सनी लहके मुसकानी।
मृदु बैनन म थिरक मधुरी प्रिय भावन म चहके हरसानी।



फागुन लागत ही ब्रज म नित नूतन भाव खिले बलिहारी।
टूट दियें हरिय म उठे नव यौवन से महके नित भारी।
टूट गये घर के सब बधन बोलत दत वकें सब गारी।
आगन द्वार बध्यो मद पावन लाज ढुरी सरमावन हारी।

फागुन

प्रिय फागुन आय गयो जब सौ ब्रज के रस रंग भये रतनारे।
महकाय उठे उर कामिन के लरजें तरजें मद मे मतवारे।
बरखा बरसी रसिया उर सौ बिहसे निकसे रस रंग पनारे।
जड जंगम भूल गये सुधि अपनी नव नेह दुलार भरे सब प्यारे।



फागुन आय गयौ जब सो रस रंग सरंग भये कछु प्यारे।
हाल विलास सुवास लिये मदमोद मनोज दिये सब डारे।
प्रीत पराग परोस हिये रसवंत सुवास सने चतुरारें।
मंजुल संग उमंगन मे रसपान करें कवि से रतनारे।



किलकत पगत दिगंत समीर अनंग सुगंध मजो महकानौ।
छलकत अनंत मुरंग सनौ हुरसंत उमंग बुलंद सुहानौ।
सरसंत कलिंद तरंगन सो रसवंत पराग फलंत लखानौ।
लहकत बसंत भनंत जबैं मकरंद कदंब तरैं दहकानौ।



रूप न नैन समाय रह्यौ रसिया छलके बिखरो महकानौ।
आय बस्यौ मन भीतर ज्यौं पय फूलन भार सुगंध सजानौ।
आनंद सार सुधा रस पूरित ह्वै जग बीच लखे दहकानो।
नेह पयोद लिये प्रिय स्याम दुरं सरसैं बरसैं इठलानो।



ऊधम आय मचाय दियो जग फागुन ने धर मोहित डारे।
कुल कान की लाज तजी सबने रस डूबत नेह भये सब मारे।

जेठ लगे प्रिय देवर सो अरू डूब भये हिय मंजुल प्यारे।
डूब गया सिगरो ब्रजधाम लिये रसिया मद म मतवारे।



भेंट भई हरि कु जन म छलिया छल मोद ढुराय गयो री।
अनुराग उदै कर चेटक सो सु र बासु रिया बजवाय गयो री।
आचर के अंबर मे प्रिय दामिन सो दमकाय गयो री।
हाय मरी सखि लाज सन उर गीतन कू जग गाय गयो री।



नव आनद म महकी बहकी उर मोहन ने हिय जाय लगी री।
जग लाज तजी कुल कान सजी बस मूरत मो उर श्याम बसी री।
बहु भाति उठी छवि मजुल सा उठती गिरती फिर जाय फसी री।
नद नदन मंजु सरोवर म सखि डूब गई पथ भूल गई री।



आंचर खेंचि भुजा भरि के छलिया छतिया रस चाख गयो री।
दामन की रस दामन मे अलि गु जन से महकाय गयो री।
अ बर क घन सावन सी मधुरी चपला चमकाय गयो री।
कु जन म सखि या तरिया मधुमास सु वास जगाय गयो री।



फागुन आय गयो जब सौं तब सो ब्रज प्रीत भई मतवारी।
सब नारि बहैं रस म बहके कुल कान तजी बनकें रतनारी।
कोउ रही सजनी ब्रजम जिहि लाज रही बचिके सु चि प्यारी।
भूल गये कुल के सब बधन खाय सु रग बकें मिल गारी।

होरी

चग बजे डप ढाल बजे बहु बासु रि तान गुजें ब्रज हारी।
ढैल छरो छलिया बनके मन मद भरे निरखें हिय गोरी।

लाज दुरी सरमाय भजी रस रग भरी निखरी ब्रज खोरी।
साजन की छवि मे उमगी सजनी प्रिय नेह करे उर चोरी।



वीथिन मे ब्रज म उमगी रसधार बहै निखरी सुभ प्यारी।
नह सने रस के रसिया लख छाय रहे उर म छवि प्यारी।
प्रीत सजे रस चदन से उर आय भरे सिगरे नर नारी।
धीरज टूट गयो रस की पियरी मधुरी सब देवत गारी।



फाग भरे ब्रज मे चहुँ ओर स्नेह सजे नर नारि सुहावैं।
यौवन कौ मद फूट चल्यौ तज लाज दुरी दुबकी सरमावैं।
भावन मे भरकैं सबरे मन मीत सुगीत भरैं हरसावैं।
ठूँठ भये ब्रज लोगन मे मधुमास छयौ दुबक्यौ मुसकावैं।



काहू के माखन मार गिराय के नैनन सौ डरपाय के भागे।
काहू के चीर ले वृक्ष चढे अरू बैनन सरमात लगे।
काहू के मोहित से मन मे छवि नेह सरोज खिलाय के भागे।
या तरिया ब्रज के रसिया रस स्रोत बने महके जग आगे।



नेह भरे बदरा बरसैं ब्रज भीज गयो सरवो हरसायो।
टूट गये जड बधन ये सब मोहक कचन पावन छायो।
भेद विभेद दुरे भय सौं मन मगल मोहन सौं महकायो।
डूब गयी धरनी ब्रज की रस पावन मोद मजा मुसकायो।



गारिन मे थिरकै गमकैं महकैं सिगरौ ब्रज अबर प्यारो।
गारिन मे चहकैं लहकैं ठिठकैं बहक ब्रज जीवन सारो।

गारिन वे घन के हिय मे ब्रज दामिन सो दमके बजमारो।
गारिन वे मधुरे रस मे बगराय उठो ब्रज है मतवारो।



रग लिये मुसकात लला निकस्यौ रस कु जन सौं हरसाई।
झाडिन की कछु ओर धरे तकि नैनन की भर मूठ चलाई।
सांस उसास फसी उर मे घर वधन भूल गई भरमाई।
लाज घुरी बन फागुन सो कुल कान तजी महकी मुसकाई।



बालक स्याम भरे लिपटे सु गुलाल मने किलकै छवि छाई।
जात भजे अपने घर आय गुलाल हरी मुख मात लगाई।
मात उठी झट ते पकडै सुख ते भगते अपने बाल क हाई।
पास खडे वर नद बबा लखि मात गई हरखी मुसकाई।



ग्वालन बालक सग सजे ब्रजराज चले प्रिय खेलन होरी।
नेह तची निकसी बितते उमगी इक आय गई ब्रज गोरी।
हाथ धरे पकडे मुसकाय लखे ब्रजराज सनेहिल भारी।
प्रेम सरोवर स्याम गिरी भटकी सब भूल गई बरजारी।



गोप गुपाल चले हरखे ब्रज खोरन म सब देखत गारी।
पास दुर्यो कछु ग्वालिन टोल लिये भर हाथन म पिचकारी।
देखत ई सब गोप भजे पकडे कमुकै सखियान मुरारी।
हाथहि जोड पडे पट पाम तबै धर छाडि दिये बनवारी।



हाथ रहे सु गुलाल सने अरु नैनन म उतरी छविकारी।
पाम दिये चलावै झट त्यौं ब्रजराज नये निकसे जित नारी।

भूल गई सबरी सुधि यों छवि रूप पियो सजनी सुख प्यारी।
पास गये ब्रजभूषण ज्यों बदरी चमकी नभ ते सज प्यारी।



भूल गई सबरा अपनोपन स्याम गयो उर जाय समाई।
जाय परी अटकी सुधि मे सुख स्याम सरोवर मे हरसाई।
नेह भरी उरसी उमगी बिच मे उठती गिरकै सरमाई।
लाल गुलाब भरी बदरी बिजुरी बन ज्यों नभ नै बरसाई।



लाय रही दगरे पकरे वसकै पुचकार सनेहिल नारी।
मोर पखा झट लाय उतार उढ़ाय दई नव चूनर भारी।
काजर लाय लगाय सजाय करी घुटिया प्रभु साजन प्यारी।
यार सखा दुबकै चुपकै बलखाय हसे लख या छवि न्यारी।

युवा समाज–

सूरज से उग के जग मे दमको बन के प्रिय पालन हारे।
कज कली उर सौरभ से नव प्रान भरो बनकै मतवारे।
काट सबै जड़ बंधन कू तुम प्रान धरो कछु नूतन सारे।
अपमान भरे दुख म बिलमे हिय भाव भरो मधु मे सुखकारे।



बालक से निश्चल मन सो जग आगन सौरज से भर छाओ।
साजन प्रीत भरी सजनी सम आय बसो सुग मे लहराओ।
दीपक से जरकै जग मे उर नह प्रकास दुरो भर लाओ।
यौवन से उमगे बनके प्रिय आमर म मिसरी बन जाओ।

जाग उठो बन मानवता दुख के भव बधन तोड़न वारे।
जाग उठो प्रिय भारत के पजरे मन के कटु मैंटन वारे।
जाग उठो सब बधन काट विनाय सजाय प्रमोद हो प्यारे।
जाग उठो गिरि से सुभ पावन भाव भरो जग मे कछु यारे।



भाव मनोहर प्रीत भरो करुना उर मानव म सरसाओ।
नैनन पीर ढुरे असुआ सुख सावरिया हिय म दरसाओ।
मोतिन से प्रिय गीत बनाय भरो जग जीवन मे सुभ आओ।
नेह सनी सुख सौरभ की बरखा जग आगन मे बरसाओ।



प्रानन मे सुभ बासुरिया रस गागरिया हिय म ढुरकाओ।
फागुनिया मिठिया बनके नव सावरिया जग मे महकाओ।
बादरिया रस की चखिया सरसाय भरो हिय मे मुसकाओ।
पाखुरिया सुख कज कली लख कोमल भावन सी लहकाओ।



भारत के दुख बधन मिंग काट करो जग मगलकारी।
नेह भरे बदरा बनके बरसो उर ताप हरो बलिहारी।
टूट गये जिनके मनुआ फिर जोड़ सजाय धरो सुखकारी।
पावन जीवन म महको बन मानव फूलन की फुलवारी।



आखर के रस सागर सो नर नेह दुलार भरो हिय लाओ।
फूलन के रस म चहके मन मोद मनोज भजे हिय लाओ।
जीवन के सुभ नदन मे सुधि भूल भ्रम पथ कू दरसाओ।
बीत गये सुख प्रेम सुधा रस लाय भरो उर म उपजाओ।



मानव जीवन पावन सावन गीत भरी बदरी बरसाओ।
तोर धरो उर के जर बधन सौरभ प्रेम सने हरसाओ।

बासुरि के सुर भाव भरे जग नेह प्रमोद पगे परसाओ।
फागुन से महको हिय म दुख पीर दुराय मजे मुसकाओ।



जीवन नेह सुधा रस ले उर मागर पार भरो पहुँचाओ।
सिराहित कालिख पोत धरो उजरे उर गीत भरे सुभ गाओ।
द्वार परे मोहन के उर खोल भरो छवि पावन लाओ।
माखन चोर दुलार भरे शशि नूतन धीर धरे सब आओ।



आखर मे अमिया रस की भर जीवन मे मधुसी किलकारी।
लाय भरो मिसरी मधुरी उर भावन मे करुना बलिहारी।
मानव ते मानव लो खिल खूब मजे बगिया चितहारी।
पावनता बरसे जग मे बनवे सुभ मानवता मतवारी।

साच कहू सुन भैया मेरे—

घोर पुकार करें दुख सों हमरो सब काम लिया जग नेता।
रात विरात करें हम कौसल ये दिन माल उड़ावत नेता।
सतन स प्रिय भापण बोलत चोरत माल खाय जग नेता।
या तरिया हमरो रुजगार करें सब चौपट ये प्रिय नेता।



डाट खाये लपट सिर धुनने अब बाप हमार भये सब नेता।
भूखहि पट गयो जब मे तब या धरनी उतरे प्रिय नेता।
हे भगवान सुनो विनती हमरो सब कौसल छीनत नेता।
कौन सहाय करे ब्रजभूषण चौपट आय करें यह नेता।



बरमारन बालक भूखन रोवत काम लियो बिनको जब नेता।
बिलखें सब सों सब घूरत हैं नभ चौपट डारत य छिलि नेता।

दुतिया भर के बरमा रन मे भय रोष भया लख पे छबि नेता ।
मान दियो हमरा   धूर मिलाय भये कछु या   सम नेता ।

प्रीत बसी बस नोटन म   खुल घूस भयी जग मगलकारी ।
नीति अनीति भयभीत भयी जग रोवत डोलत खावत गारी ।
साँच उसास लिय अब काँपत मागत भीख पिटे दुतकारी ।
झूठ ससील   मनोरम है जग डार दिये करके व्यभिचारी ।

11422

लपट की गति का पूछत हो जब सो अवतार भयो जग नेता ।
मागत भीख भगे भय डोलत रोय छुप लखके   जन नता ।
हार गये सबरे   गुरू लपट   या धरनी   उपजे जब नेता ।
डकराय भजो प्रिय लपट कौसल आय गये जब से प्रिय नता ।

मँहगाई—

आरत भारत   लोगन   कू घर कूट घिसे बढ़ती महगाई ।
हा हा भारत   रोवत हैं विधना   तुम हू न करो सुनवाई ।
कोन सहाय करै इनकी   उर प्रान   गरे अटके भय खाई ।
कस भये सिगरे नृप   लो ब्रज   भूषण पीर हरो दुखदाई ।

